आधुनिक अमरीका की नींव रखने वाले शिल्पकारों में टॉमस जेफरसन को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। प्रस्तुत पुस्तक में इस महान् राजनीतिज्ञ, विद्वान्, कृषक, शिल्पकार और संगीतज्ञ की आत्मकथा और निबन्धों को इस रूप में रखा गया है कि इससे उनकी विचार-धारा का सही चित्रण हो सके।

आधुनिक साहित्य माला—१८

जैफरसन

प्रबन्ध और परिचय

(अंग्रेजी की पुस्तक The Life & Writings of Thomas Jefferson का संक्षिप्त अनुवाद)

सम्पादक और भूमिका-लेखक
एड्रीन कॉच और विलियम पेडन

नई दिल्ली
आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया आठ आने

प्रकाशक
आधुनिक साहित्य प्रकाशन,
पोस्ट बॉक्स नं० ६६४, नई दिल्ली।

मुद्रक
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

अलबेमार्ले-प्रदेश से वर्जिनिया की बर्जेसेज-सभा के सदस्य बन गए थे। उनकी पत्नी, जेन रैंडोल्फ, वर्जिनिया के अति प्रतिष्ठित परिवारों में से थीं और वे अपनी वंश-परम्परा को अंगरेजों और स्कॉटलैंडवासियों के इतिहासों से सम्बन्धित बतलाती थीं। इन देशों के बारे में जेफरसन ने, अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में सारपूर्ण संक्षिप्तता के साथ लिखा था कि "इन देशों के लिए जो जितनी चाहे श्रद्धा और गुण बखान कर सकता है।"

सम्भवतः युवा जेफरसन ऐसा व्यक्तव्य न देते। निश्चय ही उन्होंने अपने बाल्य-काल में अपनी पारिवारिक सम्पन्नता के कारण किताबों, घोड़ों, और टकाहो तथा शैडवेल के 'विशाल भवनों' के सुखी जीवन की असंख्य सुख-सुविधाएँ पूर्ण रूप से प्राप्त की थीं। और जब पीटर जेफरसन की मृत्यु हुई तो वह अपने चौदह-वर्षीय पुत्र के लिए न केवल अतुल सम्पत्ति और जमींदारी ही छोड़ गए प्रत्युत एक गम्भीर एवं स्नेहयुक्त परामर्श भी देते गए। अपनी नियमित शिक्षा के अभाव में, वह अपने पुत्र के लिए सावधानी के साथ यह आदेश कर गए थे कि उसे उच्च श्रेणी की सम्पूर्ण शिक्षा दी जाय। बाद के वर्षों में टॉमस जेफरसन ने बहुधा उस प्रभाव का उल्लेख किया था जो कि उच्च श्रेणी के नीतिज्ञों, दार्शनिकों, कवियों और नाटककारों के कारण उन पर पड़ा था। सन् १८०० में उन्होंने अपने हार्दिक उद्गारों को प्रकट करते हुए कहा था, "मैं नम्र भाव से उस प्रभु को धन्यवाद देता हूँ जिसने मेरी प्रारम्भिक शिक्षा का निर्देशन किया, जिसके कारण अनन्त सुख का महान् स्रोत मुझे प्राप्त हो गया; और जो-कुछ इस समय मैं प्राप्त कर पाया था, उसके एवज में और कोई चीज बदलकर लेना मैं कभी पसन्द न करूँगा।...." जेफरसन का दृष्टिकोण चाहे जितना ही वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील क्यों न हो, यूनान और रोम की नैतिक और राजनीतिक शिक्षा निरन्तर उनके विचारों को गहराई और रंगीनी देती रहती थी।

अपने पिता के निश्चयानुसार, शैडवेल से कुछ ही मील की दूरी पर पादरी मि० मौरी के स्कूल में टॉमस ने शिक्षा ग्रहण की। इस 'मान्य और उच्च श्रेणी के विद्वान्' द्वारा दो वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद १७६०

में उन्होंने 'विलियम एण्ड मेरी कॉलेज' में प्रविष्ट होने के लिए अपने जन्म-स्थान शलवेमार्ले को छोड़ दिया।

वर्जिनिया की राजधानी विलियम्सवर्ग के प्रारम्भिक वर्षों में जेफरसन ने संगीत, नृत्य, रागरंग, कविता और मदिरा-पान आदि का पूरा आनन्द उठाया। सारांश यह कि वर्जिनिया के रंगीले युवकों की मित्र-मण्डली से उनका सादृश्य था, नृत्यों, थियेटरों और रेसों का शौकीन जेफरसन इस चपल वातावरण में दुःखों से कोसों दूर दिखाई पड़ता है। प्रणय-विनोद से शून्य, लाल-लाल बालों वाले ऊँचे कद के विनोदी जेफरसन में परिहास था, प्यार था, विवेक था, जिसके कारण उनके अनेक घनिष्ठ मित्र बन गए थे। विलियम्सवर्ग की सुन्दरियों के हृदयों पर अधिकार करने की अपेक्षा जॉन पेज-सरीखे मित्रों का संगीत-लाभ प्राप्त करने में अधिक सफल होते हुए भी प्रणय-असफलता के नैराश्य-भाव में कदाचित् ही आनन्द प्राप्त करते थे। इस विषय के जेफरसन के पत्रों में कहीं उन्माद है, तो कहीं विषाद; किन्तु सदा ही अति उग्र दिशा की ओर गतिशील एवं यौवन की प्रचण्ड आभा से प्लावित उनके पत्र सार्वजनिक नैतिकता के रक्षकों द्वारा प्रस्तुत किये हुए उनके चित्र का शुद्धीकरण करते हैं।

किन्तु पानी की भँवर में अचल चट्टान की भाँति उनमें नियन्त्रण एवं गाम्भीर्य भी दृष्टिगोचर होता है। तर्कशीलता के प्रति जेफरसन की लगन और सुख-दुःख के प्रति उनके विरक्ति-भाव का, रिबेका बरवैल के साथ उनकी 'प्रणय-चर्या' में सुन्दर चित्रण हुआ है। रेले-विश्रांति-गृह की नृत्य-शाला में, जो बाद में जाकर वृहत् राजनीतिक षड्यन्त्रों का घटनास्थल बना, नृत्य के बीच जेफरसन ने अपनी 'सौन्दर्य-प्रतिमा' से सहसा बिना विचारे ही विवाह का प्रस्ताव किया। विचार-विमर्श के स्वाभावानुसार इस क्रिया तक को भी यही रूप देते हुए, थोड़े ही देर बाद उन्होंने मि० पेज के सम्मुख अपनी यात्रा और विदेश में अग्रिम शिक्षा-सम्बन्धी अपनी योजनाओं का सावधानी के साथ हवाला दिया। कोई भी अनुमान कर सकता है कि इस बीच उनकी 'प्रेयसी' को उनके ... सन्तोषपूर्वक प्रतीक्षा

करती थी और साथ ही वर्जिनिया की गृह-पत्नी एवं अपत्य के अनिवार्य कर्तव्यों के लिए अपने को तत्पर करना था। किन्तु जब उस इतराने इठलाने वाली लड़की ने एक कम भावुक और अधिक सम्पन्न साथी के साथ विवाह-सम्बन्ध की घोषणा की, तो केवल जेफ़रसन को ही आश्चर्य हुआ, और उन्होंने इस नैतिक आघात की शिकायत तक नहीं की।

जेफ़रसन की बौद्धिक शक्ति औसतन मेहनती विद्यार्थी की अपेक्षा कहीं अधिक परिपक्व हो चुकी थी। वह विलियम्सबर्ग के अपने गणित और नैतिक दर्शन के विद्वान प्रोफेसर डा० विलियम, स्मॉल, वर्जिनिया में कानून के उच्चतम विद्, जार्ज वाइथ, और कला के संरक्षक तथा नितांत सज्जन गवर्नर फाकियर-जैसे सामाजिक और विचारक नेताओं के प्रिय पात्र बन चुके थे। अपनी अतुल ज्ञान-पिपासा और सरल किन्तु सहानुभूतिपूर्ण प्रकृति के कारण सम्मानित जेफरसन का गवर्नर के आवास में होने वाले भोजों के अवसर पर चतुर्थ साथी के रूप में स्वागत होता था। जहाँ यह लोग मान्यताओं, राजनीति, साहित्य और संगीत के विषय में तल्लीनतापूर्वक विवाद करते थे। जेफरसन बातचीत करने में बहुत पटु थे—एक आत्म जागरूक सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि इसलिए कि विचारों में उनकी बहुत दिलचस्पी थी और मानव-स्वभाव, इतिहास और विज्ञान के विषय में अनन्त उत्सुकता थी। किस प्रकार के वार्तालाप की उनमें सामर्थ्य थी, यह उनके पत्रों से प्रकट होता है: विनम्र, शिष्ट, शान्त; पूर्णतया सच्चे और ईमानदार; दार्शनिकता में भीगे हुए; तिस पर भी अपने अनुभव और विस्तृत अध्ययन द्वारा एक निश्चित सामग्री से परिवेष्ठित।

१७६२ के वसन्त में विलियम और मेरी से ग्रेजुएट होने के बाद जेफरनसन ने जॉर्ज वाईथ के संरक्षण में ५ वर्ष तक कानून का अध्ययन किया। कानून के प्रति उनका दृष्टिकोण अच्छे विचारों का स्वतः परिचायक है। वह मानते थे कि शासन-कार्य-विधि को समझने के लिए कानून का ज्ञान अनिवार्यतः पूर्वापेक्षित है। उन्हें विश्वास था कि राष्ट्रीय इच्छा को सुस्थिर करने के लिए एक अच्छी सरकार कानून पर आश्रित रहती है।

एक दल के रूप में वकीलों की बाल की खाल निकालने वाली पारिभाषिक शब्दावली का अनुभव करते हुए और कानून में पूर्वघटित उदाहरणों का महत्त्व समझते हुए, उन्होंने इसे केवल लोगों की सेवा का साधन और उनके स्वामी की अपेक्षा इसे रक्षण मानकर अपनाया था। उस ज़माने में उनका एक सफल वकील बनना उचित ही था, किन्तु इससे भी अधिक उचित यह था कि वह जीवन-वृत्ति के रूप में वकालत का परित्याग कर दें।

जेफ़रसन ने जब राजनीतिक जीवन आरम्भ किया, तो वह अपने तीसवें वर्ष की समाप्ति पर थे। जनवरी १७७२ में उन्होंने बाल-विधवा, मार्था वेल्स स्केल्टन के साथ विवाह किया। विवाह के उपरान्त वह अपने अधूरे बने मॉण्टी सेलो नामक आवास में रहने लगे थे। यह स्थान उनके पुराने घर शैडवैल से निकट ही था। १७७० में शैडवैल अग्नि-कांड के कारण नष्ट हो गया। अपने विवाह के समय तक, वह कुछ राजनीतिक अनुभव भी प्राप्त कर चुके थे। विलियम्सबर्ग में कानून के विद्यार्थी के रूप में पैट्रिक हेनरी के वक्तृत्व की प्रदर्शन-शक्ति से वह बहुत प्रभावित हुए थे। वर्जिनिया-प्रतिनिधि-सभा में १७६५ के स्टांप-एक्ट विरोधी प्रस्ताव की बहस के अवसर पर पैट्रिक हेनरी ने अपने वाक्-चातुर्य का अनोखा परिचय दिया था। वह १७६६ से वर्जिनिया-प्रतिनिधि-सभा के सदस्य थे। उनका सबसे पहला कार्य दासों की मुक्ति-सम्बन्धी एक असफल विधेयक था।

जो भी हो, ब्रिटिश औपनिवेशिक सम्बन्धों के उपस्थित संकट ने विधान सभा के नित्य-प्रति के कार्यों को आवृत कर लिया था। तृतीय जॉर्ज के राजनीतिक और आर्थिक आतंकों के विरुद्ध जनता में भयंकर रोष उत्पन्न हो गया और फलस्वरूप १७७२ में 'गैस्पी' नामक ब्रिटिश जहाज को जला दिया गया। जब सम्राट् ने इस कार्य के लिए सन्दिग्ध 'विद्रोहियों' को इंगलैण्ड भेजे जाने की धमकी दी, तो जेफ़रसन और पैट्रिक हेनरी सहित वर्जिनिया के देश-भक्तों के एक छोटे-से दल ने निर्णय किया कि भावी ब्रिटिश अतिक्रमणों के विरुद्ध पत्र-व्यवहार को औपनिवेशिक समितियों को रक्षा के लिए कार्यवाही करनी चाहिए।

इस प्रकार के कृत्यों से, अनिवार्यतः अन्तः-औपनिवेशिक बन्धन सुदृढ़ हो गए। उदाहरण के लिए, सबसे प्रथम 'असहनीय कृत्य', १७७४ में बोस्टन के बन्दरगाह को तब तक के लिए बन्द कर देना था, जब तक कि मेसाच्युसेट्स पूर्व वर्ष की बोस्टन चाय-पार्टी का व्यय न चुका दे। जब यह समाचार विलियम्सबर्ग पहुँचा तो जेफरसन तथा वर्जिनिया-धारा-सभा के अन्य युवक-सदस्यों ने मेसाच्युसेट्स के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाने के लिए उपवास और प्रार्थना का दिन निश्चित किया। इन दिनों वर्जिनिया नीति पर इसी युवक-दल का अधिकार था। इस पर वर्जिनिया के शाही गवर्नर डन्मोर ने एक बार पुनः धारा-सभा को भंग कर दिया। सदैव की भाँति 'रैले विभान्ति-गृह' की रंगशाला में सभा हुई और सदस्यों ने अन्तः-औपनिवेशिक कांग्रेस की बैठक का आयोजन किया।

इस गतिशील राष्ट्रीय कृत्य के लिए संचालन-यन्त्र का निर्माण किया गया। जेफरसन ने प्रस्ताव लिखने आरम्भ किए। यह प्रस्ताव अन्य प्रान्तों और उपनिवेशों की अपेक्षा अधिक उग्र और अधिक अच्छे लिखे हुए थे। 'अल्बेमार्ले प्रान्त के प्रस्तावों' में उन्होंने ब्रिटिश आतंक के विरुद्ध कुछ तर्कों का पुनः विवरण दिया। इसके बाद ही जेफरसन ने 'ए समरी व्यू ऑव द राइट्स ऑव ब्रिटिश अमरीका' नाम से प्रकृतिदत्त अधिकारों एवं सीमित शासनाधिकारों के विषय में उत्तेजनापूर्ण पुस्तिका लिखी, विलियम्सबर्ग में (अगस्त १७७४) वर्जिनिया कन्वेंशन में पढ़े जाने पर ये प्रस्ताव अत्यधिक क्रान्तिकारी समझे गए और स्वीकृत न हुए। तिस पर भी उन्हें छापा गया और उनका विस्तृत प्रचार किया गया। तब से लेकर, जो भी महत्त्वपूर्ण लेखन के दायित्व होते, वह प्रायः हमेशा ही जेफरसन को अपने-आप सौंपे जाते थे।

जून १७७५ में, जब जेफरसन द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस में वर्जिनिया के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए, तो जॉन एडम्स के कथनानुसार, वह पूर्णतः 'साहित्य, विज्ञान और लेखक के रूप में' ख्याति प्राप्त कर चुके थे। यह अनिवार्य था कि कांग्रेस ऐसे चतुर व्यक्ति का पूर्णतः उपयोग करती

और शीघ्र ही स्वतन्त्रता के निमित्त जेफरसन की लेखनी को काम में लगाया गया। आगामी वर्ष जब वह कांग्रेस में आये, तो उन्हें बैंजामिन फ्रैंकलिन और जॉन एडम्स सहित पाँच-सदस्यों की समिति में नियत किया गया। इस समिति को अमरीका के इतिहास में एक महानतम दायित्व सौंपा गया था—ग्रेट ब्रिटेन से स्वाधीन होने के लिए नियमित घोषणा-पत्र लिखने का कार्य। इस लेखन की रचना का उत्तरदायित्व अकेले जेफरसन पर छोड़ा गया। वैधानिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रश्नों में प्रबलतापूर्वक तर्क करने और भावुकता एवं कलापूर्ण चातुर्य के साथ लिखने के लिए तथा निर्णयों को तौलने के लिए विश्वास उनके प्रति प्रदर्शित किया गया था, वह उचित ही था। घोर विवाद के उपरान्त, यह लेख्य अन्ततः ४ जुलाई १७७६ को कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया। एडम्स, या फ्रैंकलिन, अथवा स्वयं कांग्रेस द्वारा जहाँ तहाँ छाँटने और सुधारने के अतिरिक्त लगभग समूचा घोषणा पत्र जेफरसन का ही लिखा हुआ था, और असंदिग्ध रूप में यह उनके प्रारम्भिक जीवन की विजय एवं पराकाष्ठा थी। यह बात नहीं कि जेफरसन को इस दस्तावेज की महत्ता का भान न हो। उन्होंने अपने जीवन में तीन उल्लेखनीय काम किये थे—यह घोषणा-पत्र; धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए वर्जिनिया में घोषित नियम; और वर्जिनिया में विश्वविद्यालय की स्थापना। उनकी इच्छा थी कि इन तीनों में से घोषणा-पत्र को उनकी कब्र पर स्मृति-रूप में उल्लिखित किया जाय।

३३ वर्ष की आयु में समिति द्वारा शासन-कला के विशेषज्ञ के रूप वह प्रख्यात हो गए। यदि उन्होंने राजनीतिक नेतृत्व को अपने जीवन का ध्येय चुना होता, तो यह विश्वास करना युक्तियुक्त होता कि वह इस स्थिति को प्राप्त कर सकते थे। इसके विपरीत, उन्होंने ऐसी बातें चुनीं जो उनके व्यक्तित्व को प्रकट करती हैं, और साथ ही यह भी बताती हैं कि वह हमेशा क्या होना पसन्द करते थे। उनकी पत्नी के लिए घर से उनकी अनुपस्थिति कष्टकर थी। उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। अपनी सम्पत्ति के प्रबन्ध के लिए उनकी उपस्थिति की आवश्यकता थी। मोंटिसेलो में श्रीमती जेफरसन

के पास लौट आना उन्होंने बेहतर समझा और अपनी सार्वजनिक सेवा वर्जिनिया को सौंप दी।

तीन वर्ष तक उन्होंने बहुत श्रम के साथ कार्य किया, और अपनी इस पसन्द के लिए उन्हें थोड़ा यश भी प्राप्त हुआ। अक्तूबर १७७६ में वर्जिनिया की प्रतिनिधि-सभा में निर्वाचन होने पर जेफरसन वर्जिनिया के कानूनों के सुधार के आयोग में संलग्न हो गए। यह सुधार स्वाधीनता के घोषणा-पत्र में निहित मनुष्य के 'अविच्छेद्य अधिकारों' को दृष्टि में रखते हुए किये जाते थे।

उन्होंने समय नष्ट न करके न्यायालयों के पुनःसंगठन के लिए एक विधेयक उपस्थित किया। और, इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण एक अन्य विधेयक उपस्थित किया, जिसका उद्देश्य ऐसी स्थिर सम्पत्ति का उन्मूलन था जिसे उत्तराधिकार अलग न कर सके; और इस कार्य द्वारा उन्होंने समाज के पुराने शिष्ट ढाँचे का अन्त कर दिया। उन्होंने अपनी शक्तियों को वर्जिनिया के कानूनों का आमूल सुधार करने में लगाया। यह संशोधन १७७६ में पूर्ण हुआ; तिस पर भी इनमें से अधिकांश विधेयक १७८५ अथवा बाद तक भी कानून का रूप धारण नहीं कर सके थे। इस बीच, जेफरसन को जो भी समय मिलता, उसे वह कानून की कुछ बुराइयों को छाँटने और उन्हें आधुनिक रूप देने में लगाते थे। और इसके अलावा, उन्होंने शिक्षा के सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्यवसाय किया और शिक्षा की विस्तृत प्रणाली की सुव्यवस्थित योजना का प्रस्ताव किया। और अपने उच्चतम कार्य के रूप में, उन्होंने चर्च और राज्य को पृथक् करके वर्जिनिया के कानूनों में धार्मिक सहिष्णुता लाने की चेष्टा की। १७८५ में, अन्ततः जब "धार्मिक स्वतन्त्रता की स्थापना का विधेयक" स्वीकृत हुआ, तो उन्होंने उसे अमरीकी समाज के लिए एक महान् देन के रूप में माना।

वर्जिनिया में सामाजिक क्रान्ति का नेतृत्व करने के अतिरिक्त जेफरसन को अपनी पत्नी और बच्चों के संसर्ग का आनन्द प्राप्त करने, प्रकृति और उसकी विचित्रताओं का अध्ययन करने, अपनी भूमि पर कृषि तथा निजी

मामलों का प्रबन्ध करने, सवारी करने और पढ़ने तथा अपने अनेक मित्रों एवं परिचितों को पत्र लिखने का समय मिल जाता था। जो भी हो, अभी बहुत समय नहीं बीता था कि सार्वजनिक सेवा-कार्य के लिए उनकी पुनः माँग हुई।

जून १७७६ जेफरसन वर्जिनिया के गवर्नर निर्वाचित हुए। उन्होंने अपना यह जीवन एक आशायुक्त सार्वजनिक कार्य-पालक के रूप में आरम्भ किया। उन्हें अपनी योग्यता पर भरोसा था और अपने यहाँ के लोगों से स्नेह एवं आदर का विश्वास था। कुछ भी हो, यदि अन्य कोई वर्ष होते, तो वह राज्य के मुखिया के लिए काम खतरे के होते। जेफरसन ने उस समय अपने कर्तव्यों का भार उठाया था, जब वर्जिनिया पर ब्रिटिश आक्रमण कर रहे थे; समुद्र पर उनका अधिकार था और वे अस्त्र एवं शस्त्रों को छीनने तथा सम्पत्ति को नष्ट करने के लिए लुटेरे दलों को भेज सकते थे। वर्जिनिया के पश्चिमी सीमान्त पर इण्डियनों का युद्ध निरन्तर चिन्ता और परेशानी का कारण बन गया था। सरकारी कोष में रुपया इतना कम हो चुका था कि वर्जिनिया के इतिहास में उसका उदाहरण नहीं। जनरल वाशिंगटन को उत्तर में वर्जिनिया से सहायता की आवश्यकता थी। नये राष्ट्र का समर्थन करने के लिए कैरोलिनास के युद्ध-क्षेत्रों में आदमियों और रसद की आवश्यकता थी। १७८१ तक गवर्नर ने अपने को केवल दर्शक की स्थिति में पाया। उसके हाथ बँधे हुए थे, ब्रिटिश उसके राज्य को लूट रहे थे, आग लगा रहे थे और ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते थे, विनाश कर रहे थे। जेफरसन ने जनरल वाशिंगटन को कार्नवालिस के आक्रमण के खतरे का सामना करने को सेना भेजने के लिए आवेदन किया, किन्तु वाशिंगटन उत्तर में संलग्न थे और आदमियों की भी कमी थी, इसलिए वह कुछ न कर पाए। फलस्वरूप वर्जिनिया की रक्षा का भार युद्ध-शिक्षा न पाए हुए अपर्याप्त रक्षक सैनिकों पर पड़ा। स्वयं जेफरसन कर्नल टार्लेटन द्वारा भेजी सेनाओं के हाथ से बाल-बाल बच निकले। विधान-सभा के सदस्यों ने अपमान सहकर नई राजधानी रिचमण्ड में बाध्य होकर आश्रय लिया। जेफरसन, राज्य के अग्रणी

होने के बाद, आलोचना और अपमान सहने के लिए
रह गए।

किसी प्रमाण ने यह सिद्ध नहीं किया कि जेफरसन
[illegible] प्राप्त करने की चेष्टा में संलग्न थे। निःसन्देह,
और दाँव को छिपे रखते थे तथा बाद की गलती से
यह [illegible] रूप में सदैव गवर्नर थे। वह परिश्रमी,
भारी [illegible] के किसी के [illegible] थे। स्वभावतः उन
की आवश्यकता थी। और जेफरसन न तो [illegible] करते
सकते थे। [illegible] और अपनी दूसरी प्रकृति की
अपने किसी को फौजी गवर्नर का समर्थन करने के लिए
और स्वयं अपने कार्य से निपुण होने की योग्यता थी।

विधान-सभा के [illegible] सदस्यों द्वारा कर्तव्य-च्युत होने
की तुलना में गवर्नर के रूप में जेफरसन के कार्यों का कठिन
बिलकुल विपरीत है। जब युद्ध का भय शान्त हो गया, तो
तत्काल भाव से एक सरकारी प्रस्ताव द्वारा जेफरसन पर लगा
को हटा लिया। किसी भी सार्वजनिक मैत्री के लिए ये अनुप
होते; क्योंकि जेफरसन सम्पूर्ण हार्दिकता के साथ जन-सेवा
किसी भी प्रकार की शत्रुता उनमें लेश मात्र भी न थी। गवर्नर
अन्तिम मास तो अत्यधिक परेशानी के थे। तिस पर भी,
आध्यात्मिक रूप में वह सुदृढ़ व्यक्ति थे, और उसी के ब
एक ऐसा यथार्थवादी दृष्टिकोण प्राप्त कर लिया था, जिसके का
के वर्षों में लाभ हुआ।

मांटीसेलो आवास में जेफरसन लेखन कार्य में पूर्णतया
१७८१ में उनकी कलाई पर चोट लग गई थी और कुछ
घुड़सवारी के अयोग्य बने रहे। इन लाचारी के दिनों में उन्होंने
स्थित फ्रांसीसी दूतावास के मन्त्री, मार्किस मार्बोइ द्वारा पूछे
के विषय में अनेक प्रश्नों का सावधानी के साथ उत्तर दिया।

से जेफरसन आस-पास के इलाके के विषय में गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर रहे थे। उस अध्यवसाय में जलवायु, उसके प्राकृतिक सौन्दर्य, उसके पशु और वनस्पतियों, खनिजों, जल-मार्गों, कृषि और उसके शासन-प्रबन्ध—इन सब विषयों का एक प्रभावशाली संकलन उन्होंने किया था। बाद में यह पाण्डु-लिपि 'नोट्स ऑन वर्जिनिया' के रूप में प्रकट हुई। यह उल्लेखनीय पुस्तक, जो बाहरी प्रकृति के विवरणों के गहन विश्लेषण से सम्पन्न है और जिसमें उसी प्रकार नैतिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रश्नों पर भी स्पष्टीकरण किया गया है, आने वाले वर्षों में दोनों महाद्वीपों के वैज्ञानिकों और विद्वानों द्वारा पढ़ी गई।

इन लेखन-कार्य के महीनों में जेफरसन को जो बौद्धिक आनन्द और सुख प्राप्त हुआ था, वह शीघ्र ही महानतम व्यक्तिगत क्षति के कारण विलीन हो गया। उनकी पत्नी मई १७८२ में अपनी अन्तिम कन्या के जन्म-काल से रोग-शैया पर पड़ी थीं, और उसी वर्ष सितम्बर के आरम्भ में उनकी मृत्यु हो गई। पत्नी की मृत्यु के उपरान्त जेफरसन तीन सप्ताह तक अपने कमरे में ही बन्द रहे, और उनकी पुत्री मार्था के शब्दों में वे "लगभग निरन्तर रात और दिन टहलते रहते थे और केवल कभी-कभी लेट-से जाते, जब वह पूर्ण-तया थक जाते थे।" वह अत्यधिक संयमी थे, उन्होंने अपने पत्रों में यदा-कदा ही अपनी पत्नी का उल्लेख किया है। तिस पर भी, उनके निकटतम साथी यह भली भाँति जानते थे कि वह उस स्त्री को कभी विस्मृत नहीं कर सके जिसके साथ दस वर्ष तक वह रहे थे और जिसे उन्होंने प्रेम किया था। बहुत वर्षों बाद, जब लाफेयेट की पत्नी की मृत्यु हो गई तो उन्होंने जेफर-सन को उस एक व्यक्ति की भाँति लिखा था कि जो इस प्रकार के दुःख में पड़ा हुआ अपनी अनन्त वेदना को भली भाँति समझ सकता था।

श्रीमती जेफरसन की मृत्यु के उपरान्त के महीनों में राजनीति से विरक्त-चित एकान्त व्यक्ति के लिए मांटेसेलो का सामान्य सौन्दर्य लुप्त हो चुका था। पूर्वतः उन्होंने एकाएक अनेक सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने से इन्कार कर दिया था। किन्तु वह दिन आया, जब उन्होंने यूरोप में सन्धि-वार्ता के

लिए जाना स्वीकार किया। लेकिन जब यह मालूम हुआ कि प्रारम्भिक वार्तालाप हो चुका है, तो उनकी यात्रा स्थगित कर दी गई। थोड़े ही दिनों बाद (जून १७८३ में) वर्जिनिया की जनरल एसेम्बली ने जेफरसन को कांग्रेस-संघ के लिए प्रतिनिधि निर्वाचित किया। वहाँ उन्होंने पुनः महत्त्वपूर्ण कमेटियों का नेतृत्व किया और कई पोर्टों तथा सरकारी पत्रों के लेख्य निर्माण किये। यहाँ उन्होंने प्रस्तावित मुद्रा-प्रणाली की आलोचना की और अपने लेखन 'मुद्रा इकाई के स्थापन पर अंकन' (Notes on the Establishment of Money unit) द्वारा उसके स्थान पर गम्भीर सिक्का-प्रणाली का प्रयोग प्रदान किया। उन्होंने पश्चिमी प्रदेश (वस्तुतः जो 'उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के आर्डीनेंस' के नाम से विख्यात है) की अस्थायी सरकार का लेख्य तैयार किया। इस लेख्य में उन्होंने पूर्वस्थित और नये राज्यों के बीच समानता के महत्त्व पर जोर दिया और सब प्रदेशों से दासता को निकालने की चेष्टा की। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक सम्बन्धों की आवश्यकता का समर्थन किया और अप्रैल तथा मई १७८४ में यूरोपीय राष्ट्रों के साथ व्यापारिक सन्धियाँ करने वाले सचिवों के लिए सूचनाओं का संग्रह किया।

अन्ततः ७ मई १७८४ में जेफरसन को बैंजामिन-फ्रैंकलिन और जॉन एडम्स की सहायता के लिए, जो दोनों ही उनसे पूर्व व्यापारिक सन्धियों के लिए यूरोप रवाना हो चुके थे, अमरीका का पूर्ण शक्ति-सम्पन्न महादूत नियत किया गया। इस प्रकार व्यापारिक माध्यम से जेफरसन यूरोपीय रंगमंच में प्रविष्ट हुए, जहाँ कूटनीति और समाज, कला एवं विज्ञान तथा क्रान्ति और प्रेम ने उनके जीवन के इन वर्षों को सबसे अधिक समृद्धिशाली बनाया।

एक दृष्टि से, पेरिस रवाना होने से पूर्व ही जेफरसन काफी अनुभवी हो चुके थे और सम्पन्नता के उच्च शिखर को प्राप्त कर चुके थे। दूसरी दृष्टि से, मनुष्यों और विचारों को समझने के लिए वह यूरोप में ही परिपक्व हुए। आदतों का वह पेचीदा ढाँचा, जिसने इस काल तक जेफरसन के चरित्र का निर्माण किया था—उनका कौतूहल, उनका धैर्यपूर्वक अध्यवसाय, उनका तौर तरीकों के प्रति उनका आकर्षण, उनके चारों ओर के लोगों

का व्यक्तित्व और उनकी आवश्यकताएँ—उनके पंचवर्षीय विदेशी आवास में निखर गया। उन्होंने विदेशी दार्शनिकों, विदेशी लेखकों, विदेशी राजनीतिज्ञों और सब मतों, पंथों और सिद्धान्तों के वेत्ताओं की बातों को बहुत ध्यान से सुना। उन्होंने किताबें खरीदीं, जिनमें से अनेक पुरानी किताबों की दुकानों पर चक्कर काटकर खरीदी गई थीं, उनके शब्दों को उन्होंने जहाँ-तहाँ से चुन-चुनकर पुरातन साहित्य का संग्रह किया। उन्हें जिस बुद्धि-सम्पन्न यूरोपीय काल में उस समय कार्य करना था, उसके विषय में उन्होंने प्रगतिशील कला और मानवता के साहित्य का संग्रह किया। वह फ्रांसीसी समाज के नेताओं से मिले। वह पैरिस के उच्चतम बौद्धिक और शक्तिशाली कला-गृहों में हमेशा आने-जाने के अभ्यस्त हो गए। १७८५ में फ्रैंकलिन के अमेरीका चले जाने पर जेफरसन को फ्रांस राज्य में महादूत सचिव बना दिया गया। उन्हें वर्जिनिया के भद्र पुरुष के रूप में अमरीकी जनतन्त्र के विवेक का प्रतीक माना जाता था—"फ्रैंकलिन की जगह नहीं" जैसा कि उन्होंने सौम्यतापूर्वक कहा था, बल्कि उनके प्रशंसनीय 'उत्तराधिकारी' के रूप में।

लाफेयट बहुत ही मूल्यवान मित्र साबित हुए। उन्होंने जेफरसन को यूरोपीय शाही राजनीति की पेचीदगियों की शिक्षा दी। अमरीकन सचिव को किसी प्रकार की सूचना अथवा सम्पर्क की आवश्यकता होने पर लाफेयट के मित्र और परिचित जेफरसन की सहायता के लिए उपलब्ध होते थे। बदले में, जेफरसन उस प्रबल शिष्ट व्यक्ति और देशभक्त को परामर्श दिया करते थे। स्वतन्त्र जनतन्त्रीय जन-संघ के योद्धा के रूप में उनके अनुभवों को लाफेयट बहुमूल्य समझते थे। जैसे-जैसे क्रान्ति की शक्तियाँ फ्रांस में जोर पकड़ती जाती थीं, वैसे-वैसे ही लाफेयट जेफरसन के साथ अधिकाधिक परामर्श करते थे। वह जेफरसन की बातें सुनने के लिए अपने अनेक राजनीतिज्ञ मित्रों को लाते और उनकी मेज के चारों ओर लोगों का जमाव बना रहता था। उस समय जेफरसन को यह विश्वास था कि लोगों की आवश्यकताओं और राजा के विशेषाधिकारों पर विचार-विनिमय से समझौता सम्भव है। उनकी राय

थी कि एक ऐसी मौलिक शासनपद्धति रक्त-पात के बिना बनाई जा सकती है, जो अत्याचारक राष्ट्रीय व्यवस्थाओं का निराकरण करने के योग्य हो। उन्होंने प्रस्ताव किया कि राजा द्वारा लोगों के लिए एक अधिकार-पत्र उपस्थित किया जाए, और वह इस दिशा में इतना आगे बढ़े कि उन्होंने अधिकार-पत्र का लेख्य तैयार किया, जो उन्होंने लाफेयेट को भेज दिया।

यह अनिवार्य हो गया कि मौलिक राजनीतिक सिद्धान्तों-सम्बन्धी प्रश्नों पर जेफरसन अपने विचार स्वतन्त्रता से प्रकट करें। समय-समय पर, अपनी उस तटस्थता के भंग होने से चिन्तित होने पर, जिसमें आने वाले राजदूत शल्य में परिणत हो जाते थे, वह फिर अपने आत्म-संयम के खोल में घुस जाते थे और औचित्य का ध्यान रखते थे। यहाँ तक कि वे उस समय भी मौन बने रहते थे जबकि वह जानते थे कि क्या हो रहा है और इसको रोकने या इसके निर्देशन के लिए किस चीज की आवश्यकता है। लाफेयेट के अनुरोध से जेफरसन के आवास पर एक सभा हुई, जिसमें 'देश-भक्त (सुधारक) दल' के प्रमुख आठ सदस्यों ने धारा-सभा की ओर से विधान बनाने के कार्य पर कई घंटे खर्च किये। बाद में जेफरसन ने अपने इस आचरण के लिए यह सफाई पेश की कि वह उनके निकट पूर्ण चुप्पी साधे बैठे रहे, जब कि उनके 'शुद्ध वक्तृत्व' का राज्य आच्छादित था। आगामी प्रातःकाल ही उन्होंने विदेशी सचिव काउण्ट माण्ट मोरिन से भेंट की। जेफरसन ने उनके सम्मुख इस बात का स्पष्टीकरण किया कि क्यों उन्हीं के मकान को इस कार्य के लिए चुना गया और उनसे क्षमा-याचना की गई। माण्ट मोरिन को जो-कुछ हुआ था, उन्हें उसका पूर्वतः ज्ञान था। उन्होंने भविष्य में होने वाली इस प्रकार की सभाओं के विषय में जेफरसन से सहायता की याचना की; क्योंकि वह जानते थे कि जेफरसन 'सम्पूर्ण और व्यावहारिक सुधार' के पक्ष को ही अपना समर्थन प्रदान करेंगे।

जेफरसन के लिए यह वर्ष सुखद एवं राजनीतिक तथा बौद्धिक प्रेरणा देने वाले थे। मार्था, उनकी सबसे बड़ी बेटी, आरम्भ से ही अपने पिता के साथ थी; डेढ़ वर्ष के पश्चात्, छोटी बेटी मेरी भी अपने पिता की छत्र-

छात्रा में रहने के लिए पेरिस आ गई। और शुरू की गरमियों में उसकी मरिया कासवे से भेंट हुई, जो फ्रांसीसी और ब्रिटिश राजकवियों में सबसे सुन्दर एवं गुणवती स्त्री थी। एक फेशनेबल अंगरेज चित्रकार की इस पत्नी, मरिया कासवे, ने जो चित्ताकर्षक और चतुर थी, जेफरसन को इतना अधिक प्रभावित किया कि जितना कभी किसी ने नहीं किया। १७८६ के पतझड़ में जब कासवे-पति-पत्नी पेरिस से चले गए, तो जेफरसन नितान्त असहाय हो गए। उन्होंने मरिया को अपने जीवन काल का सबसे लम्बा पत्र लिखा। उस पत्र में उन्होंने उत्तेजना के साथ 'हृदय और मस्तिष्क के बीच संवाद' लिखा था। इस संवाद में संयम ने मस्तिष्क को विजयी बनाया था, किन्तु इतने अनिश्चित ढंग से कि लेखक और वह स्त्री—दोनों ने ही इस तर्क को सारहीन समझा होगा और वे अत्यन्त दुःखी हुए होंगे। दक्षिणी फ्रांस और इटली की इसके बाद भी यात्राओं में, और उसके बाद भी जेफरसन ने पहले से भी अधिक घनिष्ठता के साथ उसे पत्र लिखे। इसमें सन्देह नहीं कि उनके प्रेम के बदले मरिया कासवे ने भी उन्हें अपना प्रेम दिया। बाद के वर्षों में, जब जेफरसन ने मरिया को अपने उन मित्रों और चहेतों के दल के बिना पेरिस आने के लिए लिखा जो कि उसे जेफरसन से छिपा रखने का प्रबन्ध करते थे तो वह उनकी इस बात के लिए भर्त्सना करती है कि वह उसे पर्याप्त रूप से पत्र नहीं लिखते और न इतने दिनों से उससे मिलने लन्दन आये; और सच तो यह है कि उन्होंने हृदय को अपने मस्तिष्क पर विजयी नहीं होने दिया।

पेरिस में अपने जीवन का पूर्ण आनन्द लेते हुए, केवल अत्यावश्यक कर्तव्य ही जेफरसन को यूरोप छोड़ने के लिए बाध्य कर सकते थे। उनकी इच्छा थी कि उनकी पुत्रियों का उस दुनिया में पालन-पोषण हो, जिसमें उन्हें विवाह करना था और जीवन बिताना था, उनका विश्वास था कि अल्पकाल के लिए ही सही, अपने लोगों और अपनी सरकार के साथ व्यक्तिगत सम्बन्धों को नया करना अनिवार्य होता है। इन कारणों से, उन्होंने अमरीका लौट जाना अच्छा समझा। चलने से कुछ समय पहले,

न देश में भेजीं, और अमरीका को 'ऐसी घासों के असली बीज, जो नहीं होते थे, और जैतून के पौधे और इटली के चावल भेजे। इससे दृकर, न तो कभी वह कोयल के संगीत को ही छोड़ सके और न ही और आकाश के रंगों का अंकन करना भूल सके।

अमरीका लौटने पर, यही नहीं कि जेफरसन आन्तरिक रूप में ही हो चुके थे; प्रत्युत यह सबकी राय थी कि उन्हें फ्रांस में अमरीकी त के रूप में असाधारण सफलता प्राप्त हुई है। यहाँ तक कि आलोचक रवर्ग रिव्यू' ने भी यह माना था कि "वह चतुराई और ज्ञान, कि जिससे आवास-काल में उन्होंने राष्ट्रीय हित के भिन्न प्रश्नों का समाधान फ्रैंकलिन की राजदूत-विषयक योग्यता के साथ तुलना करने पर भी दृत ोता।"

मरीकन समस्याओं को हल करने में उतनी ही निपुणता की आव- ा थी; और वे उतनी बाध्य करने वाली थीं, जितनी कि जनतन्त्री फ्रांस स्याएँ। वह विधान अब गम्भीरतापूर्वक लागू किया जा रहा था, रसन की अनुपस्थिति में स्वीकृत हुआ था और जिसके विषय में उन्होंने ो कई आलोचनापूर्ण पत्र भी लिखे थे। जैसे ही जेफरसन का जहाज पहुँचा, उन्होंने समाचार पत्रों में देखा कि प्रेसीडेंट वाशिंगटन अपना न्त्रि-मण्डल निर्माण करने में व्यस्त हैं, और उनकी इच्छा उन्हें चेव बनाने की है। कुछ दिनों के पश्चात्, नवम्बर में, उन्हें इस की पुष्टि में वाशिंगटन का एक पत्र मिला। जेफरसन के उत्तर से प्रकट होती थी, उन्होंने लिखा कि वह पैरिस लौटना चाहते हैं, ो महत्त्वपूर्ण और दायित्व के पद को ग्रहण करने में उन्होंने संकोच किया। इस पर प्रेसीडेंट ने विनीत भाव से किन्तु दृढ़तापूर्वक न्हें निमन्त्रित किया। मैडिसन ने भी थोड़ा-सा व्यक्तिगत दबाव ोर यह काम हो गया। मॉण्टीसेलो में रहने के अब कुछ ही मास थे। उस बीच उन्होंने फ्रांस में अपने मित्रों को स्मरण किया,

पत्र द्वारा उनके विश्वासों और आने वाले प्रतिक्रियावादी राजनीतिक दुनिया के लिए तैयार किया जो कि व्यक्तियों और समस्याओं से परिपूर्ण थी, और जिसमें अब उन्हें प्रवेश करना था।

मार्च १७९० में न्यूयार्क पहुँचने के बाद, फ्रांसीसी क्रान्तिकारी देश-भक्तों की राजनीतिक शक्ति और भावना से उन पुराने ढंग के अनुदार राज-भक्तों की तुलना करने पर, जो कि उन दिनों न्यूयार्क-समाज के नेता बने हुए थे, जेफरसन को चोट पहुँची। 'जनता' की भावना और उत्तरदायित्व पर जनतन्त्री निर्भरता के लिए प्रारम्भिक संघर्ष ने इन क्षेत्रों को अभी विजयी नहीं किया था। जेफरसन ने उन्हें उसी प्रणाली के पीछे भटकता पाया, जिसका भ्रष्टाचार और पतन उन्होंने यूरोप में देखा था—धनिकों के विशेषाधिकारों की वह प्रणाली, जो यदि नाम में ऐसी नहीं थी, किन्तु कार्य रूप में राजा का नेतृत्व ही मानती थी। जेफरसन का विश्वास था कि ये जनतन्त्र के विरोधी शासन की ब्रिटिश योजना की चापलूसी के साथ प्रशंसा करते हुए प्रगति के मार्ग में महानतम बाधा बने हुए थे। प्रारम्भ में, जेफरसन ने यह कहते हुए दलीय सदस्यता के विषय में आपत्ति की थी, "यदि दल के बिना मैं स्वर्ग में नहीं जा सकता, तो मैं वहाँ जाना कदापि नहीं चाहूँगा।" इस दृष्टिकोण के बावजूद, विधान के प्रति उनके सामान्य समर्थन और लोगों को तथा उनकी स्थानीय सरकारों को संगठित करने में उसकी लाभकारिता में उनके विश्वास ने उन्हें फेडरलिस्टों का विरोधी होने की अपेक्षा उन्हें फेडरलिस्टों के निकट ला खड़ा किया। अब वह विधान, अधिकारों के विधेयक द्वारा पूरक बनकर, अमरीका में जनतन्त्री प्रणाली का असंदिग्ध अधिकार-पत्र बन गया था। अब वहाँ कोई भी राजनीतिक दल विद्यमान नहीं था। लेकिन भिन्न राजनीतिक विश्वासों के संघर्ष से अनिवार्यतः राजनीतिक दलों का विकास हुआ।

अलैक्जेंडर हैमिल्टन ने, जो वाशिंगटन का चतुर एवं कामनापूर्ण कोष-सचिव था, अपने को जेफरसन के राज-सचिव का पद ग्रहण करने से पूर्व ही एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में प्रमाणित कर दिया था। राष्ट्रीय ऋण

को उसकी सही कीमत पर चुकाने की उसकी योजना पूर्वतः स्वीकृत हो चुकी थी। हैमिल्टन (Assumption Bill) एसम्पशन-विधेयक को उपस्थित करने में व्यस्त था। उसने उसे अमरीका की साख को विशेषकर विदेश में प्राप्त करने के एक-मात्र क्रियात्मक उपाय के रूप में जेफरसन के सामने पेश किया। जेफरसन यह जानते थे कि धूर्त और सट्टेबाज इस प्रकार के राष्ट्रीय उपाय के पूर्व-ज्ञान के कारण भोले नागरिकों से 'अर्थ-हीन' कागजी द्रव्य क्रय कर रहे हैं। अतः वह इस योजना के विषय में संदिग्ध थे जिसमें राष्ट्रीय सरकार को राज्य के ऋणों का दायित्व लेना था। किन्तु हैमिल्टन ने बहुत चतुराई के साथ जेफरसन की दक्षिण में राजधानी बनाने की इच्छा को भाँप लिया। इस प्रकार उसने अपने एसम्पशन-विधेयक के लिए जेफरसन का समर्थन प्राप्त कर लिया और बदले में १० वर्ष की अवधि के बाद फिलेडल्फिया में पोटोमक में राष्ट्रीय राजधानी बनाने के लिए उत्तरीय समर्थन का वचन दिया। जब हैमिल्टन ने सफलतापूर्वक अपने एसम्पशन-विधेयक का अधिकार बैंक आव् द युनाइटेड स्टेट्स (अमरीकन बैंक) को सौंप दिया और उपरान्त आबकारी विधेयकों को स्वीकार करा लिया, तब जेफरसन ने अनुभव किया कि कितनी चतुराई के साथ उन्हें धोखा दिया गया है। उन्होंने महसूस किया कि 'सामान्य सिद्धान्तों' की जो समस्या हैमिल्टन और उनके बीच है, वह मौलिक रूप में एवं दृढ़तापूर्वक परस्पर विरोधी है। जेफरसन ने सोचा कि हैमिल्टन की सभी क्रियाओं का केवल-मात्र एक ही उद्देश्य है। कुछ अधिकार-सम्पन्न लोगों के लिए, और उनके द्वारा सरकार की स्थापना करना। वस्तुतः हैमिल्टन इसकी अपेक्षा भी कुछ अधिक ही चाहता था। वह चाहता था, और उसने प्रबलतापूर्वक संघर्ष भी किया था, कि एक राजा हो, उपाधियाँ हों, केन्द्रीय प्रबन्धक-समिति द्वारा शासन हो, और जनता के प्रतिनिधियों की अपेक्षा राजसी ठाठ-बाट भी हो।

जेफरसन ने मन्त्रि-मण्डल के पद की पीड़ा से निवृत्त होने के लिए बारम्बार यत्न किया, जहाँ कि राजधानी में शक्ति के लिए सबसे अधिक भूखे आदमियों के विरुद्ध उन्हें निरन्तर मोर्चा लेना पड़ रहा था। यह कटु राज-

नीतिक संघर्ष अब मन्त्रि-मण्डल के अधिवेशनों तक ही सीमित नहीं रह गया था। यह विरोध दोनों दलों के दो समाचार-पत्रों में सार्वजनिक रूप में चल रहा था। एक पत्र जॉन फ़ेनो का 'यूनाइटिड स्टेट्स गज़ट' था, जो हैमिल्टन-वादियों का समर्थक था और दूसरा फिलिप फ़्रैनो का 'नेशनल गज़ट' था, जो जेफ़रसन-वादियों का प्रबल पोषक था। इस विरोध की भावना में प्रश्नों का अतिशय अथवा विषम रूप हो जाता था। मैडीसन और जेफ़रसन के चारों ओर जुटने वाले दल अपने को जनतन्त्री जनवादी समझने लगे थे। जिन्हें हैमिल्टन के शक्ति के केन्द्रीकरण के विचारों से सहानुभूति थी और जो उसके टैक्स लगाने, व्यापार को प्रोत्साहन देने, और उसकी महाजनी तथा साख-विषयक योजना की नीति से सहमत थे, वे नये फेडरलवादी दल के जन्मदाता थे।

केवल वाशिंगटन के बार-बार अनुरोध के कारण जेफ़रसन अपने पद पर स्थिर रह सके। इसके अतिरिक्त विश्व-विख्यात (Affair of Citizen Genet) 'नागरिक जेनेट की कार्यवाही' के रूप में फ़्रांसीसी-अमरीकी सम्बन्धों के अशान्तिपूर्ण विकास के कारण भी जेफ़रसन मॉण्टीसेलो लौटकर नहीं जा सके थे। *नागरिक जेनेट अप्रैल १७९३ में अमरीका पहुँचा था।* वह उन क्रान्तिकारी धारणाओं के साथ अमरीका आया था, जिनके आधार पर एक फ़्रांसीसी सचिव विदेश में अपना हिस्सा अदा कर सकता है। उसके नये स्थापित जन-तंत्र को उस युद्ध की सहायता के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता थी जो कि फ़्रांस और ग्रेट ब्रिटेन के बीच फरवरी १७९३ में *छिड़ गया था। जेनेट इस धन की प्राप्ति के लिए और ग्रेट ब्रिटेन के लिए* संकट खड़ा करने का दृढ़ निश्चय करके आया था। उसे सचमुच इस बात का विश्वास था कि फ़्रांस अमरीकन राज्यों की आस्था का अधिकारी है। इसके साथ ही, अमरीकन जनता भी फ़्रांस के जनतन्त्र का समर्थन करने के लिए इतनी उत्साही थी कि इंगलैण्ड के साथ युद्ध होकर ही रहता। जेफ़रसन को हैमिल्टन और उनके अंगरेज़ों का पक्षपात करने वाले समर्थकों के साथ बहस करनी पड़ी थी कि फ़्रांस के साथ हमारी संधियाँ अब भी

ायज हैं, और वे फ्रांस को ऋण देने की अपनी नीति की घोषणा करें। ूसरी ओर, उनके समक्ष अमरीकी लोगों की बढ़ती हुई उत्तेजना को शान्त रने और जेनेट के बढ़ते हुए नियन्त्रणहीन आचरण की निन्दा करने की मस्या थी। जेनेट ने वाशिंगटन की तटस्थता की घोषणा (२२ अप्रैल ७६३) की भी उपेक्षा की थी। जब जेनेट ने देखा कि फ्रांस को ऋण देने े लिए अमरीकन उसकी आशा के अनुसार आगे नहीं बढ़े, तो उसने ्रेसीडेंट वाशिंगटन का उल्लंघन करके जनता तक इस प्रश्न को ले जाने की ात कही। फ्रांस के इस हेतु के लिए सहानुभूति होने पर भी, जेफरसन ो फ्रांसीसी सचिव की इस क्रिया पर हार्दिक दुःख हुआ—जो कि 'गरम मिजाजी, कोरी कल्पना, उत्तेजना, अनादरपूर्ण' व्यवहार की उपज थी; अगस्त ें जेनेट को वापिस बुला लेने की उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई, तिस र भी जेनेट निजी नागरिक के रूप में इस देश में रुका रहा।

अब जेफरसन अपने कार्य-भार से निवृत्त होने का अपना मार्ग देख रहे थे। उन्होंने अपने देश के वैदेशिक मामलों से सम्बन्धित वार्ता के कठिन कार्य को भली प्रकार सम्पन्न किया था। प्रेसीडेंट उनके जुदा हो जाने को अच्छा नहीं समझते थे। यहाँ तक कि जॉन मार्शल ने भी जेफरसन के प्रति अपनी पुरानी शत्रुता को कुछ समय के लिए त्यागकर यह माना था कि "यह भद्र-पुरुष ऐसे अवसर पर राजनीति से अलग हुए हैं कि जब देशवासियों में विशेष रूप से उनका उच्चतम मान था।" जनवरी १७६४ के मध्य में जेफरसन मॉण्टीसेलो लौट आए। अब उनके लिए एक बार पुनः साधारण नागरिक के जीवन के पुरस्कार अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए। वह स्वतन्त्र व्यक्ति की भाँति पढ़ सकते थे, लिख सकते थे, संगीत सुन सकते थे, अपने मित्रों और कुटुम्ब के बीच आराम के साथ बातचीत कर सकते थे और राजधानी के नित्य के संघर्षों में पड़े बिना ही अपनी राय प्रकट कर सकते थे। वह इस विचार पर फूले नहीं समाते थे कि उन्होंने सार्वजनिक जीवन से सदा के लिए विदाई ले ली है। उन्हें थकावट महसूस होने लगी थी। वह ५० वर्ष के थे, और उनका विचार था कि अब वह बूढ़े हो गए हैं।

अपनी 'निवृत्ति' के प्रथम एकांत के (प्रथम मासों के बाद) जेफरसन ने *अपनी पुरानी शक्ति को पुनः प्राप्त कर लिया। वह अपनी सम्पत्ति के कृषि-*कार्य का निरीक्षण करते और उन्होंने एक हल का निर्माण किया, जिसके *कारण कृषि में क्रांति उत्पन्न हो गई; उन्होंने अपने एक कारखाने में कीलें* बनाने का कार्य आरम्भ किया; उन्होंने अपने वाचनालय को एक उद्यान का रूप देना चाहा, उन्होंने मॉण्टीसेलो के भवन-निर्माण के नक्शों को बदल दिया, और निर्माण-कार्य का स्वयं निरीक्षण किया; उन्होंने अपने पड़ोसियों और समस्त यूरोप से आने वाले सदिच्छापूर्ण व्यक्तियों की आव भगत की। इन यूरोप से आने वालों में फ्रांसीसी जनतन्त्र के सुधारवादी भी थे और भूतपूर्व दरबारी उदार फ्रांसीसी भी थे। राजनीतिक समस्याओं की दलदल में न पड़ने की उनकी दृढ़ धारणा होने पर भी, उन्होंने, अनिवार्यतः, मैडीसन-जैसे पुराने मित्रों को नीति-विषयक पत्र लिखने आरम्भ किये—इन पत्रों में वह ब्रिटेन के साथ युद्ध को रोकने की चर्चा करते, और 'अंगरेज-अमरीकी, राजशाही, धनिक दल', अर्थात् फेडरलिस्टों की बढ़ती हुई शक्ति की चर्चा करते। उनका मत था कि ये लोग शासन-प्रणाली के जनतन्त्री सिद्धान्तों को दूषित कर रहे हैं।

अपनी 'निवृत्ति' के तीन सक्रिय वर्षों के बाद जेफरसन में पुनः ताजगी और प्रोत्साहन का संचार हुआ। उन्होंने राजनीति में भाग लेने की पुनः *इच्छा प्रकट की। फलस्वरूप, जब जनतन्त्री दल ने १७९६ में उन्हें प्रेसीडेंट* के लिए उम्मीदवार खड़ा करने का निर्णय किया (ऐसा करते समय *उनकी हार्दिक इच्छा थी कि मैडीसन दल के उम्मीदवार हों), तो उन्होंने संदिग्ध* मन से उसे स्वीकार कर लिया। जान पड़ता है, दल ने उन्हें जो मुख्यता *प्रदान की थी, उससे जेफरसन सत्य रूप में गतिशील हो गए थे, तिस पर* भी, इतने महान् कार्य का दायित्व लेने में वह संकोच कर रहे थे। जो भी *हो, उन्होंने अपनी आपत्तियों को लिखा, आन्त ओडिसिअस की तरह नहीं,* प्रत्युत एकाकी मन से दृढ़ निश्चयी होने के नाते।

इस प्रकार जेफरसन प्रेसीडेण्ट के लिए उम्मीदवार खड़े हुए, जैसा कि

ा विचार था, हैमिल्टन के विरुद्ध नहीं प्रत्युत जॉन एडम्स के विरुद्ध।
मन के साथ उनका दोस्ती का मुकाबला हुआ और फलतः, अपने
ल्ट विरोधी के मुकाबले में वह तीन मतों से रह गए। उस समय की
ली प्रणाली के अनुसार इसका तात्पर्य वाइस प्रेसीडेण्ट (उप-प्रधान)
जाना था। जेफरसन अपनी उम्र से बड़े एडम्स के अधीन कार्य करने
ह पूर्णतः प्रसन्न थे। पहले में उन्होंने एडम्स के साथ सहमति के साथ
भी किया था, और उन्होंने यह भी सोचा कि सम्भवतः उन्हें फेडर-
विचार-धारा को बदल करने की भी प्रेरणा दी जा सकेगी और वह
ल्टन के विरुद्ध प्रभावशाली प्रतिरोध का भी काम देंगे। जेफरसन को जो
राजनीतिक पद प्राप्त होी, उन सबमें, वर्तमान में, उन्हें वाइस प्रेसी-
पद अत्यधिक आकर्षक जान पड़ा। १७९७ की मार्च में जेफरसन
फिलेडल्फिया आ गए, जहाँ वह भावी राजनीतिक अभिनय देख सकते
ौर वहाँ, प्रेसीडेण्ट के नितान्त निश्चित उत्तरदायित्वों और परिश्रान्त
समस्याओं के बिना, वैधानिक मामलों में सहयोग दे सकते थे।

जेफरसन को शीघ्र ही ज्ञान हो गया कि एडम्स-मन्त्रि-मण्डल की
ा हैमिल्टनवादी प्रवृत्तियों के कारण राजनीतिक समझौता असम्भव था।
की घटनाओं ने उनके विचारों का समर्थन किया। वैदेशिक
ने अमरीकनों के लिए अब भी उस बरतन की तरह थे जिसमें सब राज-
तक विश्वास पिघल जाते थे, अंग्रेज-पक्षीय फ्रांस-पक्षीयों के साथ लड़ते
और अन्ततः जेफरसन ने 'दोनों ही राष्ट्रों से सम्बन्ध-विच्छेद' की प्रबल
ारिश की। यद्यपि जे-सन्धि ने कुछ समय के लिए ब्रिटेन के साथ युद्ध
रोक लिया था तथापि तटस्थ व्यापार के विरुद्ध फ्रेंच डाइरेक्ट्री की शर्तों
ारण फ्रांस के खिलाफ अमरीकन युद्ध-भावना भड़क [illegible] थी। जेफरसन,
यूरोप की घटनाओं को बहुत निकट से परख [illegible] से
त रह गए कि अमरीकन शांति-मिशन [illegible]
टैलीरैंड के दलालों ने धर् [illegible] मियों
बाद में [illegible] न से

घूस लेने की चेष्टा के कारण जन-साधारण में उत्तेजना फैल गई और फेडर-लिस्ट तथा रिपब्लिकनों का प्रतिरोध शासन-सूत्र पर बरस पड़ा।

आगामी चरण उतना ही अभागा था जितना कि अकस्मात् था। सरकार ने अपने राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ़ लड़ाई छेड़ दी और अपने इस उद्देश्य के लिए उसने १७६८ के विख्यात युद्ध-ज्वर का उपयोग किया। उसने शीघ्रतापूर्वक एक के बाद एक कानून पास किया। विदेशी सुधारवादियों और उदारवादियों, प्रचारकों और आन्दोलनकारियों को निकालने के लिए (एलीन एक्ट) विदेशी कानून पास किया गया, और समाचार-पत्रों की 'भ्रष्टता' को दूर करने के लिए (सेडीशन एक्ट) विद्रोह-कानून बनाया गया। विद्रोह-कानून व्यावहारिक रूप में विशेषतया भयकर था। इसके द्वारा शासन-सूत्र को अधिकार दिया गया था कि वह किसी भी विरोधी लेखक पर जुर्माना कर सकता है, कैद कर सकता है, और कानूनी तौर पर मुकदमा चला सकता है। वस्तुतः एडम्स-सरकार के शेष वर्षों में रिपब्लिकनों का मुँह बिलकुल बन्द कर दिया गया।

जेफरसन के विख्यात केण्टकी-प्रस्ताव की इस प्रकार की पृष्ठभूमि थी। केण्टकी-प्रस्ताव के साथ मैडिसन के वर्जिनिया प्रस्ताव ने विदेशी और विद्रोही कानूनों को अवैध घोषित किया था, क्योंकि उन्होंने संविधान का उल्लंघन किया था और मुख्य कार्यपालक के सरकारीय अधिकारों पर प्रतिरोध लगाने के लिए यह नियम निपुणतापूर्वक बनाये गए थे। जैसा कि जेफरसन को एक बड़ी स्थायी सेना से भय था, और उनका विचार था कि फ्रांस में उसी की विद्यमानता के कारण बोनापार्ट की तानाशाही की आवश्यकता हुई, और यही उन्हें फेडरलिस्टों की कार्यवाहियों में दिखाई पड़ा, जो कि व्यक्तिगत स्वाधीनता के बुनियादी आश्वासनों को हड़प रहे थे और नियन्त्रण-हीन शासन को पुनः चालू करना चाहते थे। पारिभाषिक रूप में, इस प्रश्न का समाधान आधारमूलक वैधानिक नियमों, राज्यों के अधिकारों और मुख्य कार्यपालक के सीमित अधिकारों की दृष्टि से होना था। इसलिए जेफरसन ने मौजूदा राज्यों को ऐसे शासन के विरुद्ध अवरोध के रूप में खड़ा

करने की चेष्टा की जो कि एक जाँच का रूप धारण करने लगी थी; जेफरसन इसे 'डाइन का शिकार' कहते थे। इस विशिष्ट परिस्थिति के अनुरूप मुख्यतः तैयार किये गए इन प्रस्तावों का सैद्धान्तिक मूलाधार उतना ही दृढ़ है जितना कि जेफरसन के अन्य किसी राजनीतिक विश्वास का यह सिद्धान्त था कि अमरीका के स्वतन्त्र नागरिकों को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, विचार और कार्य तथा सम्पत्ति की स्वतन्त्रता का हासिल कराना।

प्रेसीडेण्ट द्वारा फ्रांस के साथ सन्धि वार्ता शुरू करने पर फेडरलिस्टों में फूट पड़ गई और रिपब्लिकनों ने इस अवसर से शीघ्र ही लाभ उठा लेना चाहा। प्रेसीडेण्ट के चुनाव से पूर्व एडम्स ने युद्ध और राज्य-सम्बन्धी हैमिल्टनवादी मन्त्रियों को बर्खास्त कर दिया था। हैमिल्टन आपे से बाहर हो गया और उन्होंने एक पुस्तिका द्वारा एडम्स पर आरोप लगाए, और फेडरलिस्ट-दल की उम्मीदवारी से अपने पुराने नेता को हटाने की चेष्टा की, किन्तु वह असफल रहा। स्पष्ट ही था, यह रिपब्लिकनों की विजय का दिन था, अब जेफरसन प्रेसीडेण्ट के चुनाव के लिए खड़े हो रहे थे और आरनबर वाइस प्रेसीडेण्ट के पद के लिए।

लोक-मत के स्पष्ट विरोध में निर्वाचन-सम्बन्धी मत के फलस्वरूप जेफरसन और बर के बीच गाँठ पड़ गई। फेडरलिस्टों ने जेफरसन के विरुद्ध आन्दोलन करने में सर्वविदित राजनीतिक धूर्तता की सबसे निचली कीचड़ खुरचने में कसर न रखी थी, और अब उन्होंने इस गतिरोध के आधार पर जेफरसन के पद ग्रहण करने से पूर्व रियायतें प्राप्त करने के लिए कपटपूर्ण षड्यन्त्र करके आखरी दाँव लगाना तय किया। यदि जेफरसन सौदा करने से इन्कार करते तो उन्हें धमकी दी जाती कि पुनः मत में बर को प्रेसीडेण्ट बनाया जायगा। जेफरसन अचल रहे, उन्होंने कोई भी वचन न दिया और मत-दान के वास्तविक भीषण सप्ताह में स्थिर भाव से परिणाम की प्रतीक्षा में रहे। उन दिनों सम्पूर्ण राजधानी में यह अफवाह फैली हुई थी कि शासन-प्रबन्ध फेडरलिस्टों को सौंपने के लिए एक विधेयक बन रहा है। आखिर,

नीति तथा परदेशी और विद्रोह कानूनों के शिकारों को मुक्त करने की सफलता को कांग्रेस द्वारा सामान्य अनुमोदन प्राप्त हुआ। प्रेसीडेंट के रूप में उनके कर्तव्यों में उन्हें सुयोग्य एवं सहानुभूतिपूर्ण मन्त्रि-मण्डल से सहायता मिलती थी, जिसके राज्य-सचिव के रूप में विश्वस्त नेता मैडिसन थे। इसके अतिरिक्त, स्विस अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ एलबर्ट गैलेटिन उनके कोष-सचिव थे। वह टैक्सों को अल्प करने, सरकार की मितव्ययता, और अल्पतम सार्वजनिक ऋणों के प्रश्नों के विषय में जेफरसन के साथ पूर्णतया सहमत थे। यद्यपि वाशिंगटन की नव-स्थापित राजधानी में प्रेसीडेंट रूप में उनके सरल आचरणों से कुछ लोग निराश और विक्षिप्त हो जाते थे, क्योंकि उनका विचार था कि वह प्रदर्शनपूर्ण उत्सवों से पिंड छुड़ाते हैं, लेकिन फिर भी प्रेसीडेंट की प्रथम अवधि में वह जितने लोकप्रिय हुए, उतने अपने पूर्व जीवन में कभी नहीं हुए थे। यहाँ तक कि नृशंस डाकुओं की लूट-पाट को शीघ्र ही दबा दिया गया और जेफरसन एक मित्र को लिख पाए कि सब बातें शान्तिपूर्वक 'बिना ध्यान आकर्षित किये' हो रही हैं—जो इस बात का निश्चित चिह्न है कि समाज की सुखद स्थिति थी।

इस प्रकार की अशान्तिरहित और सुखद स्थिति शीघ्र ही इस समाचार के कारण भंग हो गई कि स्पेन ने कस्तान इलडेफांसो (१८००) की गुप्त सन्धि द्वारा न्यू ओरलींस का बन्दरगाह, मिसिसिपी के मुहाने और लाइसाना प्रान्त की विस्तृत भूमि के अधिकार फ्रांस को सौंप दिए हैं। पश्चिमी किसान और व्यापारी जहाज़ों पर अपना माल लादने के लिए न्यू ओरलीन्स के मार्ग पर निर्भर करते थे। जेफरसन राज्य-सचिव के रूप में भी सैनिक दृष्टि से लुइसाना के महत्त्व से परिचित थे। स्पेन के क्षीण हाथों की अपेक्षा फ्रांस के सुदृढ़ हाथों में लुइसाना का चला जाना अमरीकी प्रगति और समृद्धि के मार्ग में एक अनुल्लंघनीय बाधा थी। यह अत्यावश्यक था कि अमरीका लुइसाना-प्रदेश को हस्तगत करे—चाहे शान्तिपूर्ण वार्ता द्वारा अथवा युद्ध द्वारा। जब फ्रांसीसी तानाशाह नेपोलियन को ग्रेट ब्रिटेन के साथ पुनः युद्ध छिड़ने का भय हुआ तो उसने डेढ़ करोड़ डालर पर न केवल न्यू ओरलीन्स

को ही प्रमुख मिसिसिपी से लेकर रॉकी तक के सम्पूर्ण प्रदेश को भी वेचना चाहा। जेफरसन के लिए सामान्यतः अपने जीवन-काल की यह महानतम समस्या थी।

वर्षों से जेफरसन व्यक्तिगत अधिकारों, स्थानीय स्वतंत्र इकाइयों और राज्यों के स्वतन्त्री अधिकारों के संरक्षक थे। उन्होंने विधान की परिभ
के 'कठोर आधार' पर अपना दृष्टिकोण बनाया था। अब उन्हें एक प्रक
कानूनी-विरुद्ध कार्य का, शीघ्र एवं अनधिकृत निर्णय करना था, जि
एक तो अमरीका का क्षेत्र दुगुना बढ़ जाता था और साथ ही उस स्वतं
और स्वाधीनता की रक्षा में वृद्धि होती जिसके लिए पूर्णतः अमरीकी र
बढ़ाया जा चुका था। क्या उन्हें नेपोलियन के सौदे को मान लेना चाहिए
और एक चिर-आदर्श को भंग कर देना चाहिए था अथवा इस प्रकार
कार्य के लिए अधिकार प्राप्त करने के लिए वैधानिक संशोधन की प्रतीक्षा कर
चाहिए थी और ऐसा करने में सम्भव था कि राष्ट्रीय अस्तित्व और हित
जाते वह प्रदेश हाथ से जाता रहता! ऐसे दुविधाजनक संकट में पड़े हो
पर, उन्होंने अपने मित्र टॉमस पेन, जॉन ब्रैकनरिज, और विल्सन के
निकोलस को उनकी सम्मति जानने के लिए पत्र लिखे। निस्सन्देह, मॉक
नैतिक दबाव के साथ अन्ततः जेफरसन ने उस क्रय के अधिकार की स्वीकृ
दे दी और २ मई १८०३ को उस संधि पर हस्ताक्षर हो गए। यद्य
ऐसा करते समय उन्हें बहुत संकोच हुआ तथापि इस विचार ने उन्हें दृढ़
बनाया कि इस मामले में उनका एकाधिकार का उपयोग करना कम बुरा था

इस क्रय की तह में सिद्धान्त-विषयक जो सूक्ष्मताएँ थीं, अमरीकियों ने
सामान्यतः उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। न्यूयार्क और न्यू इंग्लैंड के
बड़े-बड़े धनिकों को अब भी डर लग रहा था और वह उनका विरोध क
रहे थे; और प्रतिक्रियावादी तथा रूढ़िवादी पादरियों ने उन्हें 'नास्तिक'
कहने की अपनी आदत को पूर्णतया नहीं छोड़ा था। किन्तु जेफरसन की पहली
अवधि निर्विवाद रूप से पूर्ण विजय में समाप्त हुई, और जनता ने अपने

राष्ट्रीय सुखद भविष्य के लिए, लगभग सर्व-सम्मति के साथ उन्हें दूसरी बार प्रेसीडेंट बनाया।

इन महत्त्वपूर्ण वर्षों में अत्यधिक व्यस्त रहने पर भी, जेफरसन अपने प्रिय बौद्धिक कार्यों के लिए समय निकाल लेते थे। उन्होंने न केवल राष्ट्रीय वाचनालय की स्थापना में ही सहायता प्रदान की, प्रत्युत निजी संग्रह में उन्होंने अनेक बहुमूल्य आयोग किये। उन्होंने प्रीस्टले और रश जैसे उदार विचारकों के साथ आस्तिकता के ईसाई धर्म की नैतिकता पर विचार किया। उन्होंने प्राचीनतम इंडियन शब्दावलियों के अपने विस्तृत संग्रह में वृद्धि करने लिए समय निकाला। विज्ञान और कृषि के विषय में वह सदा की भाँति ही दिलचस्पी लेते रहे। संक्षेप में, इन सम्पन्न और उत्पादनशील वर्षों को केवल उनकी छोटी पुत्री, मरिया एपिस की मृत्यु ने दूषित कर दिया था। जिसकी तुलना केवल उसी क्षति से की जा सकती है जो कि वर्षों पूर्व उन्हें अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण हुई थी।

जैसे ही जेफरसन की द्वितीय अवधि आरम्भ हुई, वह भारी कठिनाइयों में पड़ गए और उनकी विवेक-शक्ति उन्हें उसमें से पार कर सकने में अशक्त रही। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष, जो उनके द्वितीय शासन-काल की विशिष्टता थी, उस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों की शान्ति के बिलकुल विपरीत था।

देश की निश्चित सीमाओं की स्थापना कभी न हो पाई थी कि जो स्पेन से फ्रांस को मिला था और बाद में, अमरीका को बेचा गया था। जेफरसन के अमरीकन मान-चित्रों और भूगोल के ज्ञान तथा साथ ही मॉन्टिसेलो में अमरीकाना के बहुमूल्य संग्रह द्वारा अन्वेषण के कारण विश्वास था कि पश्चिमी फ्लोरिडा की भूमि भी लुइसाना के क्रम में सम्मिलित है। वह न केवल पश्चिमी फ्लोरिडा को ही अधिकृत करने की चिन्ता में थे, प्रत्युत पूर्वी फ्लोरिडा और टैक्सास को भी हस्तगत कर लेना चाहते थे, क्योंकि मैक्सिको खाड़ी में अमरीकी तट को सुदृढ़ बनाने के लिए इन सब की अत्यावश्यकता थी। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने स्पेन-स्थित अपने दूतावास और वाशिंगटन-स्थित स्पेन-सचिव के द्वारा वार्तालाप का आदेश किया।

१८०५ में, जब इंग्लैण्ड और स्पेन के बीच युद्ध की स्थिति विद्यमान थी, तो उन्होंने अमरीका और उसके पुराने शत्रु इंग्लैण्ड के साथ 'अस्थायी मित्रता' कर लेनी चाही ताकि अमरीका के विस्तार को सफल बनाया जा सके। कुछ और समय बाद, उन्होंने उस प्रदेश को क्रय करने की चेष्टा की। यद्यपि उनके सब यत्न निष्फल हुए, तथापि उनकी नीति का परिणाम बाद के वर्षों में निकला, जब कि विवादास्पद प्रदेश, अन्ततः, अमरीका के अधिकार में आ गए।

अमरीका की प्राकृतिक सीमाओं के निर्धारण करने की समस्या हमारे जलयानों के कार्यों में यूरोपियनों द्वारा निरन्तर हस्तक्षेप किये जाने की तुलना में बहुत कम थी। शक्ति-सम्पन्न ब्रिटिश व्यापारिक स्वार्थ अमरीका की समुद्री-शक्ति के निर्माण से चिन्तित हो उठे थे। अप्रैल १८०६ में इंग्लैण्ड ने अमरीकी जलयानों के विरुद्ध महाद्वीपीय तट पर अवरोध उपस्थित करके उन पर प्रहार किया। उसी वर्ष के नवम्बर में, प्रत्युत्तर में नेपोलियन ने अपने आदेशों से ब्रिटेन का अवरोध किया। अमरीका-जैसे तटस्थ देश पर ऐसे अवरोधों का व्यावहारिक प्रभाव बहुत ही बुरा हुआ। उसका यूरोपीय आयात और निर्यात का व्यापार रुक गया, वस्तुतः जिसका अन्तिम परिणाम आर्थिक विनाश होता।

इसके अलावा, शत्रुओं द्वारा अमरीकन जहाजों पर आक्रमणों की संख्या बढ़ने और अमरीकन जहाजों के लिए जहाजियों की अनिवार्य भरती में अधिकता हो जाने के कारण अमरीकन सम्मान को भीषण खतरा हो गया। जेफर्सन ने घोषणा की कि "शान्ति उनकी उत्कट अभिलाषा थी", और वस्तुतः यह थी भी, और इसके प्रति अविश्वास का कोई भी कारण दृष्टिगत नहीं होता था। इस मामले में, अपनी उत्कट अभिलाषा का अनुमोदन करने के लिए उनके पास निर्णय-बुद्धि थी। क्योंकि उस समय अमरीका शक्ति-सम्पन्न इंग्लैंड अथवा फ्रांस के साथ युद्ध करके कोई लाभ नहीं उठा सकता था। जेफर्सन ने तत्काल ही कार्रवाई करने का निर्णय किया। १८०६ का (नॉन इंटर कोर्स एक्ट) अ-व्यवहारी अनुच्छेद और (१८०७) में

अमरीका का सम्पूर्ण विदेशी व्यापार समाप्त करने के लिए (दम्भार्गी) जहाजों के बन्दरगाह में आने-जाने पर रोक लगाना उसी भावना के अनुसार जारी किये गए उपाय थे। जेफरसन ने इस जहाजी-रोक को 'युद्ध के बिना अपना अन्तिम शस्त्र' बतलाया था। और उनका दृढ़ विश्वास था कि वह शस्त्र छोड़ा ही जाना चाहिए था। यद्यपि इसका अर्थ उस काल तक अपने व्यापार और जहाजरानी को बन्द कर देना था, जब तक कि इंग्लैंड या फ्रांस तटस्थ देशों की समुद्री-स्वतन्त्रता के अधिकार के प्रश्न को मान नहीं लेते। जेफरसन को इससे अधिक व्यावहारिक और सम्मानपूर्ण विकल्प दृष्टिगोचर नहीं हुआ। यह उल्लेखनीय है कि उनकी जहाजी रोक पर निश्चय ही कड़ी आलोचनाएँ हुई थीं, किन्तु उसके स्थान पर कोई व्यावहारिक प्रस्ताव उपस्थित नहीं किया गया था।

उनकी द्वितीय अवधि के भार को अधिक बोझल करने के लिए, घरेलू मोर्चे पर कर्तव्य-च्युत होने और परित्याग की भावना—इन दोनों की भरमार हो गई। जेफरसन द्वारा फेडरलिस्टों के साथ समझौतापूर्ण उपायों के व्यवहार करने के फलस्वरूप टोना के जॉन रन्डोल्फ की अधीरता रोष का रूप धारण कर गई थी। स्पेन के साथ जेफरसन की प्रदेश-विषयक विवाद-नीति को रद्द करते हुए उसने प्रतिनिधि-सभा में शासन के रिपब्लिकन विरोधियों के एक लघु किन्तु कट्टर दल का नेतृत्व ग्रहण किया।

इससे भी अधिक सनसनीपूर्ण घटना पश्चिमी राज्यों में क्रान्ति करने के लिए बर का षड्यन्त्र था। उसने चाहा था कि इन राज्यों को मैक्सिको में मिलाकर एक साम्राज्य बनाया जाय जिसका वह बाद में तानाशाह बने। जॉन मार्शल ने सर्किट कोर्ट (भ्रमणशील न्यायालय) की अध्यक्षता करते हुए वर्तमान राज-विद्रोह के मुकदमे का अपने पुराने शत्रु जेफरसन के विरुद्ध राजनीतिक युद्ध के रूप में उपयोग करने का यह अच्छा अवसर देखा। जेफरसन ने बर को दण्ड देने के पक्ष में अपनी प्रबल इच्छा को गलती से व्यक्त कर दिया था। बर और हैमिल्टन की मुठभेड़ अभी देश भूल नहीं पाया था, और अमरीकी जनता ने इससे पूर्व कभी किसी कानूनी मामले में

इतनी दिलचस्पी नहीं दिखाई। [illegible] होने पर
उनके प्रशासन के अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी [illegible]

जैसे ही जेफरसन की द्वितीय कार्यावधि समाप्ति के निकट आई, वैसे
सरकार को रोकने के उनके शान्ति के ढंग की निरन्तर आलोचना
लगी। जहाजी-रोक के कारण ब्रिटेन और फ्रांस के सरकारी आदेशों में
तक कोई सुधार नहीं हो पाया था। परन्तु परिणाम यह था कि न्यू इंग्लै
के बड़े-बड़े जहाजी और व्यापारी दक्षिणी और पश्चिमी [illegible]
विचारों सहित अपने निर्वाह-व्यापार को अपनी आँखों के सामने ढहता
रहे थे। जेफरसन को भी इस सम्भावना का मुकाबला करना पड़ा और
अन्य अमीरों की भाँति जहाजी रोक के कारण उन्हें भी भारी आर्थिक
सहन करनी पड़ी थी। जब से अंग्रेजों ने चेसापीक पर आक्रमण किया
जेफरसन को विश्वास हो गया था कि अमरीका के लिए केवल यु
समस्या का सम्मानपूर्ण हल है। इन्हें जॉन क्विन्सी एडम्स के इस कथ
को पाकर भी भारी दुःख हुआ था कि न्यू इंग्लैंड जहाजी-रोक का
विरोधी बन गया है और उसने फलस्वरूप सम्बन्ध-विच्छेद की धमकी दे
इसके अतिरिक्त जब से जहाजी रोक को लागू करना विशेषकर न्यूयार्क
न्यू इंग्लैण्ड में असम्भव प्रमाणित किया जा चुका था, तब से जेफरस
प्रभावहीन उपायों के कारण नितान्त निराश हो चुके थे। किन्तु आने
प्रेसीडेण्ट के लिए निश्चित नीति-निर्धारण न करने की इच्छा से
जहाजी रोक के विषय में अन्तिम निर्णय का भार कांग्रेस पर छोड़
जहाजी-रोक का निरसन किया गया और उसकी जगह ग्रेट ब्रिटेन तथ
के साथ अव्यवहारी अनुच्छेद लागू किया गया जो कि एक कमजोर
थी और जो कि एक संकटजनक समस्या को सुलझाने के लिए एक
कार्यवाई न होकर केवल अव्यवस्था और रिपब्लिकन भीरुता की उप

३ मार्च १८०६ को जब उनकी प्रेसीडेण्ट की अवधि समाप्त
वह शासन की बागडोर अपने विश्वस्त उत्तराधिकारी, मैडिसन को
मुक्त हो गए थे। और जेफरसन को 'राजनीति' से मानो अजीर्ण

था। इस 'घृणित व्यवसाय' में लगभग चालीस वर्ष खप गए थे और उन्हें सिवा उन क्षेत्रों के कहीं हरियाली नहीं दीखती थी कि जो राजनीतिक शक्ति, निजी जीवन की शान्ति और स्वतन्त्रता की दिशा में ले जाने वाले थे।

जब जेफरसन मॉण्टिसेलो में हमेशा के लिए लौट आए, तो उनकी वास्तविक मानसिक और आत्मिक महानता ने और भी अधिक गहराई प्राप्त की। उस समय वह ६६ वर्ष के थे, जब कि उन्हें अन्तिम बार अपने उस आत्मीय आवास में रहने दिया गया। जहाँ की दुनिया में उन्हें अपेक्षाकृत कम कष्ट थे, और जैसा कि वह बहुधा कहा करते थे, वहीं उन्हें अनन्त शान्ति प्राप्त होती थी। दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जिनकी राजनीतिक कामनाएँ और पक्षपात की भावनाएँ उनके वास्तविक मनोरंजन के मुख्य स्रोत होते हैं। ऐसे लोगों के लिए राजनीतिक जीवन का अन्त जीवन के अन्त के समान होता है। किन्तु यह बात जेफरसन पर लागू नहीं होती थी; क्योंकि वह ज्ञान, मित्रता और स्नेह को ही एक ऐसा आदर्श समझते थे, जिसके लिए इच्छा-पूर्वक यातना सहने को वह तैयार थे।

जेफरसन की वह वृद्धावस्था भी महत्त्वपूर्ण थी। इस सम्बन्ध में उनकी पुत्री मार्था ने बताया है कि उसके पिता ने मित्र अथवा सिद्धान्त के साथ कभी धोखा नहीं किया। जेफरसन ने क्रान्तिकारी दिनों के मित्रों के साथ अपने परिचय को जीवित रखा; वह फ्रांस में अपने परिचित स्त्री-पुरुषों को पत्र लिखते थे; वह अमरीकन और यूरोपियन उच्च श्रेणी के विचारकों और वैज्ञानिकों के साथ निरन्तर सम्बन्ध बनाए रहे। वह सदा की तरह मैडिसन, मोनरो, लाफेयट और कोमिस्को को पत्र लिखते रहते थे। जोसफ प्रिस्टले, टॉमस कूपर, बैंजामिन वाटरहाउस और विलियम शॉर्ट के साथ दार्शनिक विचार-विनिमय किया करते थे। उन्होंने और जॉन एडम्स ने, जिनके प्रारम्भिक राजनीतिक मतभेद शान्त हो चुके थे, आपस में पत्र लिखे थे—जो उद्दीपित और प्रोत्साहित करने वाले थे। जिनमें उनके जीवनकाल की उन समस्याओं का उल्लेख होता था जिनको हल करने में मानव-मस्तिष्क कभी सफल और कभी असफल रहा था। दिन-दिन बढ़ने वाले पत्र-व्यवहार

को बनाए रहने में जेफरसन का जो समय लगता था, उसके विषय मे
बहुधा शिकायत किया करते थे, किन्तु किसी भी प्रकार की बौद्धिक चु
का मुकाबला किये बिना न रह सकते थे और न उनसे माँगी गई सम
परामर्श या सहायता से वह इन्कार कर सकते थे। इस प्रकार वह शा
रचना और राजनीतिक सिद्धान्त, धर्म और प्राणि-विज्ञान-जैसे विपरीत
पर खुलकर, पूर्णता और बहुत सफाई के साथ निरन्तर विचार-वि
करते रहते थे।

मॉण्टिसेलो में उनके समय और उनके स्नेह भाव को व्यस्त रखने के
इतना कुछ था कि उन्हें हमेशा समय का अभाव खलता था। इतने व
उनके परिवार में अनेक नये सदस्य हो गए थे: १८११ तक वह प्रपि
बन चुके थे। अपनी दोनों बेटियों के प्रति उनका जो प्यार और दुला
ठीक वैसा ही वह अपने नये पौत्र-पौत्रियों से प्यार करते जो कि व
उनका सम्मान करते थे और जिन्होंने अपने-अपने जीवनकाल में
स्मृति को बनाए रखा। उनकी जायदादों को व्यक्तिगत देख-रेख की आ
कता थी। मृत्यु-पर्यन्त जेफरसन प्रायः नित्य ही घोड़े पर सवार होक
एकड़ भूमि का चक्कर काट आते थे। मॉण्टिसेलो अब भी उनकी
में अधूरा ही था और जहाँ-तहाँ कुछ-न-कुछ अदल-बदल अथवा
कुछ नया निर्मित होता ही रहता था। अपने अतिथियों का सम्मान
जिनमें उनके मित्र थे, उन्हें बहुत प्रसन्नता होती थी। कुछ लोग केव
चित ही होते थे अथवा परिचितों के मित्र होते थे और वे भी उनक
लेना अपना अधिकार समझते थे। कभी-कभी वह लिंचबर्ग के निकट,
फारेस्ट नामक अपनी जायदाद में बाध्य होकर चले जाया करते थे
वह ईंट की बनी झोंपड़ी में शान्ति के साथ पढ़ सकते थे और अप
टलम्ब हुई किसी योजना पर कार्य कर सकते थे।

तात्पर्य यह है कि इन अन्तिम वर्षों में जेफरसन का मुख्य का
और शिक्षा-सम्बन्धी दर्शन था। व्यक्तिगत रूप में, जेफरसन ज्ञान को
अन्तिम लक्ष्य का साधन मानते थे, प्रत्युत उसी को अन्तिम लक्ष्य

था कि उनके अनुसार सद्गुण और सुख की कुञ्जी है। सामाजिक रूप में उनका विश्वास था कि जिस प्रकार यह प्रसन्नता का साधन है, उसी भाँति यह सद्गुण की कुञ्जी भी है। स्वशासन के लिए यह आधारभूत आवश्यकता है। स्वतन्त्र शासन केवल इसी की शोभा और इसी की स्वाभाविक क्रिया के कारण टिक सकता है। जेफरसन ने प्रारम्भिक दिनों में इस दृढ़ विश्वास के आधार पर ही मानव-स्वतन्त्रताओं की रक्षा भी की थी कि केवल उसी वातावरण में कला और विज्ञान तथा ज्ञान की वृद्धि हो सकती है, जहाँ मानव धार्मिक आदेशों, राजनीतिक आतंकों और व्यक्तिगत दबावों से मुक्त हो। राजनीतिक प्रयोगों ने इस विश्वास की केवल पुष्टि की है और उनमें उन गड्ढों को दिखाया गया है जिनमें भय और पक्षपात पलते हैं। सुसंगठित और समृद्धिपूर्ण समाज के लिए सामान्य और विशिष्ट शिक्षा-विषयक सुविधाओं की उपयुक्तता के अनुसार समान रूप में अत्यधिक आवश्यकता हो चुकी थी। फलतः इसी अत्यावश्यकता को दृष्टि में रखते हुए, जेफरसन ने वर्जिनिया में, जो उनके चालीस वर्ष के परिपोषण का परिणाम था, सामान्य शिक्षा की प्रणाली के आन्दोलन को पुनः चालू किया। उनकी इच्छा थी कि यह वर्जिनिया के लिए उच्चतम रूप धारण करके राज्य-विश्वविद्यालय बन जाय। जेफरसन का यह दृढ़ विश्वास था कि यह एकाकी संस्था इस विश्वास के प्रति अर्पित किये जीवनकाल की महानतम सफलता हो सकती है कि सत्य ही मनुष्य को स्वतन्त्र करता है।

वह 'छोटा सा शिक्षा-विषयक ग्राम', जिसका जन्म जेफरसन के चिन्तायुक्त मातृत्व, पितृत्व और पोषण द्वारा हुआ था, न केवल दक्षिण में सर्वप्रथम बृहद् विश्वविद्यालय था, प्रत्युत वह प्रथम अमरीकन विश्वविद्यालय था, जो चर्च के सरकारी सम्बन्धों से स्वतन्त्र था। वर्जिनिया-विश्वविद्यालय जेफरसन के अन्तिम सात वर्षों में दैनिक चिन्ता का विषय था। उन्होंने विदेशों में एक विशेष दूत भेजा था कि वह विश्वविद्यालय के लिए महत्त्वपूर्ण विभाग की खोज कर सके। उन्होंने कालेज की लाइब्रेरी के लिए स्वयं किताबें चुनीं, स्वयं पाठ-विधि बनाई, स्वयं भवन का रेखा-चित्र

बनाया और स्वयं उनके निर्माण की देख-रेख की यहाँ तक कि चार्लट्सविल की वायु में टनटनाने वाली घण्टी के लिए आर्डर देने का काम भी किसी एक मामूली और गैरज़िम्मेदार आदमी के लिए न छोड़ा।

इस निरन्तर की व्यस्तता में उनकी कितनी सिद्धिशता थी। विश्व-विद्यालय, जिसका उनकी दिलचस्पी और कर्तव्य में असंदिग्ध रूप सर्वप्रथम स्थान था, अन्ततः १८२५ में खुला—जेफ़रसन की मृत्यु से पहली सर्दियों में किन्तु इस पूर्व व्यस्तता के बावजूद भी वह अनेक कार्यों की गुत्थियों को सुलझाने में लगे रहते थे। उदाहरण के लिए, अपने अस्सीवें वर्ष में, उन्होंने अपनी विलक्षण शक्ति के साथ राजनीति पर लिखा। उन्होंने यह लम्बे विवरण प्रेसीडेण्ट मुनरो को भेजे, जो कि बाद में मुनरो के शब्दों में 'मुनरो-सिद्धान्त' के रूप में जगद्विख्यात हुए।

इन दिलचस्पियों के बीच उनके समय और विचार को खण्डित करने वाली भी एक बात थी, जिसके कारण जेफ़रसन को अनन्त कष्ट सहना पड़ता था। उनकी आर्थिक व्यवस्था बहुत पहले से ही बिगड़ चुकी थी और हाल ही के वर्षों में प्रत्येक राष्ट्रीय आर्थिक उथल-पुथल के साथ वह अधिक डावाँडोल और अविश्वस्त रूप धारण करती गई, और अन्ततः छिन्न-भिन्न हो गई। जेफ़रसन ने उदारतापूर्वक अपने मित्रों को रुपया दिया था, जो अपने को उनकी अपेक्षा अधिक तंगी के रूप में प्रकट करते थे। उन्होंने अपने पुस्तकालयों और कला पर, मॉण्टिसेलो पर, अपने अतिथियों पर, अपने बच्चों की शिक्षा पर खुले हाथों खर्च किया था। उन्होंने अपने पड़ोसी अथवा मित्र, एक अच्छे समाचार-पत्र, किताब तथा अन्य हेतुओं की वृद्धि के लिए इतने कार्य किये थे, और वह अपना हिसाब भी बहुत सावधानी के साथ रखते थे, किन्तु उनके खर्च इस पर भी बढ़ते जाते थे। कहा जाता है कि उनकी भवन-निर्माण की उत्कट अभिलाषा ने ही ऐसा दुर्भाग्य दिखाया था। अपने ओवरसियरों, किराये के लोगों और दासों से उनकी अधिक काम न लेने की इच्छा के कारण भी उनका रुपया बहुत निकल गया। अपने आर्थिक-संकट के अन्तिम चरण पर, जेफ़रसन ने

वर्जिनिया धारा-सभा को आवेदन-पत्र दिया था कि वह मॉण्टिसेलो और उसके खेतों को लॉटरी द्वारा समाप्त करने की आज्ञा प्रदान करे। न्यूयार्क, फिलेडल्फिया और बाल्टीमोर के निजी नागरिकों ने इस समाचार को सुनते ही तत्काल प्रत्युत्तर में १६ हजार डालर से अधिक संग्रह करके उस नेता की सहायता की, जिसने आधी शताब्दी तक सम्पूर्ण अमरीका के लिए अपने उद्योग और प्रसाधनों को अर्पित किया था। इस प्रकार की 'सहायता' का क्षोभ जेफरसन के इस विचार में लगभग विलीन हो गया कि यह अनुदान स्वतः प्रेरणा से हुआ था, नागरिकों के 'विशुद्ध और बिना माँगे स्नेह की भेंट-स्वरूप' था।

इस प्रकार यहाँ तक कि अपने जीवन के अन्तिम वर्षों, मासों और दिनों में भी व्यर्थ खोने का समय नहीं हो पाता था। अपनी मृत्यु से लगभग दो सप्ताह पूर्व, जेफरसन अपने लिखने की चिर-अभ्यस्त मेज पर उस निमन्त्रण-पत्र का उत्तर लिखने बैठे थे, जो अमरीकी स्वाधीनता की ५०वीं वर्ष-गाँठ मनाने के सम्बन्ध में उन्हें प्राप्त हुआ था। वह आने वाले उत्सव की महत्ता के विषय में किसी भी अमरीकन की अपेक्षा कम उत्सुक नहीं थे। उनका जीवन सम्पन्न, गहन और जटिलताओं की दृष्टि से आश्चर्यजनक था, अपने परिवार अपने मित्रों, अपने देशवासियों, और वस्तुतः सभ्य यूरोपीय विश्व के लिए पुरस्काररूप था। राजनीति ही नहीं प्रत्युत उस नैतिक स्वतन्त्रता और शान्ति की मूर्ति को प्राप्त करना ही उनका हमेशा से आदर्श था, और यही अन्तिम समय तक बना रहा। जिसने यूनानियों को जनतन्त्रवाद की, रोमनों को रिपब्लिकनवाद की, और अट्ठारहवीं सदी के अमरीका और फ्रांस को प्रतिनिधित्वपूर्ण आधुनिक प्रजातन्त्र की प्रेरणा दी।

फलतः उन्होंने खेद प्रकट करते हुए लिखा कि वृद्धावस्था और रोग के कारण वे उस दिन के समारोह में सम्मिलित न हो सकेंगे जिसने एक दुनिया के रूप को बदल डाला है। ४ जुलाई, १८२६ से १० दिन पूर्व, जेफरसन ने उस अमरीकन-दिवस के विषय में दिल हिला देने वाली उसी ईमानदारी के साथ लिखा था कि जिससे उन्होंने अनेक पत्र लिखे थे और जो उनके

जीवन के रूप को निर्मित करने में सहायक हुई थी—

"संसार के लिए उन जंजीरों को तोड़ने की यह चेतावनी होनी चाहिए जिसने उन्हें धार्मिक अज्ञान और अन्ध-विश्वास में जकड़ रखा है और उसे स्वशासन की सुरक्षा और वरदान प्राप्त करना चाहिए। मेरा विश्वास है कि यह चेतावनी संसार के कुछ भागों में जल्दी और कुछ में देर में लेकिन अन्त में सब भागों में सुनाई देगी। हमने शासन के जिस रूप को स्थानापन्न किया है उसमें बुद्धि और विचारों के असीम प्रयोग की स्वतन्त्रता है।

"मानव-अधिकारों के प्रति सबकी आँखें खुल गई हैं, अथवा खुल रही हैं। विज्ञान के प्रकाश के सामान्य विस्तार ने इस सत्य को प्रत्येक के लिए स्पष्ट बना दिया है कि जनसाधारण का जन्म उसकी पीठ पर बँधी हुई काठियों के साथ नहीं हुआ, और न परमात्मा की दया के केवल चन्द लोग ही पात्र हैं जिन्हें दूसरों पर लदने का अधिकार प्राप्त है। यह आधार अन्यों की आशा के लिए है। जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, यह दिन अनन्त-अनन्त काल तक लौट-लौटकर आये और हमें इन अधिकारों की स्मृति तथा उनके प्रति पूर्ण भक्ति की याद ताजा कराता रहे।"

युद्ध, निराशा, भ्रष्टाचार, विश्वासघात और असमानता ने पुराने निष्कमण के मार्गों को और नये सूत्रों को तब से अपना रखा है। जैसा कि जेफरसन ने पूर्व ही देखा था कि चन्द विशेषाधिकार-प्राप्त लोगों ने यूद्ध धारण करके पट्टी लगाकर बाकी लोगों पर कठोरतापूर्वक सवारी की—और पुनः करेंगे। 'स्वराज्य का वरदान और उसकी सुरक्षा' जीतना आसान नहीं है। किन्तु उत्तर और दक्षिण में, अमरीका में, यूरोप में और अफ्रीका में जिन लोगों को उन आदर्शों के प्रति अनुराग है जिनके लिए जेफरसन ने संघर्ष किया, वे एक दिन उस यन्त्र को पूर्णता प्रदान कर सकेंगे जो कि मनचाही सिद्धि की प्राप्ति में उनकी सहायता करेगा।

टॉमस जेफरसन की आत्मकथा

७७ वर्ष की आयु में मैंने कुछ स्मारक पत्र और अपने से सम्बन्धित तारीखों और घटनाओं को लिखना शुरू किया, जो कि विशेषतः अपने निजी निर्देश और अपने परिवार की जानकारी के लिए लिखे गए थे।

मेरे पिता के परिवार का इतिहास यह है कि उनके पूर्वज इस देश में वेल्स और ग्रेट ब्रिटेन के सबसे ऊँचे पहाड़, स्नोडन के निकट से आए थे। मैंने एक बार कानूनी रिपोर्टों में, वेल्स के एक मुकदमे के बारे में पढ़ा था जिसमें हमारे पारिवारिक नाम का एक व्यक्ति मुद्दई या मुद्दालेह था, और उसी नाम का एक व्यक्ति वर्जिनिया-कम्पनी का मन्त्री भी था। इस देश में अपने नाम के मुझे केवल यही दो उदाहरण मिले हैं। पुराने अभिलेखों में यह मैं देख चुका था; किन्तु अपने किसी पूर्वज के बारे में पहली विशिष्ट सूचना मुझे अपने दादा के बारे में मिली, जो कि चेस्टरफील्ड में ओज़बर्न नामक स्थान में रहते थे, और उस ज़मीन के मालिक थे जो बाद में नर्स की हो गई। उनके तीन पुत्र थे; टामस, जिसकी कम उम्र में मृत्यु हुई; फील्ड, जो रोनोक नदी के पास बस गया, और तीसरे मेरे पिता पीटर, जो मेरे मौजूदा घर के करीब, शैडवैल नामक स्थान में बसे, जहाँ की ज़मीन अब भी मेरी सम्पत्ति है। मेरे पिता का जन्म २६ फरवरी १७०७—१७०८ में हुआ और १७३६ में उन्होंने आइशाम रेण्डोल्फ की उन्नीस वर्षीया पुत्री जेन

के पास पहुँचा, जो कि पादरी थे और प्राचीन ज्ञान के एक अचूक विद्वान् थे, जिनके साथ मैं दो साल तक रहा; और फिर इसके बाद यानी १७६० के वसन्त में विलियम एण्ड मेरी कालेज चला गया, और वहाँ भी दो साल तक पढ़ाई की। यह मेरा अहोभाग्य था और सम्भवतः इसी ने मेरे भाग्य को निर्धारित किया कि उन दिनों स्कॉटलैण्डवासी डॉ० स्मॉल कालेज में गणित के अध्यापक थे। विज्ञान की अधिकांश उपयोगी शाखाओं के प्रगाढ़ ज्ञाता होने के साथ-साथ उनमें बातचीत करने का सुखद गुण, उपयुक्त एवं सभ्रान्त आचरण, और उदार चित्त था। यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात थी कि उन्हें शीघ्र ही मुझसे लगाव पैदा हो गया और स्कूल से फुरसत पाने पर वह हर रोज मेरे साथ रहते थे; और उनकी बातचीतों से विज्ञान के विस्तार और उस व्यवस्था के मुझे सबसे प्रथम दर्शन हुए जिसमें हम सब अवस्थित हैं। सौभाग्यवश, कालेज में मेरे दाखिल होने के बाद ही दार्शनिक अध्यापक की जगह खाली हुई, जो कि कुछ समय के लिए उन्हें मिल गई। उस कालेज में वही प्रथम अध्यापक थे जिन्होंने नीति-शास्त्र, अलंकार-शास्त्र तथा ललित कला पर नियमतः व्याख्यान दिए थे। १७६२ में वह यूरोप लौट गए। इससे पहले अपने घनिष्ठतम मित्र जॉर्ज वाइथ के निर्देशन में मुझे कानूनी शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करके और साथ ही गवर्नर फ़ाकियर से मेरा आन्तरिक परिचय कराकर (जोकि इस पद को सुशोभित करने वाले में योग्यतम व्यक्ति थे) उन्होंने मेरे जीवन को अपने सद्गुणों से परिपूर्ण कर दिया था। गवर्नर फ़ाकियर की मेज पर उनकी, डॉ० स्माल, और उनके प्रतिपाल के मित्र मि० वाइथ के साथ चौकड़ी जम जाया करती थी, और इन अवसरों पर हमेशा जो बातें होती थीं, उनसे मुझे बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। मेरे युवा-काल में मि० वाइथ मेरे विश्वस्त एवं प्रिय परामर्शदाता के रूप में रहे, और बाद के सारे जीवन में तो एक परम स्नेही मित्र बने रहे। १७६७ में उन्होंने जनरल कोर्ट (न्यायालय) में मेरा कानूनी व्यवसाय आरम्भ कराया, जो कि क्रान्ति द्वारा न्यायालयों के बन्द किए जाने तक चलता रहा।

१७६९ में मैं अपने अधिवास के प्रदेश से विधान-सभा का सदस्य

चुना गया और क्रान्ति के कारण विधान-सभा के बन्द न हो जाने तक मैं उसका सदस्य बना रहा। इस सभा में मैंने दासों की मुक्ति की स्वीकृति के लिए एक यत्न किया था, जिसे अस्वीकृत कर दिया गया। और वास्तव में उस राजतन्त्र से इससे अधिक उदार प्रस्ताव द्वारा सफलता नहीं हो सकती थी। इस विश्वास ने हमारे दिमागों को तंग दायरे में बाँध रखा था कि हमारा कर्तव्य अपनी मातृभूमि के अधीन रहना ही है, कि हमारे सारे कार्य मातृभूमि के हितार्थ ही होने चाहिएँ, और यहाँ तक कि मातृभूमि के धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी को अन्धविश्वासी की तरह इसे सहन न करना चाहिए। हमारे प्रतिनिधियों में मननशीलता और आत्मविश्वास की कमी न थी परन्तु उनमें नैराश्य और स्वभाव की दुर्बलता थी। अनुभव ने शीघ्र ही यह स्पष्ट कर दिया था कि उन्हें प्रथम बार ही सचेत करने पर वे अपने विचारों को सत्य की ओर अग्रसर कर सकते थे। किन्तु सम्राट् की परिषद्, जो एक अन्य विधान-सभा के रूप में कार्य करती थी, इन प्रतिनिधियों के अस्तित्व को अपनी स्वेच्छा के अधीन रखती थी और इन प्रतिनिधियों को उस स्वेच्छा की आज्ञा का पालन करना पड़ता था। गवर्नर भी, जिसे हमारे कानूनों को रद्द करने का अधिकार प्राप्त था, इस शक्ति के अधीन था और उसके प्रति अत्यधिक भक्ति प्रदर्शित करता था। और अन्त में सम्राट् की अस्वीकृति ने हमारे दुःख-निवारण के सभी द्वार बन्द कर दिए।

१ जनवरी १७७२ को बेथहर्स्ट स्केलेटन की विधवा और जॉन वेल्स की तेईस वर्षीया पुत्री मार्था स्केलेटन से मेरा विवाह हुआ। मि॰ वेल्स वकील थे और उनके अध्यवसाय, समय-पालन की उनकी आदत तथा व्यावहारिक दक्षता के कारण न कि अपने व्यवसाय-सम्बन्धी ज्ञान के कारण उनका काम खूब चलता था। उनके साथ रहना सब पसन्द करते थे, और वह स्वयं सदैव प्रसन्न और विनोद से ओत-प्रोत रहते थे, इसलिए हर स्थान में उनका स्वागत होता था। उन्होंने यथेष्ट सम्पत्ति उपार्जित की थी। मई १७७३ में वह तीन पुत्रियों को छोड़कर चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद कर्ज चुकाने के पश्चात् उनकी सम्पत्ति का एक अंश श्रीमती स्केलटन को

मिला, जो मेरी अपनी पैतृक सम्पति के बराबर ही था, जिसके फलस्वरूप हमारी सुख-सुविधायें दुगुनी बढ़ गईं।

जिस समय स्टाम्प-एक्ट के विरुद्ध १७६५ का प्रसिद्ध प्रस्ताव पेश किया गया था, मैं विलियम्स बर्ग में वकालत पढ़ता था। लेकिन बरजेसेज हाउस में बहस सुनने मैं गया था, और मैंने मि० हेनरी के, लोकप्रिय वक्ता के रूप-चातुर्य के चमत्कारों को देखा था। भाषण देने की उनमें महान् योग्यता थी वैसी कि मैंने और किसी व्यक्ति में नहीं पाई। उनका बोलना मुझे होमर का लिखा-जैसा प्रतीत हुआ। मि० जॉनसन ने, जो कि वकील और नॉर्दन नेक के सदस्य थे, प्रस्तावों का अनुमोदन किया और उन्होंने ही अपने पक्ष की बहस को युक्तिसंगत और बुद्धिपूर्ण बनाए रखा। इन कार्रवाइयों से सम्बन्धित मेरे संस्मरण वर्ट द्वारा लिखित पेट्रिक हेनेरी की जीवनी के पृष्ठ ६० पर देखे जा सकते हैं।

मई १७६६ में गवर्नर लॉर्ड बाटेटूर्ट ने विधान-सभा की एक बैठक बुलाई। मैं तब तक इस सभा का सदस्य बन चुका था। उस बैठक में ही मेसाचूसेट्स की कार्रवाइयों के आधार पर लॉर्ड-सभा और लोक-सभा के १७६८–६६ के प्रसिद्ध संयुक्त प्रस्तावों पर विचार किया गया था। बर्जेसेज सभा द्वारा विरोधी प्रस्तावों तथा सम्राट् के नाम एक पत्र भेजे जाने का सबने समर्थन किया, और मेसाचूसेट्स के प्रश्न को अपना प्रश्न समझने की की भावना स्पष्टतः व्यक्त की जा रही थी। गवर्नर ने हमारी इस बैठक को बर्खास्त कर दिया; किन्तु अगले दिन ही हम रैलफ विश्रान्ति-गृह के एक सार्वजनिक कमरे में एकत्र हुए। हमने निजी तौर पर अपनी एक सभा बनाई और ग्रेट-ब्रिटेन से मँगाई जाने वाली वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए नियम बनाये। हमने उस पर हस्ताक्षर किये और उन नियमों का पालन करने के लिए लोगों से सिफारिश की। हम अपने-अपने प्रान्तों से पुनः चुन लिये गए; केवल वे ही थोड़े से लोग न चुने गए जिन्होंने हमारी कार्रवाइयों का समर्थन करने से इन्कार किया था।

एक लम्बे अर्से तक किसी खास किस्म की हलचल न होने के कारण

ऐसा प्रतीत होता था कि हमारे देशवासी अचेतन हो गए हैं; चाय-कर अभी तक भंग नहीं हुआ था, और ब्रिटिश संसद् द्वारा बनाये गए कानूनों से हमें जकड़े रहने का घोषित अधिनियम अभी तक हमारे सिरों पर भूल रहा था।

लेकिन १७७३ के बसन्तकालीन अधिवेशन में रोड द्वीप की जाँच-अदालत की कार्रवाइयों पर विचार किया गया, जिसे यह अधिकार प्राप्त था कि वह मुकद्दमे चलाने के लिए उन लोगों को इंगलैण्ड भेज सकती है जिन्होंने यहाँ अपराध किया है। यह महसूस करते हुए कि हमारे वयोवृद्ध और प्रमुख सदस्यों में समय की आवश्यकताओं के अनुसार आगे बढ़ने का उत्साह और साहस नहीं है, मि० हेनरी, रिचर्ड हेनरी ली, फ्रांसिस, एल० ली०, मि० कार और मैंने शाम के वक्त रैलेफ के एक प्राइवेट कमरे में मिलकर वर्तमान स्थिति पर विचार करने का फैसला किया। शायद एक-दो सदस्य और भी थे जिनके बारे में मुझे याद नहीं है। हम सब जानते थे कि ब्रिटिश अधिकारों के प्रश्न पर, सब उपनिवेशों का एकमत हो जाना और फिर संयुक्त मोर्चा तैयार करना ही हमारे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था। इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक उपनिवेश में पत्र-व्यवहार के लिए एक कमेटी चाहिए थी जो कि पारस्परिक सम्वाद प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन थी। यह सोचा गया कि इस बारे में पहला कदम यह होना चाहिए कि प्रत्येक उपनिवेश के उपाध्यक्षों की किसी केन्द्रीय स्थान पर बैठक बुलाई जाय, और इनको उन कार्रवाइयों के निर्देशन का भार सौंपा जाय जिन पर सब अमल करें। तदनुसार हमने वे प्रस्ताव तैयार किये जो कि वर्ट द्वारा लिखित पुस्तक के ६०वें पृष्ठ पर देखे जा सकते हैं। साथी सदस्यों ने उन प्रस्तावों को पेश करने के लिए मुझसे कहा था, लेकिन मैंने इस बात पर जोर दिया कि वह काम मेरे मित्र और बहनोई मि० कार को सौंपा जाना चाहिए, जो कि नये-नये सदस्य बने थे, और जिनके बारे में मैं चाहता था कि उन्हें अपनी महान् योग्यता का परिचय देने का अवसर मिलना चाहिए। मेरी यह बात मान ली गई, और मि० कार ने इन प्रस्तावों को पेश किया। सर्वसम्मति से

प्रस्तावों को स्वीकार किये जाने के बाद पत्र-व्यवहार के लिए समिति बनाई गई, जिसका अध्यक्ष पेटन रेण्डोल्फ को नियुक्त किया गया। गवर्नर (लॉर्ड डनमोर) ने हमारी सभा को भंग कर दिया, किन्तु अगले ही दिन समिति की बैठक हुई। हमने अन्य उपनिवेशों के अध्यक्षों के लिए एक सर्कुलर पत्र तैयार किया और प्रत्येक पत्र के साथ प्रस्तावों की एक प्रति भेजने का भी निर्णय किया। इन पत्रों को जल्दी-से-जल्दी भेजने का काम समिति के अध्यक्ष को सौंपा गया।

उपनिवेशों के बीच पत्र-व्यवहार-सम्बन्धी इन समितियों के संगठन का प्रारम्भ मेसाच्युसेट्स से बताया जाता है, और यह भूल मार्शल ने अपनी एक पुस्तक* में की है, यद्यपि इस पुस्तक के परिशिष्ट से यह स्पष्ट है कि इन समितियों की स्थापना उनके अपने नगरों तक ही सीमित थी। इस मामले को सेम्युल एडम्स वेल्स के २ अप्रैल १८१६ के पत्र से और १२ मई के मेरे उत्तर से साफ-साफ जाना जा सकता है। मैंने जो सूचना मि० वर्ट को दी थी और जिसका उन्होंने अपनी पुस्तक के ८७वें पृष्ठ पर उल्लेख किया है उस सम्बन्ध में मि० वेल्स ने मेरी भूल सुधारी थी। मैंने मि० वर्ट को बताया था कि मेसाच्युसेट्स और वर्जिनिया के सन्देशवाहक मार्ग में ही एक-दूसरे से मिले, और दोनों के पास एक से ही प्रस्ताव थे। मि० वेल्स ने बताया कि मेसाच्युसेट्स ने उस प्रस्ताव को स्वयं नहीं बताया था, बल्कि हमारा प्रस्ताव मिल जाने के बाद उन्होंने अपने आगामी अधिवेशन में उस पर विचार किया था। हो सकता है उनका सन्देश किसी अन्य विषय से सम्बन्धित हो, क्योंकि मुझे अच्छी तरह याद है कि मि० पेटन रेण्डोल्फ ने ही हमारे सन्देशवाहकों के परस्पर मार्ग में मिलने की सूचना दी थी।

एक और घटना, जिसने मैसाच्युसेट्स के प्रति हमारी सहानुभूति को जगा दिया था, बोस्टन बन्दर-सम्बन्धी विधेयक के कारण थी, जिसके द्वारा १ जून, १७१४ को बोस्टन बन्दरगाह बन्द हो जाना था। यह समाचार हमें तब मिला जब कि उस वर्ष के वसन्त में हमारा अधिवेशन हो रहा था। सभा में इन विषयों का नेतृत्व पुराने सदस्यों पर न छोड़कर मि० हेनरी, आर०

---

* जॉन मार्शल द्वारा लिखित 'वाशिंगटन की जीवनी'

एच० ली, एल० ली और तीन-चार अन्य सदस्यों के साथ मिलकर, जि
नाम मुझे याद नहीं है, हमने तय किया कि हमें निर्भीकता और दृढ़
साथ मेसाच्युसेट्स के कार्यों का समर्थन करना चाहिए। हमने सभा-
में एकत्र होना और उचित उपायों पर परामर्श करना निश्चित किया क्यों
वहाँ पुस्तकालय का लाभ उठाया जा सकता था हमारा विश्वास था
लोग जिस तन्द्रा में पड़े हुए हैं, उससे उन्हें जगाना जरूरी है, और इसलि
हमने उनकी जागृति के लिए एक दिन सामूहिक उपवास और प्रार्थना
लिए निश्चित करना श्रेयस्कर समझा। सन् ५५ के युद्ध से उत्पन्न
हमारी मुसीबतों के बाद से, जब कि एक नई पीढ़ी का जन्म हुआ, ऐ
गम्भीरता का अन्य कोई उदाहरण दृष्टिगोचर नहीं हुआ है। अतः रश
की मदद से, जिनसे हमने उस जमाने के प्यूरिटनों के क्रान्तिकारी उदाहरण
और आचरणों का पता लगाया, एक प्रस्ताव तैयार किया जिसकी भा
आधुनिक थी। इस प्रस्ताव द्वारा हमने १ जून को, जिस दिन बन्दरगाह
सम्बन्धी विधेयक जारी होने वाला था, उपवास, दर्प-दमन और प्रार्थना का
दिन निश्चित किया। इस अभ्यर्थना द्वारा परमात्मा से हमारी याचना थी
कि वह हमें गृह-युद्ध के कुपरिणामों से बचाये, और अपने अधिकारों पर
दृढ़ रहने की हमें क्षमता प्रदान करे तथा सम्राट् और संसद् के हृदयों को
सत्य और न्याय के रास्ते पर लगाए। अपने इस प्रस्ताव को अधिक प्रभाव-
शाली बनाने के लिए हमने अगले दिन मि० निकोलस से भेंट करना तय
किया क्योंकि हमारे प्रस्ताव की ध्वनि उनके गम्भीर एवं धार्मिक चरित्र के
अनुरूप थी, और हमने यह भी चाहा कि वही इस प्रस्ताव को पेश करें।
तदनुसार, हम दूसरे दिन सुबह उनके यहाँ पहुँचे। उसी दिन उन्होंने इस
प्रस्ताव को पेश किया जो कि सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। सदा की तरह
ही गवर्नर ने हमारी सभा को भंग कर दिया। हम भी पहले की तरह ही
विश्रान्ति-गृह में एकत्रित हुए। हमने पत्र-व्यवहार-सम्बन्धी समिति को
हिदायत दी कि वह अन्य उपनिवेशों की तत्स्थानीय समितियों को आदेश दे कि
वे समय और स्थान की सुविधानुसार वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए

अपने-अपने प्रतिनिधियों की नियुक्ति करें और लोक-हित के लिए समय-समय पर आवश्यक कार्यों का निर्देशन करें। और हमने यह भी घोषणा कर दी कि किसी एक उपनिवेश पर किया गया आक्रमण सब पर आक्रमण समझा जायगा। यह मई के महीने की बात थी। हमने अनेक प्रान्तों से यह भी सिफारिश की कि विजियमबर्ग में आगामी १ अगस्त को होने वाले अधिवेशन के लिए वे अपने-अपने प्रतिनिधि चुनें और विशेषतः कांग्रेस अधिवेशन के लिए, पत्र-व्यवहार-सम्बन्धी समितियों की सामान्य स्वीकृति प्राप्त होने पर, अपने प्रतिनिधियों की नियुक्ति करें। यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ। यह तय किया गया कि फिलाडेलफिया में ५ सितम्बर को अधिवेशन किया जाय। हम अपने-अपने घरों को लौट आए, और अपने-अपने प्रांतों में हमने पादरियों से १ जून को सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने के लिए कहा। हमने उनसे यह भी निवेदन किया कि वे सामयिक रस्मों को अदा करें और समयानुसार प्रवचन करें। उस दिन सामान्यतः लोग अपने चेहरों पर चिन्ता और व्याकुलता की छाप लेकर मिले। उस दिन का असर ऐसा हुआ कि जैसे बिजली छू गई हो और हरेक आदमी अपनी-अपनी जगह मजबूती के साथ तनकर खड़ा हो गया हो। सम्मेलन के लिए सब स्थानों से प्रतिनिधि चुने गए। अपने निजी प्रान्त से निर्वाचित होने के बाद, मैंने उन प्रतिनिधियों के लिए निर्देशन-पत्र तैयार किया जिन्हें हम कांग्रेस में भेजना चाहते थे। इसी निर्देशन-पत्र को मैं सभा के सम्मुख रखना चाहता था। इस बात में मैंने शुरू से ही यह रूढ़िगत अथवा युक्ति-संगत आधार अपनाया था कि जेम्स के सिंहासनारूढ़ होने के बाद से और राष्ट्रीय संघ न बन जाने तक इन उपनिवेशों और इंलैण्ड का वही पारस्परिक सम्बन्ध है जो कि इंगलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के बीच में है, और जो कि इंगलैण्ड का हैनोवर के साथ है, जहाँ कि एक ही मुख्य कार्य-पालक है किन्तु उनके बीच और कोई राजनीतिक सम्बन्ध नहीं है, और कि जिस प्रकार डेनों और सेक्सनों के अपने देश से निष्कासन ने उनके देश के वर्तमान अधिकारियों को इंगलैण्ड पर कोई अधिकार प्रदान नहीं किया, उसी प्रकार इंगलैण्ड

का इस देश पर कोई अधिकार नहीं है। लेकिन इस तर्क के पक्ष में मैं मि० वाइथ के अलावा और किसी को अपने से सहमत नहीं करा पाया। जब से यह सवाल पैदा हुआ कि इंगलैण्ड और हमारा राजनीतिक सम्बन्ध क्या है, तब ही से मि० वाइथ ने इस तर्क का अनुमोदन किया था। हमारे अन्य देशभक्त जैसे कि रेण्डोल्फ, ली परिवार, निकोलस और पेण्डलटन जॉन डिक्सन की तजवीज के अधूरेपन में फँस गए, जो कि यह मानते थे कि इंगलैण्ड को हमारे वाणिज्य के विनियमन का अधिकार है, और इस विनियमन के लिए चुङ्गी लगाने का भी अधिकार है, किन्तु उसे राजस्व प्राप्त करने का अधिकार नहीं। किन्तु इस तर्क की बुनियाद न तो उपनिवेशों के मान्य सिद्धान्तों में और न बुद्धि में मिलती थी क्योंकि घर से बाहर निकलने का एक स्वाभाविक अधिकार है जिस पर सब राष्ट्रों ने सब युगों में अमल किया है। हमारी सभा के नियत दिन से कुछ पहले मैं विलियम्सबर्ग के लिए चल पड़ा, लेकिन रास्ते में ही पेचिस हो जाने के कारण आगे जाने में असमर्थ रहा। इसलिए मैंने अपने मसविदे की दो प्रतियाँ विलियम्सबर्ग भेज दीं—एक पेटन रेण्डोल्फ को, जो कि मैं जानता था कि सम्मेलन का सभापति होगा; और दूसरी पेट्रिक हेनरी को। या तो मि० हेनरी मेरे विचारों से असहमत थे, या उन्होंने मसविदे को पढ़ने में आलस्य किया हो (क्योंकि मेरे सम्पर्क में आये हुए व्यक्तियों में वह पढ़ने में सबसे ज्यादा सुस्त थे), इसका मुझे कभी पता नहीं चला लेकिन इतना जरूर जान पाया कि उन्होंने इस मसविदे का किसी से जिक्र नहीं किया। पेटन रेण्डोल्फ ने सभा को सूचित किया कि उन्हें एक सदस्य का भेजा मसविदा प्राप्त हुआ है। जिन्हें रोग के कारण रास्ते में रुकना पड़ा, इसलिए इसे विचारार्थ पेश किया जाता है। आम सदस्यों ने उसे पढ़ा, अनेकों ने उसका समर्थन भी किया। किन्तु उन्होंने उसे आवश्यकता से अधिक उग्र पाया। किन्तु उन्होंने उसे 'ब्रिटिश अमरीका के अधिकारों का संक्षिप्त अवलोकन' नामक एक पुस्तिका के रूप में छाप दिया। यह इंगलैण्ड जा पहुँची और विरोधी पक्ष ने इसे अपना लिया, और इस मि० बर्क ने विरोधी पक्ष की दृष्टि से उसे थोड़ा-बहुत बदल दिया, और इस

रूप में इस पुस्तिका के थोड़े ही समय में कई संस्करण छप गए। यह खबर मुझे पारसन हुई से मिली जो धर्मादेश प्राप्त करने लन्दन गये हुए थे। और बाद में मुझे पेटन रैंडोल्फ से पता चला कि इस पुस्तिका के कारण मेरे नाम को भी बहिष्कृतों की लम्बी सूची में शामिल किये जाने का सम्मान प्राप्त हुआ है। यह सूची संसद् में जायदादों की जब्ती के एक विधेयक बनाने के समय तैयार की गई थी किन्तु घटना-क्रमों की शीघ्रता के कारण अपने आरम्भिक रूप में ही दबा दी गई, जिसके फलस्वरूप उन्हें तनिक अधिक सतर्क रहने की चेतावनी मिल गई। हाउस ऑफ बर्जेसेज के इंगलैण्ड-स्थित प्रतिनिधि ने इस विधेयक से उद्धरण लिये और नामों की नकल करके उन्हें पेटन रेण्डोल्फ के पास भेज दिया। जहाँ तक मुझे खयाल है उन्होंने बीस नाम मुझे सुनाये, किन्तु मुझे सिर्फ हैन्कॉक, दोनों एडम्सों और खुद पेटन रैंडोल्फ का और अपना नाम याद है। १ अगस्त को सभा हुई और काँग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुने गए। उन्हें बहुत ही संयत ढंग और उचित विस्तार के साथ आदेश दिये गए, और वे नियत समय पर फिलीडेल्फिया चल दिए। प्रस्तुत काँग्रेस की शानदार कार्रवाइयाँ सामान्य इतिहास का विषय बन चुकी हैं जिनसे हरेक परिचित है और इसलिए यहाँ उनका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं। २६ अक्टूबर को काँग्रेस का अधिवेशन समाप्त हुआ और आगामी १० मई को पुनः एकत्र होना तय किया गया। कन्वेन्शन ने अपने मार्च '७५ के अधिवेशन में काँग्रेस की कार्रवाइयों का समर्थन किया, प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया और मई के अधिवेशन के लिए उन्हीं प्रतिनिधियों को पुनः नियुक्त किया। और इस सम्भावना को देखते हुए कि उनके प्रधान हाउस ऑव बर्जेसेज के अध्यक्ष पेटन रैंडोल्फ को शायद अलग होना पड़े, उन्होंने प्रतिनिधियों में मेरा नाम शामिल कर लिया।

जैसी आशा थी, मि० रैंडोल्फ को कांग्रेस का अध्यक्ष-पद छोड़ना पड़ा क्योंकि उन्हें १ जून, १७७५ को लार्ड डनमोर द्वारा बुलाई गई जनरल असेम्बली में भाग लेना था। तदनुसार मि० रैण्डोल्फ ने इस असेम्बली में

भाग लिया, और क्योंकि इन प्रस्तावों के भाव से सभी परिचित थे जो कि सब गवर्नरों को भेजे जा चुके थे, उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि हमारी असेम्बली का उत्तर, जो कि सम्भवतः पहला ही होना था, उस संस्था की भावनाओं और इच्छाओं के अनुरूप ही होना चाहिए जिसे कि उन्होंने हाल में ही छोड़ा था। उन्हें इस बात का भी भय था कि मि० निकोलस पर, जिनका मस्तिष्क समय के साथ उन्नत नहीं हुआ था, इस उत्तर का कार्य-भार पड़ेगा। इस कारण उन्होंने इसे तैयार करने का दबाव मुझ पर ही डाला। मैंने वैसा ही किया, और मि० मरसर और निकोलस के संशयों का निराकरण करते हुए, जहाँ-तहाँ संशोधन करके और थोड़ा-बहुत उसे क्षीण बनाकर सर्वसम्मति से या सर्वसम्मति से एक वोट की कमी से उसे स्वीकृत कराया। इसकी स्वीकृति होते ही मैं फौरन फिलीडेलफिया के लिए रवाना हुआ और वहाँ पहुँचते ही इस बारे में सर्वप्रथम कांग्रेस को सूचना दी। वहाँ उसे संपूर्णतः स्वीकार किया गया। २१ जून को कांग्रेस के सदस्यों के साथ मैंने भी अपना स्थान ग्रहण किया। २४ जून को शस्त्र-ग्रहण करने के कारणों की घोषणा करने के लिए बनाई गई कमेटी की रिपोर्ट पेश हुई, पर चूँकि (मेरा विश्वास है कि जे० रटलैज ने इसे तैयार किया था) इसे पसन्द नहीं किया गया, इसलिए इस काम को दुबारा करने के लिए मुझे और मि० डिक्सन को उस कमेटी में शामिल किया गया। सभा समाप्त होने के बाद मैंने अकस्मात् अपने-आपको डब्ल्यू० लिविंगस्टन के पास पाया, और मैंने इस मसविदे को तैयार करने के लिए उनसे कहा। उन्होंने अपने लिए माफी माँगी और सलाह दी कि मैं ही इसे तैयार करूँ। मेरे जोर देने पर वह कहने लगे, "महाशय, मेरा-आपका अभी नया परिचय ही हुआ है। आप इस बात के लिए इतने इच्छुक क्यों हैं कि मैं ही इस काम को करूँ ?" "क्योंकि", मैंने उत्तर दिया कि "मैंने सुना है कि ग्रेट ब्रिटेन के लोगों को जो अभिभाषण दिया गया था, वह आपने ही लिखा था। निश्चय ही वह एक अमरीकन की कलम से लिखी हुई सर्वोत्कृष्ट कृति थी।" उन्होंने कहा, "शायद महाशय, आपको सही सूचना नहीं दी गई

है ?" यह सूचना मुझे वर्जीनिया के कर्नल हैरीसन के कांग्रेस से लौटने के बाद मिली थी। उस मसविदे को तैयार करने वाली समिति में ली, लिविंगस्टन और जे थे। पहला मसविदा, जो कि ली ने तैयार किया था, अस्वीकृत हुआ और उसे दुबारा तैयार करने के लिए कहा गया। दूसरा मसविदा जे ने बनाया था, लेकिन गवर्नर लिविंगस्टन ने उसे पेश किया था, और इसी कारण कर्नल हैरीसन ने मुझे खबर देने में गलती की थी। दूसरे दिन सुबह, कांग्रेस के हॉल में जब कि बहुत से सदस्य एकत्र हो चुके थे, किन्तु अधिवेशन का कार्य अभी शुरू नहीं हुआ था, मैंने मि० जे को आर० एच० ली से बातें करते और उन्हें मेरी ओर खींचकर लाते हुए देखा। "मेरा खयाल है, जनाब," उन्होंने मुझसे कहा, "इन्हीं सज्जन ने आपको सूचना दी थी कि ग्रेट ब्रिटेन के लोगों को जो अधिभाषण दिया गया था वह गवर्नर लिविंगस्टन ने तैयार किया था।" मैंने फौरन ही उन्हें यकीन दिलाया कि यह सूचना मुझे मि० ली से नहीं मिली थी और न इस बारे में मि० ली से मेरी कभी कोई बात ही हुई थी। कुछ सफाई दिये जाने के बाद यह बात वहीं बन्द हो गई। इन दोनों सज्जनों में एक बहस के मौके पर आपस में मुठभेड़ हो चुकी थी, और तब से एक-दूसरे के साथ मनमुटाव चला आ रहा था।

मैंने उस घोषणा का मसविदा तैयार किया। मि० डिकिन्सन की दृष्टि में यह एक अत्यधिक उग्र मसविदा था। उन्हें अब भी मातृभूमि के साथ समझौते की आशा थी और वह इन आक्रमणकारी वक्तव्यों से इस आशा को कम नहीं करना चाहते थे। वह इतने ईमानदार और काबिल आदमी थे कि यहाँ तक कि जो उनकी शंकाओं से सहमत न थे वे भी उनकी प्रशंसा करते थे। अतः हमने वह मसविदा उनको दिया और उनसे निवेदन किया कि वह उसको ऐसा रूप दें जिसे कि वह उसे स्वयं स्वीकार कर सकें। उन्होंने एकदम नया बयान तैयार किया जिसमें पहले बयान के अन्तिम चार और प्रथम पैराग्राफ़ ही केवल उन्होंने रखे। हमने इसे स्वीकार करके कांग्रेस के सामने पेश किया और वहाँ भी यह स्वीकृत हुआ। ऐसा करके कांग्रेस ने

मि० डिकिन्सन के प्रति अपने पक्षपात का और अपनी इस इच्छा
असाधारण प्रमाण दिया कि वे हमारे संगठन के किसी भी सम्मानित
को तीव्र गति से नहीं बढ़ने देना चाहते। और इस प्रकार उन्होंने
डिकिन्सन को अपने विचारों के अनुसार सम्राट् के लिए एक प्रार्थना-
तैयार करने के लिए कहा जोकि किसी विशेष संशोधन के बिना ही स्वी
कर लिया गया। इस अपमानजनक व्यवहार के लिए सर्वत्र असंतोष या अ
इस मसविदे की स्वीकृति पर मि० डिकिन्सन की प्रसन्नता देखकर वे
हो गए। मसविदा स्वीकृत हो जाने और वोट लिये जाने के बाद
अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी तब भी वह अपना संतोष प्र
किये बिना न रहे, और उन्होंने कहा, "मि० प्रेसीडेण्ट, इस दस्तावेज
केवल एक ही ऐसा शब्द है जिसे मैं ठीक नहीं समझता, और वह शब्द
'कांग्रेस'।" इस पर बेन हैरीसन उठे और उन्होंने कहा, "इस दस्तावेज
केवल एक ही शब्द है मि० प्रेसीडेण्ट, जिसे मैं ठीक समझता हूँ और व
है 'कांग्रेस'।"

२२ जुलाई को लार्ड नॉर्थ के समझौता-प्रस्ताव पर विचार करने
लिए एक समिति नियुक्त की गई जिसमें डॉ० फ्रेंकलिन, मि० एडम्स
आर० एच० ली के साथ मैं सदस्य था। इस विषय में वर्जीनिया-असेम्ब
की स्वीकृति होने पर मुझसे रिपोर्ट तैयार करने का निवेदन किया गया, औ
यही कारण है कि दोनों दस्तावेज़ों में समानता पाई जाती है।

१५ मई १७७६ को वर्जीनिया के कन्वेन्शन ने कांग्रेस के अपने प्रति
निधियों को आदेश दिया कि वे कांग्रेस के सामने यह प्रस्ताव रखें कि यह
उपनिवेश ग्रेट ब्रिटेन से स्वतन्त्र हैं, और कि एक ऐसी कमेटी बनाई जाय
जो कि अधिकारों की घोषणा और शासन-योजना तैयार कर सके।

कांग्रेस में, शुक्रवार, ७ जून १७७६

अपने मतदाताओं के अनुसार वर्जीनिया के प्रतिनिधियों ने प्रस्ताव रखा
कि कांग्रेस को यह घोषणा करनी चाहिए कि इन संयुक्त उपनिवेशों को

स्वतन्त्र राज्य के रूप में रहने का अधिकार है और यह अधिकार प्राप्त होना चाहिए कि ब्रिटिश सम्राट् की अधीनता से यह मुक्त हैं, और कि इसके और ग्रेट ब्रिटेन के बीच कोई राजनीतिक सम्बन्ध नहीं है, और न लेश-मात्र सम्बन्ध ही रहना चाहिए; कि विदेशी राज्यों से सहायता प्राप्त करने का तुरन्त ही उपाय करना चाहिए, और एक ऐसा संघ बनाना चाहिए जो इन उपनिवेशों को अधिक घनिष्ठता के साथ पारस्परिक सम्बन्ध में बाँध सके।

इस समय चूँकि सभा एक दूसरे प्रश्न पर विचार कर रही थी, इसलिए यह प्रस्ताव अगले दिन के लिए रखा गया, और सदस्यों को आदेश दिया गया कि वे दूसरे दिन ठीक दस बजे उपस्थित हो जायें।

शनिवार, ८ जून : बहस शुरू हुई और सारी सभा को एक समिति का रूप देकर उन्होंने इस प्रस्ताव पर विचार आरम्भ किया। उस दिन और सोमवार, १० तारीख को भी इस बारे में बहस होती रही।

विलसन, रॉबर्ट आर० लिविंगस्टन, ई० रटलैज, डिकिन्सन और दूसरों की यह दलील थी :

कि वे इस प्रस्ताव के मित्र होते हुए और ग्रेट ब्रिटेन के साथ पुनः संयुक्त होने की असम्भवता को समझते हुए भी, इस समय इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं हैं :

कि जब तक जनता की आवाज ही हमें बाध्य न कर दे, हमें कोई बड़ा कदम नहीं उठाना चाहिए। इस बात पर हमने पहले भी बुद्धिमानी से अमल किया था और अब भी यही उचित है :

कि जनता ही हमारी शक्ति है जिनके बिना हम इस घोषणा को कार्यान्वित नहीं कर सकते :

कि मध्य-स्थित उपनिवेशों के लोग (मेरीलैंड, डेलावेरे, पैनसिलवानिया, जरसी और न्यूयॉर्क) अभी ब्रिटिश सम्बन्धों को तिलाञ्जलि देने के लिए पूर्ण रूप से परिपक्व नहीं हैं, किन्तु वे अतिशीघ्र परिपक्व होते जा रहे हैं और कुछ समय में ही अमरीका की आम आवाज में साथ देंगे :

कि इस सभा ने ब्रिटिश सम्राट से प्राप्त होने वाले सब अधिकारों उपभोग न करने के लिए १५ मई को जो प्रस्ताव पेश किया था और उस द्वारा इन मध्य-स्थित उपनिवेशों में जो उत्तेजना पैदा हुई थी, उससे य स्पष्ट है कि अभी तक यह उपनिवेश मातृभूमि से पृथक् होने के विचार से सम्मत नहीं हो सके हैं :

कि कुछ लोगों ने अपने प्रतिनिधियों को इस घोषणा का समर्थन करने से साफ़-साफ़ मना कर दिया है, और कुछ ने अपने प्रतिनिधियों को कुछ आदेश नहीं दिया है, अतः उन्हें इस घोषणा का समर्थन करने का अधिकार प्राप्त नहीं है।

कि यदि किसी खास उपनिवेश के प्रतिनिधियों को उस उपनिवेश को स्वाधीन घोषित करने का अधिकार नहीं है, तो दूसरे लोग उनकी ओर से ऐसी घोषणा नहीं कर सकते, क्योंकि सभी उपनिवेश अभी तक एक-दूसरे से सम्पूर्णतया स्वाधीन हैं :

कि पेनसिल्वानिया की असेम्बली की बैठक इस समय ऊपर की मंजिल में हो रही है, और कुछ दिनों में उनका कन्वेन्शन भी होने वाला है। मेरीलैंड का कन्वेन्शन भी इस समय हो रहा है और जरसी तथा डेलावारे प्रान्तों का सम्मेलन भी आगामी सोमवार को होने वाला है। यह सम्भव है कि वे संगठन स्वतन्त्रता के प्रश्न को उठायें, और अपने राज्य की इच्छा की घोषणा अपने प्रतिनिधियों को बतायें :

कि यदि इस प्रकार की घोषणा इस समय स्वीकृत हो जाती है तो इन प्रतिनिधियों को निवृत्त होना पड़ेगा, और सम्भवतः उनके उपनिवेश राष्ट्रीय संघ से सम्बन्ध-विच्छेद भी कर लें :

कि इस प्रकार का सम्बन्ध-विच्छेद हमें विदेशी सहायता से प्राप्त होने वाली शक्ति की अपेक्षा अधिक कमज़ोर बना देगा।

कि इस प्रकार के विभाजन हो जाने पर विदेशी सरकारें या तो हमारे [illegible] करने से इन्कार कर देंगी या निराशा से उत्पन्न हुई इस [illegible] फलस्वरूप हम पर प्रभुत्व जमा लेंगी, और अपेक्षाकृत अधिक

कठोर और पक्षपातपूर्ण होगी।

कि ऐसे लोगों से सहायता प्राप्त करने की आशा बहुत कम दिखाई देती है जिनकी ओर हमने अभी नजर ही डाली है :

कि फ्रांस और स्पेन के लिए ऐसी नवोन्नत शक्ति से ईर्ष्या करने का कारण मौजूद है जो निश्चय ही एक दिन उन्हें अपने सब अमरीकन अधिकारों से वंचित कर देगी।

कि इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे ब्रिटिश सत्ता से सम्बन्ध जोड़ सकते हैं, और यदि ब्रिटेन अपनी मुश्किलों से बाहर निकलने में अपने-आपको असमर्थ पाता है तो वह शायद हमारे इलाकों के विभाजन के लिए तैयार हो जाए और अपने लिए पुनः इन उपनिवेशों को प्राप्त करने के लिए कैनेडा फ्रांस को और फ्लोरिडा स्पेन को दे सकता है :

कि हमें उस प्रतिनिधि से फ्रांसीसी सरकार के निर्णय की सूचना प्राप्त करने में अधिक समय न लगेगा, जिसे इसी हमने उद्देश्य से पेरिस भेज रखा है :

कि यदि यह निर्णय हमारे पक्ष में हुआ तो वर्तमान संघर्ष के फल की प्रतीक्षा कर लेने के बाद, जिसकी सफलता की हम सबको आशा है, बेहतर शर्तों पर समझौता किया जा सकता है :

कि इस कार्रवाई द्वारा ऐसे मित्र से किसी प्रकार की प्रभावोत्पादक सहायता पाने में कोई देर न होगी क्योंकि मौसम और दूरी को देखते हुए इस संघर्ष के बीच हम किसी प्रकार की सहायता नहीं पा सकते थे :

कि किसी भी प्रकार समझौता करने की घोषणा करने से पहले हमारे लिए यह बुद्धिमानी होगी कि हम आपस में समझौते की शर्तों को तय कर लेंगे :

और कि यदि यह शर्तें तय कर ली जायें और हमारे राजदूत के जहाज पर सवार होने तक हमारी स्वाधीनता की घोषणा भी तैयार हो जाय, तो जहाज के दिन की बजाय दस दिन इस घोषणा को करना अच्छा होगा :

दूसरी ओर से जे० एडम्स, ली, वाइथ और दूसरे लोगों ने कहा कि

किसी भी सज्जन ने सम्बन्ध-विच्छेद के अधिकार या नीति के विरुद्ध को दलील पेश नहीं की है, और न ही इस सम्भावना को माना है कि हमें कभी भी अपने सम्बन्धों को पुनः स्थापित करना होगा; उन्होंने तो केवल इस समय इसकी घोषणा करने का विरोध किया है :

कि प्रश्न यह नहीं है कि स्वाधीनता की घोषणा से हम अपने-आपको वह बना लेंगे जो कि हम इस समय नहीं हैं, बल्कि प्रश्न यह है कि हमें उस तथ्य की घोषणा करनी है जो कि पहले से ही विद्यमान है :

कि इंगलैण्ड की जनता अथवा संसद् से हम सदैव स्वतन्त्र रहे हैं, हमारे व्यापार पर उनका नियन्त्रण हमारी अनुमति से ही सफल हो सका है न कि नियन्त्रण रखने के उनके किसी अधिकार द्वारा, और हमारा और उनका अब तक का सम्बन्ध फेडरल ही रहा है जो कि अब युद्ध छिड़ जाने से समाप्त होता है :

कि जहाँ तक सम्राट् का प्रश्न है हम उनके प्रति निष्ठा रखने के कारण ही उनसे सम्बन्धित थे, किन्तु क्योंकि उन्होंने अपनी संसद् के अन्तिम अधिनियम द्वारा यह सम्बन्ध भंग कर दिया है जिसके द्वारा उन्होंने हमें अपनी सुरक्षा प्रदान न करने की और हमारे विरुद्ध युद्ध करने की घोषणा की है; और कानून की दृष्टि से क्योंकि निष्ठा और सुरक्षा का परस्पर नाता है, अतः सुरक्षा के हट जाने से निष्ठा स्वतः ही समाप्त हो जाती है :

कि जेम्स द्वितीय ने कभी भी यह घोषणा न की थी कि इंगलैण्ड के लोग उनकी सुरक्षा से बाहर हैं फिर भी उनकी कार्रवाइयों ने यह प्रमाणित कर दिया था और संसद् ने इसकी घोषणा की थी :

अतः इस विद्यमान सत्य की घोषणा करने के अधिकार से किसी भी प्रतिनिधि को नहीं रोका जा सकता और न कोई प्रतिनिधि ऐसा अधिकार चाहेगा ही :

कि डेलावेयर प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने घोषणा कर ही दी है कि उनके इलाकों के लोग शामिल होने को तैयार हैं, इसलिए अब केवल दो प्रान्त पेन्सिलवेनिया और मेरीलैंड बाकी हैं जिनके प्रतिनिधि रुके हुए हैं, और

इन्होंने भी अपने प्राप्त आदेशानुसार इस कार्यवाई को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने के अपने अधिकार को केवल सुरक्षित रखा है :

कि पेनसिलवानिया के आदेश इसलिए ऐसे हैं क्योंकि वे लगभग एक वर्ष पहले दिये गए थे और तब से वस्तु-स्थिति पूर्णतः बदल चुकी है :

कि उस समय के बीच, यह स्पष्ट हो चुका है कि ब्रिटेन कोरे कागज पर दस्तखत कराने से कम को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है और लार्ड मेयर तथा लन्दन की कॉमन कौंसिल के सदस्यों को सम्राट् के उत्तर ने, जो कि चार दिन पहले मिला है, इस विषय पर हर किसी को सन्तुष्ट कर दिया होगा :

कि जनता हमारे द्वारा मार्ग-प्रदर्शन किये जाने की प्रतीक्षा में है :

कि वे इस कार्यवाई के पक्ष में हैं यद्यपि कुछ प्रतिनिधियों को प्राप्त आदेश इस पक्ष में नहीं हैं :

कि प्रतिनिधियों की आवाज सदैव जनता की आवाज से मेल नहीं खाती, और मध्य उपनिवेशों के लिए तो यह बात खास तौर पर लागू होती है :

कि १५ मई के प्रस्ताव के परिणामस्वरूप पेनसिलवानिया और मेरीलैंड में असन्तोष की जो धीमी आवाजें उठ रही थीं उन्होंने जनता के स्वतन्त्र भाग की विरोधी आवाज को उठाया और इस प्रकार इन उपनिवेशों में भी इस प्रकार के लोगों के बहुमत को सिद्ध किया :

कि इन दोनों उपनिवेशों के पिछड़ेपन का आंशिक कारण उनकी मिल्कियत की ताकत और सम्बन्ध हैं और कुछ अंश तक शत्रु द्वारा उन पर आक्रमण न किया जाना है :

कि इन कारणों के दूर होने की जल्दी कोई आशा भी नहीं, क्योंकि ऐसी कोई सम्भावना नहीं दीख पड़ती कि शत्रु इन दोनों में से किसी एक को इन गर्मियों में लड़ाई का मैदान बना पाएगा।

कि हफ्तों या महीनों तक सर्वसम्मति प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा करना व्यर्थ होगा क्योंकि किसी एक प्रश्न पर सब लोगों का एकमत होना असम्भव है :

कि इस विवाद के आरम्भ से ही कुछ उपनिवेशों के व्यवहार ने यह सन्देह उत्पन्न कर दिया था कि संगठन के पीछे रहना उनकी निश्चित नीति है, ताकि बुरी-से-बुरी घटना घटने पर भी उनका भविष्य अच्छा बना रहे :

कि इस कारण, जिन उपनिवेशों ने शुरू से ही आगे बढ़कर अपने-आपको मुसीबत में डाला था, उनके लिए अब यह आवश्यक हो गया कि वे फिर आगे बढ़कर अपने-आपको मुसीबत में डालें।

कि उस क्रान्ति के इतिहास से—जहाँ कि आरम्भ में केवल तीन राज्यों ने ही संघ बनाया था—यह प्रमाणित हो चुका था कि कुछ उपनिवेशों द्वारा सम्बन्ध-विच्छेद करना उतना खतरनाक नहीं है जितना कि कुछ लोग समझते थे :

कि केवल स्वाधीनता की घोषणा ही यूरोपीय शिष्टाचार के अनुरूप हो सकती थी ताकि यूरोपीय शक्तियाँ के साथ हमारा सम्बन्ध स्थापित हो और वे हमारे राजदूतों को अपने यहाँ रखें :

कि जब तक यह नहीं होता, वे हमारे जहाजों को न तो अपने बन्दरगाहों में दाखिल होने देंगे और न ही ब्रिटिश जहाजों को हमारे द्वारा गिरफ्तार कर लेने पर वे हमारी नौसेना की अदालती कार्रवाइयों को कानूनन मानने के लिए तैयार होंगे :

कि यद्यपि फ्रांस और स्पेन का हमारी बढ़ती हुई शक्ति के प्रति ईर्ष्यालु होना सम्भव है किन्तु उन्हें यह सोच लेना चाहिए कि ब्रिटेन के साथ हमारे संयोग से यह शक्ति उनके लिए और भी भयंकर हो सकती है; और इसलिए ब्रिटेन के साथ हमारे मेल को रोकने में ही उनका हित है; किन्तु यदि वे इस बात से इन्कार करते हैं तो हम जहाँ हैं वहीं रहेंगे, लेकिन अगर हम कोशिश न करेंगे तो यह हम कभी न जान सकेंगे कि वे हमारी मदद करेंगे या नहीं :

कि वर्तमान संघर्ष के असफल होने की सम्भावना है, अतः जब तक उसका आशापूर्ण रूप बना हुआ है तभी तक सन्धि कर लेना श्रेयस्कर होगा :

कि इस संघर्ष के परिणाम की प्रतीक्षा करने में देर हो जायगी, क्योंकि

ग्रीष्मकाल में इंगलैण्ड और आयरलैण्ड से आने वाली रसद को फ्रांस रोक सकता है जिस पर शत्रु की सेनाएँ यहाँ निर्भर हैं या वेस्ट इण्डीज में अपनी शक्तियों को क्रियाशील करके, वह हमारे शत्रु को अपने वहाँ के स्वत्वों की रक्षा के लिए बाध्य कर सकता है :

कि जब तक हम सन्धि करना तय नहीं कर लेते सन्धि की शर्तों को तय करने में समय गँवाना व्यर्थ होगा :

कि यह आवश्यक है कि अपने लोगों के लिए व्यापार आरम्भ करने में समय न खोया जाय, क्योंकि उन्हें पहनने के लिए वस्त्रों को और कर देने के लिए धन की आवश्यकता होगी :

और कि हमारा दुर्भाग्य केवल यही है कि हमने छः मास पूर्व फ्रांस के साथ सन्धि क्यों नहीं की, क्योंकि, जहाँ वह एक ओर हमारे गत वर्ष के उत्पादन की निकासी के लिए अपने बन्दरगाह खोल देता, वहाँ दूसरी ओर उसने जर्मनी में भी अपनी फौजों को दाखिल कर दिया होता और उन छोटे-छोटे जर्मन राजाओं द्वारा हमें अपने अधीन करने के लिए अपनी असन्तुष्ट प्रजा को बेचने से रोका होता।

इन बहसों के दौरान में यह ज़ाहिर हो चुका था कि न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, पेनसिलवानिया, डेलावेयर, मेरीलैण्ड और दक्षिण कैरोलिना के उपनिवेश अभी मूल शाखा से पृथक् होने के लिए परिपक्व न थे किन्तु वे इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए अति शीघ्रता से बढ़ रहे थे, इसलिए कुछ समय के लिए प्रतीक्षा करके अन्तिम निर्णय १ जुलाई तक स्थगित कर देना बुद्धिमानी समझा गया; लेकिन इस काम में कम-से-कम देर हो इसलिए स्वतन्त्रता की घोषणा तैयार करने के लिए एक समिति नियुक्त की गई। इस समिति में जॉन एडम्स, डॉ० फ्रैंकलिन, रोजर शेरमैन और मैं था। इसी समय उपनिवेशों के संयुक्त संघ की योजना तैयार करने के लिए अन्य समितियाँ भी नियुक्त की गईं। स्वतन्त्रता की घोषणा तैयार करने वाली समिति की इच्छा थी कि इस घोषणा को मैं ही लिखूँ। तदनुसार मैंने घोषणा लिखी, और समिति की स्वीकृति के बाद उसे २८ जून को सभा के सम्मुख

विचारार्थ पेश किया। १ जुलाई, सोमवार को सभा ने एक समिति के रूप में वर्जीनिया के प्रतिनिधियों के मूल प्रस्ताव पर विचार करना आरम्भ किया। दिन-भर उस पर बहस हुई और न्यू हैम्पशायर, कोनेक्टीकट, मेसाच्यूसेट्स, रोड आइलैण्ड, न्यू जरसी, मेरीलैण्ड, वर्जीनिया, नॉर्थ कैरोलीना और जॉर्जिया द्वारा वह स्वीकृत हो गया। साउथ कैरोलीना और पेनसिलवानिया ने उसके विरुद्ध मत दिया। डेलावेयर के केवल दो सदस्य उपस्थित थे, और दोनों में मतभेद था। न्यूयॉर्क के प्रतिनिधियों ने अपने-आपको इस प्रस्ताव के पक्ष में घोषित किया और आश्वासन दिलाया कि उनके मतदाता भी इसके पक्ष में हैं, *परन्तु उन्हें प्राप्त आदेश लगभग एक वर्ष पुराने हैं जब कि* समझौता ही सामान्य ध्येय समझा जाता था, अतः उन आदेशों द्वारा बँधे होने के कारण वे कोई ऐसी बात न करना चाहेंगे जिससे उस ध्येय-प्राप्ति में रुकावट पैदा हो। अतः किसी भी पक्ष में अपना मत देना उन्होंने उचित नहीं समझा, और इस प्रश्न से विलग होने की उन्होंने स्वीकृति माँगी, जो कि उन्हें दे दी गई। समिति समाप्त हुई और उसने अपना प्रस्ताव सभा के सुपुर्द कर दिया। इस पर दक्षिणी कैरोलीना के मि॰ एडवर्ड रटलैज ने निवेदन किया कि यदि प्रस्ताव पर विचार करना अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया जाय, तो उन्हें विश्वास है कि, उनके जिन साथियों ने प्रस्ताव को अस्वीकार किया है, वे भी एकता की खातिर उसमें शामिल हो जायँगे। तदनुसार, यह अन्तिम प्रश्न कि सभा समिति के प्रस्ताव को स्वीकार करेगी या नहीं, आगामी दिन के लिए स्थगित कर दिया जाय। जब प्रस्ताव पुनः विचारार्थ पेश हुआ तो दक्षिणी कैरोलीना ने भी उसके पक्ष में वोट दिया। इस बीच डेलावेयर प्रान्तों का प्रतिनिधि भी आ पहुँचा और उसने उस उपनिवेश का मत भी इस प्रस्ताव के पक्ष में दिया। भिन्न विचारों वाले पेनसिलवानिया के सदस्यों ने भी उस प्रातःकालीन अधिवेशन में अपना मत बदल दिया और इस प्रकार जिन सम्पूर्ण बारह उपनिवेशों को मतदान का अधिकार था, उन्होंने इस प्रस्ताव के पक्ष में अपना मत दिया; और कुछ ही दिनों बाद न्यूयॉर्क के कन्वेन्शन ने भी इसे अपनी स्वीकृति

प्रदान की और इस प्रकार उस रिक्तता को पूर्ण कर दिया जो कि उसके सदस्यों के वोट न देने से बनी थी।

उसी दिन कांग्रेस ने स्वतन्त्रता की घोषणा पर विचार आरम्भ किया जो कि गत शुक्रवार को विचारार्थ पेश किया गया, और सोमवार को सम्पूर्ण समिति के हवाले कर दिया गया। यह क्षुद्र विचार कि इंग्लैंड में अब भी कई लोग ऐसे हैं जिनसे मैत्री बनाए रखनी चाहिए, कई लोगों के दिलों में घर बनाये हुए था। इसी कारण, वे वाक्यांश, जिनमें इंगलैंड के लोगों की आलोचना की गई थी, निकाल दिए गए ताकि ऐसे लोगों को आपत्ति न हो। अफ्रीका के अधिवासियों को दास बनाने की प्रथा का विरोध करने वाली धारा को भी दक्षिणी कैरोलीना और जार्जिया की माँग पर निकाल दिया गया क्योंकि इन उपनिवेशों ने दासों के आयात पर रोक लगाने की कभी चेष्टा न की थी, बल्कि वे अब भी उसे जारी रखना चाहते थे। मेरा ख्याल है कि हमारे उत्तरी प्रदेश के भाइयों को भी इस आलोचना का बुरा लगा क्योंकि यद्यपि स्वयं उनके पास कम दास थे किन्तु एक बड़ी संख्या में वे दूसरों के पास गुलामों को पहुँचाते थे।

२, ३ और ४ जुलाई का अधिकाश समय बहसों में ही लग गया और ४ जुलाई की शाम को सभा समाप्त हुई; समिति ने स्वतन्त्रता की घोषणा को और उपस्थित सदस्यों में मि० डिकिन्सन को छोड़कर बाकी सबने हस्ताक्षर किये। चूँकि लोगों के विचार उनकी स्वीकृति से ही नहीं बल्कि उनकी अस्वीकृति से भी जाने जाते हैं, अतः मैं घोषणा के मूल रूप को प्रस्तुत करता हूँ। कांग्रेस द्वारा निकाले गए भागों के नीचे काली रेखा खींच दी गई है[1] और कांग्रेस द्वारा जोड़े गए भागों को हाशिए में लिखा गया है[2]।

---

१. सम्पादकों ने ऐसे वाक्यांशों को Italics में लिखा है।

२. ऐसे वाक्यांशों को ब्रेकेटों में लिखा गया है।

अमरीका के संयुक्त राज्यों के प्रतिनिधियों की सम्मिलित जनरल काँग्रेस में घोषणा

जब मानव इतिहास में एक देश के लिए उन बन्धनों को भंग करना आवश्यक हो जाता है, जो उसे किसी अन्य देश से सम्बन्धित किये हुए थे, और साथ ही विश्व के अन्य देशों के बीच अपना अलग पृथक् और समान प्रतिष्ठित स्थान भी आवश्यक हो जाता है, जिसका कि उसे प्रकृति और ईश्वर से अधिकार प्राप्त है, तो मानव विचारों के प्रति सम्मान निष्ठा यह माँग करती है कि उस देश वासियों को उन कारणों की घोषणा करनी चाहिए कि जिन्होंने उन्हें सम्बन्ध-विच्छेद करने के लिए बाध्य किया है।

हम निम्नलिखित सत्यों को स्वयं प्रमाणित मानते हैं : कि जन्म से सब मनुष्य समान हैं; कि उनके स्रष्टा ने उन्हें कुछ (स्वाभाविक और) अविच्छेद्य अधिकार प्रदान किए हैं; कि इन अधिकारों में जीवन, स्वातन्त्र्य तथा सुख के अनुसरण के अधिकार हैं; कि इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए मनुष्यों में से शासकों की नियुक्ति होती है, जो शासितों की स्वीकृति से अपनी न्यायोचित शक्ति प्राप्त करते हैं; कि जब कभी किसी प्रकार का शासन इन ध्येयों के लिए घातक सिद्ध होता है तो उस शासन के परिवर्तन या उन्मूलन तथा नए शासन की स्थापना का अधिकार जनता को प्राप्त है, जिसकी नींव ऐसे सिद्धान्तों पर आधारित होनी चाहिए और जिसकी शक्तियों का संगठन ऐसे रूप में होना चाहिए कि जिसमें जनता के सुख और सुरक्षा की अधिक-से-अधिक सम्भावना हो। निःसन्देह बुद्धिमानी इसी में है कि चिरकाल से स्थापित सरकारों को मामूली और अस्थायी कारणों की वजह से नहीं बदलना चाहिए; और इस प्रकार समस्त विगत अनुभव ने यह दिखा दिया है कि जनता जिस प्रकार के शासन की अभ्यस्त हो चुकी है उसे बदलने के बजाय वह उस शासन की बुराइयों को तब तक सहन करती रहेगी जब तक कि वे बुराइयाँ असहनीय न हो जायँगी। किन्तु जब कुरीतियों और भ्रष्टाचार का लम्बा क्रम (जो एक विशिष्ट काल में आरम्भ हुआ हो और) एक ही उद्देश्य से अविरत गति से बढ़ता जा रहा हो और जब उसका यह उद्देश्य स्पष्ट हो

जाय कि यह जनता पर निरंकुश शासन लादना चाहता हो, तो यह जनता का अधिकार है, उसका कर्तव्य है कि वह ऐसी सरकार को उलट दे, और अपनी भावी सुरक्षा के लिए नये रक्षकों को तैनात करे। इन उपनिवेशों ने धैर्यपूर्वक उत्पीड़न सहन किया है और अब आवश्यकता है कि वे अपनी सरकार के पहले रूप को *परिवर्तित* (ध्वंस) कर दें। ग्रेट ब्रिटेन के वर्तमान सम्राट् का इतिहास *बार-बार* (अनवरत) होने वाली हानियों और अत्याचारों का इतिहास है *जिन सबका* ध्येय इन राज्यों पर निरंकुश आतंक स्थापित करना है (और जिनमें से कोई एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जो इस ध्येय के विपरीत हो)। इसे प्रमाणित करने के लिए हम निष्पक्ष जगत् के सम्मुख उन तथ्यों को उपस्थित करते हैं (जिनकी सत्यता के लिए हम अपनी उस आस्था की शपथ लेते हैं जिस पर अभी तक झूठ का रंग नहीं चढ़ा है)।

सम्राट् ने उन कानूनों को अपनी स्वीकृति देने से इन्कार किया है जो लोक-कल्याण के लिए अत्यन्त हितकर एवं आवश्यक थे।

उन्होंने अपने राज्यपालों को अत्यावश्यक एवं तात्कालिक महत्त्व रखने वाले कानूनों को मंजूरी देने से रोक दिया और उनका लागू होना तब तक स्थगित रखे जाने का आदेश दिया जब तक कि उनकी अपनी मंजूरी न ले ली जाय; और इस प्रकार इन कानूनों के स्थगित होने के बाद उन्होंने इस विषय में सम्पूर्णतया अवहेलना दिखाई है।

उन्होंने जनता के बड़े-बड़े जिलों की व्यवस्था-सम्बन्धी अन्य कानूनों को मंजूर करने से इन्कार कर दिया जब तक कि यह लोग विधान-सभा में अपने प्रतिनिधित्व का अधिकार न त्याग दें, जो कि उनके लिए एक अमूल्य निधि है, पर केवल आततायियों के लिए भयप्रद है।

उन्होंने विधान-सभाओं के अधिवेशन ऐसे स्थानों पर बुलाये जो कि असाधारण असुविधाजनक और सार्वजनिक लेख्यों को रखे जाने की जगहों से दूर थे। ऐसा करने का एक-मात्र उद्देश्य इन लोगों को थकाकर अपनी बात मनवाना था।

उन्होंने प्रतिनिधि-सभाओं को बार-बार (और लगातार) इसलिए भंग

किया क्योंकि उन्होंने जनता के अधिकारों पर किये गए हमलों का मर्दा
के साथ मुकाबला किया था।

उन्होंने इन सभाओं के भंग करने के बहुत देर बाद तक अन्य लोगों को निर्वाचित करके भेजने की स्वीकृति भी नहीं दी, जिससे व्यवस्थापन नैतिक अधिकार, जो कि नष्ट नहीं किये जा सकते हैं, क्रियान्वित किये जाने के लिए पुनः जनता को प्राप्त हो गए, और इस बीच राज्य के लिए बाहरी हमले और आन्तरिक अशान्ति के सारे खतरे पैदा हो गए।

उन्होंने इन राज्यों की जनसंख्या पर रोक लगाने की चेष्टा की; और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विदेशियों के देशीयकरण के कानूनों में रुकावट पैदा की। इस प्रदेश में प्रवास के लिए आने की स्वीकृति देने और भूमि के नये स्वत्व-विनियोगों की व्यवस्था उत्पन्न करने से इन्कार करके विदेशियों को सुविधा देने के कानूनों में बाधा उपस्थित की।

उन्होंने न्यायपालिका स्थापित करने के लिए कानूनों को मंजूरी देने से इन्कार करके न्याय के प्रशासन में बाधा उपस्थित की है (और कई राज्यों में इस कार्य को पूर्णतः रोक दिया है।)

उन्होंने (हमारे) न्यायाधीशों को अपनी मर्जी पदावधि और वेतनों की राशि को केवल अपनी ही इच्छा पर निर्भर रखा है।

उन्होंने (अपने स्वयं-स्वीकृत अधिकार से) बहुत से नये पदों की स्थापना की है और हमारे लोगों को तंग करने और उनकी जीविका हड़प लेने के लिए नये अफसरों का एक बड़ा दल यहाँ भेजा है।

उन्होंने हमारी विधान-सभाओं की अनुमति लिये बिना शान्ति-काल में स्थायी सेनाओं (और युद्ध के जहाजों) को हमारे बीच रखा है।

उन्होंने नागरिक शक्ति से सैनिक शक्ति को स्वतन्त्र और उच्च बनाया है।

उन्होंने दूसरे लोगों के साथ मिलकर हमारे विधानों और कानूनों द्वारा अस्वीकृत क्षेत्राधिकार के अधीन हमें बनाया है। हमारे बीच सशस्त्र सेना के बड़े-बड़े दस्ते रखने के लिए उन्होंने उन लोगों के झूठे विधान-कार्य को स्वीकृति दी है ताकि इन राज्यों में रहने वाले लोगों की हत्या करने वालों

पर झूठा मुकदमा चलाकर बचाया जा सके, ताकि संसार के सब भागों से हमारे व्यापारिक सम्बन्ध भंग किये जा सकें; ताकि हमारी अनुमति प्राप्त किये बिना ही हम पर कर लगाये जा सकें; *ताकि बहुत से मामलों में* हमें जूरी की अदालत से मिलने वाले लाभों से वंचित किया जा सके; ताकि मिथ्या अपराधों के लिए मुकदमे चलाने के लिए हमें समुद्र-पार भेजा जा सके; ताकि आस-पास के प्रांतों में इंगलिश कानूनों की स्वतन्त्र पद्धति का उन्मूलन किया जा सके और वहाँ एक स्वेच्छाचारी सरकार बनाई जा सके, और उसकी सीमाओं को बढ़ाया जा सके ताकि उसे उदाहरण के रूप में और इन *उपनिवेशों* (राज्यों) में निरंकुश शासन स्थापित करने का उचित साधन बनाया जा सके; ताकि हमारे अधिकार-पत्रों को छीना जा सके, हमारे बेशकीमती कानूनों को रद्द किया जा सके; ताकि हमारी सरकारों के रूप को मूलतः बदला जा सके; ताकि हमारी विधान-सभाओं को स्थगित किया जा सके; और उन्हें सब अवस्थाओं में हमारे लिए कानून बनाने के अधिकारों से सम्पन्न घोषित किया जा सके।

उन्होंने *हमें अपनी रक्षा से बाहर घोषित करके और हमारे* खिलाफ लड़ाई छेड़कर (अपने राज्यपालों को हटाकर और हमें अपनी रक्षा और संरक्षण से हटाकर) यहाँ की सरकार से पद-त्याग कर दिया है।

उन्होंने हमारे समुद्रों को लूटा, हमारे समुद्र-तटों को उजाड़ा, हमारे शहरों में आग लगाई और हमारे लोगों की जिन्दगियाँ बरबाद कीं।

उन्होंने इस समय भी भाड़े के विदेशी सैनिकों की बड़ी-बड़ी सेनाएँ भेजकर मौत, बरबादी और अत्याचार के उन कामों को जारी रखा है जो कि निर्दयता और विश्वासघात से शुरू हुए थे, *और जिनका मुकाबला इतिहास के असभ्यतम युगों से भी नहीं किया जा सकता* और जो कि एक सभ्य राष्ट्र के प्रधान के लिए *सर्वथा* शोभाहीन हैं।

उन्होंने हमारे साथी नागरिकों को समुद्रों के बीच बन्दी करके उन्हें अपने देश के विरुद्ध शस्त्र उठाने और अपने ही भाइयों और मित्रों के हत्यारे बनने अथवा उनके हाथ अपनी मृत्यु बुलवाने के लिए बाध्य किया है।

उन्होंने हमारे बीच घरेलू बलवे को बढ़ावा दिया है, और हमारे ₹
के अधिवासी निर्दयी जंगली इण्डियनों को हमारे विरुद्ध लड़ाने की
की है, जिनके युद्ध का तरीका स्त्री-पुरुषों, बच्चे-बूढ़े और सब प्रकार
अस्तित्वों) की अवस्थाओं में बिना भेद-भाव संहार करना है।

(उन्होंने हमारे साथी नागरिकों के बीच कपटपूर्ण बलवों को ‹
दिया है और हमारी जायदादों के दखल और जब्त किये जाने का प्रल
भी दिया है।)

उन्होंने स्वयं मानव-प्रकृति के विरुद्ध युद्ध छेड़ा है, और एक
सुदूर स्थित जनता के जीवन और स्वातन्त्र्य के पवित्र अधिकारों का ख
किया है जिसने उनके विरुद्ध कभी कोई आपत्तिजनक कार्य नहीं कि
उन्होंने इन लोगों को बन्दी बनाकर और गुलामी में जकड़कर दूसरे गोल
में पहुँचाया है, या उन्हें यहाँ लाने में निर्दयतापूर्वक मौत के घाट उ
है। लुटेरों-जैसा यह युद्ध जो *अधर्मियों* को पसन्द है, ग्रेट ब्रिटेन के ईस
राजा का युद्ध है। एक ऐसा बाजार खुला रखने की नीयत से, जहाँ मनु
को खरीदा और बेचा जा सके, उन्होंने इस घृणित बाजार को रोकने
निषेध करने की हरेक वैधानिक चेष्टा को दबाने के लिए अपने अधिक
का दुरुपयोग किया है। और इसलिए कि इन भयंकरताओं के ढेर को रं
के लिए किसी विशिष्ट तथ्य की आवश्यकता न हो, वह अब हमारे बी
उन्हीं लोगों को सशस्त्र बलवे के लिए और उस स्वतन्त्रता को खरीदने
लिए बढ़ावा दे रहे हैं जिससे उन्होंने हमें वंचित कर रखा है। इस का
के लिए वह उन लोगों की हत्या कर रहे हैं जिनके विरुद्ध उन्होंने दूस
को खड़ा किया था; और इस प्रकार जनता के एक समूह की स्वतन्त्रता
के विरुद्ध किये हुए पुराने पापों के लिए उनको दूसरे समूह के जीवनों
प्रति अपराध करने के लिए भड़काकर वह अपने पुराने अपराधों की कीमत
अदा कर रहे हैं।

इन उत्पीड़नों को दूर करने के लिए हमने हर बार अत्यन्त नम्रता

साथ विनती की। बार-बार की गई हमारी विनतियों का उत्तर बार-बार चोट पहुँचाकर दिया गया।

इस प्रकार के आचरण वाला राजा, जिसे आततायी कहा जा सकता है, स्वतन्त्र लोगों का शासक बनने के अयोग्य है। (उन लोगों का शासक बनने के अयोग्य है जो स्वतन्त्र होना चाहते हैं। भावी युगों में मुश्किल से इस बात पर विश्वास किया जायगा कि बारह वर्षों की अल्प अवधि में एक आदमी की सख्ती ने स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों में पली हुई जनता पर एक इतने विस्तृत और खुले हुए अत्याचार की नींव कायम की।)

न हमने अपने ब्रिटिश भाइयों की तरफ ध्यान देने में कमी की है। हमने बार-बार उन्हें उनकी विधान-सभाओं द्वारा हमारे (इन राज्यों के) ऊपर एक *अवांछित* क्षेत्राधिकार लागू किये जाने के बारे में सचेत किया है। हमने यहाँ आने और बसने की परिस्थितियों के बारे में भी उन्हें बार-बार बताया है (और कोई भी एक ऐसी परिस्थिति न थी जिससे यह समझने में मुश्किल हो कि हम अपना खून और पैसा खर्च करके यहाँ बसे हैं जिसमें ग्रेट ब्रिटेन के धन या शक्ति की हमें कोई सहायता न मिली; कि इन विभिन्न सरकारों को कायम करने में हमने अपने सब राज्यों के लिए एक ही राजा को माना था, और इस प्रकार ग्रेट ब्रिटेन-वासियों से स्थायी मैत्री का सम्बन्ध जोड़ा था; किन्तु उनकी संसद् के अधीन होना हमारे संविधान का भाग न था और यदि इतिहास को साक्षी माना जाय तो न कभी इस बात का विचार ही उत्पन्न हुआ था; और हमने उनके सहज न्याय और उदारता के आधार पर अपील की, और) हमने अपने बन्धुत्व के बन्धनों के नाते उनसे *विनती* की कि वे इस अत्याचार का परित्याग करें जो *अनिवार्यतः* हमारे सम्बन्धों और व्यवहार के लिए घातक होगा (हो सकता है)। वे न्याय और सजातीयता को हमारी आवाज के प्रति बहरे बने रहे। *अतः हमको* (और जब उन्हें अपने कानूनों के नियमित क्रम द्वारा अपने सलाहकारों में से उन लोगों को हटाने का मौका मिला, जो हमारी शान्ति भंग करते थे तो उन्होंने उन्हीं लोगों को अपने स्वतन्त्र निर्वाचन द्वारा पुनः सत्ता प्रदान

की। इस समय भी उनका प्रधान मजिस्ट्रेट हम पर आक्रमण करने और हमें नष्ट करने के लिए न केवल उन सैनिकों को भेज रहा है जिनसे हमारा खून का रिश्ता है बल्कि स्कॉटिश और भाड़े के दूसरे सैनिकों को भेजने की आज्ञा भी दे रहा है। इन बातों ने हमारे पीड़ायुक्त स्नेह-भाव की हमेशा के लिए हत्या कर दी, और अब हमारी पुरुषत्व की भावना यह माँग करती है कि हम अपने इन हृदयहीन भाइयों से हमेशा के लिए सम्बन्ध तोड़ दें। हमें उनके प्रति अपने पुराने स्नेह को भूलने की कोशिश करनी चाहिए, और जैसे कि दूसरे सब लोगों को हम युद्ध में अपना शत्रु और शान्ति में मित्र समझते हैं, उसी प्रकार इन लोगों से भी व्यवहार करना चाहिए। हम लोग मिलकर एक स्वतन्त्र और एक महान् जन-समुदाय का निर्माण कर सकते थे; किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि गौरव और स्वतन्त्रता का परस्पर सम्बन्ध उनकी शान के खिलाफ है। यदि वे यही चाहते हैं तो यही ठीक है। सुख और गौरव का रास्ता हमारे लिए भी खुला है। हम इस रास्ते पर उनसे अलग रहकर चलेंगे, और) उस अनिवार्यता को स्वीकार करना पड़ेगा जो हमारा उनसे (हमेशा के लिए) सम्बन्ध-विच्छेद करती है, और *हमें उन्हें बाकी मनुष्य जाति की तरह युद्ध में शत्रु और शान्ति में मित्र समझना होगा।*

इसलिए हम अमरीका के संयुक्त राज्यों के प्रतिनिधि जनरल कांग्रेस के रूप में एकत्रित होकर (इन राज्यों के भले निवासियों द्वारा प्राप्त अधिकार और उनके नाम से ग्रेट ब्रिटेन के सम्राटों की अधीनता और उनके प्रति अपनी निष्ठा का खण्डन करते हैं; यही बात उन लोगों के लिए लागू होती है जो भविष्य में इन सम्राटों द्वारा हमारे ऊपर अपना

इसलिए हम अमरीका के संयुक्त राज्यों के प्रतिनिधि, जनरल कांग्रेस के रूप में एकत्रित होकर, अपने विचारों की सत्यता के लिए संसार के सर्वोच्च न्यायाधीश से विनती करते हुए, और इन उपनिवेशों के भले निवासियों द्वारा प्राप्त अधिकार और उनके नाम से गम्भीरतापूर्वक घोषणा करते हैं और प्रकाशित करते हैं कि यह संयुक्त उपनिवेश स्वतन्त्र राज्य

अधिकार समझ सकते हैं। हम उन सब राजनीतिक सम्बन्धों को सम्पूर्णतः भंग करते हैं जो कि अब तक हमारे और ग्रेट ब्रिटेन की संसद् तथा जनता के बीच चले आए हैं। और अन्त में, हम इन उपनिवेशों के स्वाधीन बनने और स्वतन्त्र राज्यों के रूप में इनके अस्तित्व की घोषणा करते हैं;) और कि स्वतन्त्र राज्यों के रूप में इन्हें युद्ध करने, शान्ति कायम करने, सन्धि करने, व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने, और उन सब कामों को करने का पूरा अधिकार प्राप्त है जो कि स्वतन्त्र राज्यों को होता है।

और इस घोषणा का समर्थन करने के लिए हम अपने जीवन, अपने भाग्य और अपने पवित्र सम्मान की परस्पर शपथ लेते हैं।

हैं और इस स्वतन्त्रता का उन्हें अधिकार है; कि वह ब्रिटिश ताज के प्रति निष्ठा से सब प्रकार से मुक्त हैं, और कि ग्रेट ब्रिटेन तथा उनके बीच जो राजनीतिक सम्बन्ध हैं, उन सबको सम्पूर्णतः भंग किया जाता है जिन्हें कि भंग किया ही जाना चाहिए था; और कि स्वतन्त्र राज्यों के रूप में इन्हें युद्ध करने, शान्ति कायम करने, सन्धि करने, व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने और उन सब कामों को करने का पूरा अधिकार प्राप्त है जो कि स्वतन्त्र राज्यों को होता है।

और इस घोषणा का समर्थन करने के लिए, परमात्मा की छत्र-छाया का दृढ़ विश्वास रखते हुए, हम अपने जीवन, अपने भाग्य और अपने पवित्र सम्मान की परस्पर शपथ लेते हैं।[1]

इस प्रकार ४ तारीख को घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर हुए, जिसे चर्म-पत्र पर उतारा गया और पुनः उस पर २ अगस्त को हस्ताक्षर हुए।

(समयान्तर, स्वतन्त्रता की घोषणा से सम्बन्धित कार्रवाइयों के बारे

---

१. इस अन्तिम भाग में इतने संशोधन हैं कि सम्पादकों ने जेफ़रसन की तरह उनके मसविदे को बाईं तरफ और संशोधित एवं स्वीकृत मसविदे को दाहिनी तरफ छापा है।

में कुछ गलत बातें जनता में फैल गईं, और इस पर मि० सेम्युमल ए० वेल्स ने मुझसे स्पष्टीकरण चाहा, जो कि मैं उनको अपने १२ और १६ मई के पत्रों में लिख चुका हूँ, और अब दुबारा लिख रहा हूँ। जब यह बातें चल रही थीं, मैं उन्हें अपने यहाँ दर्ज कर लिया करता था, और उनकी समाप्ति पर उन्हें सुधारकर परिष्कृत रूप में लिख लेता था। १ से ७ तक के पत्रों में से तब के लिखे हुए पहले दो पन्ने असल हैं, और बाद के दो पन्ने संघ की प्रारंभिक बहसों के हैं, जिन्हें मैंने उस प्रकार लिखा था।'[1]

शुक्रवार, १२ जुलाई को कन्फेडरेशन के अनुच्छेद बनाने के लिए नियत समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की, और २२ तारीख को सभा ने उस पर विचार करने के लिए अपने-आपको एक समिति के रूप में परिवर्तित कर लिया। उस मास की ३० और ३१ और अगले मास की १ तारीख को उन अनुच्छेदों पर बहस हुई जिसके द्वारा प्रत्येक राज्य द्वारा सामूहिक कोष में दिये जाने वाले धन का अनुपात और कांग्रेस में मतदान के तरीके को निश्चित किया गया। इन अनुच्छेदों में प्रथम अनुच्छेद को मूल मसविदे में इन शब्दों में व्यक्त किया गया था : "अनुच्छेद ११ युद्ध की सारी देन-दारियाँ और अन्य सब व्यय जो सामूहिक सुरक्षा के लिए किये जायँगे और जिन्हें सम्मिलित संयुक्त राज्यों की स्वीकृति प्राप्त होगी, उस सामूहिक कोष से लिये जायँगे जिसे प्रत्येक उपनिवेश के कर न देने वाले इंडियनों को छोड़-कर आयु, लिंग-भेद और गुण के आधार पर जन-संख्या के अनुपात से हर उपनिवेशों द्वारा संयोजित किया जायगा, और जिसका सही-सही हिसाब गोरे अधिवासियों की संख्या बतलाते हुए त्रिवार्षिक रूप में लिया जायगा और संयुक्त राज्यों की असेम्बली को भेजा जायगा।"

मि० चेज ने प्रस्ताव रखा कि इन अनुपातों को हरेक अवस्था में निवासियों की संख्या पर नहीं, बल्कि 'गोरे निवासियों' की संख्या पर निर्धारित किया जाना चाहिए। वह यह मानते थे कि सम्पत्ति के अनुपात

1. अँकड़ों में लिखा हुआ जेफरसन का है।

में ही कर लगाना चाहिए, और सैद्धान्तिक रूप में यही सत्य नियम है; किन्तु कई प्रकार की कठिनाइयों के कारण इस नियम को कभी व्यवहार में नहीं लाया जा सकता था। प्रत्येक राज्य में सचाई और समानता की दृष्टि से जायदादों की कीमत का कभी भी सही अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता था। अतः राज्य की सम्पत्ति आँकने का कोई अन्य उपाय होना चाहिए, एक ऐसा मानक होना चाहिए जो अधिक सरल हो। उनकी राय थी कि सम्पत्ति आँकने के लिए निवासियों की संख्या एक खासी अच्छी कसौटी है जिसका आसानी से प्रयोग भी किया जा सकता है। फलतः उनके विचार में यही एक सर्वोत्तम तरीका था, जिसे हम केवल एक अपवाद छोड़कर अपना सकते थे : उनका कहना था कि नीग्रो भी एक सम्पत्ति है और इसलिए उन राज्यों में और उनमें, जहाँ दास कम हैं, भूमि तथा व्यक्तियों की सम्पत्ति में भेद नहीं किया जा सकता; जैसे कि उत्तरी प्रदेश का किसान अपने मुनाफे की बचत गाय, भैंस और घोड़ों आदि में लगाता है जब कि दक्षिणी किसान अपने मुनाफे की बचत गुलामों को खरीदने में लगाता है। अतः उत्तरी किसानों और उनके ढोरों के आधार पर कर लगाने में जितनी बुद्धिमानी है उससे अधिक बुद्धिमानी दक्षिणी किसान और उसके गुलामों के आधार पर कर लगाने में नहीं है। इसलिए दक्षिणी राज्यों के लोगों की संख्या और उनकी सम्पत्ति के सम्मिलित आधार पर कर लगाना चाहिए, जब कि उत्तरी राज्यों में केवल लोगों की संख्या के आधार पर कर लगाना चाहिए; कि नीग्रो लोगों को वास्तव में ढोरों की तरह एक राज्य का सदस्य नहीं समझना चाहिए, और न इससे अधिक इसमें उनका कोई हित ही है।

मि० जॉन एडम्स का विचार था कि इस अनुच्छेद के अनुसार लोगों की संख्या को राज्य की सम्पत्ति के चिह्न-स्वरूप दिया गया है न कि कर लगाने के हित; अतः जहाँ तक प्रस्तुत प्रश्न का सम्बन्ध है इसका कोई महत्त्व नहीं कि आप अपने लोगों को कोई भी नाम दें—चाहे आप उन्हें स्वतन्त्र कहें अथवा दास; कुछ देशों में दरिद्र श्रमिक-वर्ग को स्वतन्त्र मनुष्य कहा जाता है जब कि दूसरे देशों में उन्हें ही दास कहा जाता है; लेकिन

राज्य के लिए यह अन्तर काल्पनिक है। इस बात से मना क्या अन्तर हो
जाता है कि एक जमींदार, जिसने अपने खेत में दस मजदूरों को लगा रखा
है, उनको हर वर्ष इतना धन देता है कि जिससे वे अपनी जिन्दगी को चलनी
को पूरा कर सकें, या वह उन्हें उन जरूरी चीजों को दे देता है जिससे वे
तंगदस्ती से गुजर कर पाते हैं। यह दस मजदूर दोनों ही अवस्थाओं में
राज्य के धन और उसके निर्यात के सामान को बढ़ाने वाले हैं। निश्चय ही
पाँच सौ स्वतन्त्र व्यक्ति पाँच सौ गुलामों की अपेक्षा न अधिक मुनाफा पैदा कर
सकते हैं और न करों की अदायगी के लिए अतिरिक्त बचत कर सकते हैं।
अतः जिस राज्य में मजदूरों को स्वतन्त्र व्यक्ति कहा जाता है उस पर उन
राज्यों से अधिक कर नहीं लगाना चाहिए जहाँ कि लोगों को गुलाम कहा
जाता है। मान लीजिए कि प्रकृति अथवा विधान की एक असाधारण कार्रवाई
द्वारा एक राज्य के आधे मजदूर एक रात में गुलाम बन जाते हैं। तो क्या
वह राज्य ज्यादा गरीब हो जायगा या कर चुकाने में अधिक असमर्थ होगा!
अधिकांश देशों में श्रमिक-वर्ग की गरीबी, विशेषकर उत्तरी राज्यों के मजदूरों
की दरिद्रता, उतनी ही गिरी हुई है जितनी कि गुलामों की। मजदूरों की
संख्या ही करों के लिए अतिरिक्त उपज करती है इसलिए निश्चित रूप से
इन संख्याओं को ही सम्पत्ति का सही चिह्न समझना चाहिए; और यहाँ
'सम्पत्ति' शब्द का जो प्रयोग हुआ है और राज्य के कुछ लोगों पर जिस
प्रकार यह लागू होता है उसी से भ्रम उत्पन्न हुआ है। दक्षिणी किसान
किस प्रकार गुलामों को प्राप्त करता है? या तो बाहर से मँगाकर अथवा
अपने पड़ौसी से खरीदकर। यदि वह एक गुलाम बाहर से मँगवाता है
तो वह अपने देश के मजदूरों की संख्या को एक से बढ़ाता है और उसी
अनुपात से अपने मुनाफे और कर अदा करने की अपनी सामर्थ्य को बढ़ाता
है; यदि वह अपने पड़ौसी से खरीदता है तो यह केवल एक मजदूर का एक
खेत से दूसरे खेत में चला जाना हुआ और ऐसा करने से राज्य के वार्षिक
उत्पादन करने में कोई अन्तर नहीं हुआ और इस प्रकार कर में भी कोई
अन्तर नहीं हुआ। यदि उत्तरी किसान अपने खेत पर दस मजदूरों से काम

लेता है तो यह सच है कि वह इन दस मज़दूरों के श्रम के अतिरिक्त लाभ को ढोरों को लगा सकता है; किन्तु दस गुलामों से काम लेने वाला दक्षिणी किसान भी वैसा ही कर सकता है, जिसके अर्थ हुए कि एक लाख मज़दूरों वाला राज्य एक लाख गुलामों वाले राज्य से अधिक ढोरों को नहीं रख सकता। इसलिए उनके पास इस प्रकार की कोई अधिक सम्पत्ति नहीं है। बोल-चाल के प्रचलित तरीके में वे शब्द एक स्वतन्त्र मज़दूर को अपने नियोजक की जितनी सम्पत्ति कहा जाता है उससे अधिक एक गुलाम को अपने मालिक की सम्पत्ति कहा जाता है; किन्तु जहाँ तक राज्य का सम्बन्ध है दोनों ही उसकी सम्पत्ति की दृष्टि से समान हैं और दोनों ही समान रूप से कर के अंश को बढ़ाते हैं।

मि० हैरीसन ने समझौते के रूप में तजवीज पेश की कि दो गुलामों को एक स्वतन्त्र व्यक्ति के बराबर गिना जाय। उनका कहना था कि स्वतन्त्र व्यक्तियों जितना काम गुलाम नहीं करते और उन्हें इसमें शक था कि एक स्वतन्त्र व्यक्ति के बराबर भी दो गुलाम काम कर सकते हैं; कि इस बात का सबूत मज़दूरी की कीमत से मिलता था कि दक्षिणी उपनिवेशों में एक मज़दूर का किराया आठ से बारह पौंड तक था जब कि उत्तरी उपनिवेशों में आम तौर पर चौबीस पौंड था।

मि० विलसन ने कहा कि यदि प्रस्तुत संशोधन स्वीकृत हो गया तो गुलामों के सब लाभ दक्षिणी उपनिवेशों को प्राप्त होंगे जब कि उत्तरी उपनिवेशों को सारा भार उठाना होगा; कि गुलामों से एक राज्य के लाभ में वृद्धि होती है और इस लाभ को दक्षिणी राज्य केवल अपने लिए ही रखना चाहते हैं; और इसके साथ ही वे सुरक्षा के भार को भी बढ़ा देंगे जो कि अधिकांशतः उत्तरी राज्यों पर ही पड़ेगा : कि गुलाम स्वतन्त्र व्यक्तियों का स्थान ले लेंगे और उनका भोजन हड़पेंगे। आप अपने गुलामों को बरखास्त कीजिए और तब स्वतन्त्र व्यक्ति उनकी जगह ले लेंगे। यह हमारा कर्तव्य है कि हम गुलामों के आयात को हर प्रकार से निरुत्साहित करें; किन्तु इस संशोधन से तो गुलामों का आयात करने वाले को तीन स्वतन्त्र व्यक्तियों का

इयों की भीषणता में वृद्धि होगी, जो इस पृथक्त्व और स्वाधीनता की अवस्था में हमारी शोचनीय दशा कर देगी। कि हमारी महत्ता, हमारे हित और हमारी शान्ति की यह माँग है कि हम संघ में शामिल हों और इस कठिन प्रश्न पर समझौता करने के लिए परस्पर त्याग करें। उनकी राय थी कि यदि छोटे उपनिवेशों को समान मताधिकार के कुछ अवसर न दिये गए तो उनके अधिकार छिन जायँगे; और इसलिए कांग्रेस के सम्मुख आने वाले प्रश्नों में भेद होना चाहिए। जीवन अथवा स्वातन्त्र्य-सम्बन्धी सभी प्रश्नों के लिए छोटे राज्यों की और सम्पत्ति-सम्बन्धी सभी प्रश्नों में बड़े राज्यों की सुरक्षा होनी चाहिए। अतः उनका प्रस्ताव था कि अर्थ-सम्बन्धी वोटों के लिए उपनिवेश का अधिकार उसके निवासियों की संख्या के अनुपात में होना चाहिए।

डॉ० फ्रैंकलिन का विचार था कि सभी स्थितियों में मताधिकार का यही अनुपात होना चाहिए। उन्होंने इस बात की ओर ध्यान दिया कि डेलावेयर प्रान्तों ने अपने प्रतिनिधियों को इस अनुच्छेद से असहमत होने के लिए बाध्य कर रखा था। उनकी दृष्टि में किसी राज्य का यह कहना कि जब तक हम उन्हें अपना रुपया खर्च करने की आज्ञा न देंगे वे हमारे संघ में शामिल न होंगे, एक असाधारण भाषा का प्रयोग करना है। निश्चय ही यदि हमें समान मताधिकार होगा तो रुपया भी हमें समान रूप से ही खर्च करना होगा; किन्तु इस कीमत पर विशेषाधिकार को खरीदने के लिए छोटे राज्य मुश्किल से ही राजी होंगे। उनका यह भी कहना था कि अगर वह किसी छोटे राज्य में रहते होते, जहाँ प्रतिनिधित्व मूलतः समान होता, पर जो कि समय और घटनावश यदि असमान हो गया होता तो वह शासन को असन्तुलित करने की अपेक्षा आत्म-समर्पण कर देते। लेकिन हम प्रदेश में ऐसा करना बहुत बड़ी भूल होगी, क्योंकि जो कुछ है उसे स्वीकार करना हमारे अधिकार में है। इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के विलय के समय स्कॉटलैण्ड ने बड़ी दलीलें दिये थे जो कि छोटे राज्य इस समय दे रहे हैं, किन्तु अनुभव ने सिद्ध किया कि उनके डर कभी कोई कारण

नहीं हुआ : कि उनके हिमायतियों ने भविष्यवाणी की थी कि प्राचीन काल की भाँति पुनः बड़ी मछली छोटी मछली को हड़प जायगी, किन्तु उनका ख्याल था कि इस भविष्यवाणी का घटनाक्रम उलट गया और छोटी मछली ने बड़ी मछली को हड़प लिया; क्योंकि स्काटलैण्डवासियों ने वास्तव में सरकार को अपने कब्जे में कर लिया और उन्होंने इंगलैण्डवासियों के लिए कानून बनाये। उपनिवेशों द्वारा वोट दिए जाने के कांग्रेस के मूल समझौते की उन्होंने निन्दा की, और इसलिए उनकी राय थी कि, सब मामलों में, कर देने वाले व्यक्तियों की संख्या के अनुपात वाले पक्ष में ही उनका मत होना चाहिए।

डॉ० विल्सन ने इस अनुच्छेद के प्रत्येक संशोधन का विरोध किया। सभी लोग यह मानते हैं कि संघ-निर्माण आवश्यक है। यदि यह विचार विदेशों तक पहुँच जाय कि हमारे संघ निर्माण की कोई सम्भावना नहीं तो इससे लोगों का जोश ठण्डा पड़ जायगा, हमारे संघर्ष का वैभव और उसकी महत्ता कम हो जायगी; क्योंकि इससे युद्ध और मन-मुटाव की भावी आशंकाएँ हमारे सामने आ खड़ी होंगी। यदि समान मताधिकार अस्वीकार किया गया तो छोटे राज्य बड़ों के दास बन जायेंगे; और सारे पुराने अनुभव ने यह दिखा दिया है कि स्वतन्त्र राज्यों के दास और उनकी प्रजा सबसे ज्यादा दासता के बन्धनों में जकड़ी होती है। उन्होंने स्पार्टा के हेलट और रोम के प्रान्तों के उदाहरण दिये। उन्होंने कहा कि विदेशी शक्तियाँ ऐसी कमी देखकर ऐसे असमान राष्ट्र-संघ से छोटे राज्यों को पृथक् करने के लिए उन्हें अपनी कठपुतली बना लेंगे। इन उपनिवेशों को वास्तव में व्यक्तियों के समान मानना चाहिए, और इस प्रकार सब झगड़ों में उन्हें समान मताधिकार मिलना चाहिए; कि अब वे व्यक्तियों के रूप में एकत्रित होकर आपस में सौदा तय कर रहे हैं और इसलिए, निश्चय ही, उन्हें व्यक्तियों के रूप में मत देने का अधिकार है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी में उन्होंने व्यक्तियों के रूप में ही वोट दिये थे, न कि अपने जमा-माल के अनुपात से बेलजियन राष्ट्र-संघ में प्रान्तों के आधार पर ही वोट दिये गए थे। युद्ध-सम्बन्धी

प्रश्नों में जितनी छोटे राज्यों की दिलचस्पी है उतनी ही बड़े राज्यों की और इसलिए उन्हें समान मताधिकार होना चाहिए; और वास्तव में, आनुपातिक दृष्टि से बड़े राज्य ही राष्ट्र-संघ पर युद्ध लाने के हेतु बन सकते हैं क्योंकि उन्हीं की सीमाएँ अधिक विस्तृत हैं। उन्होंने यह स्वीकार किया कि प्रतिनिधित्व की समानता सर्वोत्तम सिद्धान्त है किन्तु यह उन्हीं चीजों पर लागू होना चाहिए जो एक रूप हों, अर्थात् एक-सी और समान स्वभाव वाली वस्तुएँ हों : कि व्यक्तियों से सम्बन्धित प्रश्न कभी कांग्रेस के सामने न आ सकेंगे; कि उपनिवेशों के अतिरिक्त और कोई भी बात कांग्रेस के सामने नहीं आनी चाहिए। उन्होंने निगमन और फेडरल संघ का अन्तर बताया। इंगलैण्ड का संघ एक प्रकार का निगमन है, तो भी स्कॉटलैण्ड को इस संघ से हानि पहुँची है; क्योंकि इसके निवासियों को नौकरी और पद-प्राप्ति की आशा से इसमें ले लिया गया था : यह प्रतिनिधित्व की समानता का उदाहरण न था; क्योंकि स्कॉटलैण्ड को प्रतिनिधित्व का तेरहवाँ अंश मिला था पर भूमि-कर का उसे चालीसवाँ भाग देना पड़ता था। उन्होंने यह आशा प्रकट की कि मानवता की वर्तमान मानसिक आपत्ति में हम चिर-स्थायी संघ की आशा कर सकते हैं बशर्ते कि वह न्यायोचित सिद्धान्तों पर आधारित हो।

जॉन एडम्स ने संख्या के अनुपात से मताधिकार का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि हम यहाँ जनता के प्रतिनिधियों के रूप में उपस्थित हैं; कि कुछ राज्यों में जन-संख्या अधिक है और कुछ में कम; कि इसलिए उनका मताधिकार उस संख्या के अनुपात में होना चाहिए क्योंकि वे प्रतिनिधि आये हैं। पृथ्वी पर मुक्ति, न्याय और समानता की कोई दूसरी शक्ति नहीं हो सकती कि उनमें मानवीय परिपाटी को शामिल किया जा सके। केवल किसी दिन ही यह काम कर सकता है और इसी पर भरोसा किया जा सकता है : कि थोड़े दिनों को बाहरी दिनों का [illegible] के आधार पर प्रतिनिधित्व करना चाहिए; कि उपनिवेशों का स्वीकार केवल एक स्वत्व-मात्र है। क्या एक उपनिवेश का अस्तित्व उसके धन और उसकी

धन-संख्या में वृद्धि कर सकता है ? यदि ऐसा है तो समान रूप से रुपया अदा करना चाहिए। यदि वह संघ की तराजू में भार नहीं बढ़ाता तो वह न तो अधिकारों की वृद्धि करता है और न उनके तर्क की पुष्टि करता है। एक साझेदारी में अ के ५० पौंड, ब के ५०० पौंड और स के १००० पौंड हैं। क्या यह न्यायानुसार होगा कि साझेदारी के धन का वे समान रूप से बँटवारा करें ? यह कहा गया है कि हम स्वतन्त्र व्यक्ति हैं जो आपस में सौदा तय करने के लिए इकट्ठे हुए हैं। प्रश्न यह नहीं है कि हम इस समय क्या हैं बल्कि यह है कि सौदा तय हो जाने के बाद हमें क्या होना चाहिए। संघ हमें केवल एक व्यक्ति बना देगा, जब कि हमें एक धातु के विभिन्न टुकड़ों की तरह सम्मिलित होना चाहिए। अनन्तर हम अपना पृथक् व्यक्तित्व न रख पायेंगे और संघ में उपस्थित होने वाले सब प्रश्नों के लिए हमारा एकीकरण हो जायगा। अतः वे सब युक्तियाँ, जो अन्य सभाओं में समान प्रतिनिधित्व को न्यायोचित सिद्ध करती हैं, यहाँ भी लागू होती हैं। यह आपत्ति की गई है कि आनुपातिक मतदान छोटे राज्यों के लिए खतरा पैदा कर देगा। हमारा उत्तर है कि इससे बड़े राज्यों को खतरा पैदा होगा। वर्जीनिया, पेनसिलवानिया और मेसाच्यूसेट्स तीन बड़े उपनिवेश हैं। उनकी दूरी को देखिए, उनकी पैदावार की भिन्नता पर गौर कीजिए, उनके अपने-अपने हितों और रीति-रिवाजों पर विचार कीजिए, और यह स्पष्ट हो जायगा कि छोटे राज्यों के उत्पीड़न के लिए एकत्र होने में न उनकी दिलचस्पी है और न झुकाव : कि छोटे राज्य स्वभावतः बड़े राज्यों से सब प्रश्नों में भिन्न मत रखेंगे। रोड आइलैण्ड अपने सम्बन्ध, समानता और आदान-प्रदान के कारण उन्हीं उद्देश्यों का अनुसरण करेगा जोकि मेसाच्यूसेट्स करता है; और इसी प्रकार जरसी, डेलावेयर और मेरीलैण्ड पेनसिलवानिया का अनुसरण करेंगे।

डॉ० रश ने बताया कि डच प्रजातन्त्र की स्वाधीनता का पतन तीन कारणों से हुआ: १. सब अवसरों पर सम्पूर्ण सर्वसम्मति की आवश्यकता। २. अपने मतदाताओं से परामर्श लेने का उनका आभार। ३. प्रान्तों द्वारा

उनका मतदान। इस अन्तिम कारण ने उनके प्रतिनिधित्व की समानता को नष्ट कर दिया, और ग्रेट ब्रिटेन की स्वतन्त्रताएँ भी इसी दोष के कारण नष्ट होती जा रही हैं। हमारे अधिकारों का एक अंग हमारी विधान-सभाओं के हाथों में सुपुर्द है। वहाँ यह स्वीकार किया गया था कि प्रतिनिधित्व की समानता होनी चाहिए। हमारे अधिकारों का दूसरा अंग कांग्रेस के हाथों सुपुर्द है: तो यह समान रूप से आवश्यक क्यों नहीं कि वहाँ भी समान प्रतिनिधित्व हो? यदि सब लोगों को एक साथ इकट्ठा करना सम्भव होता तो उनके सामने पेश किये गए प्रश्नों को वे बहुमत से निर्धारित करते। तो फिर क्यों वही बहुमत अपने प्रतिनिधियों द्वारा यहाँ मतदान के अवसर पर निर्णय नहीं कर सकता? बड़े उपनिवेश प्राकृतिक रूप से इतनी विभाजित स्थिति में हैं कि उनके मिल जाने का भय काल्पनिक है। उनके हित भिन्न और उनकी परिस्थितियाँ असमान हैं। यह अधिक सम्भव है कि वे प्रतिस्पर्धी बने रहें और छोटे राज्यों को किसी भी पलड़े को भारी बनाने की शक्ति दें। स्वतन्त्रवासियों की संख्या के आधार पर मतदान का एक सर्वोत्तम प्रभाव यह होगा कि उपनिवेशों को दास-प्रथा के लिए निरुत्साहित करने और स्वतन्त्रवासियों की वृद्धि करने की प्रेरणा दी जा सकेगी।

मि० हॉपकिन्स ने कहा कि चार बड़े, चार छोटे और चार मध्यम स्तर के उपनिवेश हैं। चार सबसे बड़े उपनिवेशों में संघ राज्यों की जनसंख्या आधी से ज्यादा होगी, और इसलिए वे मनमाने तौर पर अन्य राज्यों पर शासन करेंगे। इतिहास में समान प्रतिनिधित्व का एक भी उदाहरण नहीं है। जर्मन संघ में राज्यों द्वारा मतदान होता है। हेलवेटिक संघ और बेलजियन संघ में भी यही होता है। प्राचीन संघों में क्या प्रथा प्रचलित थी यह नहीं बताया जा सकता, क्योंकि उस समय का ज्ञान बहुत कम है।

मि० विल्सन की राय थी कि सम्पत्ति के अनुपात से कर लगने चाहिए किन्तु प्रतिनिधित्व स्वतन्त्र व्यक्तियों की संख्या के अनुसार होना चाहिए। एक सरकार सबकी इच्छाओं का एक समूह या इच्छाओं के फल

े रूप में होती है : कि यदि वह सरकार सबकी इच्छाओं का प्रतिनिधित्व
र सके तो वह परिपूर्ण सरकार होगी; और इस लक्ष्य से वह जितनी दूर
होती जाती है उतनी ही अपूर्ण होती है। यह कहा गया है कि कांग्रेस
राज्यों की प्रतिनिधि है, व्यक्तियों की नहीं। मैं कहता हूँ कि राज्यों के सब
व्यक्तियों की देखभाल करना उसका उद्देश्य है। यह आश्चर्य की बात है कि
स हजार व्यक्तियों को 'राज्य' का नाम देकर उन्हें चालीस हजार व्यक्तियों के
समान अधिकार दिया जा रहा है। यह तो जादू का ही असर हो सकता
, तर्क का नहीं। जहाँ तक उन प्रश्नों का सम्बन्ध है जो कांग्रेस के सामने
य किये जाते हैं हम विभिन्न राज्य नहीं, बल्कि एक राज्य के रूप में
। जब कभी हम यहाँ आते हैं तो अपने व्यक्तित्व को एक ओर रख देते
। जर्मन-संघ तो सरकार का एक मखाक-सा है; किसी भी विषय में उनका
आचरण इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि उनका तरीका गलत है।
लैंडियम-संघ की सबसे बड़ी त्रुटि उनका प्रान्तों द्वारा मतदान है। सम्पूर्ण
हित को निरन्तर छोटे राज्यों के लिए बलिदान किया जाता है। महारानी
न के राज्य-काल में युद्ध का इतिहास इस बात को पर्याप्त रूप में प्रमाणित
रता है। यह पूछा गया है कि क्या चार उपनिवेशों को नौ उपनिवेशों पर
अपनी इच्छानुसार शासन करने का अधिकार दिया जायगा? इसी प्रश्न को मैं
दूसरे रूप में पेश करता हूँ और पूछता हूँ कि बीस लाख व्यक्ति दस लाख
व्यक्तियों को अपने ऊपर मनमाना शासन करने का अधिकार देंगे? यह बहाना
ी किया गया है कि छोटे राज्यों को बड़े राज्यों से खतरा होगा। ईमानदारी
ी भाषा में बोलिए और कहिए कि अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों से खतरा
ोगा। और क्या इस संसार में कोई भी ऐसी असेम्बली है जहाँ इस खतरे
ा समान रूप से बहाना नहीं बनाया जाता? सच तो यह है कि इस दशा
हमारी कार्रवाइयाँ बहुसंख्यकों के हितों के अनुरूप होंगी जो कि उन्हें
ना भी चाहिए। सम्भावना तो इस बात की अधिक है कि बड़े राज्य
ापस में सम्मिलित होने की अपेक्षा असहमत होंगे। मैं मनुष्य के चातुर्य
ो ललकारकर कहता हूँ कि वह कोई एक ऐसी तजवीज पेश कर दिखाए

जो वर्जिनिया, पेनसिलवानिया और मेसाच्यूसेट्स के तो पक्ष में हो पर साथ ही अन्य राज्यों के हित में न हो।

इन अनुच्छेदों पर, जो कि १२ जुलाई '७६ को पेश हुए थे, दिन-प्रति-दिन और समय-समय पर दो वर्ष तक बहस चलती रही और ६ जुलाई '७८ को दस राज्यों ने उन्हें अपनी स्वीकृति प्रदान की। न्यू जरसी ने उसी वर्ष की २६ नवम्बर को और डेलावेयर ने आगामी वर्ष की २२ फरवरी को अपनी स्वीकृति प्रदान की। मेरीलैण्ड ही अकेला था जिसने दो वर्ष अधिक लगाए और १ मार्च '८१ को उसने भी इन अनुच्छेदों को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार यह सारी जिम्मेदारी पूरी हुई।

११ अगस्त से नये वर्ष के लिए हमारे प्रतिनिधि-मण्डल को पुनः नई अवधि प्राप्त हुई, किन्तु इस समय तक नई सरकार का संगठन हो चुका था, और विधान-सभा का अधिवेशन अक्तूबर में होना था जिसके लिए मैं अपने प्रान्त से सदस्य चुना गया। मैं जानता था कि बादशाही सरकार के मातहत हमारे विधान में बहुत सी खराबियाँ आ गई थीं, जिन्हें शीघ्र ही सुधारना अत्यन्त आवश्यक था, और मैंने सोचा कि इस काम की प्रगति करने में मैं अधिक उपयोगी होऊँगा। अतः २ सितम्बर को मैं कांग्रेस की अपनी सीट से निवृत्त हो गया, और ७ अक्तूबर को मैंने अपने राज्य की विधान-सभा में स्थान ग्रहण किया।

११ तारीख को मैंने न्यायालयों की स्थापना के लिए एक विधेयक उपस्थित करने की स्वीकृति चाही, क्योंकि इस संगठन की अत्यन्त आवश्यकता थी। मैंने विधेयक बनाया जिसे समिति ने समर्थन प्रदान किया और समयानुसार विचार के अनन्तर वह स्वीकृत हुआ।

१२ तारीख को मैंने सीमित अधिकारों वाले असामियों द्वारा साधारण शुल्क पर भूमि अपने अधिकार में रखने के लिए एक विधेयक पेश करने की इजाजत चाही। उपनिवेश के आरम्भिक काल में, जब कि कुछ न देकर या बहुत कम देकर भूमि प्राप्त की जाती थी, कुछ सम्पन्न व्यक्तियों ने बड़े-बड़े पट्टे हासिल कर लिए थे; और बड़े-बड़े परिवारों को जन्म देने की नीयत

से उन जमीनों पर उन्होंने अपने उत्तराधिकारियों को बसाया। पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही नाम के अन्तर्गत एक ही जायदाद पर अधिकार रहने से भिन्न भिन्न परिवारों का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने कानून द्वारा अपनी सम्पत्ति को स्थिर रखने का विशेषाधिकार प्राप्त करके एक शिष्ट-वर्ग को जन्म दिया, जो कि अपने ठिकानों के वैभव और ऐश्वर्य के कारण अलग ही जाने जाते थे। सम्राट् भी इसी वर्ग से अपने राज्य के सलाहकारों को चुनने के आदी थे; और इस सम्मान की आशा से यह तमाम वर्ग सम्राट् के हितों में लगा रहता था। इस विशेषाधिकार को रद्द करने के लिए, और सम्पत्ति पर आधारित तथा समाज के लिए लाभ की अपेक्षा अधिक हानि और संकट उपस्थित करने वाले धनिक वर्ग की बजाय सद्गुण और सुयोग्यता, जिनके लिए समाज के हितों के निर्देशन में प्रकृति ने भी बुद्धिमत्ता के साथ स्थान बना रखा है, और जिन्हें प्रकृति ने सब अवस्थाओं में समान रूप से बाँटा है, ऐसे सद्गुण और सुयोग्यता पर आधारित धनिक वर्ग की एक सुव्यवस्थित जनतन्त्र के लिए आवश्यकता अनुभव की गई। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए न हिंसा की आवश्यकता थी और न प्रकृति दत्त अधिकारों को छीन लेने की, बल्कि इस कानून को रद्द करके इस अधिकार को वृहद् बना देना था। इस कार्रवाई द्वारा जमीन के मौजूदा मालिक को अपने बच्चों के बीच अपनी जायदाद को, अपने स्नेह की भाँति, समान रूप से बाँट देना था; और इस प्रकार ये लोग, स्वाभाविक पीढ़ियों की तरह, अपने साथी नागरिकों के समान स्तर पर रहने लग जाते किन्तु इस निरसन का मि० पेण्डलटन ने तीव्र विरोध किया, जो कि इस प्राचीन व्यवस्था से अत्यधिक लगन के साथ सम्बद्ध थे; और जो कि बहस के मौके पर, मेरे देखे हुए लोगों में, सब तरह से, सबसे अधिक योग्य व्यक्ति थे। निस्सन्देह उनमें मि० हेनरी की काव्यात्मक उड़ान, उनकी उत्कृष्ट कल्पना, उनकी उन्नत एवं प्रभावशाली वाक्शक्ति न थी; किन्तु उनमें शीतलता और कोमलता के साथ अपनी बात मनवाने की शक्ति थी; उनकी भाषा शुद्ध, सुशोभित एवं प्रवाहयुक्त थी; उनके विचारों में गतिशीलता, प्रखरता और

इस अकर्मण्यता के विरुद्ध दूसरे धार्मिक प्रशाखों की लगन और उनके उद्यम को एक घना और निर्द्वन्द्व मैदान मिला ; और इस प्रकार क्रांति के आरम्भ तक अधिकांश निवासी स्थापित चर्च के विरोधी हो गए, किन्तु उन्हें अल्प-मत के पादरियों की जीविका के लिए अब भी दान देना पड़ता था। ऐसे शिक्षकों को रखने का अन्यायपूर्ण बाधन, जो कि उनकी राय में धार्मिक त्रुटियों की पुष्टि करते थे, बादशाही सरकार के दौरान में बुरी तरह महसूस किया गया और इससे छुटकारे की आशा भी न थी। किन्तु प्रथम रिपब्लिकन विधान-सभा में, जिसकी बैठक सन् '७६ में हुई, इस आध्यात्मिक उत्पीड़न के उन्मूलन के लिए आवेदन-पत्रों का ढेर लग गया। फलतः मुझे ऐसी सख्त बहसों में भाग लेना पड़ा जैसी कि मैंने पहले या बाद में कभी न देखी थीं। हमारे महान् विरोधी थे मि॰ पैण्डलटन और रावर्ट कार्टर निकोलस; जो कि ईमानदार थे, किन्तु चर्च के कट्टर पक्षपाती थे। सम्पूर्ण विधान-सभा को एक समिति का रूप देकर इन आवेदन-पत्रों को उसके समक्ष रखा गया ; और ११ अक्तूबर से ५ दिसम्बर तक प्रायः प्रत्येक दिन के घोर विवादों के बाद हम केवल उन कानूनों को रद्द कर पाए जिनके द्वारा अन्य धार्मिक मतों को अङ्गीकार करना अथवा और किसी प्रकार से पूजा-पाठ करना अपराध माना जाता था। इसके अलावा, स्थापित चर्च के विरोधियों को उस चर्च के लिए दान देने से मुक्त करवाने तथा पादरियों के वेतनों के लिए उस चर्च के सदस्यों से चन्दा स्थगित करवाने में ही हम केवल सफल हो सके। हमारे अधिकांश नागरिक चर्च-विरोधी थे किन्तु विधान-सभा के अधिकांश सदस्य चर्च के पक्षपाती थे। लेकिन इनमें कुछ उचित और उदार विचारों के लोग थे जिन्होंने कई बातों में हमें एक क्षीण बहुमत प्राप्त करने में सहायता दी। लेकिन हमारे विरोधियों ने जनरल असेम्बली के १६ दिसम्बर के प्रस्तावों द्वारा यह घोषणा करवाने में विजय पाई कि धार्मिक समुदाय नियंत्रित होने चाहिएँ, कि पादरियों के उत्तराधिकारों को चलाते रहने और उनके आचरण का निरीक्षण करने के उपाय किये जाने चाहिएँ। और जो विधेयक स्वीकृत हुआ, उसमें इस प्रश्न पर निर्णय स्थगित रखा गया

कि अपनी पसंद के पादरी की मदद के लिए सब लोगों से चन्दा लेना कानूनी करार किया जाय ; या चन्दा देना लोगों की मरजी पर छोड़ा जाय ; और सन् '७६ से '७६ तक प्रत्येक अधिवेशन में इस प्रश्न पर बहस की गई (हमारे कुछ विरोधी साथी अपना उद्देश्य पूरा कर चुकने के बाद अब सब लोगों द्वारा चन्दा दिये जाने के पक्ष में थे) और '७६ तक हम केवल एक अधिवेशन से दूसरे अधिवेशन तक इसे स्थगित करवाते चले आए जब कि अन्त में सब लोगों से चन्दा लेने के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, और आंग्ल चर्च को पूर्णतया बन्द कर दिया गया। अपने उन दो ईमानदार किन्तु अत्यन्त उत्साही विरोधियों के प्रति, जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, न्याय करने के लिए यह कहना होगा कि वे अपने स्वभाव से ऐसे बने थे कि चीज़ों को सुधारने का खतरा मोल लेने के बजाय उनको जैसा-का तैसा बना रहने देना ज्यादा उपयुक्त समझते थे, तो भी यदि किसी विषय पर जनता निर्णय कर चुकी होती तो उसे पूरी आज्ञाकारिता के साथ निबाहने में उनसे बढ़कर कोई न था।

हमारी राजधानी आरम्भ में जेम्सटाउन के प्रायद्वीप में स्थापित की गई थी, जो कि नये बसने वालों की प्रथम बस्ती थी, और बाद में भीतर की ओर कुछ मील दूर पर विलियम्सबर्ग में स्थानान्तरित की गई। लेकिन यह वह जमाना था जब हमारी बस्तियाँ समुद्र-तट से आगे हटकर नहीं बसी थीं। अब वे ऑलीगैनी पार कर चुकी हैं और जनसंख्या का केन्द्र पहले से बहुत अधिक स्थानान्तरित हो चुका है। किन्तु फिर भी हमारे राजकीय अभिलेख विलियम्सबर्ग में ही जमा थे, जो कि राज्यपाल तथा अन्य कई सार्वजनिक अधिकारियों का आम्यासिक निवास-स्थान तथा विधान-सभा के अधिवेशनों के लिए नियत स्थान था और यहीं हमारी फौजी रसद रहती थी। यह जगह इतनी खुली हुई थी कि युद्ध के समय कभी भी दुश्मन इस पर कब्जा कर सकता था, और खास तौर पर इस समय, जिन दोनों नदियों के बीच यह जगह बसी हुई थी उनमें से किसी एक नदी द्वारा रात को आकर दुश्मन अपनी फौजें उतारकर यहाँ कब्जा कर सकता था, और ऐसी हालत में

कारिन्दों या मंत्रियों को अवश्य अनादर होगा। मैंने इस कानून को क
के लिए फ़रवरी '३६ में ही प्रस्ताव पेश किया था जो कि मई '३६
अधिवेशन में जाकर ही स्वीकृत हुआ।

मई' ३६ के अधिवेशन में मैंने एक विधेयक तैयार किया और उ
पेश करने की इजाज़त चाही, जिसके द्वारा घर से बाहर निकलने
प्रवृत्ति इस अधिकार को पुष्टि करते हुए तथा इस अधिकार के प्रयोग
विधि तय करते हुए यह घोषणा की जाती थी कि किसे नागरिक समझ
चाहिए। विधान-सभा से दूसरे समय यह प्रस्ताव मैंने १ जून १
बोर्ड मैम्बर के सुपुर्द कर दिया, और उसी महीने की २६ तारीख को व
स्वीकृत हो गया।

जिन कानूनों को मैंने पेश किया और जिनके मसविदे बनाये उनक
उल्लेख करने से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि विधान-सभा द्वारा उनकी
स्वीकृति प्राप्त करने का श्रेय मुझको है। बहुत से समय अक्सर मेरे कई
परिश्रमी सहयोगी होते थे, जिनमें सबसे दृढ़, सुयोग्य एवं उत्साही बोर्ड
मैम्बर था—जिसकी क्रान्ति के रंगमंच पर काम करने वालों में प्रथम श्रेणी
की बुद्धि थी, जिसका विशाल मस्तिष्क और गम्भीर निर्णय होता था, जिसकी
दलीलें समझ में न आने वाली होती थीं और जो कि भूतपूर्व संविधान से
बहुत अच्छी तरह परिचित था और जनतन्त्रवादी सिद्धान्तों के आधार पर
जनतन्त्रवादी परिवर्तन लाने का इच्छुक था। उसके भाषण में न प्रवाह था
और न सहजता, किन्तु उसकी भाषा जबरदस्त थी, उसका तरीका प्रभाव-
शाली था जो कि भड़काए जाने पर एक प्रकार के कड़े लनवीरन से ऊपर
उठता था।

मि॰ वाइथ, जो कि कांग्रेस से लौटने के बाद और चांसरी में इनकी
नियुक्ति के बीच के समय में १७७७ के दो अधिवेशनों के अध्यक्ष रहे थे,
एक सुयोग्य व्यक्ति थे और समिति के रूप में विधान-सभा के समक्ष उपस्थित
प्रश्नों पर निरन्तर सहयोग देते थे। उनकी विशुद्ध नैतिकता, निर्णय और
तर्क-शक्ति ने उन्हें एक विशिष्टता प्रदान की थी······

मि० मैडिसन ने १७७६ में एक नये और युवा सदस्य की हैसियत से विधान-सभा में प्रवेश किया, और इस कारण तथा अपनी अत्यन्त विनम्रता के कारण वह बहस में तब तक भाग न ले सके जब तक कि उन्हें नवम्बर '७७ में राज्य-परिषद् न भेज दिया गया। इसके बाद वह कांग्रेस में गये जहाँ कि उन दिनों बहुत कम सदस्य थे। इस प्रकार एक के बाद एक स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने आत्म-संयम की आदत हासिल की और इस आत्म-संयम के तत्पर नेतृत्व में अपने चमत्कृत तथा विवेक-बुद्धिपूर्ण मस्तिष्क को सौंपकर और साथ ही अपनी विस्तृत जानकारी के कारण, जिस भी सभा के वह सदस्य बने वहाँ उन्होंने प्रथम स्थान पाया। अपने विषय से अलग हट-कर व्यर्थ आलोचना करने के बजाय शास्त्रीय एवं विशुद्ध भाषा में प्रचुरता के साथ अपने विषय पर आगे बढ़ने और अपनी भाषा की भद्रता तथा कोमलता से सदैव अपने विरोधियों की भावनाओं को राहत पहुँचाने के कारण वह १७८७ के महान राष्ट्रीय कन्वेन्शन में इस प्रतिष्ठित पद तक ऊँचे उठ सके; और वर्जिनिया के अगले कन्वेन्शन में उन्होंने नये संविधान के सब भागों का समर्थन किया, और जॉर्ज मेसन के तर्क तथा मि० हेनरी के जोशीले विरोध का मुकाबला किया। इन परम गुणों के साथ उनमें एक इतना पवित्र और निर्मल गुण था जिसे दूषित करने का यत्न किसी भी प्रकार की निन्दा द्वारा कभी नहीं किया गया। उनकी कलम की ताकत और खूबसूरती तथा राष्ट्र के महानतम पद पर उनके शासन की बुद्धिमता के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना। इन गुणों ने स्वयं ही अपने बारे में बता दिया है और हमेशा बताते रहेंगे।

अभी तक हम सुधार के बारे में ही सविस्तार चर्चा करते आए हैं, जिसमें चरित्र और सिद्धान्त की दृष्टि से उन वैधानिक मसलों को चुना गया था जो कि सुधार की शक्ति और उसकी सामान्य गति के द्योतक थे। '७६ में कांग्रेस छोड़ते समय मेरा यह विश्वास था कि हमारी सम्पूर्ण संहिता का पुनर्विलोकन तथा उसे रिपब्लिकन शासन-प्रणाली के अनुरूप बनाना चाहिए, और अब क्योंकि हमारे उचित मार्ग पर चलने में परिषदों, राज्यपालों और

सम्राटों की रुकावट पैदा करने का अधिकार न था, इसलिए अब केवल औचित्य तथा शासितों का ध्यान रखकर संहिता के सम्पूर्ण भागों को सुधारना चाहिए था। अतः '७६ के अधिवेशन के आरम्भ में, जिसमें कि मैंने लौटकर भाग लिया था, मैंने कानूनों के पुनर्निरीक्षण के लिए एक विधेयक पेश किया जो कि २४ अक्तूबर को स्वीकृत हुआ; और इसे कार्यान्वित करने के लिए ५ नवम्बर को एक समिति नियुक्त की गई, जिसमें मि० पेण्डलटन, मि० वाइथ, जॉर्ज मेसन, टॉमस एल० ली के साथ मैं था। हमने फ्रैडिक्सवर्ग में मिलकर कार्य-योजना तथा कार्य-विभाजन तय करना निश्चित किया। तदनुसार वहाँ हमारी १३ जनवरी, १७७७ को बैठक हुई। पहला प्रश्न था कि क्या हमें विधि-व्यवस्था के सम्पूर्ण उन्मूलन का प्रस्ताव रखना चाहिए और एक नई व्यवस्था बनानी चाहिए, या आम व्यवस्था को बनाए रखकर केवल मौजूदा चीजों को ही सुधारना चाहिए। साधारणतया प्राचीन चीजों के पक्ष में रहने वाले मि० पेण्डलटन ने अपने स्वभाव के विरुद्ध पहली योजना का समर्थन किया, और इस बात में मि० ली ने उनका साथ दिया। इस प्रस्ताव के विरोध में यह आपत्ति की गई कि हमारी समूची विधि-व्यवस्था का निराकरण करना एक भीषण कार्य होगा, जो कि सम्भवतः विधान-सभा के विचार से बहुत आगे बढ़ा हो; कि वे केवल समय-समय पर उपनिवेश के कानूनों का पुनर्निरीक्षण करते रहे हैं, और पुराने, अवधि-समाप्त, रद्द हुए कानूनों को छोड़कर बचे हुए कानूनों का संशोधन करते रहे हैं, और शायद वे चाहते हों कि हम भी यही करें, और हम अपने इस कार्य में ब्रिटिश कानूनों और अपने कानूनों को ही केवल शामिल करें : कि जस्टीनियन और ब्रैक्टन या ब्लैकस्टोन की तरह एक नई व्यवस्था बनाना, आदर्शों के रूप में जिसका उदाहरण मि० पेण्डलटन ने पेश किया था, एक बहुत कठिन कार्य होगा, जिसमें बहुत ज्यादा खोज-पड़ताल, सोच-विचार और निर्णय की आवश्यकता होगी; और अन्त में जब इसे लेखनीबद्ध किया जाएगा तो मानव भाषा की अपूर्णता तथा प्रत्येक विचार को स्पष्टतया व्यक्त करने की असमर्थता के कारण प्रत्येक शब्द सवाल-जवाब और पाबन्दी का

विषय बन जायगा, जिसे तय करने के लिए हमें मुद्दत तक मुकदमेबाजी में फँसा रहना होगा, और इस बीच सम्पत्ति अनिश्चित हो जायगी जब तक कि पुराने कानूनों की तरह प्रत्येक शब्द की जाँच न की गई हो और बहुत से निर्णयों तथा रिपोर्टों और टिप्पणियों द्वारा उसे तय न कर दिया गया हो; और कि शायद हममें से कोई भी इस काम का भार उठाने के लिए तैयार न हो, जिसे सुव्यवस्थापूर्वक करना केवल व्यक्ति का ही काम हो सकता है। यह आखिरी राय मेरी, मि० वाइथ और मि० मैसन की थी। जब हम कार्य-विभाजन की योजना बनाने लगे तो मि० मैसन ने वकील न होने के कारण अपने-आपको इस कार्य के लिए अयोग्य समझा और शीघ्र ही वह अलग हो गए। मि० ली ने भी इसी आधार पर अपने लिए क्षमा चाही, और कुछ समय बाद उनका देहान्त हो गया। अतः अन्य दो सज्जनों ने और मैंने अपने बीच में काम बाँटा। आम कानूनों और जेम्स प्रथम तक के नियमों का काम मुझे सौंपा गया, आरम्भ से लेकर वर्तमान तक के ब्रिटिश कानूनों का काम मि० वाइथ को, और वर्जिनिया के कानून मि० पेण्डलटन को सौंपे गए। चूँकि उत्तराधिकार तथा आपराधिक कानूनों का काम मेरे हिस्से पड़ा था, अतः मैंने चाहा कि इन कानूनों को बनाने में मेरे पथ-प्रदर्शन के लिए इनसे सम्बन्धित मुख्य सिद्धान्तों को समिति द्वारा निर्णीत किया जाना चाहिए; और उत्तराधिकार-सम्बन्धी कानून के विषय में मेरी राय थी कि अपने पिता के सबसे बड़े बेटे को सम्पत्ति का अधिकारी बनाने वाला कानून रद्द कर दिया जाय, और जायदाद को निकटतम उत्तराधिकारी तथा उसके अन्य भाइयों के बीच बाँट दिया जाय, जिस प्रकार कि विभाजन के नियमानुसार व्यक्तिगत सम्पत्ति बाँटी जाती है। मि० पेण्डलटन बड़े बेटे का पुराना अधिकार सुरक्षित रखने के पक्ष में थे, लेकिन फौरन ही यह देखकर कि यह अधिकार कायम नहीं रह सकता, उन्होंने प्रस्ताव रखा कि हमें हिब्रू सिद्धान्त अपनाना चाहिए, जिसके अनुसार बड़े बेटे को दुगना हिस्सा मिलना चाहिए। मैंने कहा कि अगर बड़ा बेटा दुगना खा सकता है या दुगना काम कर सकता है तो दुगना हिस्सा प्राप्त करने का वह स्वभावतः अधिकारी है;

लेकिन क्योंकि अपनी शक्ति तथा आवश्यकताओं में वह अपने भाई-बह के बराबर ही होता है, अतः पितृ-सम्पत्ति के विभाजन में उसे बराबर हिस्सा ही मिलना चाहिए; और यही अन्य सदस्यों का निर्णय था।

अपराधिक कानून के सम्बन्ध में यह सर्व सम्मति थी कि घोर विश्वास घात तथा हत्या के मामलों को छोड़कर बाकी मामलों के लिए मृत्यु दण्ड हटा देना चाहिए; और अन्य अपराधों के लिए सार्वजनिक कार्यों में सख्त मेहनत की सजा देनी चाहिए, और कई मामलों में, प्रतिकार का कानून लागू करना चाहिए। मुझे याद नहीं कि ग्लानि उत्पन्न करने वाला यह अन्तिम सिद्धान्त किस प्रकार हमारी स्वीकृति प्राप्त कर सका। हमारे कानून में केवल एक दास-सम्बन्धी कानून में ही इसका अवशेष बचा था; यह एंग्लो-सैक्सन ज़माने का इंगलिश कानून था, जो कि शायद 'जैसे को तैसा' वाले हिब्रू-कानून की नकल था, और जो कि बहुत सी प्राचीन जातियों में प्रचलित था; किन्तु आधुनिक मस्तिष्क ने अपनी प्रगति के साथ इस कानून को पीछे छोड़ दिया था। जो भी हो, इन बातों को तय करने के बाद हम अपने काम की तैयारी करने अपने-अपने घर चल दिए।

अपने हिस्से का काम करते समय मैंने प्राचीन नियमों की भाषा को बदलकर उसे आधुनिक रूप देना या नई भाषा द्वारा नये सवालों को पैदा करना उचित न समझा। इन प्राचीन नियमों की भाषा की बहुत से निर्णयों द्वारा इतनी अधिक व्याख्या तथा परिभाषा हो चुकी थी कि इस बारे में शायद ही कभी हमारी अदालतों में सवाल पैदा होता हो। मैंने अपने नये मसविदों में बाद के ब्रिटिश कानूनों तथा हमारी अपनी असेम्बली के अनुच्छेदों की शैली में सुधार करना उपयोगी समझा, क्योंकि इनके वाक्-प्रपंच तथा निरन्तर पुनरुक्तियों ने, एक बात में दूसरी बात और निक्षेप वाक्यों के बीच निक्षेप वाक्य घुसाकर, 'उक्त' और 'उपर्युक्त', 'अथवा' और 'तथा' का प्रयोग करके भाषा को सरल बनाने की बजाय साधारण पाठक, और यहाँ तक कि वकीलों के लिए भी ऐसा बना दिया था जो समझ में नहीं आ सकती थी। हम उस समय से फरवरी १७७६ तक इस काम में लगे

रहे और फिर हम अर्थात् मैं, मि० पेण्डलटन और मि० वाइथ विलियमस-बर्ग में मिले; और दिन-प्रतिदिन एक साथ बैठकर हमने अपने कार्य के विभिन्न भागों का आलोचनात्मक निरीक्षण किया और प्रत्येक वाक्य की विवेचना तथा उसका संशोधन करते हुए अन्त में हमने सम्पूर्ण कार्य को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया। इसके बाद हम लोग घर वापस आये, अपने-अपने कार्य की शुद्ध प्रतिलिपियाँ तैयार करवाईं जो कि जून १८, १७७६ को जनरल असेम्बली में मि० वाइथ और मेरे द्वारा पेश की गईं; मि० पेण्डलटन का घर दूर था और उन्होंने एक पत्र द्वारा अपनी स्वीकृति की घोषणा कर दी थी। इस काम में हमने आम कानून को उतना ही लिया था जितना कि बदलना जरूरी था। इसके अलावा मैगना चार्टा से अब तक के ब्रिटिश कानूनों तथा हमारी असेम्बली के बनने से अब तक के वर्जिनिया के कानूनों में से जिनको रखना उचित समझा गया उनके १६६ विधेयक बनाये गए जो कि छपे हुए नब्बे पृष्ठों में आए। समय-समय पर कुछ विधेयकों पर विचार करके उन्हें स्वीकृत किया गया; किन्तु इस कार्य का मुख्य भाग १७८५ में पूर्ण शान्ति होने के बाद ही विधान-सभा में पेश किया गया, जो कि वकीलों तथा अधूरे वकीलों के निरन्तर झगड़ों, चालाकियों, विकृतियों, क्लेश तथा विलम्ब का अपने निरन्तर परिश्रम से विरोध करते हुए मि० मैडिसन ने बिना बदले हुए विधान-सभा द्वारा स्वीकृत कराया।

धार्मिक स्वातन्त्र्य स्थापित करने का विधेयक, जिसके सिद्धान्त किसी मात्रा में पहले भी अधिनियमित हो चुके थे, मैंने तर्क और औचित्य की उदारता के साथ बनाया था। फिर भी इसका विरोध किया गया; किन्तु प्रस्तावना में कुछ अदल-बदल करने के बाद इसे अन्त में स्वीकृत किया गया; और केवल एक प्रस्ताव ने यह प्रमाणित कर दिया कि इसके द्वारा अपने मत की सुरक्षा को सार्वजनीन समर्थन प्राप्त था। जहाँ प्रस्तावना में यह घोषणा की गई थी कि उत्पीड़न हमारे धर्म के पवित्र प्रवर्तक की योजना के विरुद्ध है। 'ईसा मसीह' शब्द जोड़ने के लिए एक संशोधन पेश किया गया, जिसके अनुसार वाक्य का यह रूप हो जाता—"ईसा मसीह, हमारे

धर्म के पवित्र प्रवर्तक की योजना के विरुद्ध है।" इस संशोधन का बहुमत ने विरोध किया जिसका अर्थ यह था कि वे अपनी सुरक्षा के दायरे में यहूदी, ईसाई, मुसलमान, हिन्दू और हर प्रकार के नास्तिक को भी स्थान देना चाहते थे।

बेकेरिया तथा अपराध और दण्ड-विषयक अन्य लेखकों ने अपराधों के लिए मृत्यु-दण्ड की अनौचित्यता तथा अनुपयुक्तता के बारे में न्यायप्रिय संसार को सन्तुष्ट कर रखा था; और मृत्यु-दण्ड के बदले सड़कों, नहरों और अन्य सार्वजनिक कार्यों में कठिन श्रम की सज़ा का सुझाव रखा था। पुनर्निरीक्षकों ने इस मत को स्वीकार किया था, किन्तु हमारे देश का सामान्य विचार अभी यहाँ तक प्रगति न कर पाया था। अतः अपराध के अनुपात में दण्ड निर्धारित करने वाला विधेयक प्रतिनिधि-सभा में केवल एक वोट के बहुमत से अस्वीकृत हुआ। बाद में मुझे पता चला कि कठिन श्रम के दण्ड का प्रयोग असफल रहा (जो कि मेरे खयाल से पेनसिलवानिया में किया गया था)। सिर मुड़ाए, भद्दे कपड़ों में, सड़कों पर खुले आम काम करते रहने से अपराधियों के चरित्र का सुधार होने के बजाय उनका इतना पतन हुआ और उन्होंने आत्म-सम्मान को इतना त्याग दिया कि वे नैतिकता और चरित्र के घोर पतन के निराशाजनक गर्त में गिर गए। इस कानून के बारे में चर्चा करते हुए मुझे याद आया कि १७८५ (जब मैं पेरिस में था) में रिचमण्ड की कैपीटॉल की इमारत की देख-भाल करने के लिए नियुक्त निदेशकों ने मुझे लिखा था कि इस बारे में एक योजना बनाकर मैं उन्हें सलाह दूँ और साथ ही किसी एक जेल की योजना भी लिख भेजूँ। अपने राज्य में प्राचीन शिल्प-कला के ढंग का तथा निमसेस के मैसन क्वेर नामक रोमन मंदिर के नमूने को पेश करने का एक अच्छा मौका समझकर—जिसे तथाकथित घनाकार स्थापत्य का सबसे अच्छा नमूना समझा जाता था—मैंने मि० क्लेरीसाल्ट को, जिन्होंने निमसेस के प्राचीन स्मारकों के चित्र प्रकाशित किये थे, लिखा कि वह महीन चूने से बनी हुई एक इमारत का नमूना बनाकर दें, जिसमें केवल कॉरिन्थियन को आयोनिक में बदल दिया

जाय, क्योंकि कोरिन्थियन खम्भों के ऊपरी भागों को लगाने में मुश्किल होती है। प्राचीन मध्य खम्भों की बजाय आधुनिक स्कैमोज़ी खमे को क्लैरीसाल्ट ने तरजीह दी, जिसे अनिच्छापूर्वक मैंने स्वीकार किया। इस नमूने को उस शिल्पकार ने बनाया जिसे चौसुल गोफर अपने साथ कुस्तुनतुनिया ले गया था, और वहाँ जिन दिनों वह राजदूत था उसने इस शिल्पकार से यूनानी भवनों के भग्नावशेषों के सुन्दर नमूने बनवाये थे, जो कि पैरिस में दिखाई देते हैं। इमारत के बाहरी हिस्से को अपने काम के लायक बनाने के लिए मैंने अन्दरूनी हिस्से का एक नकशा बनाया जिसमें वैधानिक, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका सम्बन्धी कार्यों के लिए आवश्यक कमरे बनाए; और उनको भवन के रूप तथा आकार के अनुरूप विभाजित किया। इनको मैंने निर्देशकों को १७८६ में भेज दिया, और थोड़ी-बहुत अदल-बदल करके काम शुरू हो गया; जो परिवर्तन किये गए थे वह मेरी दृष्टि में अच्छे न थे, और सबसे मुख्य परिवर्तन में भावी सुधार के लिए गुञ्जाइश है। एक जेल की योजना के लिए, जिसके बारे में भी मुझे साथ ही लिखा गया था, मैंने इंगलैंड की एक परोपकारी संस्था के बारे में सुन रखा था जिसको सरकार ने अपने कुछ अपराधियों पर एकांत निरोधन में श्रम के प्रभाव को देखने के लिए अपना रखा था; और यह प्रयोग आशा से अधिक सफल हुआ। ऐसा ही सुझाव फ्रांस में पेश किया गया था, और लॉयन्स के एक शिल्पकार ने एकांत निरोधन के सिद्धांत के आधार पर एक समुचित भवन की योजना बनाई थी। मैंने इस योजना की एक प्रतिलिपि प्राप्त की और क्योंकि यह हमारे काम के लिए बहुत बड़ी थी, मैंने एक छोटा नकशा तैयार करके उसमें कई आवश्यक अंशों को शामिल किया। एक मामूली जेल की योजना के बजाय इस नकशे को मैंने इस आशा से निर्देशकों के पास भेजा कि उन्हें एकांत निरोधन में न कि सार्वजनिक कार्यों में श्रम का विचार सूझ सके, जिसे कि हमने अपनी पुनर्निरीक्षित-संहिता में अंगीकार किया था। अतः इस नई योजना को कार्यान्वित करने में अथवा अब जिसे पैनीटैन्शियरी कहते हैं उसके निर्माण में इस योजना के सिद्धान्त को, न कि इसके रूप को, लैटरोब ने अपनाया।

इस बीच, समय की प्रगति तथा पैनसिलवानिया के उदाहरण से, जहाँ कि १७८६ से १७८९ तक सड़कों पर मेहनत करवाने का प्रयोग चलता रहा था, और जो कि बाद में अस्वीकृत हुआ और जिसके स्थान पर निरोधन और श्रम के सिद्धांत को सफलतापूर्वक अपनाया गया था, अब लोकमत परिपक्व होने लगा था। १७९६ में हमारी विधान-सभा ने इस विषय पर पुनः विचार आरम्भ किया और देश के दांडिक कानूनों को संशोधित करने के लिए एक विधेयक स्वीकृत किया। उन्होंने सार्वजनीन श्रम की अपेक्षा एकांत श्रम को अपनाया, निरोधन की अवधि में एक क्रम स्थापित किया, कानून की शैली को आधुनिक भाषा में व्यक्त किया, और हत्या तथा मनुष्य-मारण के स्थापित भेद के बजाय, जो कि मेरे विधेयक में उसी प्रकार थे, उन्होंने प्रथम और द्वितीय अवस्था की हत्या के लिए नई शब्दावली का प्रयोग किया। मुझे अपने न्यायपालिका के कार्यों की इतनी पर्याप्त सूचना नहीं कि मैं कह सकूँ कि इन कार्रवाइयों द्वारा परिभाषा-सम्बन्धी पहले से अधिक या कम प्रश्न खड़े हुए हैं······

विलियम और मेरी कॉलेज से सम्बन्धित अनुच्छेदों का कार्य सामान्यतः मि॰ पेंडलटन के हिस्से पड़ा था; लेकिन मुख्यतः वह राजस्व से सम्बन्धित थे, जब कि इसका विधान, संगठन तथा इसके विज्ञान का क्षेत्र इसके शासन-पत्र पर आधारित थे। हमारा विचार था कि इस विषय में सामान्य शिक्षा की एक सुव्यवस्थित योजना पेश की जाय, और इस काम को करने का निवेदन मुझसे किया गया। तदनुसार पुनर्निरीक्षण के लिए मैंने तीन विधेयक तैयार किये, सब श्रेणियों के लिए शिक्षा के तीन क्रमों का सुझाव रखा। १. सब अमीर और गरीब बच्चों के लिए प्राथमिक स्कूल। २. मध्यम शिक्षा और जीवन के सामान्य कार्यों के लिए थोड़े-बहुत सम्पन्न परिवारों के लिए कॉलेज। और ३. विज्ञान की उच्चतम शिक्षा के लिए अन्तिम क्रम। पहले विधेयक द्वारा हरेक जिले में पढ़ने, लिखने और सामान्य गणित की शिक्षा के लिए एक समुचित आधार तथा जनसंख्या के लिए स्कूलों की स्थापना किया गया था; और साथ ही यह प्रस्ताव था कि सारे राज्य को

चौबीस प्रदेशों में विभाजित कर दिया जाय, और हरेक प्रदेश में पुरातन ज्ञान, व्याकरण, भूगोल तथा अंकगणित की उच्च शिक्षाओं के लिए एक-एक स्कूल हो। दूसरे विधेयक द्वारा विलियम और मेरी कॉलेज के विधान के संशोधन, उसके विज्ञान-क्षेत्र के विस्तार और वास्तव में उसे विश्वविद्यालय बनाने का प्रस्ताव था। तीसरा विधेयक एक पुस्तकालय की स्थापना के बारे में था। इन विधेयकों पर सन् '९६ तक विचार नहीं किया गया, और इसके बाद भी प्रथम विधेयक के उस भाग को स्वीकृत किया गया जिसमें प्राथमिक स्कूलों की स्थापना का प्रस्ताव था। विलियम और मेरी कॉलेज इंगलैण्ड की चर्च की एक विशुद्ध संस्था थी; बाहर से यहाँ आने वालों के लिए उसी चर्च का सदस्य होना, प्रोफेसरों के लिए उसके ३६ अनुच्छेदों का पालन करना तथा विद्यार्थियों के लिए उसके धार्मिक आचरणों का सीखना आवश्यक था; और इसका एक घोषित मूल उद्देश्य था उस चर्च के लिए पादरियों को तैयार करना। अतः सब विरोधियों की धार्मिक ईर्ष्या आग उठी कि आंग्लिकन मत की प्रधानता न हो जाय, और इसलिए इस विधेयक को कार्यान्वित करने से उन्होंने इन्कार कर दिया। इसकी स्थानीय विलक्षणता तथा पतझड़ के अस्वस्थ जलवायु के कारण भी इसकी ओर आम झुकाव हल्का पड़ गया। और प्राथमिक शिक्षा-सम्बन्धी विधेयक में भी उन्होंने एक ऐसा उपबन्ध जोड़ दिया जिससे इस विधेयक का उद्देश्य असफल हो गया; क्योंकि उन्होंने हर जिले की अदालत के लिए यह तय करना छोड़ दिया कि कब इस कार्य को उस जिले में शुरू किया जाय। विधेयक में पहले से ही एक उपबन्ध था कि इन स्कूलों का खर्च जिले के निवासियों द्वारा दिये जाने वाले कर के अनुपात में उठाया जायगा। इसके द्वारा गरीबों की शिक्षा के लिए अमीरों का धन खर्च होता, और क्योंकि अधिकांश न्यायाधीश धनिक वर्ग के थे इसलिए वे इस भार को नहीं उठाना चाहते थे, और मेरा खयाल है कि किसी एक जिले में भी यह स्कूल आरम्भ न हुआ। अपनी कहानी के अन्त में इस विषय की मैं पुनः चर्चा करूँगा यदि वहाँ तक पहुँचने में मुझमें जीवन और दृढ़ता शेष रह सके, क्योंकि मैं

अपने बारे में बोलते-बोलते थक चुका हूँ।

गुलामों के विषय का विधेयक इस बारे के मौजूदा कानूनों का केवल एक संक्षिप्त रूप था जिसमें गुलामों की भावी मुक्ति के लिए कोई योजना न थी। यह सोचा गया कि इसे अभी रोक लिया जाय और विधेयक प्रस्तुत करते समय केवल संशोधन के रूप में ही इसे पेश किया जाय। किन्तु संशोधन के सिद्धान्तों पर सबकी सहमति प्राप्त हो चुकी थी अर्थात् एक निश्चित तारीख के बाद पैदा हुए सब लोगों की स्वतन्त्रता तथा एक निश्चित आयु के बाद देश से बाहर निकाले जाने के बारे में सब सहमत थे। लेकिन यह पाया गया कि लोकमत इसे स्वीकार न करेगा और आज भी वह इस स्थिति में नहीं है। लेकिन वह दिन दूर नहीं है जब उसे इसे अपनाना पड़ेगा, नहीं तो परिणाम और बुरा होगा। यदि विधाता की पोथी में कोई बात निश्चित रूप से लिखी हुई है तो वह है इन लोगों की आजादी; और यह भी कम निश्चित नहीं कि दो समान रूप से स्वतन्त्र जातियाँ एक ही शासन के अधीन नहीं रह सकती हैं। प्रकृति, अभ्यास और विचारों ने इन दोनों के बीच अन्तर की एक अमिट रेखा खींच रखी है। अभी भी यह हमारी शक्ति में है कि स्वतन्त्रता तथा देश-निकाले के क्रम का हम शान्तिपूर्वक और धीरे-धीरे इस प्रकार निर्देशन करें ताकि यह कुरीति दूर हो जाय, और उन लोगों का स्थान समानता-प्राप्त गोरे मजदूर ले सकें। किन्तु यदि इसके विपरीत, इस क्रम को स्वयं ही फट पड़ने दिया जायगा तो ऐसी स्थिति आ जायगी जिसकी कल्पना से मानव-प्रकृति काँप उठेगी। हम लोग व्यर्थ ही मूर लोगों के स्पेनिश देश-निकाले की ओर दृष्टि लगाए बैठे हैं। यह मिसाल हमारे मामले में पूरी न उतरेगी।

इन चारों स्वीकृत अथवा पेश हुए विधेयकों द्वारा, मेरे विचार में, एक ऐसी व्यवस्था बन गई थी जिसमें प्राचीन या भावी धनिक-वर्ग के प्रत्येक चिह्न को नष्ट करने की शक्ति थी; और जिसके द्वारा सच्चे जनतन्त्रवादी शासन की बुनियाद डाली जा सकती थी। उत्तराधिकार के कानून के निरसन द्वारा चुने हुए परिवारों में धन के जोड़े जाने और उसकी लगातार वृद्धि

को रोका जा सकता था, तथा दखल द्वारा दिन-प्रतिदिन देश की भूमि को कम होने से बचाया जा सकता था। बड़े बेटे को सम्पत्ति का अधिकार सौंपने वाले कानून को रद्द करके और उत्तराधिकार को बराबर बाँटकर उन सामन्तशाही और अस्वामिक भेदों को दूर किया गया जिन्होंने एक परिवार के एक सदस्य को अमीर और बाकी लोगों को गरीब बना रखा था, और उसके स्थान में समान विभाजन का कानून लागू किया गया जो कि जमींदारी सम्बन्धी कानूनों में सर्वश्रेष्ठ था। आत्मा से सम्बन्धित अधिकारों को पुनः स्थापित करके लोगों की एक ऐसे धर्म का समर्थन करने से मुक्ति की गई जो कि उनका अपना धर्म न था; क्योंकि सचमुच यह अमीरों का धर्म था और इसके विरोधी दल के लोग कम धनी थे; और सामान्य शिक्षा के विधेयक द्वारा ये लोग अपने अधिकारों को समझने और उन्हें कायम रखने के योग्य बन सकेंगे और स्वशासन में बुद्धिमत्ता के साथ अपना पार्ट अदा कर सकेंगे; और यह सब काम किसी भी व्यक्तिगत नागरिक के एक भी प्रकृतिदत्त अधिकार का खण्डन किये बिना ही हो सकेगा। अतिरिक्त सुरक्षा के लिए इन कानूनों के साथ चांसरी की अदालतों में जूरी द्वारा फैसले के सिद्धान्त को जोड़ा जा सकता है क्योंकि ये अदालतें हमारी सम्पत्ति के ऊपर एक बहुत बड़ा क्षेत्राधिकार प्राप्त कर चुकी हैं और लगातार प्राप्त करती जा रही हैं।

१ जून १७७९ को मुझे कॉमनवैल्थ का राज्यपाल नियुक्त किया गया और मैं विधान-सभा से निवृत्त हो गया। विलियम और मेरी कॉलेज के एक निरीक्षक चुने जाने के नाते, मैंने विलियम्सबर्ग की अपनी पदावधि में, उस वर्ष व्याकरण स्कूल को बन्द करके तथा देवत्व अथवा पूर्वदेशीय भाषाओं के प्रोफेसरों का स्थान हटाकर उनकी जगह कानून और पुलिस, शरीर-रचना-शास्त्र और रसायन-विज्ञान तथा आधुनिक भाषाओं के लिए एक-एक प्रोफेसर नियुक्त कर इस संस्था के संगठन में परिवर्तन किया; और इस संस्था के शासन-पत्र के अनुसार स्वीकृत छः प्रोफेसरों में हमने नैतिक शास्त्र के प्रोफेसर को प्रकृति और राष्ट्रों के कानून और चारुकला, तथा गणित

और प्राकृतिक दर्शन के प्रोफेसर को प्राकृतिक इतिहास का भार सौंप दिया।

अब कॉमनवैल्थ के साथ मेरी एकरूपता के कारण मेरे शासन-काल के दो वर्षों के अपने जीवन का इतिहास लिखना उस राज्य के अन्दर की क्रांति के उस भाग का सार्वजनिक इतिहास लिखना है। यह कार्य अन्य लोगों ने किया है, विशेषतः मि० गिरेरडिन ने बर्क द्वारा लिखित वर्जिनिया के इतिहास के क्रम को आगे बढ़ाया, और इस इतिहास को लिखते समय मिलटन में रहकर मेरे सब कागज पत्रों को स्वतन्त्रतापूर्वक देखकर उन्होंने उसी सचाई के साथ सारा हाल लिखा है जैसा कि मैं लिखता। अतः मेरे जीवन के इस भाग के लिए उनके द्वारा लिखित इतिहास को पढ़ना चाहिए। उस ज़माने में आक्रमण की आशंका से और इस विश्वास से कि जनता को एक सैनिक प्रधान में अधिक विश्वास होगा, और क्योंकि सैनिक कमाण्डर को नागरिक शक्ति भी सौंप दी गई थी ताकि वह अधिक शक्ति, तत्परता एवं प्रभावोत्पादकता के साथ राज्य की रक्षा कर सके, मैं अपनी पदावधि के दूसरे वर्ष के अन्त में शासन से निवृत्त हो गया, और जनरल नेलसन को मेरा उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया।

कांग्रेस छोड़ने के बाद शीघ्र ही सितम्बर '७६ में, यानी उस महीने के आखिरी दिन डॉ० फ्रैंकलिन के साथ फ्रांस जाने और फ्रांसीसी सरकार के साथ मैत्री और व्यापार-सम्बन्धी वार्तालाप करने के लिए एक आयुक्त के रूप में मेरी नियुक्ति हुई। सिलास डीन, जो कि उन दिनों फौजी सामान प्राप्त करने के लिए फ्रांस में एक प्रतिनिधि के रूप में था, हमारे साथ आयोग में शामिल हो गया। किन्तु मेरे परिवार की उस समय ऐसी स्थिति थी कि न मैं उसे छोड़ सकता था और न महासागर पर छाये हुए ब्रिटिश जहाजों द्वारा उनके पकड़े जाने का खतरा उठा सकता था। इसके अलावा, मैंने यह भी देखा कि अपनी मेहनत की जरूरत घर पर ही थी जहाँ कि हमारी नई सरकारों को बनाने का स्थायी कार्य के लिए बहुत-कुछ करना था, और एक आक्रमणकारी शत्रु द्वारा अपने घरों को बरबादी से बचाने के अति आवश्यक कार्य के भार को भी उठाना था। अतः मैंने जाने से

इन्कार कर दिया और मेरी जगह मि० ली को नियुक्त किया गया। १५ जून १७८१ को मि० एडम्स, मि० फ्रैंकलिन, मि० जे और मि० लॉरेन्स के साथ मुझे शान्ति-वार्तालाप आरम्भ करने के लिए पूर्ण शक्ति-प्राप्त महादूत नियुक्त किया गया, क्योंकि उन दिनों रूस की सम्राज्ञी की मध्यस्थता द्वारा शान्ति स्थापित करने की आशा थी। उपर्युक्त कारणवश मुझे इस कार्य-भार को भी अस्वीकार करना पड़ा और वास्तव में यह शान्ति-वार्तालाप कभी आरम्भ ही न हुआ। किन्तु क्योंकि अगामी वर्ष, १७८२ के पतझड़ में कांग्रेस को आश्वासन प्राप्त हुआ था कि शीतकाल और वसन्तकाल तक शान्ति स्थापित हो जायगी, अतः उन्होंने उस वर्ष की १३ नवम्बर को मुझे दुबारा इस पद पर नियुक्त किया। इससे दो मास पूर्व, मैं अपने जीवन-संगी को खो चुका था जिसके निरन्तर प्रेम में गत दस वर्षों से मैं अनवरत सुख में रह रहा था।[1] लोक-हित को देखते हुए और साथ ही स्थान-परिवर्तन की मानसिक आवश्यकता महसूस करते हुए, मैंने इस नियुक्ति को स्वीकार किया और १६ दिसम्बर १७८२ को मॉण्टीसीलो से फिलाडेलफिया के लिए रवाना होकर वहाँ २७ तारीख को पहुँचा। फ्रांस के मन्त्री, लूजर्न ने मुझसे अपने रोमुलस नामक जहाज पर जाने के लिए कहा, जिसे मैंने स्वीकार किया; लेकिन यह जहाज बालटीमोर से कुछ मील नीचे की ओर बरफ में फँसा पड़ा था। इसलिए एक महीने फिलाडेलफिया में रहकर मैं सरकारी कागजों को देखता रहा ताकि अपने वैदेशिक सम्बन्धों की वर्तमान स्थिति से अच्छी तरह परिचित हो जाऊँ, और इसके बाद मैं बरफ से जहाज निकलने की इन्तजार में बालटीमोर चला गया। एक महीने वहाँ इन्तजार करने के बाद खबर मिली कि हमारे आयुक्तों द्वारा ३ दिसम्बर १७८२ को शान्ति के लिए एक साम्यिक सन्धि पर, जो कि फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन के बीच शान्ति स्थापित हो जाने पर स्थायी सन्धि मानी जायगी। हस्ताक्षर किए जा चुके हैं, यह सोचकर कि अब मेरे यूरोप जाने से कोई लोक हित सिद्ध न होगा, मैं कांग्रेस से आदेश लेने के लिए तुरन्त ही फिलाडेलफिया

[1] जेफरसन का अभिप्राय निश्चय ही श्रीमती जेफरसन से है।

लौट आया, और उन्होंने भी मुझे आने से रोक दिया। अतः मैं घर के लिए रवाना हुआ जहाँ मैं १५ मई, १७८३ को पहुँच गया।

आगामी मास की छठी तारीख को मुझे विधान-सभा द्वारा कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि नियुक्त किया गया; यह नियुक्ति आगामी नवम्बर को १ तारीख से पुराने प्रतिनिधियों की अवधि समाप्त होने के बाद आरम्भ होने वाली थी। तदनुसार १६ अक्तूबर को घर छोड़कर मैं ट्रेंटन पहुँचा जहाँ कि १ नवम्बर को कांग्रेस की बैठक होने वाली थी। ४ नवम्बर को कांग्रेस में मैंने अपना स्थान ग्रहण किया और उसी दिन कांग्रेस स्थगित हो गई और २६ तारीख को एनापोलिस में उसका अधिवेशन होना तय हुआ।

कांग्रेस अब एक बहुत छोटी संस्था हो गई थी और उसके सदस्य अपने कर्तव्यों के प्रति इतने उदासीन हो गए थे कि अधिकांश राज्यों ने १३ दिसम्बर तक अपनी बैठक आरम्भ न की, जो कि कनफैडरेशन द्वारा मामूली कार्यों के लिए भी आवश्यक करार किया गया।

७ जनवरी १७८२ को उन्होंने विभिन्न राज्यों की प्रचलित मुद्रा की ओर ध्यान दिया, और वित्त-प्रधान, रॉबर्ट मौरिस को आदेश दिया कि वह दर-भाव की एक सूची बनाये, जिसके अनुसार कोष में विदेशी मुद्रा को प्राप्त किया जाना चाहिए। इस पदाधिकारी ने या इसके सहकारी, गवर्नर मौरिस ने, १५ तारीख को विभिन्न राज्यों में प्रचलित मुद्रा के बारे में सुयोग्यता एवं विस्तारपूर्वक एक वक्तव्य बनाकर भेजा, जिसमें मुख्यतः उन विदेशी मुद्राओं का तुलनात्मक मूल्य दिया गया था जो कि हमारे यहाँ प्रचलित थीं। मूल्य का एक मानक स्थिर करने की तथा मुद्रा की एक इकाई अपनाने की आवश्यकता पर उसने अपने विचार लिखे थे। *इकाई के लिए उसने शुद्ध चाँदी के उस भाग का प्रस्ताव रखा जो कि हरेक राज्य की पैनी से सम्बन्धित हो। उसके अनुसार यह सामान्य विभाजक डॉलर का १–१४४०, अथवा क्राउन स्टर्लिंग का १–१६०० होना चाहिए था। अतः डॉलर का मूल्य १४४० इकाइयों से और क्राउन का १६०० इकाइयों से व्यक्त किया जाना चाहिए था; प्रत्येक इकाई में ¼ रत्ती अच्छी चाँदी होनी चाहिए थी।*

अगले वर्ष कांग्रेस नें पुनः इस विषय पर ध्यान दिया, और वित-प्रधान ने ३० अप्रैल १७८३ के अपने एक पत्र द्वारा पुनः व्याख्या करते हुए लिखा कि उसके द्वारा प्रस्तावित इकाई को स्वीकार किया जाय; किन्तु आगामी वर्ष तक इस विषय में कुछ न हो सका, और जब इस सवाल को फिर उठाया गया तो इसके विचारार्थ एक समिति नियुक्त की गई, जिसका मैं भी सदस्य था। वित्त-प्रधान के विचार ठीक थे, और वह सिद्धान्त निपुण था जिसके आधार पर उसने इकाई का प्रस्ताव किया था; किन्तु साधारणतः काम में लाने के लिए यह इकाई बहुत सूक्ष्म थी और इसका हिसाब लगाने में बहुत मेहनत पड़ती थी। एक रोटी की कीमत अगर १–२० डॉलर हो तो इसके अनुसार वह ७२ इकाई की होती।

एक पौंड मक्खन, जिसकी कीमत १–५ डॉलर है, २८८ इकाई का होता।

८० डॉलर कीमत के एक घोड़े या बैल के लिए छः अंकों की गणना अर्थात् ११५२०० की आवश्यकता होती, और मान लीजिए यदि सार्वजनिक ऋण ८० लाख का है तो उसके लिए १२ अंकों की अर्थात् १,१५,२०,००,००,००० की आवश्यकता होती। इस प्रकार की मुद्रा गणित-समाज के सामान्य कार्यों के लिए सम्पूर्णतः असाध्य सिद्ध होती। अतः मैंने प्रस्ताव रखा कि इसकी अपेक्षा हिसाब और लेन-देन के लिए डॉलर को हमारी इकाई मानी जाय और इसके विभाजन तथा उपविभाजन दशमलव के अनुपात से किये जायँ। इस विषय में मैंने कुछ टिप्पणियाँ लिखीं, जिन्हें मैंने वित्त-प्रधान के विचारार्थ भेज दिया। मुझे उसका उत्तर मिला जिसमें उसने अपनी व्यवस्था के प्रति दृढ़ता प्रदर्शित करते हुए अपनी इकाई के लिए पूर्व प्रस्तावित इकाइयों में से १०० को मानना स्वीकार किया, जिसके अनुसार एक डॉलर १४४०-१००० और एक क्राउन १६ इकाइयों का होता। मैंने इसका उत्तर दिया, और अपनी टिप्पणियों तथा उत्तर को छपवाकर कांग्रेस के सदस्यों को उसकी प्रतियाँ बाँटीं, और समिति ने मेरे सिद्धान्त पर अपनी रिपोर्ट पेश करना स्वीकार किया। आगामी वर्ष यह व्यवस्था स्वीकृत हुई और आज भी प्रचलित है। यहाँ मैं उन टिप्पणियों

और उत्तरों को उद्धृत करता हूँ जो हमारी मुद्रा-व्यवस्था के अपनाने में विभिन्न विचारधाराओं को प्रदर्शित करती हैं।[1] डाइम, सेंट और मिल के विभाजनों से लोग आजकल इतनी अच्छी तरह परिचित हैं कि उन्हें नाप-तोल के काम में आसानी से लगाया जा सकता है। भ्रमण करते समय मैं क्लार्क का बनाया हुआ ओडोमीटर काम में लाता हूँ जो मील को सेंट में विभाजित कर देता है, और मेरा ख्याल है कि अगर किसी दूरी को मील और सेंट में व्यक्त किया जाय तो हरेक उसे आसानी से समझ लेगा; और यही बात फीट और सेंट पाउण्ड और सेंट आदि के लिए लागू होती है।

कांग्रेस की शिथिलता और उसका स्थायी अधिवेशन चिन्ता का विषय बनने लगा था, और यहाँ तक कि कई विधान-सभाओं ने बीच-बीच में विराम और नियत अवधि के अधिवेशनों की सिफारिश की थी। चूँकि कांग्रेस की छुट्टियों के दौरान में कॉनफेडरेशन ने शासन के प्रत्यक्ष प्रधान के लिए कोई उपबन्ध न रखा था, जो कि राजकीय कार्य-पालन की देख-रेख के लिए वैदेशिक मन्त्रियों और राष्ट्रों के साथ आदान-प्रदान के लिए तथा अकस्मात् एवं असाधारण मौकों पर कांग्रेस को एकत्रित करने के लिए आवश्यक था, अतः मैंने अप्रैल के आरम्भ में एक समिति की नियुक्ति के लिए प्रस्ताव रखा, जिसको 'राज्यों की समिति' नाम दिया जाना था और जिसमें हर राज्य से एक सदस्य होना था और जिन्हें कांग्रेस के विराम-काल में अपना अधिवेशन चलाते रखना था। मेरे प्रस्ताव के अनुसार कांग्रेस के कार्यों को कार्य-पालन और विधान-पालन में विभाजित किया जाना चाहिए था, विधान-पालन कार्य रक्षित रहना था जब कि कार्य-पालन एक प्रस्ताव द्वारा उक्त समिति को सौंप दिया जाना चाहिए था। बाद में यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, एक समिति नियुक्त हुई, और कांग्रेस-अधिवेशन के स्थगित हो जाने के बाद इसने कार्य आरम्भ किया; लेकिन शीघ्र ही आपस में झगड़कर दो दलबन्दियाँ हो गईं, जिन्होंने अपने पदों को छोड़ दिया और इस प्रकार कांग्रेस की अगली बैठक तक शासन का कोई प्रत्यक्ष प्रधान न रहा। हमने

१. इस पुस्तक में यह परिशिष्ट नहीं दिया गया है।

इसी बात को फ्रांस की डायरेक्टरी में होता देखा है, और मेरा विश्वास है कि जहाँ कहीं भी कार्यपालिका में बहुसदस्यता होगी वहाँ हमेशा इस प्रकार की बातें होंगी। मेरा खयाल है कि हमारी योजना सर्वोत्कृष्ट है जिसमें बुद्धिमत्ता और व्यावहारिकता समाविष्ट हैं, क्योंकि हमारे यहाँ सलाहकारों की अनेकता अवश्य है किन्तु अन्तिम निर्णयों के लिए केवल एक ही व्यक्ति मध्यस्थ है। मैं फ्रांस में था जब मैंने इस आपसी फूट और हमारी समिति में टूट जाने की खबर सुनी, और मनुष्यों की आपस में झगड़ने की तथा दलबन्दी करने की प्रवृत्ति के बारे में डा० फ्रैंकलिन से बात करने पर उन्होंने अपनी हमेशा की आदत के अनुसार एक उपाख्यान के रूप में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। उन्होंने ब्रिटिश चैनल में स्थित ऐडीस्टोन लाइट हाउस का ज़िक्र किया, जो कि एक चट्टान पर चैनल के बीचों-बीच बना है, और जहाँ कि सर्दियों में तूफानी समुद्र के कारण नहीं पहुँचा जा सकता; अतः रोशनी का प्रबन्ध करने वाले दो आदमी जो हमेशा वहाँ रहते हैं उन्हें पतझड़ के मौसम में ही सर्दियों के लिए खाने-पीने का सामान भेज दिया जाता है। और वसन्त ऋतु के आरम्भ होते ही पहले दिन एक नाव द्वारा उन्हें ताजा खाने-पीने का सामान भेजा जाता था। नाव वाले को लाइट हाउस के दरवाजे पर ही उन दोनों आदमियों में से एक मिला और उसने पूछा, "कहो कैसे हो दोस्त ? बहुत अच्छा हूँ तुम्हारा दूसरा साथी कैसा है ? मुझे नहीं मालूम। नहीं मालूम ? क्या वह यहाँ नहीं है ? मैं नहीं कह सकता। क्या आज तुमने उसे नहीं देखा ? नहीं। कब से तुमने उसे नहीं देखा है ? पिछले पतझड़ से। क्या तुमने उसे मार डाला। नहीं मैंने तो नहीं मारा।" वे लोग उस आदमी को अपने साथी की हत्या के अपराध में पकड़ना चाहते थे, पर उसने कहा कि उन्हें पहले ऊपर जाकर देख लेना चाहिए। वे ऊपर गये, वहाँ उन्हें दूसरा आदमी मिला, ऐसा प्रतीत हुआ कि वहाँ छोड़े जाने के बाद ही उन दोनों का आपस में झगड़ा हो गया था और उन दोनों ने अलग-अलग काम बाँट लिया था, एक ऊपर रहता था एक नीचे, और इसके बाद वे आपस में न कभी

एक-दूसरे से मिले और न आपस में बातचीत की।

किन्तु ऐनापोलिस में कांग्रेस के अधिवेशन की बात सुनिए। शान्ति-सन्धि जिस पर कि ३ सितम्बर १७८३ को पेरिस में हस्ताक्षर हुए थे, उसका नौ राज्यों की उपस्थिति बिना अनुसमर्थन नहीं हो सकता था। अतः २३ दिसम्बर को हमने कई राज्यपालों को पत्र लिखे, जिसमें सन्धि-पत्र के यहाँ पहुँचने की सूचना थी तथा यह भी सूचित किया कि यहाँ केवल सात राज्य उपस्थित हैं जब कि अनुसमर्थन के लिए नौ राज्यों की उपस्थिति आवश्यक है, और इसलिए उनसे अनुरोध किया कि वे अपने प्रतिनिधियों की तात्कालिक उपस्थिति की आवश्यकता महसूस करावें। और २६ तारीख को, समय बचाने के लिए, मैंने जलयान-प्रतिनिधि रॉबर्ट मोरिस को यह आदेश देने के लिए यह प्रस्ताव रखा कि वह न्यूयार्क और किसी अन्य पूर्वी बन्दरगाह पर एक-एक जहाज तैयार रखे ताकि सहमति प्राप्त होने बाद सन्धि का अनुसमर्थन पहुँचाया जा सके। विधान-सभा द्वारा यह प्रस्ताव स्वीकृत था, किन्तु डॉ० ली ने अति व्यय के आधार पर इसका विरोध किया; और उन्होंने कहा कि तुरन्त ही सन्धि का अनुसमर्थन कर अनुसमर्थन की हुई सन्धि को भेज देना बेहतर होगा। कई सदस्यों ने पहले भी सुझाव पेश किया था कि अनुसमर्थन के लिए सात राज्य ही पर्याप्त हैं। अतः मेरे प्रस्ताव को स्थगित कर दिया गया और तात्कालिक अनुसमर्थन के पक्ष में दक्षिणी कैरोलाइना के मि० रीड ने एक अन्य प्रस्ताव पेश किया। २६ और २७ तारीख को इस पर बहस हुई। रीड, ली, विलियमसन और [illegible] ने कहा कि मन्त्रियों द्वारा सन्धि पर हस्ताक्षर होने के बाद ही वह निर्दोष हो चुकी थी और अनुसमर्थन उसको केवल एक रूप मात्र देता है; कि यद्यपि किसी सन्धि को करने के लिए कॉन्फेडरेशन द्वारा नौ राज्यों की सहमति आवश्यक बताई गई है, किन्तु अनुसमर्थन करना सन्धि करना नहीं कहलाएगा; कि यदि मान लिया जाए कि नौ राज्यों की सहमति आवश्यक हो चुकी है तो भी हमें सुदृढ़ रखना पाँच राज्यों की शक्ति के अन्दर है; कि जो राज्यों ने अस्थायी सन्धि का अनुसमर्थन करके वास्तव में इस

सन्धि के अनुसमर्थन का अधिकार भी प्रदान कर दिया है, और अपने मन्त्रियों को इन्हीं शर्तों की एक निश्चित सन्धि स्वीकार करने का आदेश दिया था, और वर्तमान सन्धि वास्तव में, प्रायः शब्द-प्रति-शब्द बिलकुल पुरानी सन्धि-जैसी ही है; कि अनुसमर्थन के लिए और अटलांटिक महासागर के पार अनुसमर्थन की हुई सन्धि के आदान-प्रदान के लिए अब केवल ६७ दिन बाकी हैं; कि वास्तव में इससे अधिक समय तक हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते; कि यदि नियत समय तक अनुसमर्थन की हुई सन्धि पेरिस नहीं पहुँच जाती तो यह सन्धि अपने-आप रद्द हो जायगी; कि यदि सात राज्यों द्वारा ही इसका अनुसमर्थन होता है तो भी इस पर हमारी मोहर लगेगी और ग्रेट ब्रिटेन यह न जान पायगा कि इसे केवल सात राज्यों की ही स्वीकृति प्राप्त हुई है; कि यह एक ऐसा प्रश्न है कि जिस पर आपत्ति उठाने का ग्रेट ब्रिटेन को कोई अधिकार नहीं, और इस बारे में हमारा उत्तरदायित्व केवल अपने मतदाताओं के प्रति है; कि यह उसी प्रकार का अनुसमर्थन है जैसा कि सर विलियम टेम्पिल की सन्धि-वार्ता के परिणाम-स्वरूप ग्रेट ब्रिटेन को हॉलैण्ड से मिला था।

इसके विपरीत मनरो, गैरी, होवैल, ऐलेरी और मेरी दलील थी कि यूरोप की आधुनिक प्रथा के अनुसार अनुसमर्थन ही किसी सन्धि को मान्यता प्रदान करता है, जिसके बिना यह सन्धि आभारयुक्त नहीं हो पाती। मन्त्रियों के आयोग ने अनुसमर्थन का कार्य कांग्रेस के लिए रक्षित रख छोड़ा था; कि स्वतः सन्धि द्वारा अनुसमर्थन निर्दिष्ट है; कि यह दूसरा प्रश्न है कि अनुसमर्थन करने के कौन योग्य है। कि कॉन्फेडरेशन द्वारा सन्धि करने के लिए नौ राज्यों की सहमति स्पष्टतया अनिवार्य बताई गई है जिसका मतलब यह है कि नौ राज्यों की सहमति सन्धि के आरम्भ एवं उसकी पूर्ति के लिए अवश्य होनी चाहिए, जिसका उद्देश्य उन सब महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर राष्ट्र-संघ के अधिकारों की रक्षा करना है जिनमें नौ राज्यों की सहमति की आवश्यकता होती है; कि इसके विपरीत सात राज्य, जिनमें हमारे सम्पूर्ण नागरिकों का एक तिहाई से भी कम भाग रहता है हम पर एक

ऐसी सन्धि लाद सकते हैं, जो कि यद्यपि नौ राज्यों के आदेश और आदेश द्वारा आरम्भ की गई थी, किन्तु मन्त्री द्वारा वह इन आदेशों के विरोध में और एक महान् बहुमत के हितों को बलिदान कर बनाई गई है; कि निश्चित सन्धि को अस्थायी सन्धि की मौलिक प्रतिलिपि नहीं माना जा सकता, और इसमें वस्तुतः अन्तर है या नहीं, एक ऐसा प्रश्न है जिसे निर्धारित करने के लिए केवल नौ राज्य ही सक्षम हैं; कि नौ राज्यों द्वारा अस्थायी अनुच्छेदों के अनुसमर्थन की परिस्थिति, इन राज्यों द्वारा हमारे मन्त्रियों को एक निश्चित सन्धि करने का आदेश, और उनकी वस्तुतः सहमति वर्तमान सन्धि के अनुसमर्थन के लिए हमें सक्षम नहीं बनाती; कि यदि ये परिस्थितियाँ स्वयं ही अनुसमर्थन हैं तो ब्रिटिश अनुसमर्थन के बदले हमारे द्वारा केवल इनकी प्रमाणित प्रतिलिपियाँ भेजना ही पर्याप्त है; किन्तु यदि ऐसा नहीं है तो नौ राज्यों द्वारा अनुसमर्थन प्राप्त किये बिना हम जहाँ थे वहीं रह जाते हैं और स्वयं इसका अनुसमर्थन करने के अयोग्य रहते हैं; कि केवल चार दिन पहले ही यहाँ उपस्थित सात राज्यों ने उस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया था जिसे अनुपस्थित राज्यों के राज्यपालों को भेजा गया है और जिसमें उनके प्रतिनिधियों को यहाँ बुलाने का यह कारण बताया गया है कि सन्धि के अनुसमर्थन के लिए नौ राज्यों की आवश्यकता है; कि हॉलैण्ड वाली सन्धि के अनुसमर्थन का ग्रेट ब्रिटेन विशेषतः इच्छुक था और उसको उसी रूप में प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहता था; कि वे हमारे संविधान से परिचित हैं, और सात राज्यों द्वारा इस सन्धि के अनुसमर्थन पर आपत्ति प्रकट करेंगे; कि यदि यह बात छिपा भी ली जाय तो भी बाद में मालूम हो जायगी, और उन्हें इस अनुसमर्थन की मान्यता को अस्वीकार करने का मौका मिल जायगा और यह ऐसा अनुसमर्थन होगा जिसके द्वारा उन्हें धोखा दिया गया होगा, और जिसके द्वारा हमारी मुद्रा का असम्मानपूर्वक दुरुपयोग किया गया होगा कि नौ राज्यों की सहमति पाने की आशा मौजूद है; कि यदि सन्धि का नियत समय के अन्दर अनुसमर्थन न किया गया और वह रद्द हो जाती है तो

भी एक अपूर्ण अनुसमर्थन द्वारा उसे बचाया नहीं जा सकता; किन्तु वास्तव में वह रद्द नहीं होगी, और कुछ दिनों की देर से वह एक अधिक सुदृढ़ आधार तथा एक असाधारण रूप प्राप्त कर लेगी, और नियत समय में इसके अनुसमर्थन किये जाने की असम्भवता अधिक महत्त्व नहीं रखती; कि सब राष्ट्र इसे स्वीकार करेंगे, और ग्रेट ब्रिटेन भी, यदि वह दुबारा युद्ध छेड़ने के लिए आमादा नहीं है तो इसे स्वीकार करेंगे, और यदि वह युद्ध करना ही चाहता है तो उसे किसी प्रकार के बहाने की आवश्यकता न होगी। मि० री ने इस विषय पर 'हाँ' या 'ना' में वोट लेने का नोटिस दिया; जिस पर विरोधियों ने इस प्रस्ताव के विरोध के अपने कारणों को स्पष्टतया बताते हुए एक प्रस्ताव तैयार किया। यह प्रतीत होने लगा कि यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हो सकता, अतः इसे दर्ज न करना ही उचित समझा गया। मैसाच्यूसेटस ही केवल इसके पक्ष में था; रोड आइलैण्ड, पैनसिलवानिया और वर्जिनिया इसके विरोध में थे, डेलावेयर, मेरीलैण्ड और उत्तरी कैरोलाइना का मत विभाजित था।

हमारे निकाय में सदस्यों की संख्या कम थी, किन्तु बहस बहुत होती थी। दिन-प्रतिदिन अत्यन्त गौण प्रश्नों पर समय नष्ट होता था। एक ऐसा सदस्य जो कि बहस के दूषित कोष से क्षुब्ध हो चुका था, और जोकि स्वयं उत्कट मस्तिष्क, तत्पर कल्पना तथा शब्दों के प्रचुर प्रवाह वाला व्यक्ति था, और जो अपने से भिन्न दूसरे का तर्क सुनने में धैर्य खो बैठता था, एक महत्त्वहीन किन्तु शब्दों के आडम्बर से भरी हुई बहस के मौके पर मेरे पास बैठा हुआ था। उसने मुझसे जानना चाहा कि मैं ऐसी झूठी दलील शान्ति के साथ कैसे सुन पाता हूँ जिसका एक शब्द से खण्डन किया जा सकता है। मैंने कहा कि खण्डन करना आसान है किन्तु शान्त करना असम्भव है; कि मैं अपने द्वारा प्रस्तावित कार्यवाहियों को सफल बनाने के लिए जैसा कि चाहिए, मेहनत ज़रूर करता हूँ किन्तु मैं आम तौर पर दूसरों की बात सुनने के लिए तैयार रहता हूँ; कि इतने सारे विवादकर्त्ताओं में से अगर कुछ लोग सब सही दलीलों या एतराज़ों को पेश कर सकें तो बहुत काफी है; नहीं तो

दूसरों की बात दोहराए बिना ही चुप रहना मैं ठीक समझता हूँ; कि यह विधान-सभा के समय और धैर्य का दुरुपयोग है जिसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। और मेरा विश्वास है कि निकायों के सदस्य यदि सामान्यतः इस पथ का अनुसरण करें तो वे एक सप्ताह का कार्य एक दिन में कर सकते हैं; और यह वास्तव में जानने लायक है कि बोनापार्ट की गूँगी विधान-सभा जो-कुछ नहीं बोलती थी क्या वास्तव में उस विधान-सभा से बेहतर है जो बोलती बहुत है लेकिन काम कुछ नहीं करती। क्रान्ति से पहले वर्जिनिया की विधान-सभा में मैंने जनरल वाशिंगटन के साथ और क्रान्ति के दौरान में कांग्रेस ने डॉ० फ्रेंकलिन के साथ काम किया था। इनमें से किसी को भी मैंने एक-साथ दस मिनट से ज्यादा बोलते नहीं सुना, और वह भी केवल उस मुख्य बात पर जिसके द्वारा प्रश्न निर्धारित होना था। वे यह जानते हुए बड़ी बातों पर ही सिर्फ जोर देते थे कि छोटी बातें खुद हल हो जायँगी। यदि मौजूदा कांग्रेस बहुत ज्यादा बोलने की गलती करती है तो उस निकाय में शान्ति कैसे रह सकती है जहाँ जनता डेढ़ सौ वकीलों को भेजती है और जिनका काम ही हर बात पर सवाल पूछना, हार न मानना और लगातार बोलते रहना है ? कि यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि डेढ़ सौ वकील एक साथ मिलकर कोई काम कर सकते हैं। किन्तु मुझे अपने विषय पर वापस आना चाहिए।

यह देखकर कि जो लोग अनुसमर्थन के लिए सात राज्यों को सक्षम समझते थे वे अपने प्रस्ताव के अस्वीकृत होने से बड़े बेचैन थे, मैंने २ जनवरी को बीच का रास्ता अपनाकर एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें कहा गया कि यहाँ सात राज्य उपस्थित हैं जो कि अनुसमर्थन के विषय में सहमत हैं किन्तु सक्षमता के विषय में उनका मतभेद है; कि जो लोग अनुसमर्थन के लिए सात राज्यों को सक्षम नहीं समझते थे वे शान्ति-स्थापना के लिए अपने अधिकारों का प्रयोग यह सोचकर नहीं करना चाहते थे कि कांग्रेस का यह मत उन्हें प्राप्त नहीं है कि सात राज्य सक्षम है, और वे अपने प्राप्त अधिकारों से सन्धि का अनुसमर्थन कर सकते हैं; कि यह बात हमें अपने

मन्त्रियों तक पहुँचा देनी चाहिए और साथ ही इसे असंचारित रखने का उन्हें आदेश भी दे देना चाहिए, अनुसमर्थनों के आदान-प्रदान के लिए तीन महीने की अधिक अवधि प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए; कि उन्हें यह सूचना दे देनी चाहिए कि जैसे ही नौ राज्य उपस्थित हो सकेंगे नौ राज्यों द्वारा किया हुआ अनुसमर्थन उन्हें भेज दिया जायगा; यदि यह अनुसमर्थन आदान-प्रदान की नियत अवधि से पूर्व उन्हें मिल जाता है तो उन्हें दूसरे अनुसमर्थन को काम में न लाकर इसे ही काम में लाना चाहिए; यदि यह समय पर नहीं पहुँच पाता तो उन्हें सात राज्यों द्वारा किया हुआ अनुसमर्थन ही पेश करना चाहिए और साथ ही यह भी बताना चाहिए कि सन्धि उस समय प्राप्त हुई थी जिस समय कांग्रेस का अधिवेशन नहीं हो रहा था, किन्तु उस समय सात राज्य उपस्थित थे, और इन्होंने सर्व-सम्मति से अनुसमर्थन स्वीकार किया है। इस प्रस्ताव पर ३ और ४ तारीख को बहस हुई; और ५ तारीख को एक जहाज इस बन्दरगाह (ऐनापोलिस) से इंगलैण्ड जाने वाला था, अतः विधान-सभा ने तदनुसार हमारे मन्त्रियों को सूचना देने के लिए प्रेसीडेण्ट को आदेश दिया।

१४ जनवरी। कनैटीकट के सदस्य कल उपस्थित हो चुके थे, और दक्षिणी कैरोलाइना के सदस्य की आज उपस्थिति द्वारा, बिना किसी विरोध सन्धि का अनुसमर्थन किया गया; और अनुसमर्थन के तीन लेख तैयार करने का आदेश दिया गया, जिनमें से एक कर्नल हार्मर, दूसरा कर्नल फ्रैंक्स द्वारा भेजा गया और तीसरा जलयान-प्रतिनिधि को इस आदेश के साथ भेजा गया कि वह उसे ठीक मौका पाकर आगे भेज दे।

कांग्रेस ने शीघ्र ही अपने वैदेशिक सम्बन्धों पर विचार आरम्भ किया। उन्होंने हरेक राष्ट्र के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्धों की अन्य राष्ट्रों के समान स्तर पर ही स्थापना करना आवश्यक समझा, और इसलिए हरेक राष्ट्र के साथ अलग व्यापारिक सन्धि करने का प्रस्ताव रखना चाहा। इस कार्यवाही से हरेक राष्ट्र हमारी स्वतन्त्रता की मान्यता स्वीकार करता और हमारा राष्ट्रों के कुटुम्ब में एक स्थान बनता। इस बात का अधिकार होते

हुए भी हम इसे माँगने नहीं जाते किन्तु विदेशी राष्ट्रों द्वारा अपने सम्मान और स्वागत का अवसर प्रदान करने के हम अनिच्छुक न थे। फ्रांस, संयुक्त नीदरलैंड्स और स्वीडन के साथ तो हमारी व्यापारिक सन्धियाँ पहले से ही थीं; किन्तु इन सन्धियों में संशोधन की आवश्यकता अनुभव करके इन देशों के लिए आयोगों को नियुक्त किया गया। अन्य देश जिनके सामने सन्धि का प्रस्ताव रखना था, वे यह थे: इंगलैण्ड, हैमबर्ग, सैक्सोनी, प्रशा, डेनमार्क, रूस, ऑस्ट्रिया, वेनिस, रोम, नेपल्स, टस्कैनी, सारडीनिया, जेनेवा, स्पेन, पुर्तगाल, पोर्ट एलजियर्स, ट्रिपोली, ट्यूनिस और मोरक्को।

७ मई को कांग्रेस ने निर्णय किया कि वैदेशिक राष्ट्रों के साथ व्यापारिक सन्धि-वार्ता करने के लिए मि० एडम्स और डॉ० फ्रैंकलिन के अतिरिक्त एक अन्य महादूत नियुक्त किया जाना चाहिए, और इस कार्य के लिए मुझे चुना गया। तदनुसार ११ तारीख को अपनी बड़ी पुत्री के साथ, जो कि उन दिनों फिलाडेलफिया में थी (बाकी दोनों पुत्रियाँ समुद्र-यात्रा के लिए बहुत छोटी थीं) ऐनापोलिस से रवाना होकर जहाज तय करने के लिए बोस्टन पहुँचा। हरेक राज्य से गुजरते हुए मैंने उनकी व्यापारिक स्थिति की जानकारी की; इसी उद्देश्य से न्यू हैम्पशायर गया, और फिर बोस्टन लौट आया। बोस्टन से ५ जुलाई को मैं मि० नैथेनियल ट्रेसी के *सरिस* नामक व्यापारिक जहाज से रवाना हुआ, जो कि कोवेस जा रहा था। मि० नैथेनियल स्वयं एक यात्री थे और उन्नीस दिन तक एक देश से दूसरे देश तक आनन्ददायक यात्रा करते हुए २६ जुलाई को हम कोवेस पहुँचे। वहाँ मुझे कुछ दिनों अपनी पुत्री की तबियत खराब हो जाने के कारण रुकना पड़ा। ३० तारीख को वहाँ से चलकर ३१ को हैवर और ६ तारीख को पेरिस पहुँचे। मैं फौरन डॉ० फ्रैंकलिन से मिला और उन्हें मैंने अपने कार्य के बारे में सूचित किया तथा मि० एडम्स को भी पेरिस आने के लिए लिखा जो कि उन दिनों हेग में थे।

अमरीका छोड़ने से पहले अर्थात् सन् १७८१ में मुझे फ्रेंच लिगेशन के द मारबोइस का एक पत्र मिला था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि उनकी

सरकार ने उन्हें हमारे संघ के विभिन्न राज्यों के ऐसे आँकड़े प्राप्त करने का आदेश दिया है जो कि उनकी सूचना के लिए उपयोगी हो सकते हों। मेरा उसूल था कि जब कभी मुझे अपने देश के बारे में कोई भी ऐसी सूचना प्राप्त करने का मौका मिलता जो कि सार्वजनिक अथवा व्यक्तिगत दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हो सकती थी, तो उसे मैं लेखनी-बद्ध कर लिया करता था। यह सूचनाएँ अलग-अलग कागजों पर लिखी गई थीं जिन्हें बिना क्रम एक-साथ बाँध रखा गया था, और इसलिए किसी एक खास सूचना को ढूँढ़ निकालना मुश्किल था। मैंने द मारबॉय के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तथा अपने प्रयोग के लिए इन सूचनाओं को सुव्यवस्थित करने का एक अच्छा अवसर पाया। कुछ मित्रों को, जिन्हें मैंने बीच-बीच में यह सूचनाएँ भेजी थीं, वे इनकी प्रतिलिपियाँ चाहते थे; लेकिन यह इतनी अधिक सूचनाएँ थीं कि हाथ से लिखकर इनकी प्रतिलिपियाँ बनाना बहुत मेहनत का काम था, अतः मैंने उन मित्रों की सन्तुष्टि के लिए इन्हें मुद्रित करवाना चाहा। इसके लिए मुझसे बहुत अधिक कीमत माँगी गई। पेरिस पहुँचने पर मालूम हुआ कि इस कीमत के चौथाई दामों पर यह काम हो सकता था। अतः मैंने इन सूचनाओं का संशोधन करके इन्हें विस्तृत बनाया और 'वर्जिनिया सम्बन्धी लेख' नाम से इनकी दो सौ प्रतियाँ छपवाईं। कुछ प्रतियाँ मैंने यूरोप में अपने खास मित्रों को दीं, और बाकी अमरीका में अपने मित्रों को भेज दीं। एक यूरोपियन प्रति, अपने मालिक की मृत्यु के बाद एक पुस्तक-विक्रेता के यहाँ पहुँची, जिसने उसका अनुवाद करवाकर, जब वह प्रेस के लिए तैयार हो गई, तो पाण्डुलिपि को मेरे पास भेजकर उसे प्रकाशित करने की अपनी इच्छा प्रगट की और पाण्डुलिपि में संशोधन करने के लिए मुझे लिखा लेकिन प्रकाशन के लिए उसने मेरी अनुमति नहीं माँगी। मैंने उससे भद्दा अनुवाद पहले कभी न देखा था। शुरू से आखीर तक मैंने उसे गलतियों से भरा पाया जिसमें कहीं क्रम बदल दिया गया था तो कहीं संक्षेप में लिखकर उसे नष्ट कर दिया गया था, और कहीं-कहीं तो अर्थ बिलकुल उल्टा कर दिया गया था। मैंने थोड़ा-बहुत संशोधन

किया और फिर उस रूप में वह फ्रांसीसी भाषा में छपा। लन्दन के एक प्रकाशक ने इस अनुवाद को देखा और उसने मुझसे मूल अंग्रेज़ी पुस्तक छापने की अनुमति चाही। मैंने इस बात को बहुत अच्छा समझा, क्योंकि मैंने सोचा कि दुनिया देख सकेगी कि मूल पुस्तक उतनी बुरी नहीं है जितना कि उसका अनुवाद। और यह उस प्रकाशन का सच्चा इतिहास है।

मि० एडम्स हमसे शीघ्र ही पेरिस में आ मिले, और हमारा पहला काम एक ऐसा साधारण परिपत्र तैयार करना था, जो कि उन राष्ट्रों को पेश किया जा सके जो हमसे व्यवहार रखने के इच्छुक थे। ब्रिटिश आयुक्त, डेविड हार्टले के साथ शान्ति-वार्ता के समय डॉ० फ्रैंकलिन के सुझाव पर हमारे आयुक्तों ने सन्धि में एक अनुच्छेद जोड़ना चाहा था, जिसके अनुसार पारस्परिक युद्ध छिड़ने पर कोई भी पक्ष उन सार्वजनिक अथवा व्यक्तिगत व्यापारिक जहाज़ों को न पकड़ेगा जिनका काम केवल राष्ट्रों के बीच व्यापार-संचालन है। इंगलैण्ड ने इस अनुच्छेद को अस्वीकार किया और मेरी राय में यह उन्होंने बुद्धिमानी का काम नहीं किया, क्योंकि हमारे साथ युद्ध छिड़ने पर उनके हमसे बड़े-चढ़े व्यापार को हमारी अपेक्षा कहीं अधिक समुद्र पर खतरा पैदा हो सकता था; और जैसे कि शिकार के अनुपात में बाज इकट्ठे हो जाते हैं उसी प्रकार लूट का सामान अधिक मिलने की आशा से हमारे व्यक्तिगत जहाज़ों के ढेर-के-ढेर इकट्ठे हो जाते, जब कि लूट का सामान कम मिलने की आशा से उनके जहाज़ कम होते। इस अनुच्छेद को हमने अपने परिपत्र में शामिल किया और मछुए, खेतिहर, अशस्त्र नागरिकों द्वारा अरक्षित स्थानों में उनके व्यवसाय में बाधा उपस्थित न करने तथा युद्ध के सैनिकों के साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार करने और युद्ध की प्रतिषिद्ध वस्तुओं के नियम के उन्मूलन के लिए—जिसके द्वारा व्यापारिक जहाज़ों को बहुत परेशानी उठानी पड़ती और अक्सर नुकसान करके रहना पड़ता था, तथा स्वतन्त्र समुद्रतल, स्वतन्त्र वस्तुओं के सिद्धान्त के लिए एक उपबन्ध पेश किया।

काउण्ट द वर्जेनेस के साथ वार्तालाप में यह ठीक समझा गया कि

व्यापारिक सम्बन्धों के ऐसे रूपान्तरों को, जो दोनों पक्षों के सद्भाव से उत्पन्न हों, वैधानिक विनियमन के लिए छोड़ दिया जाय। वरसाई के दरबार में हमने कई यूरोपियन राज्यों के मन्त्रियों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने और सन्धि द्वारा उनकी सुरक्षा करने के लिए बातचीत शुरू की लेकिन हमने उन पर जोर न डाला। प्रश के वृद्ध फ्रेड्रिक ने हमारा स्वागत किया और हमारे साथ वार्ता आरम्भ करने के लिए बिना सकुचाए हेग में अपने मन्त्री बैरन द थुलमेयर को नियुक्त किया। हमने उनके सामने अपनी योजना रखी, जो थोड़ी-बहुत अदल-बदल के बिना शीघ्र ही स्वीकृत हो गई। डेनमार्क और टस्कैनी ने भी हमारे साथ वार्ता आरम्भ की। अन्य शक्तियों को इस दिशा में विशेष इच्छुक न पाकर हमने उन पर जोर देना उचित न समझा। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें हमारे बारे में पूरी जानकारी नहीं है; वे हमें केवल उन क्रान्तिकारियों के रूप में ही समझते थे, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के बन्धन को तोड़ दिया है। वे हमारे व्यापार से अनभिज्ञ थे, जिस पर शुरू से केवल ब्रिटेन का ही अधिकार रहता चला आया था, और वे हमारे यहाँ की उन वस्तुओं के बारे में भी नहीं जानते थे जिनके आदान-प्रदान से दोनों पक्षों को लाभ हो सकता था। अतः वे कुछ समय तक दूर खड़े रहकर देखना चाहते थे कि किस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित किये जायें। अतः डेनमार्क और टस्कैनी के साथ हमारी वार्ता आरम्भ हुई और हमने अपने अधिकारों की समाप्ति तक जान-बूझकर वार्ता चलाई; और अन्य देश, जिनके उपनिवेश न थे, उनके सामने नये प्रस्ताव न रखें; क्योंकि हमारा व्यापार कच्चे माल के एवज में बना हुआ माल लेना था और इस प्रकार उन देशों के उपनिवेशों में प्रवेश करने की कीमत अदा करना था जिनके अधीन उपनिवेश थे; लेकिन इस कीमत के बिना कच्चा माल अन्य देशों को दे देने का अर्थ यह होता कि सारे देश विशेष प्रिय राष्ट्रों के आधार पर कच्चे माल लेने का दावा करते।

संयुक्त राज्य अमरीका की ओर से मि० एडम्स लन्दन में महादूत-मन्त्री चुने जाने के कारण जून में लन्दन चले गए, और जुलाई में डॉ० फ्रैंकलिन

व्यापारिक सम्बन्धों के ऐसे रूपान्तरों को, जो दोनों पक्षों के सद्भाव से उत्पन्न हों, वैधानिक विनियमन के लिए छोड़ दिया जाय। वरसाई के दरबार में हमने कई यूरोपियन राज्यों के मन्त्रियों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने और सन्धि द्वारा उनकी सुरक्षा करने के लिए बातचीत शुरू की लेकिन हमने उन पर जोर न डाला। प्रशा के वृद्ध फ्रेड्रिक ने हमारा स्वागत किया और हमारे साथ वार्ता आरम्भ करने के लिए बिना सकुचाए हेग में अपने मन्त्री बैरन द थुलमेयर को नियुक्त किया। हमने उनके सामने अपनी योजना रखी, जो थोड़ी-बहुत अदल-बदल के बिना शीघ्र ही स्वीकृत हो गई। डेनमार्क और टस्कैनी ने भी हमारे साथ वार्ता आरम्भ की। अन्य शक्तियों को इस दिशा में विशेष इच्छुक न पाकर हमने उन पर जोर देना उचित न समझा। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें हमारे बारे में पूरी जानकारी नहीं है; वे हमें केवल उन क्रान्तिकारियों के रूप में ही समझते थे, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के बन्धन को तोड़ दिया है। वे हमारे व्यापार से अनभिज्ञ थे, जिस पर शुरू से केवल ब्रिटेन का ही अधिकार रहता चला आया था, और वे हमारे यहाँ की उन वस्तुओं के बारे में भी नहीं जानते थे जिनके आदान-प्रदान से दोनों पक्षों को लाभ हो सकता था। अतः वे कुछ समय तक दूर खड़े रहकर देखना चाहते थे कि किस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित किये जायें। अतः डेनमार्क और टस्कैनी के साथ हमारी वार्ता आरम्भ हुई और हमने अपने अधिकारों की समाप्ति तक जान-बूझकर वार्ता चलाई; और अन्य देश, जिनके उपनिवेश न थे, उनके सामने नये प्रस्ताव न रखें; क्योंकि हमारा व्यापार कच्चे माल के एवज में बना हुआ माल लेना था और इस प्रकार उन देशों के उपनिवेशों में प्रवेश करने की कीमत अदा करना था जिनके अधीन उपनिवेश थे; लेकिन इस कीमत के बिना कच्चा माल अन्य देशों को दे देने का अर्थ यह होता कि सारे देश विशेष प्रिय राष्ट्रों के आधार पर कच्चे माल लेने का दावा करते।

संयुक्त राज्य अमरीका की ओर से मि० एडम्स लन्दन में महादूत-मन्त्री चुने जाने के कारण जून में लन्दन चले गए, और जुलाई में डॉ० फ्रेंकलिन

अमेरिका वापस चले गए और मैं पेरिस में उनका उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ। फरवरी १७८६ में मि० एडम्स ने मेरे तुरत लन्दन आने के लिए जोर दिया, क्योंकि उन्हें हमारे प्रति अच्छी भावनाओं के कुछ चिह्न दिखाई दे रहे थे। उनके मन्त्रालय के सचिव कर्नल स्मिथ यह संदेश लेकर मेरे पास आये थे। तदनुसार १ मार्च को मैं लन्दन के लिए रवाना हुआ, और लंदन पहुँचकर हम एक अत्यन्त संक्षिप्त संधि के लिए राजी हो गए, और अपने नागरिकों, अपने जहाजों तथा अपनी उत्पादित वस्तुओं के आदान-प्रदान का हमने प्रस्ताव रखा। मैंने तुरन्त समझ लिया कि मेरी उपस्थिति के बारे में उन लोगों के दूषित मस्तिष्क के कारण कोई आशा नहीं की जा सकती; और वैदेशिक मन्त्री मारकुइस ऑफ केयरमार्थन से पहली मुलाकात में ही मैंने उनकी बातचीत में एक अलगाव और ऐसी अनिच्छा पाई, और उन्होंने हमारे प्रश्नों का ऐसी अस्पष्टता और टाल-मटोल के साथ उत्तर दिया कि मेरा यह विश्वास दृढ़ हो गया कि वे लोग हमारे साथ सम्बन्ध रखने के इच्छुक नहीं हैं। लेकिन फिर भी हमने उन्हें अपनी योजना पेश की, जिसके परिणाम के असफल होने की मि० एडम्स को उतनी आशा न थी जितनी कि मुझे थी। बाद में हमने एक-दो पत्रों द्वारा उनसे भेंट करने का समय तय करना चाहा, लेकिन साफ-साफ इन्कार न करके ज्यादा जरूरी कामों का बहाना बनाकर वह हमें टालते रहे। छः सप्ताह तक यहाँ ठहरकर, अपने आयोग की समाप्ति से कुछ दिन पहले मैंने एक पत्र द्वारा मंत्री को सूचित किया कि पेरिस में अपने कार्यों के कारण मेरा वहाँ लौटना आवश्यक है, और मैं उनके पेरिस-स्थित राजदूत के पास उनका संदेशवाहक भेजकर बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार करूँगा। उत्तर में उन्होंने मेरी कुशल यात्रा की कामना की, और मुझे सूचित किया कि उन्हें कोई संदेश नहीं भेजना—२६ तारीख को लंदन से रवाना होकर ३० अप्रैल को मैं पेरिस पहुँचा।

लंदन में अपनी मौजूदगी के समय पुर्तगाल के राजदूत, शेवेलियर पिन्टो से हमने बातचीत आरम्भ की थी। हमारे बीच केवल यही बात दुविधा

पैदा कर रही थी कि पुर्तगाल में हमारी रोटी आटे और अनाज के रूप में पहुँचनी चाहिए। उन्हें यह माँग स्वयं स्वीकृत थी किन्तु उन्होंने बताया कि दरबार के कई प्रभावशाली सामंतों की लिस्बन के आस-पास आटे की चक्कियाँ हैं, जिनका मुनाफा हमारे यहाँ से मँगाए हुए गेहूँ को पीसने से ही होता है, और इसलिए यह माँग सारी संधि को खतरे में डाल देगी। लेकिन फिर भी उन्होंने संधि पर हस्ताक्षर कर दिए और इस संधि की वही हालत हुई जो कि इन्होंने बताई थी।

पेरिस में मेरे कार्य कुछ विषयों तक ही सीमित थे; ह्वेल मछली का तेल, नमकीन मछली, नमकीन मांस को लाभप्रद शर्तों पर प्राप्त करना, पीडमौंट, मिस्र और लेवेण्ट में हमारे यहाँ के चावल को बराबर की शर्तों पर भेजना; हमारे यहाँ के तम्बाकू पर बड़े-बड़े किसानों के एकाधिकार को नष्ट करना, और इन द्वीपों में हमारे यहाँ की उत्पादित वस्तुओं को स्वतंत्रता के साथ भेजना—यह मुख्य व्यापारिक विषय थे जिनका प्रबन्ध करना था; और इन कार्यों में मुझे मारक्विस द ल फेयट के प्रभाव और उनकी शक्तियों से बहुत मदद मिली, और उनमें दोनों राष्ट्रों की मैत्री और हित के लिए समान रूप से उत्कट इच्छा मौजूद थी। मुझे यह भी कहना पड़ेगा कि सब विषयों में सरकार, जहाँ तक उनको नुकसान न पहुँचे, मैत्रीपूर्ण व्यवहार बरतना चाहती थी। काउण्ट द वर्जेनेस कूटनीतिक मामलों में अपने कूटनीतिक अधिकारियों के बीच अपनी चतुराई और अनिश्चितता के लिए प्रसिद्ध थे; और जिन लोगों को वह ऐसा समझते थे उनके साथ इसी तरह चतुराई और चालाकी से पेश आते थे। चूँकि उन्हें मालूम था कि मेरा व्यवहार सीधा-सादा होता है, मैं चालाकी काम में नहीं लाता, न साजिशों में भाग लेता हूँ, और न कोई गोपनीय उद्देश्य रखता हूँ, अतः उन्होंने मेरे साथ खुले दिल और ईमानदारी के साथ उचित व्यवहार किया, और यही बात उनके उत्तराधिकारी मोण्टमोरेन के लिए लागू होती है, जो कि बहुत ही ईमानदार और सुयोग्य व्यक्ति था।

भूमध्य सागर में बारबरी राज्यों के क्रूरों ने हमारे दो जहाजों तथा

निर्णय करना चाहिए कि क्या अपने-अपने हिस्से का रुपया देकर सिर्फ एक ही फौजी बेड़ा रखना ज्यादा ठीक होगा।

७. "यदि इस कार्य में भाग लेने वाले देश, जो कि एक-दूसरे से दूर स्थित हैं और इस कारण आपस में मिलकर सलाह-मशविरा करने में असमर्थ हैं जिसकी वजह से इस कार्य के प्रबन्ध में मुश्किल और देर हो सकती है, तो क्या यह बेहतर न होगा कि इस काम के लिए यह राज्य यूरोप-स्थित किसी दरबार के अपने राजदूतों अथवा मन्त्रियों को पूरा अधिकार सौंप दें, जो कि एक समिति या परिषद् बनायें, और समिति के बहुमत द्वारा सब प्रश्नों को निर्धारित करें ? वरसाई का दरबार इस काम के लिए उपयुक्त समझा जाता है, जो कि भूमध्यसागर के पास है और जहाँ उन सब देशों के प्रतिनिधि मौजूद हैं जिनकी इस सन्धि में भाग लेने की सम्भावना हो सकती है।

८. "पद प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत आवेदनों की परेशानी से समिति को बचाने के लिए और यह देखने के लिए कि राज्यों से प्राप्त चन्दा केवल उस काम पर ही खर्च किया जाय जिस काम के लिए वह लिया गया है, इस समिति में आयुक्त सचिव तथा अन्य किसी प्रकार के पदाधिकारी न होंगे जिन्हें वेतन या और किसी प्रकार का आर्थिक लाभ हो। उनका काम केवल जहाजों पर ही होगा।

९. "यदि इस संघ के किन्हीं दो राज्यों में परस्पर युद्ध छिड़ जाय तो उसका इस सन्धि से कोई सम्बन्ध न होगा, और न इसके काम को रोका जायगा। इस कार्य के लिए उनके वही सम्बन्ध होंगे जो कि शान्ति-काल में होते हैं।

१०. "जब ऐलजियर्स को शान्ति के लिए बाध्य कर दिया जायगा, तो अन्य लुटेरे राज्यों को, यदि वे लूट-खसोट बन्द नहीं करते, तो एक-साथ या क्रमशः निशाना बनाया जायगा।

११. "जहाँ कहीं इस प्रबन्ध के अन्तर्गत किसी राज्य और बारबरी राज्यों की परस्पर-सन्धि में हस्तक्षेप पड़ता है वहाँ इस सन्धि की महत्ता मानी जायगी, और वह राज्य बारबरी राज्यों से युद्ध करने से अलग हट सकता है।"

मेरा परिचय हुआ जो कि एक प्रतिभाशाली, थोड़ा-बहुत वैज्ञानिक, निडर और साहसी व्यक्ति था। प्रशान्त महासागर की कप्तान कुक की यात्रा में वह उनके साथ था और अपने अनुपम साहस के कारण उसने प्रतिष्ठा पाई थी। उसने कप्तान कुक की यात्रा का वृत्तान्त प्रकाशित किया था जिसमें उसने जंगली लोगों के प्रति कप्तान कुक के व्यवहार की निन्दा की थी जिससे कुक के भाग्य के प्रति हमारा दुःख कम हो गया था। लेडयार्ड इस आशा से पेरिस आया था कि अमेरिका के पश्चिमी तट पर फर व्यापार के लिए एक कम्पनी खोल सके। इस काम में उसे निराशा मिली और बेकार होने तथा घुमक्कड़ प्रवृत्ति का होने के कारण मैंने उसे अपने महाद्वीप के पश्चिमी भाग की खोज करने की सलाह दी। मैंने उसे सेण्ट पीटर्सबर्ग होते हुए काम्सचाटका, और वहाँ से रूसी जहाजों द्वारा नूटका साउण्ड पहुँचने के लिए कहा, जहाँ से वह महाद्वीप पार करके संयुक्त राज्य अमेरिका पहुँच सकता था; और मैंने उसे आश्वासन दिलाया कि इस बारे में उसके लिए मैं रूस की सम्राज्ञी से अनुमति ले दूँगा। उसने बड़ी खुशी के साथ इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और रूसी राजदूत मा० द सैमोलिन और खास तौर पर सम्राज्ञी के विशेष सम्वाददाता बैरन ग्रिम ने उसके लिए सम्राज्ञी के राज्य में से होते हुए अमेरिका के पश्चिमी तट पर पहुँचने की सम्राज्ञी से अनुमति चाही। यहाँ मुझे एक गलती ठीक कर देनी चाहिए, जो कि मैंने किसी अन्य स्थान में सम्राज्ञी के विरुद्ध की थी। 'एक्सपैडीशन टू द पैसीफिक' (प्रशान्त महासागर की खोज) की प्रस्तावनास्वरूप कप्तान लुइस के बारे में लिखते हुए मैंने लिखा था कि सम्राज्ञी ने पहले इजाजत दे दी पर बाद में इन्कार कर दिया। यह बात छब्बीस बरस के अर्से के बाद मेरे दिमाग में इतनी बैठ चुकी थी कि मुझे अपनी गलती का बिलकुल भी शक न था। लेकिन उस वक्त के अपने पत्रों को देखने से मुझे मालूम हुआ कि सम्राज्ञी ने उसी वक्त इजाजत देने से इन्कार कर दिया था, क्योंकि उनके विचार में यह यात्रा असम्भव थी। लेकिन लेडयार्ड इस यात्रा को छोड़ना न चाहता था और उसका खयाल था कि वह सेण्ट पीटर्सबर्ग जाकर इसकी

व्यावहारिकता सम्राज्ञी को समझाकर उनकी अनुमति प्राप्त कर सकेगा। अतः वह पीटर्सबर्ग पहुँचा किन्तु सम्राज्ञी अपने राज्य के किसी दूर स्थान में पहुँची हुई थीं इसलिए वह अपनी यात्रा पर चल दिया और काम्सचाटका पहुँचने से दो सौ मील पहले सम्राज्ञी के हुक्म से गिरफ्तार करके वापस पोलैण्ड लाया गया और वहाँ उसे छोड़ दिया गया। अतः मुझे कहना पड़ेगा कि सम्राज्ञी ने एक क्षण के लिए भी, यहाँ तक कि अपने राज्य में से गुजरने की आज्ञा न देकर भी उसे न रोका था।

इस वर्ष फ्रांस की आर्थिक दुर्दशा के परिणामस्वरूप ऐसी बातें हुई हैं जिनका उदाहरण लगभग गत दो शताब्दियों में भी न मिलेगा, और जिसके अच्छे या बुरे परिणाम का अभी अन्दाज नहीं लगाया जा सकता। इसके विगत कारणों को जानने के लिए हमें थोड़ा पिछला इतिहास देखना होगा।

फ्रांस और इंगलैण्ड के प्रसिद्ध लेखक शासन-व्यवस्था-सम्बन्धी सुसिद्धान्तों की पहले ही व्याख्या कर चुके थे; किन्तु फिर भी शायद अमरीकन क्रान्ति ने ही साधारणतया फ्रेंच राष्ट्र को निरंकुशवाद की उस नींद से जगाया जिसमें वे सोए पड़े थे। अमरीका जाने वाले पदाधिकारी अधिकांशतः युवक थे जो कि अभ्यास और पूर्वग्रहों से कम जकड़े हुए थे और दूसरों की अपेक्षा साधारण बुद्धि और सामान्य अधिकारों की भावना से अधिक प्रेरित होते थे। वे नये विचार और नई धारणाएँ लेकर लौटे। समाचार-पत्र अपने बन्धनों के बावजूद इन विचारों का प्रसारण करने लगे, बातचीतों में एक नई आजादी आ गई; राजनीति मर्द, औरत और सब समाजों का विषय बन गई, और एक बहुत बड़े तथा उत्साहपूर्ण दल का जन्म हुआ जिसने देशभक्त दल का नाम धारण किया। यह दल उस कुरीतिपूर्ण शासन के प्रति जागरूक था जिसके अधीन वह रहता था और उसका सुधार करने के लिए वह बेचैन होने लगा। इस दल के लोग जिनके पास सोचने-समझने का अवकाश था जैसे कि साहित्यिक, धनिक, युवा सामन्त, जिन्होंने सोच-विचारकर और प्रचलित तरीके के अनुसार साम्राज्य की ईमानदारी को बखूबी समझ लिया था; क्योंकि यह भावनाएँ प्रचलित तरीके का अंग बन

चुकी थीं और इन्होंने बहुत-सी युवा स्त्रियों को इस दल में ला मिलाया। यह राष्ट्र के लिए खुशी की बात थी कि इसी समय साम्राज्ञी और दरबार के दुराचरणों ने, निवृत्ति-वेतन की कुरीतियों तथा शासन की वित्त-व्यवस्था के प्रत्येक अंग के पतन ने राष्ट्र के कोषों को इतना अधिक खाली कर दिया था कि अत्यन्त आवश्यक कार्य तक रुक गए थे। इन कुरीतियों को सुधारने का अर्थ था मन्त्री को पदच्युत करना; सम्राट् के नाम पर नये करों को लगाना—और संसद् के दृढ़ विरोध के कारण यह असम्भव था। अतः देश की जनता से अपील करने के अलावा और कोई रास्ता खुला न था। इसलिए सम्राट् ने देश के सर्वोत्कृष्ट व्यक्तियों को इस आशा से एक सभा बुलाई कि शासन में विभिन्न प्रकार के महत्त्वपूर्ण सुधारों का आश्वासन देकर वे नये कर लगाने का अधिकार प्राप्त कर सकें, संसद् के विरोधी पक्ष को नियन्त्रित कर सकें, और व्यय के अनुपात में वार्षिक राजस्व इकट्ठा कर सकें। अतः सम्राट् द्वारा नियुक्त डेढ़ सौ प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक सभा २२ फरवरी को बुलाई गई। मन्त्री (कैलोन) ने उन्हें बताया कि लुई सोलहवें के गद्दी पर बैठने के समय राजस्व से ३ करोड़ २० लाख लीवर अधिक वार्षिक व्यय था; कि जल-सेना को पुनःस्थापना के लिए ४४ करोड़ ७० लाख ऋण लिया जा चुका है, कि अमरीकन युद्ध में १ अरब ४४ करोड़ (२५ करोड़ ६० लाख डालर) हो चुका है, कि इन रकमों का ब्याज और अन्य बढ़े हुए व्ययों के कारण ४ करोड़ का वार्षिक घाटा और बढ़ गया है। (किन्तु बाद में एक दूसरे ज्यादा अच्छे हिसाब से यह घाटा ५ करोड़ ६० लाख बताया गया)। मन्त्री ने इस सार्वजनिक असन्तोष को दूर करने के लिए उनसे कहा, इस असन्तोष का पूरा विवरण दिया, इसे दूर करने का इलाज बताया, और इन महान् बातों के आडम्बर में यह घाटा बहुत कम दिखाई देने लगा। इस सभा के लिए अति सुयोग्य और स्वतन्त्र विचारों वाले व्यक्ति चुने गए थे, और उनका सहयोग प्राप्त कर लेना ही काफी था। उन लोगों ने इस अवसर को प्राप्त करके असन्तोष को दूर करना चाहा और और इस बात पर वे सहमत थे कि सार्वजनिक आवश्यकताओं को पूरा

न्वित किया जायगा; कि मौजूदा शासन-काल में उन्हें कायम रखा जा सकेगा, और क्रमशः संविधान में उनकी जड़ें जम जायँगी ताकि उन्हें संविधान का भाग समझा जायगा और राष्ट्र की लगन द्वारा उनकी रक्षा की जा सकेगी।"

विधान-सभा के अधिवेशन से कुछ दिनों पहले काउन्ट द वर्जेनेस की मृत्यु हो गई, और उनकी जगह काउण्ट द मोण्टमोरिन को परराष्ट्र-मन्त्री नियुक्त किया गया। वित्त-अध्यक्ष कैलोन का स्थान विलडुइक ने लिया, और कार्डियल लोमिनी को प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया, जिनके साथ अन्य मन्त्रियों को अपने विभाग का काम करना था, जो कि अभी तक सम्राट् के सम्मुख होता था। ड्यूक निवरनॉय और मा० मालशर्ब्स को कौन्सिल में बुलाया गया। प्रधान मन्त्री की नियुक्ति के कारण मार्शल द सैगर और द कैस्ट्रीज ने, जो कि युद्ध और जल-सेना के मन्त्री थे, पद त्याग किया। क्योंकि वे किसी के अधीन रहकर काम न करना चाहते थे, और न उस कार्य की निन्दा के भागी बनना चाहते थे जो कि उनके निर्देशन में न हुआ हो। इनकी जगह प्रधान मन्त्री के भाई काउण्ट द ब्रायन ने और संयुक्त राज्य अमेरिका में जो मन्त्री रह चुके थे, उनके भाई मारक्विस द ला लुर्जन को नियुक्त किया गया।

मेरी कलाई उतर गई थी, जिसे ठीक तरह जोड़ा न जा सका था, अतः मेरे डॉक्टर ने प्रोवेन्स-स्थित ए नामक स्थान के धातुपूर्ण जल का प्रयोग करने के लिए कहा। तदनुसार २८ फरवरी को पेरिस से इस स्थान के लिए रवाना होकर, साइन नदी द्वारा शैम्पन और बरगण्डी से होता हुआ और फिर रोन नदी द्वारा लायन्स, एविगनन, निसमेस होता हुआ ए पहुँचा। यहाँ के जल से मुझे कोई लाभ न हुआ इसलिए मैं पीडमोण्ट के धान-प्रदेश में यह देखने पहुँचा कि क्या वहाँ का चावल हमारे कैरोलाइना के चावल से बेहतर होता है और क्या इस बारे में वहाँ से कुछ सीखा जा सकता है; और वहाँ से मैं अपने व्यापारिक लाभ को दृष्टि में रखते हुए फ्रांस के दक्षिणी और पश्चिमी तट का भ्रमण करने निकला। अतः मैंने ए से मार्सेल, तोलोन, हीरस, नाइस, कोनी, ट्यूरिन, वर्सेली, नॉवैरा, मिलान, पैविया, नोवी,

"इस कार्य की सफलता के लिए जहाँ तक बन सकेगा सम्राट् सहायता करेंगे, और वह चाहते हैं कि देशभक्त दल इस विषय में अपने विचारों, अपनी योजनाओं, और अपने असन्तोष के कारण उन्हें बतलाएँ। आप उनको यह आश्वासन दे सकते हैं कि सम्राट् उनमें और उनके कार्य में दरअसल दिलचस्पी रखते हैं, और वे लोग सम्राट् द्वारा अपनी सुरक्षा पर निर्भर कर सकते हैं। इस सुरक्षा पर वे और अधिक इसलिए निर्भर हो सकते हैं, और हम यह छिपाना नहीं चाहते कि यदि स्टाटहोल्डर को अपना विगत प्रभाव पुनः प्राप्त हो जायगा तो शीघ्र ही इंगलिश व्यवस्था छा जायगी, और हमारी सन्धि कोरी काल्पनिक बनी रह जायगी। देशभक्त दल यह महसूस करेगा कि ऐसी स्थिति सम्राट् के सम्मान के अनुकूल नहीं हो सकती। किन्तु यदि देशभक्त दल के नेता को विभाजन का भय हो तो उन्हें इतना पर्याप्त समय मिल जायगा जिसमें वे उन लोगों को अपने साथ मिला सकेंगे जिन्हें अंग्रेजों के हिमायतियों ने बरगला दिया था; और ऐसी तैयारियाँ कर सकेंगे कि ताकि जब फिर यह सवाल उठे तो वह उन लोगों की मर्जी के मुताबिक ही तय किया जा सके। यदि कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो तो उन लोगों के साथ मिलकर तथा उनके निर्देशन में काम करने और हर तरीके से इस अच्छे काम के लिए योद्धाओं की संख्या-वृद्धि करने का अधिकार सम्राट् आपको देते हैं। देशभक्तों की व्यक्तिगत सुरक्षा के विषय में ही अब केवल मुझे कहना है। आप उनको आश्वासन दें कि हर प्रकार की परिस्थितियों में सम्राट् उनको तत्काल सुरक्षा प्रदान करेंगे, और जहाँ कहीं आप जरूरी समझें उन्हें यह बता सकते हैं कि उनकी आजादी के खिलाफ किया हुआ कोई भी काम सम्राट् अपनी निजी तौहीन समझेंगे। यह आशा की जाती है कि इस बलवती भाषा से अंग्रेजों के हिमायतियों पर कुछ असर पड़ेगा और मिस द नास् महसूस करेंगे कि उन्हें सम्राट् के खौफ का कुछ खतरा उठाना पड़ेगा।"

देशभक्तों द्वारा इस पत्र की एक प्रति मुझे दी गई, जब कि मैं १७८८ में एम्सटर्डम में था, और मैंने मि० जे को १६ मार्च १७८८ के अपने

पत्र के साथ इसकी एक प्रति भेजी।

देशभक्तों का उद्देश्य एक प्रतिनिधि एवं प्रजातन्त्रवादी शासन स्थापित करना था। स्टेट्स जनरल का बहुमत उनके साथ था, किन्तु शहरी जनता का बहुमत ऑरेन्ज के युवराज के साथ था; और अंग्रेजी राजदूत हैरिस, जो कि बाद में लॉर्ड मालमैसबरी कहलाए, ऑरेन्ज का युवराज, जो कि एक मूर्ख व्यक्ति था और उसकी पत्नी, जो कि धृष्ट और निडर थी और लोगों को अपने अधीन रखना चाहती थी—इन तीनों लोगों के शासन ने जनता के इस भाग पर खूब असर जमा रखा था। इन लोगों द्वारा देश की जनता को स्टेट्स जनरल के सदस्यों के खिलाफ भड़काया जाता था; उपसदस्यों का सड़कों पर अपमान किया जाता था और उनके लिए मार-पीट का खतरा बना रहता था; उनको अपने घरों में भी शान्ति के साथ नहीं रहने दिया जाता था; और युवराज, जिसका कर्तव्य इन अपराधों को न होने देना और इनके लिए दण्ड देना था, वह इस बारे में कुछ न करता था। अतः स्टेट्स जनरल को निजी बचाव के लिए अपनी नागरिक सेना को एक समिति के नेतृत्व में रखना पड़ा। युवराज ने लन्दन और बर्लिन के दरबारों को अपने विशेषाधिकारों के अपहरण की शिकायतों से भर दिया, और यह भूलकर कि वह केवल प्रजातन्त्र का प्रधान सेवक है, उसने उट्रेच्ट नगर में अपनी फौजों को दाखिल कर दिया, जहाँ कि स्टेट्स जनरल का अधिवेशन हो रहा था। नागरिक सेना ने उसकी फौजों को खदेड़ दिया। 'अब उसने अपने देश के विरुद्ध जनता के शत्रु का पद लिया। अतः राज्यों ने सम्पूर्ण प्रभुत्व के अपने अधिकारों का प्रयोग करके उसे सब अधिकारों से वंचित कर दिया। फ्रेडरिक महान् की मृत्यु अगस्त '८६ में हो चुकी थी। उन्होंने ऑरेन्ज के युवराज का पक्ष लेकर फ्रांस से सम्बन्ध-विच्छेद करना कभी न चाहा था।" अपनी बीमारी के दौरान में जिसके कारण उनकी मृत्यु हुई, उन्होंने ब्रन्सविक के ड्यूक द्वारा मारकिस लाफेयट को, जो कि उन दिनों बर्लिन में थे, कहलवाया कि हॉलैण्ड में अंग्रेजी हितों का वह कभी समर्थन नहीं करना चाहते। उन्होंने यह भी कहलवाया कि वह फ्रांस की सरकार को

यह आश्वासन दिया दें कि उनकी केवल यही इच्छा है कि स्टाटहोलडर और उनके बच्चों के लिए संविधान में एक सम्मानित स्थान सुरक्षित रखा जाय और जब तक कि स्टाटहोलडर के पद के सम्पूर्ण उन्मूलन का प्रयत्न न किया जायगा, वे झगड़े में हिस्सा न लेंगे। लेकिन अब उनका स्थान उनके भांजे फ्रेडरिक विलियम ने ले लिया था, जिसमें बुद्धि कम और द्वेष-भाव अधिक था, और जिसे औचित्य-अनौचित्य का तनिक ज्ञान न था; और उसकी बहन ने जनता को उभारने के लिए एम्सटर्डम जाने की कोशिश की यद्यपि उसका पति देश के वैधानिक अधिकारियों के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। एक सैनिक श्रृङ्ग से आगे जाने की अनुमति न पाकर उसने ब्रन्सविक के ड्यूक के नेतृत्व में बीस हजार सैनिकों द्वारा हॉलैंड पर हमला करने का प्रदर्शन किया। इसलिए फ्रांस के सम्राट् ने हॉलैण्ड-स्थित अपने राजदूत द्वारा घोषणा करवा दी कि यदि प्रशा की फौजें हॉलैण्ड पर हमला करने की धमकी देती रहेंगी तो उन्हें उस प्रान्त की रक्षार्थ सहायता देनी होगी। इसके प्रत्युत्तर में ईडन ने काउण्ट मोण्टमोरेन को अधिकृत सूचना दी कि फ्रांस और इंगलैंड के बीच हुई सन्धि, जिसके द्वारा जल-सेना-सम्बन्धी तैयारियों की सूचना देनी थी, समाप्त होती है और अब इंगलैंड सामान्यतः शस्त्र आदि की तैयारी कर रहा है। अब युद्ध निकट प्रतीत होता था, और इसलिए ईडन ने, जो कि बाद में लॉर्ड ऑकलैंड कहलाए, युद्ध होने पर फ्रांस के साथ हमारी सन्धि पर क्या प्रभाव पड़ेगा तथा इस दिशा में हमारा क्या झुकाव होगा, यह जानना चाहा। मैंने निःसंकोच साफ-साफ कह दिया कि हम तटस्थ रहना चाहेंगे, और कि मेरे खयाल में दोनों देशों को इसी से लाभ होगा, क्योंकि इससे दोनों देशों की वेस्ट इंडीज आइलैंड को खिलाने-पिलाने की चिन्ता दूर हो जायगी; कि हमारे तटस्थ रहने से इंगलैंड भी हमारे महाद्वीप पर बड़े युद्ध से बच जायगा, अन्यथा अन्य स्थानों में उसके युद्ध-कार्य को क्षति पहुँचेगी; कि वास्तव में हमारी सन्धि द्वारा हमें अपने बन्दरगाहों में फ्रांस के सशस्त्र जहाजों और उसके द्वारा जीते हुए माल को वहाँ रखना पड़ेगा जब कि ... ते हुए

उसके माल को वहाँ रखने से इन्कार करना पड़ेगा : कि सन्धि में एक शर्त ऐसी भी है कि जिसके अनुसार हमें फ्रांस के अमेरिकन प्रदेशों की रक्षा का आश्वासन देना पड़ा है, और यदि इन पर आक्रमण हुआ तो हमें बाध्य होकर युद्ध में आना पड़ेगा। "तो युद्ध ही होगा", उन्होंने कहा, "क्योंकि इन पर निश्चय ही आक्रमण किया जायगा।" लगभग इसी समय मेड्रिड में लिग्डन ने ऐसी ही पूछ-ताछ कारमाइकेल से की। इसके बाद ही फ्रांसीसी सरकार ने गिवट में एक निरूपण केन्द्र खोलने का निश्चय किया, साथ ही अपनी जल-सेना को सशस्त्र बनाया और बेली द सफिन समुद्र पर अपना प्रधान सेनानायक नियुक्त किया। उसने गोपनीय रूप रूस, ऑस्ट्रिया और स्पेन के साथ एक चतुर्मुखी सन्धि की वार्ता आरम्भ की मन्तविक के ड्यूक ने हानैवर की सीमाओं तक पहुँचकर अपने अफसरों को गिवट जाकर वहाँ के हाल-चाल का पता लगाने को कहा। बाद में उन्होंने बताया कि "अगर उस जगह सिर्फ थोड़े से ही तम्बू होते तो वह आगे न बढ़ते, क्योंकि सम्राट् केवल अपनी बहन का पक्ष लेकर फ्रांस से युद्ध न करना चाहते।" किन्तु वहाँ कोई फौज न पाकर, निडरता के साथ उन्होंने उस देश में अपनी फौजों को दाखिल कराया और वहाँ के शहरों पर जितनी जल्दी हो सका, कब्जा करके उट्रेश्ट पर धावा बोल दिया। राज्यों ने राइनग्रेव के साम को अपना सेनापति नियुक्त किया, जिसमें न योग्यता थी न साहस और न उसका कोई सिद्धान्त ही था। उट्रेश्ट में वह काफी देर तक मुकाबला कर सकता था लेकिन एक भी मोर्चा बनाए बिना उसने उस जगह का आत्म-समर्पण कर दिया, और खुद सचमुच भाग खड़ा होकर कहीं ऐसा जा छिपा कि कई महीनों तक पता न चला कि उसका क्या हुआ। इसके बाद एम्सटर्डम पर हमला हुआ और उसने भी आत्म-समर्पण कर दिया। इस बीच चतुर्मुखी सन्धि वार्ता सफलतापूर्वक हो रही थी, किन्तु जिस गोपनीयता के साथ यह वार्ता हो रही थी उसका पता सेन्ट पीटर्सबर्ग स्थित इंग्लैंड के राजदूत, हैरिस ने लगा लिया और उसने तुरन्त ही अपनी सरकार को यह सूचना दी और खतरे को स्पष्ट बता दिया। सम्राट् ने फ्रांस, ऑस्ट्रिया और रूस के

बीच दबे होने की अपनी स्थिति का तुरन्त ही अनुमान लगा लिया। घबराहट के साथ उसने इंग्लैण्ड से प्रार्थना की कि वह उसका साथ न छोड़े और एलवेन्स लेविन को समझाने-बुझाने के लिए पेरिस भेजा; और इंग्लैंड ने डोरसेट के ड्यूक तथा ईडन द्वारा समझौता करने की बातचीत फिर शुरू की। आर्च विशपने, जो कि युद्ध के विचार से काँपते थे, अपने अधिकार के लिए हथियार उठाने के बजाय शान्तिपूर्वक आत्म-समर्पण कर देना बेहतर समझा। उन्होंने इन लोगों का मुक्त हृदय से स्वागत किया और मित्र भाव के साथ सम्मेलन करके एक घोषणा और प्रतिरोधी-घोषणा वरसाई में बनाई गई जिन्हें अनुमोदन के लिए लन्दन भेजा गया। लन्दन में स्वीकृति पाकर इन्हें २७ तारीख को एक बजे पेरिस पहुँचाया गया, और उसी रात वरसाई में इन पर हस्ताक्षर हो गए। पेरिस में कहा जाता था और विश्वास किया जाता था कि मोण्टमोरें देशभक्तों की सुरक्षा का आश्वासन देने के बाद इस प्रतिरोध घोषणा पर हस्ताक्षर करने पर बाध्य होकर देश-भक्तों का बलिदान करके अत्यन्त दुखी हुआ। आरेञ्ज के युवराज को पुनः सब अधिकार प्रदान किये गए और वह फिर सर्वेसर्वा बन बैठा। देश-भक्त देश छोड़कर जाने लगे; उन सबके पदाधिकार छीन लिये गए, बहुत सों को देश-निकाला दिया गया और उनकी जायदाद जब्त कर ली गई। कुछ समय तक वह लोग फ्रांस में उसकी उदारता के कारण अपना जीवन-निर्वाह करते रहे। इस प्रकार हालैण्ड का अपने प्रधान में विश्वास-घात के कारण सम्मानित स्वतन्त्रता से पतन हुआ और वे इंगलैण्ड का एक प्रान्त बन गया; और इसी तरह स्टाटहोल्डर, जो कि एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र का प्रथम नागरिक था, एक विदेशी स्वामी का दास वाइसराय बन गया। और यह सारा काम सिर्फ जोर-जबरदस्ती प्रदर्शन से ही हो गया; फ्रांस इंग्लैंड या प्रशा में से कोई भी सचमुच आरेञ्ज के युवराज की खातिर युद्ध न लड़ना चाहता था, किन्तु फिर भी इसे एक वास्तविक और निर्णयात्मक युद्ध का रूप प्राप्त हुआ।

अमरीका में फेडरल सरकार बनाने का हमारा प्रयत्न लक्ष्य तक पहुँचने

से बहुत पहले ही असफल हो चुका था। स्वतन्त्रता-संग्राम के दिनों में जब कि बाहरी शत्रु का संकट हम पर छाया हुआ था और उनके कारनामों ने हमें सजग रहने के लिए बाध्य कर रखा था, जनता की भावनाएँ इस खतरे के कारण उत्तेजित होकर कान्फेडरेशन का पूरक बन चुकी थीं, और इन कारनामों ने जनता को उत्कट उद्यम के लिए उकसाया चाहे कॉन्फेडरेशन ने इस बात की माँग की हो या न हो; किन्तु जब शान्ति और सुरक्षा पुनः स्थापित हो गई, और हरेक व्यक्ति उपयोगी एवं लाभदायक धन्धों में लग गया तो कांग्रेस की माँगों की ओर कम ध्यान दिया जाने लगा। कॉनफेडरेशन का असली दोष यह था कि कांग्रेस को जनता की ओर से और निजी अधिकारियों द्वारा तुरन्त कार्रवाई करने का अधिकार प्राप्त न था। उन्हें केवल अधिग्रहण का अधिकार प्राप्त था और जिसे कार्यान्वित करने के लिए वे केवल कर्तव्य-पालन के नैतिक सिद्धान्त के आधार पर विभिन्न विधान-सभाओं को आदेश दे सकते थे। इसके अनुसार वास्तव में कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित हरेक कार्रवाई के निराकरण का अधिकार हरेक विधान-सभा को प्राप्त था; और इस अधिकार का इतना अधिक प्रयोग किया जाता था कि फेडरल सरकार की कार्रवाइयाँ ठण्डी पड़ जाती थीं, और विशेषतः आर्थिक तथा वैदेशिक मामलों में उनके उद्देश्य पूरे न हो पाते थे। पृथक् विधानपालिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका की माँग को व्यवहार में लाने से नुकसान ही होता था। लेकिन इस स्थिति ने हमारे कॉनफेडरेशन के भविष्य को सुखद बनाने का अवसर प्रदान किया, क्योंकि जब जनता की सद्बुद्धि और सद्विचार ने हमारे प्रथम निकाय की अक्षमता को देखा तो बलवे और गृहयुद्ध द्वारा उसे सुधारने की बजाय उन्होंने सर्वसम्मति के साथ एक जनरल कन्वेन्शन के लिए प्रतिनिधियों को चुनना तय किया जिन्हें शान्तिपूर्वक मिलकर एक ऐसे संविधान को बनाना था जिससे "शान्ति, न्याय, स्वतन्त्रता, लोक-रक्षा तथा लोक-कल्याण का आश्वासन" प्राप्त हो सके।

इस कन्वेन्शन का अधिवेशन फिलाडेलफिया में २५ मई, ८७ को

हुआ। बन्द दरवाजों के भीतर इसकी बैठक हुई और ११ सितम्बर को इसके अन्त होने तक इसकी कार्रवाइयों को गुप्त रखा गया, और बाद में इसके परिश्रम का फल एक साथ प्रकाशित किया गया। मुझे नवम्बर के आरम्भ में इसकी एक प्रति मिली जिसे पढ़कर और जिसके उपबन्धों पर विचार करके मुझे बहुत सन्तोष हुआ। कन्वेन्शन के न किसी एक सदस्य ने और न शायद राष्ट्र-संघ के किसी भी एक नागरिक ने इसके सब भागों का अनुमोदन किया होगा, और इसलिए मुझे भी कुछ अनुच्छेद आपत्तिजनक लगे। हेबियस कॉर्पस की अनवरत सुरक्षा के अन्तर्गत धर्म, समाचार-पत्र और व्यक्ति की स्वतन्त्रता के आश्वासन की स्पष्ट घोषणा की अनुपस्थिति और नागरिक एवं अपराधिक मुकदमों में जूरी द्वारा फैसले की बात ने मुझे विद्रोहिन बना दिया, और जीवन-पर्यन्त प्रेसीडेण्ट की पुनः पात्रता के मैं खिलाफ था। मैंने अपने मित्रों को, खास तौर पर मि० मैडिसन और जनरल वाशिंगटन को, पत्रों द्वारा अपने अनुमोदनों और आपत्तियों का परिचय दिया। अच्छे काम किस तरह किये जाते और बुरे को अच्छा कैसे बनाया जाय, यही एक मुश्किल थी; इस काम के लिए एक नए कन्वेन्शन को बुलाना सारे किये-कराये को खतरे में डाल देना होता। मेरा पहला खयाल था कि पहले नौ राज्यों को इसे बगैर शर्तों के मंजूर कर लेना चाहिए, और इस प्रकार इसकी अच्छाइयों को हासिल कर लेना चाहिए, और पिछले चार राज्यों को इसे पहली शर्त पर मंजूर करना चाहिए कि कुछ संशोधनों को स्वीकृत किया जायगा; लेकिन एक बेहतर तरीका निकाला गया कि इसे सम्पूर्णतया स्वीकार कर लिया जाय और बाद में आवश्यक परिवर्तन का काम जनता की सद्बुद्धि पर छोड़ा जाय। अतः सबने इसे स्वीकार किया, छः राज्यों ने बिना किसी आपत्ति और सात राज्यों ने कुछ विशेष संशोधनों की सिफारिश के साथ। समाचार-पत्रों, धर्म, जूरी आदि महत्त्वपूर्ण विषय के संशोधन पेश किये गए, पर हेबियस कॉर्पस सम्बन्धी प्रश्न कांग्रेस के निर्णय पर छोड़ दिया गया और प्रेसीडेण्ट की पुनः पात्रता के विरोध में संशोधन पेश ही नहीं किया गया। इस बारे में इस पद की महत्ता और

यदि यह जीवन-पर्यन्त रखा गया तो इसके द्वारा घोर संघर्ष की सम्भावना, और अमरीकन प्रेसीडेण्ट के चुनाव में विदेशी राज्यों की दिलचस्पी होने पर उनके द्वारा धन अथवा शस्त्र आदि से हस्तक्षेप किये जाने का मुझे भय था। इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी न थी—रोमन सम्राटों; पोप, जब तक कि उनकी महत्ता रही; जर्मन सम्राटों; और पोलैण्ड के राजाओं तथा बारबरी के डेश्रों के उदाहरण मौजूद थे। मैंने सामन्तशाही के इतिहास में भी देखा था, और हाल में हॉलैण्ड के स्टाटहोल्डर का उदाहरण मौजूद था कि कैसे जीवन-पर्यन्त पदाधिपियों के उत्तराधिकार का क्रम चलता रहता है। अतः मेरा प्रस्ताव था कि प्रेसीडेण्ट को सात वर्षों तक के लिए निर्वाचित किया जाना चाहिए और बाद में उसे अपात्र बना देना चाहिए। मेरा खयाल था कि इस अवधि में विधान सभा का समर्थन प्राप्त करके वह लोक-कल्याण के लिए किसी भी प्रकार की सुधार-व्यवस्था स्थापित कर सकता है। किन्तु यह सिद्धान्त, जिसे व्यवहार में लाया गया है, ज्यादा अच्छा है कि उसे आठ वर्षों के लिए चुना जाय, और यदि उसका कार्य संतोषप्रद न हो तो उसे चार वर्षों बाद ही हटाया जा सकता है। सात वर्ष की अवधि रखने का शुरू में कन्वेन्शन का मत था, जब कि दो के विरुद्ध आठ के बहुमत से इसे स्वीकृत किया गया था, और उसकी पुनः पात्रता के विरुद्ध तो साधारण बहुमत था ही। २६ जुलाई को आकर विधान सभा द्वारा यह विचार स्वीकृत हुआ, इसे एक समिति के सम्मुख पेश किया गया; जिसके पक्ष में समिति ने रिपोर्ट दी, और फिर अधिवेशन समाप्त होने के एक दिन पहले अन्तिम वोट द्वारा इसके वर्तमान रूप को स्वीकृत किया गया। इस परिवर्तन का तीन राज्यों ने विरोध किया; न्यूयॉर्क ने यह संशोधन पेश करके कि प्रेसीडेण्ट की तीसरी अवधि के लिए पात्रता न होनी चाहिए, और वर्जिनिया तथा उत्तरी कैरोलाईना ने यह संशोधन रखकर कि किसी भी तरह आठ वर्ष से अधिक अवधि नहीं होनी चाहिए, और यद्यपि यह संशोधन विधिवत् पेश नहीं किया गया था फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि अभ्यास ने इसे स्थापित कर दिया है। चार प्रेसीडेण्टों द्वारा आठ वर्ष की अपनी

अवधि के पश्चात् स्वतः कार्य-भार से निवृत्त हो जाने के उदाहरण ने इस सिद्धान्त को इतना प्रचलित बना दिया है कि यदि तीसरे चुनाव के लिए प्रेसीडेण्ट खड़ा होना चाहे तो, मेरे ख्याल में, इस श्राकांक्षापूर्ण प्रवृत्ति के प्रदर्शन के कारण उसे अस्वीकार कर दिया जायगा।

किन्तु एक अन्य संशोधन और था जिसके बारे में उस समय हम लोगों ने न सोचा था किन्तु जिसे छोड़ देने से वह बीज पैदा हो जाता जो कि सरकार की राष्ट्रीय शक्तियों के सुखद सम्मिश्रण को नष्ट कर देता, और राज्यों की स्वतंत्र शक्तियों तथा सामूहिक हितों को क्षति पहुँचाता। इगलैण्ड में क्रान्ति द्वारा यह महान् लाभ हुआ था कि न्यायाधीशों की श्रायुक्ति, जो अभी तक स्वेच्छा पर निर्भर करती थी, अब सदाचरण पर निर्भर की जाने लगी। सम्राट् की स्वेच्छा पर निर्भर न्यायपालिका उस महतक के हाथों उत्पीड़न का एक महान् अस्त्र बन चुकी थी। अतः सदाचरण तक पदावधि कायम रखने से अधिक हितकर और कुछ न हो सकता था। सदाचरण का प्रश्न संसद् की दोनों सभाओं के साधारण बहुमत से स्वीकृत हुआ। क्रान्ति से पहले हम सब भले अँग्रेज़ी विग थे, जो स्वतंत्र सिद्धान्तों के पक्षपाती थे, और अपने महतक कार्यपालक से विद्वेष बनाये रखते थे। यह विद्वेष-भाव हमारे सारे राज्यों के विधान में प्रत्यक्ष है; लेकिन एक न्यायाधीश को हटाने के लिए संसद् की किसी एक सभा में दो-तिहाई वोटों के बहुमत को अनिवार्य बनाकर इस मामले में हमारी सरकार अंग्रेज़ों की सावधानी से आगे बढ़ गई। साधारण पूर्वग्रह और उत्तेजना वाले लोगों के सामने प्रतिरक्षा होने पर[1] यह वोट पाना इतना असम्भव है कि हमारे न्यायाधीश राष्ट्र से सर्वथा स्वतन्त्र रहते हैं। लेकिन होना ऐसा नहीं चाहिए। मैं यह नहीं

---

१. न्यू हैम्पशायर के न्यायाधीश पिकरिंग के मुकदमे में, जो कि सनकी और अभ्यस्त पियक्कड़ था, कोई प्रतिरक्षा नहीं की गई थी नहीं तो सिनेट के एक-तिहाई पार्टी-वोटों द्वारा उसे छुड़ाया जा सकता था। —(जेफरसन द्वारा दिया हुआ फुटनोट)

चाहता कि वे कार्यपालक शक्ति के अधीन हों, जैसे कि पहले वे इंगलैण्ड में थे; किन्तु मैं इस शासन के संचालन के लिए अनिवार्य समझता हूँ कि उन पर किसी प्रकार का व्यावहारिक एवं अपक्षपाती प्रतिबन्ध होना चाहिए; और यह प्रतिबन्ध राज्यों के अधिकारियों और फेडरल अधिकारियों द्वारा बनना चाहिए। सिर्फ यही काफी नहीं है कि ईमानदार लोगों को न्यायाधीश नियुक्त किया जाय। यह सब जानते हैं कि किसी प्रकार का हित मनुष्य के मस्तिष्क को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है, और अनजाने ही उसके निर्णय में यह हित समा जाता है। इस पक्षपात के साथ अपने दल के प्रति स्वामि-भक्ति वाली भावना तथा वह अजीब सिद्धान्त जोड़ दीजिए जिसके अनुसार 'न्यायाधीश का कार्य अपने क्षेत्राधिकार को विस्तृत बनाना है', और फिर साथ में उत्तरदायित्व की अनुपस्थिति में हम कैसे उस सरकार में पक्षपात-रहित निर्णय की आशा कर सकते हैं जिसका स्वयं न्यायाधीश एक प्रमुख अंग है और एक व्यक्तिगत राज्य से जिन्हें भय या आशा का कोई कारण नहीं ! सही उदाहरण के विपरीत हमने देखा है कि यह लोग अपने सम्मुख उपस्थित प्रश्न से आगे बढ़ जाते हैं और लंगर डालकर अपने अधिकारों के भावी विस्तार के लिए प्रयत्न करते हैं। अतः वे लोग युद्ध के उन सैनिकों की भाँति सुरंग बिछाकर राज्यों के स्वतन्त्र अधिकारों को क्षीण करते हैं और उस सरकार के हाथों में सारी शक्ति सौंप देते हैं जिसमें खुद उनका इतना बड़ा हिस्सा है। किन्तु अधिकारों के एकत्रित करने अथवा उनके केन्द्रीकरण से नहीं बल्कि उनके विभाजन से सुशासन बनता है। यदि यह महान् देश राज्यों में विभाजित नहीं होता तो विभाजित करना चाहिए या ताकि हरेक को अपने से सम्बन्धित कार्यों का प्रबन्ध करने का स्वयं अधिकार होना चाहिए, और जो कि वह एक सुदूरस्थित शक्ति से कहीं अच्छी तरह कर सकता है। हरेक राज्य कई प्रान्तों में बटा हुआ है, ताकि हरेक प्रान्त अपनी स्थानीय सीमाओं के अन्दर देख-भाल कर सके; और हरेक प्रान्त कई छोटे-छोटे शहरों और वार्डों में बँटा हुआ है ताकि सूक्ष्मतर विषयों का प्रबन्ध किया जा सके; और हरेक वार्ड फार्मों में बँटा हुआ है, जिनका प्रबन्ध व्यक्ति-

गत मालिकों द्वारा होता है। अगर हमें वाशिंगटन से यह हुक्म मिलने लगे कि कब फसल बोनी चाहिए और कब काटनी चाहिए तो थोड़े दिनों में ही हमें रोटी की कमी पड़ जायगी। इस प्रकार सामान्य से विशेष तक ग्रामों के विभाजन से ही लोक-कल्याण और समृद्धि के लिए मानव-व्यापार का सर्वोत्तम प्रबन्ध होता है। मैं फिर कहता हूँ कि मैं न्यायाधीशों पर जान-बूझकर गलती करने का दोष नहीं लगाता; लेकिन जहाँ ईमानदारी से की हुई गलती को सहन करने से सार्वजनीन विनाश होता है, वहाँ उस गलती को रोकना जरूरी है। जैसे कि समाज की हिफाजत के लिए हम ईमानदार पागलों को पागलखाने भेज देते हैं, उसी प्रकार उन न्यायाधीशों को उनके पदों से हटा लेना चाहिए, जिनके त्रुटिपूर्ण पक्षपात से हमारा नाश हो रहा है। ऐसा करने से उनकी प्रतिष्ठा या आर्थिक स्थिति को धक्का पहुँच सकता है, किन्तु हमारा प्रजातन्त्र बच जाता है, जो कि हमारे लिए प्रथम और सर्वोच्च कानून है।

कॉनफेडरेशन की सरकार की दुर्बलताओं में सबसे बड़ी और सबसे दुःखदायी दुर्बलता थी—ऋण चुकाने या यहाँ तक कि सरकार के साधारण व्ययों के लिए राज्यों से रुपया प्राप्त करने की नितान्त असम्भवता। कुछ राज्यों ने थोड़ा-बहुत रुपया दिया, कुछ ने उनसे कम, और कुछ ने बिलकुल नहीं; और जिन राज्यों ने बिलकुल रुपया नहीं दिया उन्होंने रुपया न दे सकने के लिए सबसे पहले एक लम्बा-चौड़ा बयान पेश किया। हेग में रहते हुए मि॰ एडम्स को अधिकार था कि वह साधारण और आवश्यक व्ययों के लिए जितना जरूरी हो उधार ले सकते थे। इसी तरीके से सार्वजनिक ऋण का ब्याज चुकाया गया और योरोप में दूतावासों का खर्च चलाया गया। अब वह संयुक्त राज्य अमरीका के उप-प्रधान चुने गए थे, और शीघ्र ही अमरीका लौटने वाले थे। उन्होंने मुझे भावी सलाह-मशविरे के लिए उन लोगों को बताया जिनसे वह रुपया उधार लेते रहते थे। लेकिन न मुझे अधिकार था, न आदेश; और न मैं इन तरीकों और इस विषय से परिचित ही था। इस विषय का खास तौर पर केवल वही प्रबन्ध करते थे, हालाँकि

सेनलिस, रॉय, पॉएट द, मैक्सवेन्स, बॉय द डूक, गोर्न, पेरोन, कैम्ब्रे, वोचेन, बेलेनसीन, मॉन्स, ब्रूसेल, मोलीनिस, एएटवर्प, मॉर्डिक और रॉटर्डम होता हुआ हेग पहुँचा, जहाँ कि मुझे मि० एडम्स से मिलकर खुशी हुई। उन्होंने भी फौरन यही राय जाहिर की कि हमें कुछ-न-कुछ करना चाहिए, जो कि हमें संयुक्त राज्य अमरीका की साख बचाने के लिए आदेश प्राप्त किये बिना ही करना होगा। हम जानते थे कि नई सरकार द्वारा अपनी वित्त-व्यवस्था को स्थापित एवं संगठित करने में, कोष में रुपया जमा करने और उसे यूरोप भेजने में काफी समय व्यतीत हो जायगा; अतः सन् '८८, '८६ और '६० के लिए तुरन्त प्रबन्ध करना था ताकि इस मुश्किल वक्त में हमारी सरकार मुसीबत में न पड़े, और हमारी साख बनी रहे। अतः हम लेडेन होते हुए १० तारीख को एम्सटर्डम पहुँचे। मैंने निम्न लिखित बातों को दिखाते हुए एक हिसाब बनाया था :

		फ्लोरिन
'८८ के लिए आवश्यक	... ...	५,३१,६३७–१०
'८६ ,, ,,	... ...	५,३८,५४०.
'६० ,, ,,	... ...	४,७३,५४०.
कुल	... ...	१५,४४,०१७–१०

	फ्लोरिन
इस आवश्यकता-पूर्ति के लिए बैंकरों के पास थे :	७६,२६८–२–८
और बिना बिके बौंड से प्राप्त होते ...	५,४२,८००
	६,२२,०६८–२–८
बाकी घाटा बचता	६,२१,६४६–७–४
अतः १० लाख कर्ज लेना चाहा जिससे मिलते...	६,२०,०००
और फिर थोड़ा-सा घाटा होता बराबर	१६४६–७–४

तदनुसार मि० एडम्स ने एक-एक हजार फ्लोरिन के १००० बौंड लिखे

इस समझौते का अब भी ऐसा रूप न था जो मेरी इच्छा के अनुकूल था लेकिन *खुशमिज़ाजी और दोस्ती के साथ जितना ज्यादा-से-ज्यादा हासिल* किया जा सकता था, किया गया।

हॉलैण्ड से लौटने के बाद मैंने पेरिस को उसी उत्तेजित अवस्था में पाया जैसा कि मैंने उसे छोड़ा था। यदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सभा के उपरान्त आर्चबिशप सब प्रस्तावित कार्रवाइयों को तुरन्त ही कार्यान्वित कर देते तो आशा थी कि संसद द्वारा वे सब-के-सब निबद्ध हो जाते; किन्तु उन्होंने धीरे-धीरे काम किया, और एक-एक करके काफी समय बाद अपनी घोषणाएँ कीं जब तक कि प्रतिष्ठित व्यक्तियों की कार्रवाइयों का जोश ठण्डा हो चुका था, और नई माँगें पेश की जाने लगी थीं और एक ऐसे संविधान के लिए जोर दिया जाने लगा जिससे सम्राट् की स्वेच्छा से परिवर्तन न किये जा सकें। जब हम शक्ति के उस भीषण दुरुपयोग को देखते हैं जिसके द्वारा जनता को पीसा जा रहा था; जब हम करों के बोझ और उनके विभाजन की असमानता, टिथ, टेल, कोर्वी, गेबेल, कार्य और प्रतिबन्ध के उत्पीड़न; एकाधिकार द्वारा व्यापार, उद्योग पर गिल्ड और कारपोरेशन, आत्मा, विचार, वाणी और समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता के बन्धनों, और व्यक्ति पर लेटर द के बन्धनों, कैचट के नियन्त्रण, फौजदारी कानून की निर्दयता, रेक के अत्याचार, *न्यायाधीशों की भूलें,* और अमीरों के प्रति उनके पक्षपात; *सामन्तों द्वारा* सैनिक सम्मान पाने का एकाधिकार; रानी, राजकुमार और दरबार के बेहद बढ़े-चढ़े खर्च, निवृत्ति वेतनों की अतिव्ययता और धार्मिक प्रचारकों का ऐश्वर्य, विलास और उनकी अनैतिकता का पुनर्विलोकन करते हैं तो हमें इस दबाव पर आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं। ऐसे कुरीतिपूर्ण शासन और उत्पीड़न के बोझ से दबी हुई जनता के सुधार के लिए माँग करना न्यायोचित था, और हो सकता था कि अपने ऊपर बेदर्दी से चढ़े हुए सवारों को उतारकर उन्हें पैदल चलने के लिए वे बाध्य कर देते। कोर्वी और अन्न की स्वतन्त्र वितरण-सम्बन्धी घोषणाएँ पेश की गईं और संसद ने उन्हें निबद्ध किया; किन्तु प्रादेशिक आयात-कर और स्टाम्प टैक्स को

कुछ समय बाद पेश किया गया जिनको संसद् ने स्वीकार किया, और जिनके लिए स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाने का प्रस्ताव पेश किया, क्योंकि इन करों को स्वीकृति करने का इसे ही अधिकार था। संसद् की अस्वीकृति के कारण सम्राट् ने दरबार बुलाया और इन लोगों द्वाईस में निर्वासित कर दिया। अधिवक्ताओं द्वारा भाग लेने से इन्कार करने पर न्याय-प्रशासन स्थगित हो गया। पर कुछ समय तक संसद् की बैठकें होती रहीं लेकिन पेरिस से अपनी अनुपस्थिति और निर्वासन के कारण शीघ्र ही उनका मन ऊब गया और समझौता करने की इच्छा प्रगट होने लगी। अतः कई पुराने करों को भविष्य में चलाने की सहमति पाकर सम्राट् ने उनको निर्वासन से वापस बुलाया और १९ नवम्बर '८७ को एक अधिवेशन में उनसे मिलकर सन् '९२ में स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाने का आश्वासन दिया, और १७८८ से '९२ तक के वार्षिक ऋण-सम्बन्धी घोषणा को निबद्ध करने की बहुमत ने स्वीकृति दी; किन्तु ओरलियन्स के ड्यू क ने विरोध किया जिसके फलस्वरूप दूसरे लोगों को भी अपनी कही हुई बात से पीछे हटने का प्रोत्साहन मिला पर सम्राट् ने फौरन ही घोषणा निबद्ध करने का हुक्म दिया और एक साथ सभा को छोड़कर वह चले गए। उसी समय संसद् ने विरोध में आवाज उठाई कि घोषणा को निबद्ध करने के लिए वैधानिक रीति से वोट नहीं लिये गए हैं और इसलिए इन प्रस्तावित ऋणों के लिए उन्होंने अपनी स्वीकृति प्रदान नहीं की है। इन ऋणों को पारित करने के लिए वही काफी था। इसलिए सम्राट् के कूर प्लेनरी की स्थापना और अपने साम्राज्य में सब संसदों के स्थगित किये जाने की घोषणा जारी की। जैसी कि आशा थी सब संसदों और प्रान्तों द्वारा इसका विरोध किया गया, जिसके फलस्वरूप सम्राट् को उनकी बात माननी पड़ी और ५ जुलाई, '८८ की अपनी एक घोषणा द्वारा उन्होंने अपनी कूर प्लेनरी को स्थगित किया और आगामी वर्ष की पहली मई को स्टेट्स जनरल की बैठक का आश्वासन दिया। आर्चबिशप ने इन असफलताओं को अपनी योग्यता से परे मान, कार्डिनल के पद के आश्वासन को स्वीकार किया, और उसे

सितम्बर '८८ में पद-च्युत किया गया, और मा० नेकर को अर्थ-विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। इस परिवर्तन पर पेरिस की जनता की खुशी के प्रदर्शन ने नगर-सैनिकों के पदाधिकारी को उत्तेजित कर दिया, और जब उसके हुक्म से भीड़ न हटी तो उसने उन पर गोलियाँ चलवाईं जिसके कारण दो या तीन आदमी मरे और बहुत घायल हुए। थोड़ी देर के लिए भीड़ ज़रूर हट गई, लेकिन वह अगले दिन एक बड़ी संख्या में इकट्ठी हुई और इन लोगों के दस या बारह सैनिक-गृहों को जला दिया, दो-तीन सैनिकों को मार डाला और छः या आठ अपने आदमियों की जानें खो दीं। तुरन्त ही शहर में मार्शल लॉ जारी कर दिया गया और थोड़ी देर बाद ही यह उपद्रव शान्त हो गया। मन्त्रियों के इस परिवर्तन तथा स्टेट्स जनरल के शीघ्र अधिवेशन के आश्वासन ने राष्ट्र को शान्त कर दिया था। किन्तु अब दो महान् प्रश्न उपस्थित हुए। १. सामन्तों और धर्म-प्रचारकों के अनुपात में टायर्स इटेट के प्रतिनिधियों की कितनी संख्या होनी चाहिए? और २. क्या इन लोगों को एक ही अथवा अलग सभा-भवनों में बैठना चाहिए? मा० नेकर इन पेचीदा प्रश्नों से अपने-आपको बचाना चाहते थे अतः उन्होंने प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सभा को पुनः बुलाने और इस विषय पर उनका मत प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा। ६ नवम्बर '८८ को इन लोगों की बैठक हुई और एक के विरुद्ध पाँच ब्यूरो द्वारा उन्होंने १६१४ स्टेट्स जनरल के रूप की सिफारिश की; जहाँ कि भिन्न सभा-सदन होते थे और व्यक्तियों द्वारा वोट न देकर क्रम द्वारा वोट दिये जाते थे। किन्तु समूचे राष्ट्र ने इसका विरोध किया और घोषणा की कि टायर्स इटेट की संख्या सामन्तों और धर्म-प्रचारकों के बराबर ही होनी चाहिए, और संसद ने भी यही अनुपात निर्णीत किया, अतः २७ दिसम्बर '८८ की एक घोषणा द्वारा यही अनुपात माना गया। इसी तारीख को मा० नेकर द्वारा सम्राट् को भेजी हुई रिपोर्ट में कई अन्य महत्त्वपूर्ण स्वीकृतियों का उल्लेख था: १. कि सम्राट् न तो कोई नया कर लगा सकते हैं और न किसी पुराने कर को आगे चला सकते हैं। २. राज्यों की समय-समय

पर बैठक की जाने के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया था। ३. लेटर द केचेट के आवश्यक प्रतिबन्धों पर विचार-विमर्श करना और ४. यह तय करना कि किस हद तक समाचार-पत्रों को स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए। ५. राज्यों द्वारा सार्वजनिक धन के विनियोग का अधिकार स्वीकार किया गया; और ६. सार्वजनिक व्यय के लिए मन्त्रियों को उत्तरदायी ठहराया जायगा। यह स्वीकृतियाँ स्वयं के हृदय से निकली थीं, क्योंकि राष्ट्र के हित के अतिरिक्त उनकी अन्य कोई कामना न थी; और इस उद्देश्य के लिए वह नि.संकोच बड़े-से-बड़ा व्यक्तिगत बलिदान करने के लिए तैयार थे। किन्तु उनके मस्तिष्क में दुर्बलता, उनके शारीरिक गठन में भीरुता और उनके निर्णय में शून्यता थी, और यहाँ तक कि अपने कथन पर दृढ़ रहने तक की उनमें पर्याप्त क्षमता न थी। उग्र-प्रकृति की उनकी रानी, जो अपना विरोध सहन न कर पाती थी, उनके ऊपर हावी थी; और उसके साथ सम्राट् के भाई द आर्तोयस, आम दरबार और रईस मन्त्रीगण, खास तौर पर ब्रेतुल, ब्रॉगलियो, वॉग्यों, फाउलों, लूर्झन रहते थे जो कि लुई चौदहवें के जमाने के शासन-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अनुयायी थे। इन लोगों के खिलाफ नेकर, मोण्टमोरिन, सेण्ट प्रीस्ट की नेक सलाह न मानी जाती थी, हालाँकि उसे स्वयं सम्राट् का समर्थन प्राप्त था। इन लोगों की सलाह से मुबद्द किये हुए निर्णय रानी और उसके दरबार के प्रभाव से शाम को बदल दिये जाते थे। किन्तु इस गुप्त मण्डली की कपटतापूर्ण कार्रवाइयों पर भगवान् का कोप पड़ा और इनकी कार्रवाइयों से न उभर कर पर साथ-साथ ही राष्ट्र में ऐसी शक्तिशाली घटनाएँ होने लगीं जिन्होंने सारी मुश्किलें और स्वतन्त्रता के हत्यारों के विरोध का मुकाबला करते हुए शासन में सुधार करने के लिए बाध्य कर दिया। जब कि यह सरकार दस लाख लीवर रोज खर्च करती थी। जनता अपनी मामूली जरूरतों के लिए रुपये की कमी महसूस करती हुई आज़ादी के सर्वंगामी प्रकार से अन्तिम खाई में पड़ी हुई थी कि एक दिन इतनी सख्त मरी पड़ी कि इन्सान की यादगार में या इतिहास के लिखित अभिलेखों में

ऐसी मिसाल नहीं मिलती। जिस ठंडक पर पानी जम जाता है उससे भी ५० डिग्री नीचे तापमान गिर चुका था। घर के बाहर के सारे काम बन्द हो गए, और गरीब लोग मजदूरी न कर सकने के कारण रोटी और ईंधन के लिए मोहताज हो गए। सरकार को अपनी आवश्यकताओं से अधिक भार उठाना पड़ा, और सड़कों के चौराहों पर लकड़ियों के ढेर लगाकर आग जलाई गई जिसके चारों तरफ ठण्ड से बचने के लिए लोग आ-आकर बैठने लगे। हर रोज तब तक के लिए रोटी भी मुफ्त बाँटी जाने लगी जब तक कि मौसम न सुधर जाता और लोग मजदूरी कर सकते। कुछ समय तक रोटी की कमी इतनी ज्यादा हो गई कि अकाल का भय पैदा हो गया, और उसकी कीमत तो बेहद बढ़ ही चुकी थी। बड़े से लेकर छोटे नागरिकों तक को, और यहाँ तक कि जो अमीर कीमत अदा कर देते थे, उनको भी प्रति व्यक्ति के हिसाब से बहुत कम रोटी दी जाती थी। बड़े-बड़े घरों से जब दावत का निमन्त्रण आता तो अतिथियों को अपने साथी और अपनी-अपनी रोटी लाने के लिए भी कहा जाता। जनता के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए, हर सम्पन्न व्यक्ति से साप्ताहिक चन्दा लिया जाता था, जिसे क्यूरेज इकट्ठा करते और गरीबों को खिलाने के काम में लगाते थे। ऐसा भोजन ढूँढ निकालने की दौड़ में लोगों की आपस में होड़ लगी हुई थी कि जिससे कम से-कम खर्च में ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को खिलाया जा सके। रोटी की इस कमी की पहले से ही आशंका थी, और मा० मोण्टमोरिन ने अमेरिका में यह समाचार भेजने के लिए मुझसे कह रखा था और यह भी बता रखा था कि संयुक्त राज्य अमेरिका से आई हुई रोटी को बाजार-दर से कुछ ऊँची कीमत पर खरीदा जायगा। तदनुसार अमेरिका सूचना भेजी गई और वहाँ से बहुत बड़ी तादाद में रसद आ पहुँची। बाद की सूचनाओं द्वारा अमेरिका से मार्च, अप्रैल और मई के महीनों में फ्रांस के एटलाटिक सागर के बन्दरगाहों पर आटे के इक्कीस हजार पीपे पहुँचे, जिसके अलावा अन्य बन्दरगाहों और अन्य महीनों में भी बहुत-सा सामान आया, साथ ही फ्रांस के वेस्ट इंडियन

हीनों पर भी हमारी एगः ने इन्हें राहत पहुँचाई। अनाज की यह कमी
जुलाई तक बनी रही।

अभी तक राजनीतिक सुधार के संघर्ष में हिंसा उत्पन्न नहीं हुई थी। राज
के विभिन्न भागों में कहीं-कहीं मामूली बातों पर छोटे-मोटे दंगे हुए थे जिन
शायद बारह या बीस आदमी मारे गए थे; लेकिन अप्रैल के महीने में पेरि
में एक बड़ा दंगा हुआ, जो कि यद्यपि क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से सम्बन्ध
रखते हुए भी सामयिक इतिहास का अंग था। शहर के फौबोर्ग सेंट एन्टो
इलाके में दिन में मोटरी करने वाले मजदूरों और सब तरह की चीजें बेच
वाले छोटे सौदागर ही रहते हैं। इन लोगों में यह अफवाह फैल गई
कागज की एक बड़ी मिल के रेवेलिअन नामक मालिक ने किसी मौके
यह प्रस्ताव रखा था कि मजदूरों का वेतन घटाकर १५ सू प्रति दिन कर दि
जाय। ये लोग एक-दम गुस्से से आग-बबूला हो गए और यह पता लग
बिना ही कि यह बात कहाँ तक सच है वे एक बड़ी तादाद में उसके मक
और कारखानों पर टूट पड़े, और हर चीज को तहस-नहस कर दि
हालाँकि उन्होंने अपने लिए रत्ती-भर चीज भी न उठाई। जब वे बर्बादी
में लगे हुए थे, तो फौज को बुलाया गया। समझाने-बुझाने की उन्होंने पर
न की इसलिए उन पर गोलियाँ चलाई गईं और उनके तितर-बितर होने
पहले उनके करीब सौ आदमी मारे गए। हर साल राज्य के किसी-न-कि
भाग में ऐसे दंगे होने लगे, जो कि क्रान्तिकालीन अवश्य थे किन्तु क्रान्ति
कारण नहीं हुए थे।

५ मई, ८६ को स्टेट्स जनरल का अधिवेशन आरम्भ हुआ, जि
सम्राट् गार्द द स्वयू, लैगॉंदूगमन और मा० नेकर के भाषण हुए। मा
किया गया कि मा० नेकर ने आशा के विपरीत संवैधानिक सुधारों के
में पूरी बात नहीं कही। इस भाषण में उनका इतनी अच्छी तरह उल
न किया गया था जितना कि उनकी पहली 'रेपर्ट अ रोई' में था।
उनको ही नुकसान था, लेकिन उनके अपने सलाहकारों, मन्त्रियों और द
दल के बीच उनका अधिक खयाल रखा जाना चाहिए था। अपने वि

को व्यक्त न कर पाने और अपने विरोधियों के विचारों को व्यक्त करने और यहाँ तक कि उनके भेदों को छिपाये रखने के लिए बाध्य होने के कारण वह अपना असली रूप प्रकट न कर सके।

असेम्बली में यद्यपि सदस्यों की संख्या लगभग बराबर रखी गई थी किन्तु उनकी बनावट आशा के विरुद्ध थी। आशा थी कि उन्नत शिक्षा के कारण सामंतों का एक सम्मानित भाग लोक-सभा के सदस्यों का साथ देगा। पेरिस और उसके आसपास के इलाके तथा अन्य बड़े शहरों के कुछ सामंतों ने ऐसा किया था, क्योंकि ज्ञान-प्राप्त समाज के सम्पर्क से उनमें उदारता आ गई थी और वे वर्तमान स्थिति के अनुकूल उन्नत हो चुके थे। किन्तु देहातों के सामन्त बहुत पिछड़े हुए थे जिनका उस निकाय में दो-तिहाई भाग था। हमेशा अपनी पैतृक सम्पत्ति-सम्बन्धी झगड़ों में फँसे रहने तथा सामन्तशाही अधिकारों और व्यवहारों से दैनिक अभ्यास द्वारा परिचित होने के कारण वे यह न जान पाए थे कि तर्क और न्याय की दृष्टि से वे कितने असंगत हैं। वे समान करों को स्वीकार करने के लिए राजी थे, लेकिन टायर्स इटेट के साथ बैठकर वे अपने पदों और विशेषाधिकारों को नीचा नहीं करना चाहते थे। दूसरी तरफ धर्म-प्रचारकों का यह विश्वास था कि चुनाव में अपने धन और अपनी जान-पहचान के कारण ऊँचे स्तर के धर्म-प्रचारक ही चुने जायँगे; किन्तु वास्तव में, अधिकांशतः छोटे धर्म-प्रचारकों को लोकप्रिय बहुमत प्राप्त हुआ था। इनमें किसानों के लड़के थे जो कि दस, बीस या तीस लुई प्रति वर्ष पर पुरोहित का कार्य करते थे; जब कि उनके उच्चाधिकारी अपने विलास और वैभव के महलों में राजसी ठाट-बाट से रुपया खर्च करते थे।

चूँकि जिस उद्देश्य से इस निकाय को बुलाया गया था वह प्रथम श्रेणी का महत्त्व रखता था, इसलिए मैंने इसके विभिन्न दलों के विचारों, विशेषतः शासन-संगठन-सम्बन्धी इनके विचारों को जानना जरूरी समझा। अतः मैं प्रतिदिन पेरिस से वरसाई जाकर इनकी बहसों को तब तक सुनता था जब तक कि वे स्थगित न हो जाती थीं। सामन्तों के बोर्डों में और दूसरों में भाषण होते थे। दोनों पक्षों में कुछ सुयोग्य और उतने ही उत्साही

व्यक्ति थे। लोक-सभा की बहसें उद्वेग-रहित, तर्क-संगत तथा दृढ़ होती थीं। अन्य कार्यों को आरम्भ करने से पहले फिर वही सवाल पैदा हुए, कि क्या राज्यों को एक ही अथवा अलग-अलग सदन में बैठना चाहिएँ ? और क्या उन्हें प्रति व्यक्ति अथवा सदन के अनुसार वोट देने चाहिएँ ? विशेष पद में धर्म-प्रचारकों का एपिसकोपल भाग तथा सामन्तों का दो-तिहाई भाग था, जब कि टायर्स इस्टेट के सब सदस्य पूरी तरह और दृढ़तापूर्वक एकमत थे। समझौते के जब सब प्रयत्न असफल हुए तो लोक-सभा के सदस्यों ने गुत्थी सुलझाने का भार उठाया। राष्ट्र के सबसे अधिक तर्कसंगत व्यक्ति ऐबेसियूस ने १० जून को अपने प्रभावोत्पादक भाषण के बाद प्रस्ताव रखा कि सामन्तों और धर्म-प्रचारकों को सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप में अधिकारों के प्रमाण के लिए राज्यों के सदन में एकत्रित होने का अन्तिम निमन्त्रण दिया जाय, और लोक-सभा के सदस्य तुरन्त ही इस कार्य को करेंगे चाहे वे उपस्थित हों या न हों। इस प्रमाणीकरण के बाद १५ तारीख को एक प्रस्ताव रखा गया कि उन्हें अपने द्वारा एक राष्ट्रीय असेम्बली का रूप देना चाहिए; और यह प्रस्ताव १७ तारीख को सदस्यों के ⅘ भाग के बहुमत से स्वीकृत हुआ। इस बहस के दौरान में बीस क्यूरीज ने उनका साथ दिया और धर्म-प्रचारकों के सदन में प्रस्ताव रखा गया कि उनके सम्पूर्ण निकाय को इनका साथ देना चाहिए। आरम्भ में एक छोटे बहुमत ने इसे अस्वीकार किया, किन्तु इसका थोड़ा-बहुत रूपान्तर किये जाने के बाद ११ सदस्यों के बहुमत से इसे स्वीकार किया गया। जब कि इस विषय पर बहस चल रही थी जिसका दरबार को पता न था, यानें १६ तारीख को दोपहर में, मार्ले में एक परिषद् की बैठक हुई जिसमें सुझाव रखा गया कि सम्राट् को एक शाही दरबार में अपनी भावनाओं की घोषणा कर हस्ताक्षेर करना चाहिए। मा० नेकर ने घोषणा का एक परिपत्र तैयार किया जिसमें सामन्तों और लोक-सभा दोनों की आलोचना की गई, सम्राट् के उन विचारों को व्यक्त किया गया जो कि बहुत-कुछ लोक-सभा के विचारों से मिलते थे। परिषद् में यह भी तय किया गया कि शाही दरबार की

बैठक २२ तारीख को हो, तब तक राज्यों की बैठक को स्थगित और इस बात को गुप्त रखा जाय। अगले दिन सुबह (२० तारीख को) सदस्यों ने अपने घरों के दरवाजे बन्द और उन पर पहरा लगा पाया और २२ तारीख को शाही दरबार होने की घोषणा और तब तक उनकी बैठक स्थगित किये जाने का हुक्म पढ़ा। यह सोचते हुए कि उनका विसर्जन होने वाला है वे 'टेनिस कोर्ट' नामक इमारत में मिले और उन्होंने शपथ ली कि जब तक वे राष्ट्र के लिए एक सुदृढ़ आधार पर संविधान तय नहीं कर लेते तब तक वे अपनी मर्जी से कभी अलग न होंगे, और यदि उन्हें बल से अलग किया गया तो वे किसी अन्य स्थान में इकट्ठे होंगे। अगले दिन वे सेण्ट लुई के चर्च में मिले और धर्म प्रचारकों के एक बड़े भाग ने उनका साथ दिया। धनिक-वर्ग ने देखा कि बिना कोई बड़ा कदम उठाए सब-कुछ जाता रहेगा सम्राट् उस समय तक मार्ले में ही थे। इन लोगों के मित्रों के अलावा उनसे और कोई न मिल पाता था। सब स्त्रियों की मूठ फरेब ने उन्हें घेर रखा था। उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया गया कि लोक-सभा के सदस्य सेना को सम्राट् के प्रति स्वामि-भक्ति से मुक्त करना और उनका वेतन बढ़ाना चाहते हैं। अब दरबार के लोग आवेश और क्रोध से भर गए। उन्होंने सम्राट् और उनके मन्त्रियों सहित एक समिति बुलाई जिसमें मा० और काउण्ट द' आर्तोयस को भी बुलाया गया। इस समिति में आर्तोयस ने मा० नेकर पर व्यक्तिगत हमला किया, उनकी घोषणा की कटु आलोचना की, और एक दूसरी घोषणा को पेश किया जो कि उनके समर्थकों ने उनके हाथ में थमा दी थी। मा० नेकर को डराया-धमकाया गया और सम्राट् को हिला दिया गया। उन्होंने तय किया कि अगले दिन दोनों योजनाओं पर विचार किया जाय और शाही दरबार की तारीख एक दिन और बढ़ा दी जाय। फलतः अगले दिन मा० नेकर पर और सख्त हमला हुआ। उनके द्वारा तैयार की हुई घोषणा के मसविदे को तोड़-फोड़कर उसकी जगह काउण्ट द' आर्तोयस का मसविदा रखा गया। मा० नेकर और मोण्टोमोरिन ने पद-त्याग करना चाहा, किन्तु यह अस्वीकार किया गया; काउण्ट द' आर्तोयस ने

मा० नेकर से कहा, 'नहीं जनाब आपको जमानत के तौर पर रखा जायगा। हम आपको भविष्य में होने वाली सब बुराइयों के लिए जिम्मेदार ठहरायेंगे।' इस योजना-परिवर्तन की बाहर खबर फैलने लगी। सामन्तों की जीत हुई, जनता की हार। मैं इस स्थिति से चौकन्ना हो गया। सैनिकों ने अभी यह नहीं प्रकट किया था कि वे किस पक्ष में रहेंगे, क्योंकि जिस पक्ष का वे समर्थन करते उसी की जीत होती। मेरे विचार में फ्रांसीसी सरकार के सफल सुधार द्वारा सारे यूरोप में सुधार होता और जनता में एक नई जान आ जाती जो कि उस समय शासकों के दुर्व्यवहार से पिसी जा रही थी। मैं असेम्बली के प्रमुख देशभक्तों से भली भाँति परिचित था। चूँकि मैं उस देश का रहने वाला था जहाँ कि ऐसा ही सुधार सफलतापूर्वक किया जा चुका था, इसलिए वे मुझसे जान-पहचान बनाए रखने के इच्छुक थे, और मुझमें विश्वास रखते थे। मैंने उन्हें जो कुछ उस समय सरकार देती थी उसे स्वीकार करके भविष्य के लिए भावी बातों को छोड़कर तुरन्त समझौते करने के लिए अपनी पूरी ताकत से समझाया। यह सभी जानते थे कि सम्राट् इस समय निम्न लिखित अधिकार प्रदान करेंगे: १. हेबियस कार्पस द्वारा व्यक्ति की स्वतन्त्रता: २. आत्मा की स्वतन्त्रता: ३. समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता: ४. जूरी द्वारा मुकदमे का फैसला: ५. प्रतिनिधि विधान-सभा: ६. वार्षिक अधिवेशन: ७. कानूनों की मौलिक रचना: ८. कर और विनियोग का अनन्य अधिकार: और ९. मन्त्रियों का उत्तरदायित्व, और इन अधिकारों के प्रयोग द्वारा भविष्य में संविधान की सुरक्षा और उसका सुधार करना। किन्तु उनके विचार भिन्न थे और घटनाओं ने उनकी खेदनीय त्रुटि को सिद्ध कर दिया, क्योंकि लगभग तीस वर्षों के घरेलू और बाहरी युद्ध के बाद जिसमें लाखों जिन्दगियाँ बरबाद हुईं व्यक्तिगत सुख नष्ट-भ्रष्ट हुआ, और उनके देश पर कुछ समय तक विदेशी अधिकार रहा, वे कुछ ज्यादा न पा सके और जो कुछ उन्होंने पाया उसको भी सुरक्षित न रख सके। वे अपने सद्भावित धैर्य के दुःखद परिणाम को नहीं जानते थे (और उस समय जान भी कौन सकता था?); वे यह न जानते थे कि मौका पाकर पहला

अत्याचारी व्यक्ति उनके शारीरिक बल के दुरुपयोग से अन्य राष्ट्रों की स्वतन्त्रता और यहाँ तक कि उनके अस्तित्व को भी कुचल देगा : कि इसके द्वारा सम्राटों को अपनी प्रजा के विरुद्ध कुटिल षड्यन्त्र रचने का घातक उदाहरण प्राप्त होगा; वे आपस में मिलकर नर-वध करने का ऐसा नीचतापूर्ण समझौता करेंगे जिसके द्वारा उनके दुर्व्यवहारों और अत्याचारों को सुधारने के सब प्रयत्नों को कुचल दिया जायगा।

अगले दिन जब शैट्ट और 'होटल देस इटेट्स' के बीच की गली से सम्राट् निकले तो सन्नाटा छाया हुआ था। एक घण्टे तक वह सभा में अपने भाषण और घोषणा को सुनाते रहे। जब वे बाहर निकले तो 'सम्राट् चिरंजीव हो,' की हल्की-सी आवाज लड़कों ने की, पर लोग उदासी के साथ चुपचाप खड़े रहे। अपने भाषण के अन्त में उन्होंने आदेश दिया था कि सदस्यगण उनके पीछे चले आएँ और अपना कार्य अगले दिन करें। सामन्त और धर्म-प्रचारक उनके पीछे चले आए, सिर्फ करीब ३० धर्म-प्रचारक ऐसे थे जो टायर्स के साथ कमरे में रहकर अपना काम करने लगे। उन्होंने सम्राट् की कार्रवाइयों का विरोध किया और अपने पुराने कार्यों का पालन करते हुए अपनी अबाध्यता का दृढ़ निश्चय किया। एक अफसर सम्राट् के नाम पर उन्हें कमरे से बाहर निकालने आया। "जिन्होंने तुम्हें भेजा है उनसे कह दो," मीराबू ने कहा, "हम अपनी इच्छा बिना या गोली चलाए बिना यहाँ से न हटेंगे।" दोपहर में बेचैन जनता अदालतों और सम्राट् के महल के आस-पास बड़ी तादाद में इकट्ठी होने लगी थी। उनके इकट्ठे होने से अधिकारियों में घबराहट फैलने लगी। रानी ने मा० नेकर को बुलाया। उनके लिए भीड़ की जय जयकार के नारों ने महल के कमरों को भर दिया। वह सिर्फ कुछ मिनटों के लिए ही रानी के पास थे, और उनकी क्या बातें हुईं कोई नहीं जानता। सम्राट् बाहर घूमने निकल गए। वह भीड़ में से होते हुए अपनी गाड़ी में पहुँचे लेकिन भीड़ में से किसे ने उनको देखा नहीं। उनके बाद मा० नेकर के बाहर निकलने पर लोगों ने "मा० नेकर चिरञ्जीवी हों, फ्रांस के रक्षक चिरंजीवी हों"

के नारे लगाए। उन्हें स्नेह और चिन्ता की भावना के साथ अपने घर तक पहुँचाया गया। असेम्बली के करीब २०० प्रतिनिधियों ने इस उत्तेजना की लहर में बहते हुए मा० नेकर के घर जाकर उनसे यह आश्वासन प्राप्त किया कि वह पद-त्याग नहीं करेंगे। २५ तारीख को ४८ सामन्तों ने टायर्स का साथ दिया जिनमें ओरलियन्स के ड्यूक भी थे। उस समय उनके साथ धर्म-प्रचारकों के १६४ सदस्य थे, हालाँकि धर्म-प्रचारकों का एक अल्पमत अब भी अलग था और वह अपने-आपको धर्म-प्रचारक-सदन समझता था। २६ तारीख को अन्य धर्म-प्रचारकों और सामन्तों के साथ पेरिस के आर्चबिशप ने भी टायर्स का साथ दिया।

इन कार्रवाइयों ने जनता को प्रचण्ड रूप से उत्तेजित कर रखा था। जनता को सैनिकों का भी समर्थन प्राप्त हुआ, पहले फ्रांसीसी रक्षकों का और बाद में स्विस फौज को छोड़कर सेना के अन्य भाग भी उनमें आ मिले, जिनमें स्वयं सम्राट् के अंग-रक्षक भी थे। वे अपनी बारिकें छोड़कर बाहर दलों में इकट्ठे होने लगे और उन्होंने एलान किया कि वे सम्राट् की जान बचाएँगे, परन्तु अपने साथी नागरिकों के हत्यारे न बनेंगे। वे अपने-आपको राष्ट्र के सैनिक कहने लगे और अब इसमें शक नहीं रहा कि लड़ाई छिड़ने पर वे किस पक्ष की तरफदारी करेंगे। राज्य के अन्य भागों से सैनिकों के ऐसे ही समाचार आने लगे और अब यह विश्वास करने का कारण मौजूद था कि वे अपने अफसरों की बजाय अपने पिताओं और भाइयों का साथ देंगे। दरबार की इस दशा का असर फौरन हुआ और बेहद हुआ। घबराहट इतनी ज्यादा बढ़ गई कि २१ तारीख को दोपहर को सम्राट् ने स्वयं अपने हाथ से धर्म-प्रचारकों और सामन्तों के अध्यक्षों को पत्र लिखे कि उन्हें फौरन ही टायर्स का साथ देना चाहिए। ये दोनों निकाय पसोपेश में पड़े हुए चरम-मुलाहजा कर रहे थे कि काउण्ट द' आर्तोयस के पत्रों ने उनमें निर्णय करवा लिया। उन्होंने एक साथ पहुँचकर टायर्स के साथ अपना स्थान ग्रहण किया और इस प्रकार सब दलों ने संयुक्त कर से एक सदन में स्थान लिया।

अब असेम्बली ने अपना कार्य आरम्भ किया और पहले संविधान के शीर्षकों को क्रमबद्ध करने का काम किया जो कि निम्न प्रकार से था :

सर्वप्रथम, मानव-अधिकारों की एक सामान्य घोषणा। फिर, सम्राट्-शाही के सिद्धान्त; राष्ट्र के अधिकार; सम्राट् के अधिकार; नागरिकों के अधिकार; राष्ट्रीय असेम्बली का संगठन और उसके अधिकार; कानूनों को लागू करने के परिपत्र; प्रान्तीय और म्युनिसिपल असेम्बलियों का संगठन और उनके कार्य; न्यायपालिका के कर्तव्य और उनकी सीमाएँ; सैनिक शक्ति का कार्य और उसके कर्तव्य।

तदनुसार, सब कार्यों से प्रथम मानव-अधिकारों की घोषणा तैयार की गई जिसे मारक्विस द ला फेयट ने पेश किया।

लेकिन उनके कार्य की शान्ति इस सूचना से भंग हो गई कि सेनाएँ, और विशेषतः विदेशी सेनाएँ विभिन्न दिशाओं से पेरिस की ओर बढ़ रही हैं। सम्भवतः पेरिस में शान्ति कायम रखने के लिए इस बात की सलाह सम्राट् को दी गई हो। लेकिन उनके सलाहकारों के मन में कुछ और ही बात थी। मार्शल ब्रोगलियो को उनका सेनापति बनाया गया, जो कि एक ऊँचे दरजे का रईस था और हर तरह की हरकत की काबलियत रखता था। शीघ्र ही कुछ फ्रांसीसी सैनिक किसी और बहाने से गिरफ्तार किये गए, लेकिन असली कारण उनकी राष्ट्रीयता की भावना थी। पेरिस की जनता ने जेल तोड़कर उनको रिहा कर दिया, और उन्हें माफी दिलवाने के लिए असेम्बली में एक प्रतिनिधि-मण्डल भेजा। असेम्बली ने पेरिस की जनता से शान्ति और व्यवस्था की सिफारिश की और सम्राट् के पास सिफारिश के साथ इन कैदियों को भेजते हुए फौज हटा लेने के लिए कहा। सम्राट् का उत्तर नकारात्मक और रूखा था। उन्होंने कहा कि अगर वे चाहते हैं तो खुद अपने-आपको हटा सकते हैं। इस बीच बीस-तीस हजार संख्या वाली यह फौज आ पहुँची थी और पेरिस तथा वारसाई में तथा इन दोनों शहरों के बीच तैनात की गई थी। सब रास्तों और पुलों पर पहरा था। ११ जुलाई को दिन के तीन बजे काउण्ट लूर्जन को मा० नेकर की यह खबर

देने के लिए भेजा गया कि वह बरखास्त कर दिए गए हैं; और इस बारे में किसी से एक भी शब्द कहे बिना उन्हें काम छोड़ देना था। वह घर गये, खाना खाया, और उन्होंने अपनी पत्नी से एक मित्र के यहाँ चलने के लिए कहा, जब कि वह वास्तव में अपने गाँव के घर के लिए रवाना हुए, और आधी रात को ब्रसल्स के लिए चल दिए। अगले दिन (१२ तारीख को) ही यह खबर मालूम हुई जब कि घरेलू विभाग के मन्त्री विलडुइल और बारेण्टन के अलावा समूचे मन्त्रि-मण्डल को बदल दिया गया था। निम्न-लिखित परिवर्तन किये गए थे :

बैरन द ब्रितूल को वित्त-परिषद् का अध्यक्ष द ला गलासियर को मा० नेकर की जगह वित्त-प्रधान; मार्शल ब्रोगलियो को युद्ध-मन्त्री और उनके नीचे फोलों को पाई-सैगूर की जगह नियुक्त किया गया; ड्यूक वॉगाई को काउण्ट मोण्टमोरिन की जगह परराष्ट्र-मन्त्री; द ला पोर्त को काउण्ट लूजर्न की जगह जल-सेना-मन्त्री नियुक्त किया गया। सेण्ट प्रीस्ट को भी परिषद् से हटा दिया गया। लूजर्न और पाई-सैगूर परिषद् में घनिक-वर्ग के दृढ़ समर्थक थे; किन्तु अब जो काम करना था उसके लायक उन्हें न समझा गया। अब सम्राट् पूर्णतया उन लोगों के हाथ में थे जिनमें से कुछ मुख्य लोग अपने चरित्र की तुर्की निर्दयता के लिए मशहूर थे, और अब यह लोग सम्राट् के आस-पास रहते थे, और जो-कुछ काम होना होता वह इन्हीं के द्वारा होता था। इस परिवर्तन की खबर पेरिस में करीब एक दो बजे तक फैलने लगी। दोपहर में करीब एक सौ घुड़सवारों को प्लेस लुई पन्द्रहवें के सामने तैनात किया गया, और करीब दो सौ स्विस सैनिकों को उनके पीछे थोड़ी दूरी पर रखा गया। लोग यह तमाशा देखने के लिए वहाँ इकट्ठे होने लगे, और जैसे-जैसे उनकी संख्या बढ़ने लगी उनका क्षोभ भी बढ़ता गया। कुछ कदम पीछे हटकर छोटे-बड़े पत्थरों के एक बड़े ढेर के पीछे वे खड़े हो गए, जो कि एक पुल बनाने के लिए वहाँ इकट्ठे किये गए थे। इस स्थिति में मैं उनके बीच से अपनी गाड़ी से गुजरा लेकिन उन्होंने मुझे नहीं रोका। मेरे गुजरने के बाद ही जनता ने घुड़सवारों पर पत्थरों से

हमला किया। घुड़सवारों ने भी जवाब दिया लेकिन जनता की अच्छी स्थिति और पत्थरों की बौछार ने घोड़ों को पीछे हटने के लिए बाध्य कर दिया, और अपने एक सैनिक को जमीन पर पड़ा छोड़कर वे मैदान छोड़ गए हुए। स्विस सेना ने पीछे से उनकी मदद न की। यह ग्राम बलवे के लिए इशारा था। घुड़सवारों का यह दस्ता अपने-आपको कत्ल किये जाने से बचाने के लिए वरसाई की ओर चल दिया। अब जनता हथियारों की दुकानों और व्यक्तिगत घरों से जो-कुछ भी हथियार मिले, उनसे और लाठी-डंडों से लैस होकर, किसी एक निश्चित उद्देश्य को लिये बिना ही सारी रात शहर के सब मार्गों में घूमती फिरी। अगले दिन (१३ तारीख) को ऐसेम्बली ने सम्राट् पर फौजों को वापस भेजने, पेरिस के मध्यवर्ग को नगर में व्यवस्था कायम करने के लिए सशस्त्र होने की अनुमति देने पर जोर दिया, और जनता को शान्त करने के लिए एक प्रतिनिधि-मण्डल भेजने का आश्वासन दिया; किन्तु उनके सुझावों को अस्वीकार किया गया। इन निकायों द्वारा नगर के महत्तकों और मतदाताओं की एक समिति शासन का भार अपने ऊपर ले लेने को बनाई गई। अब फ्रांसीसी रक्षकों ने खुल्लमखुल्ला जनता का साथ दिया। सेण्ट लज़ारे के बन्दीगृह को तोड़कर बन्दियों को मुक्त किया, और अपने साथ बहुत-सा अनाज लेकर वे गल्ले के बाजार पहुँचे। यहाँ उन्हें कुछ हथियार मिले, और फ्रांसीसी रक्षकों ने उन्हें सैनिक शिक्षा देना आरम्भ किया। नगर-समिति ने अड़तालीस हजार मध्यवर्गीय लोगों को तैयार करने का इरादा किया था, या यह कहिए कि अड़तालीस हजार तक ही उनकी संख्या सीमित रखनी चाही। १४ तारीख को उन्होंने अपने एक सदस्य (मा० द कोरनी) को होटल इनवेलेड में मध्यवर्गीय सेना के लिए हथियार माँगने भेजा। उनके पीछे बहुत से लोगों की भीड़ थी और वहाँ पहले से ही बहुत से लोग मौजूद थे। इनवेलेड के गवर्नर बाहर निकलकर आये और उन्होंने कहा कि जिनसे उन्हें हथियार मिले हैं उनके हुक्म बिना वे इन हथियारों को नहीं दे सकते। इस पर द कोरनी ने लोगों से हट जाने के लिए कहा, और वह खुद भी हट गए; लेकिन जनता ने हथियारों पर

कब्जा कर लिया। यह कमाल की बात थी कि न केवल इनवेलेडों ने ही जनता का विरोध नहीं किया बल्कि चार सौ गज की दूरी पर स्थित पाँच हजार विदेशी सैनिक अपनी जगह से टस-से-मस न हुए। इसके बाद मा० द कोरनी और अन्य पाँच लोगों को बेस्तील के गवर्नर मा० द लोने से हथियार माँगने भेजा गया। उन्हें वहाँ पहले से ही बहुत से लोग जमा मिले, और उन्होंने फौरन विराम सन्धि का झण्डा गाड़ दिया, जिसके जवाब में सामने की दीवार पर भी सन्धि का झण्डा लटका दिया गया। जनता के प्रतिनिधियों ने जनता से कुछ पीछे हटने के लिए कहा, और वे खुद गवर्नर के सामने अपनी माँग पेश करने के लिए आगे बढ़े, और उसी वक्त बेस्तील से गोलियाँ चलीं और जनता के प्रतिनिधियों के पास खड़े चार आदमी मारे गए। प्रतिनिधिगण पीछे लौट आए। मैं उस समय मा० द कोरनी के घर में था और जब वह घर लौटकर आए तो उनसे मैंने इस वारदात का पूरा हाल सुना। प्रतिनिधियों के पीछे हट जाने के साथ ही जनता एक-साथ आगे बढ़ी और फौरन ही उन्होंने उस अतिशक्तिशाली गढ़ पर कब्जा कर लिया, जिसकी उस समय केवल सौ आदमी ही रक्षा कर रहे थे, लेकिन जो पिछले ज़माने में कई बार बड़ी-बड़ी फौजों द्वारा घेरा जा चुका था पर उस पर कब्जा कभी न हो पाया था। यह लोग उस किले में किस तरह घुस पाए यह आज तक नहीं मालूम। उन लोगों ने सब हथियारों पर कब्जा करके सब कैदियों और फौज के उन सिपाहियों को जो उनके द्वारा पहले आवेश में मारे न गए थे, रिहा कर दिया; और गवर्नर तथा उप-गवर्नर को मृत्यु-दण्ड दिये जाने वाले स्थान पर ले-जाकर उनके सिर काट डाले; और जीत की खुशी में वे शाही महल की ओर बढ़े। इसी वक्त मा० द फ्लेसेल के विश्वासघात का प्रमाण मिला, और होटल द विल में, जहाँ कि वह अपना काम करते थे, उन्हें पकड़कर उनका सिर काट डाला गया। इन घटनाओं की अधूरी खबर वरसाई पहुँची थी, जहाँ कि इन घटनाओं को लेकर दो प्रतिनिधि-मण्डल सम्राट् से मिले और दोनों को सूखा और सख्त जवाब मिला, क्योंकि सम्राट् को पेरिस की सच्ची और पूरी खबर देने की किसी को

इजाजत न थी। लेकिन रात को लियनकोर्ट के ड्यूक ने सम्राट् के शयन-कक्ष में प्रवेश करके उन्हें पेरिस की दुर्घटनाओं का पूरा-पूरा हाल सुनाया। भयभीत होकर सम्राट् सो गए। द लोनी के सिर कटने की खबर ने समस्त शिष्टदल को इतना दहला दिया कि जो लोग काउण्ट आर्तेयस के प्रभाव में थे उन्होंने भी सम्राट् द्वारा असेम्बली को सब भार सौंप देने की आवश्यकता बताई। सम्राट् की स्वीकृति पाकर वह ग्यारह बजे केवल अपने भाइयों के साथ असेम्बली में पहुँचा और वहाँ उसने एक भाषण पढ़ सुनाया जिसमें उसने पुनर्व्यवस्था स्थापित करने में मदद चाही। यद्यपि इस भाषण के शब्द बहुत सोच-समझकर चुने गए थे, तो भी उन्हें बोलने के तरीके से यह स्पष्ट था कि स्वेच्छानुसार आत्म-समर्पण किया जा रहा है। वह असेम्बली के सदस्यों के साथ पैदल ही वापस आया। उन्होंने पेरिस में शान्ति स्थापित करने के लिए एक प्रतिनिधि-मण्डल भेजा जिसके अध्यक्ष मारक्विस द ला फेयट थे जो कि उसी दिन सुबह मध्यवर्गीय दल के प्रधान चुने गए थे। बेस्टील को ध्वंस करने का कार्य अब आरम्भ हो चुका था। वेस्टिमिल पल्टन के सिपाही रक्षक और शहर के घुड़सवार भी जनता के साथ हो लिये थे। वरसाई में घबराहट बढ़ती जा रही थी। फौरन ही विदेशी सैनिकों को बुलाया गया। प्रत्येक मन्त्री ने पद त्याग दिया था। जनता द्वारा की हुई बैली की नियुक्ति को सम्राट् ने स्वीकार किया और मा० नेकर को पत्र लिख-कर पुनः बुलाया, और यह खुला पत्र असेम्बली को भेज दिया ताकि वे उसे मा० नेकर को भेज दें। उन्होंने असेम्बली के सदस्यों को अपने साथ पेरिस चलने और वहाँ के लोगों को अपने विचारों से सन्तुष्ट करने के लिए कहा। उस रात को और अगले दिन सुबह काउण्ट द आर्तेयस, और उनसे सम्बन्धित एक सदस्य मा० द मोएटेसन, मादम द पोलिगनेक, मादम द गुइश रानी के प्रिय साथी, ऐबे द वरमोण्ट, कॉण्ड के युवराज और बोरबून के ड्यूक भाग खड़े हुए। रानी को अपने वापस लौटने के बारे में घबराया हुआ छोड़कर सम्राट् पेरिस चले आए। सम्राट् के जलूस में उनकी गाड़ी बीच में थी, और दोनों तरफ असेम्बली के पैदल सदस्य थे। सबसे आगे प्रधान सेनापति की

हैसियत से मारक्विस द ला फेयट घोड़े पर सवार थे और मध्यवर्गीय सैनिक आगे-पीछे थे। इसके अलावा अन्य लोग भी थे जिनका नाम विशेष उल्लेखनीय नहीं है। सब तरह और सब किस्म के लगभग साठ हजार आदमी, जो कि बैस्टील और इनवेलिड पर विजय प्राप्त कर चुके थे, पिस्तौल, तलवार, भाला, बर्छी, हँसिया आदि से लैस सड़कों की दोनों तरफ पंक्ति बनाए खड़े थे; और दरवाजों, खिड़कियों और छतों में खड़े हुए लोगों ने 'राष्ट्र चिरंजीवी हो' के नारे लगाकर उनका स्वागत किया, जब कि 'सम्राट् चिरंजीवी हो' की एक भी आवाज नहीं सुनाई दी। सम्राट् होटल द विल पर रुके। वहाँ मा० बेली ने उनकी टोपी में लोकप्रिय झंडा लगाया और उनके लिए कुछ बातें कहीं। सम्राट् पहले से तैयार न थे, इसलिए उत्तर देने में असमर्थ थे। बेली ने उनसे कुछ वाक्य कहलवाये और उनका उत्तर बनाकर जनता को सुनाया। उन लोगों के लौटने पर 'राष्ट्र के सम्राट् चिरंजीवी हो', के नारे लगाये गए। मध्यवर्गीय सैनिकों द्वारा उन्हें उनके महल तक ले जाया गया और उन्होंने जनता के सामने क्षमा माँगी, जैसी कि न पहले कभी किसी सम्राट् ने माँगी थी और न कभी किसी जनता को प्राप्त हुई थी।

और यहाँ एक दूसरा कीमती मौका हाथ से चला जाने दिया गया जिससे उन अपराधों और निर्दयताओं को रोका जा सकता था जो कि अभी तक फ्रांस में होती रही थीं और साथ ही इनके घातक प्रभाव को यूरोप और अंत में अमरीका तक फैलने से रोका जा सकता था। सम्राट् अब राष्ट्रीय असेम्बली के हाथों में एक निष्क्रिय यन्त्र बन चुके थे, और अगर उन्हें अपने-आप पर ही छोड़ दिया जाता तो वह खुशी के साथ राष्ट्र की भलाई के लिए असेम्बली की सब बातों को मान लेते। एक अच्छा संविधान बनाया जा सकता था, जिसके अध्यक्ष वह वंश परम्परानुसार होते और उनके इतने अधिक विस्तृत अधिकार होते कि वह सबकी भलाई कर सकते थे, किन्तु साथ ही उनके अधिकार इतने सीमित भी होते कि वे उनका दुरुपयोग न कर पाते। ऐसे संविधान का वह निष्ठापूर्वक पालन करते, और मेरा विश्वास

है कि इससे अधिक वह कुछ चाहते भी न थे। लेकिन उनके कमज़ोर दिमाग और भीरु दिल पर उनकी रानी का पूरा अवसर था, जिसका चरित्र सब बातों में उनसे बिलकुल विपरीत था। यह देवी, जिसको कल्पना की मदद से किन्तु निरर्थक ही बर्क ने देवी बतलाया है, दंभी थी, अपने ऊपर किसी प्रकार का नियन्त्रण स्वीकार न कर सकती थी, अपने रास्तों में रुकावटों को देखकर क्षुब्ध हो जाती थी; अपनी त्रुटियों को मानने में लगी रहती, और इतनी दृढ़ता से अपनी इच्छाओं का पालन करती कि उनके नष्ट हो जाने से वह स्वयं नष्ट हो जाती। उसको, काउण्ट द आर्तेग्रम और उनके दल की जुआ खेलने और ऐसी ही दूसरी आदतों ने खज़ाने को खाली कर दिया था, जिसके फलस्वरूप ही राष्ट्र के शासन में सुधार की आवश्यकता हुई, जिसका उसने विरोध किया, और अपनी दृढ़ मानसिक विकृति तथा सदैव अड़े रहने की अपनी आदत के कारण उसने अपना और सम्राट् का सिर कटवाया, और संसार को ऐसे अपराधों और संकटों के गर्त में गिरा दिया कि जो कि आधुनिक इतिहास के पृष्ठों पर हमेशा एक धब्बा बना रहेगा। मेरा हमेशा यही विश्वास रहा है कि यदि रानी नहीं होती तो क्रान्ति नहीं होती। न हिंसा को उत्तेजित किया जाता और न उसका प्रयोग। सम्राट् अपने बुद्धिमान सलाहकारों के साथ चलने, जो कि बढ़ते हुए ज़माने के साथ केवल अपने सामाजिक विधान के सिद्धान्तों को सुधारना चाहते थे। जिस कृति द्वारा इन राजाओं का जीवन समाप्त किया गया, न मैं उसका अनुमोदन करता हूँ और न निन्दा। मैं यह कहने के लिए तैयार नहीं कि एक राष्ट्र का प्रथम मस्तक अपने देश के प्रति विश्वासघात नहीं कर सकता था उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता; और न मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ कि जहाँ लिखित कानून या विधिवत् न्यायाधिकरण नहीं, वहाँ हमारे हृदयों में भी कोई कानून नहीं होता या सत्य की रक्षा और असत्य को दूर करने के लिए हमारे पास कोई शक्ति नहीं होती। जिन्होंने सम्राट् का फैसला किया। उनमें बहुतसे ऐसे थे जो सम्राट् को जान-बूझकर बना हुआ अपराधी क़रार देते थे, और बहुत से ऐसे थे जो समझते कि सम्राट् का अनियन्त्रित राष्ट्र को

सदैव भावी सम्राटों के साथ संघर्ष में रहेगा, और इसलिए उन सबको मारने के बजाय एक को मारना ज्यादा अच्छा है। मैं वियना-सभा के इस पत्र के साथ अपना मत न देता। मैं रानी को किसी धार्मिक मठ में बन्द कर देता और नुकसान पहुँचाने की सब ताकत उससे छीन लेता; सम्राट् को सीमित अधिकारों के साथ उसका स्थान प्रदान करता, और मेरा पूरा विश्वास है कि वह अपनी समझ के अनुसार ईमानदारी के साथ इन अधिकारों का प्रयोग करता। इस प्रकार वह रिक्तता न प्रकट होती जिसमें सैनिक कार्यवाइयों की जरूरत पड़ती, और न उन भीषणताओं के लिए मौका पैदा होता जिन्होंने संसार के राष्ट्रों को भ्रष्ट किया और लाखों-करोड़ों लोगों का संहार किया। इतिहास में तीन युग ऐसे हैं जिनमें राष्ट्रीय नैतिकता सम्पूर्णतः विलीन हो चुकी थी। प्रथम, सिकन्दर और उसके उत्तराधिकारियों का युग था : द्वितीय, प्रथम सीज़र के उत्तराधिकारियों का युग था : और तृतीय, हमारा अपना युग है। यह युग पोलैण्ड के विभाजन से आरम्भ हुआ, जिसके बाद पिलनित्ज़ की सन्धि हुई; कोपेनहेगन का उपद्रव; बोनापार्ट के भीषण कृत्य, जिसने अपनी स्वेच्छा से धरती को बाँटकर आग और तलवार के जोर से उसे बरबाद कर डाला; और अब बोनापार्ट के उत्तराधिकारी सम्राटों का षड्यन्त्र आरम्भ हुआ है, जो कि ईश्वर-निन्दकों के रूप में पवित्र मैत्री के नाम से अपने बन्दी नेता के पद-चिह्नों पर चल रहे हैं, फिर भी अभी तक उन्होंने अन्य राष्ट्रों को पूरी तरह भ्रष्ट करना शुरू नहीं किया था, लेकिन वे अपनी सेनाओं द्वारा शासनों के भावी रूप को निर्धारित कर रहे थे, और अन्य राष्ट्रों के अधिकारों के भावी अपहरण के क्रम और उसकी मात्रा को रक्षित बनाये हुए थे। लेकिन मैं अपने विषय से हटकर यह विचार करने लगा था कि किस प्रकार इन आपराधिक कृत्यों ने संसार को उन उत्पीड़नों से मुक्त होने का अवसर प्रदान न किया जिनसे वह अभी तक पीड़ित था।

मा० नेकर को सम्राट् का पत्र, जिसमें उन्होंने उन्हें पुनः अपना पद ग्रहण करने लिए लिखा था, मा० नेकर को बेसल पहुँचने के बाद प्राप्त हुआ। वह तुरन्त ही लौट आए, और चूँकि अन्य सब मन्त्रियों ने पद त्याग

दिया था, इसलिए नये मन्त्रियों की नियुक्ति की गई : सेंट प्रीस्ट मोण्टमोरिन, और बोर्ड के आर्चबिशप को पुन: स्थान दिया गया; ला तूर दु पिन को युद्ध-मन्त्री और ला लूजर्न को जल-सेना का मन्त्री नियुक्त किया गया। लोगों का ख्याल था कि यह अन्तिम पद लूजर्न को मोण्टमोरिन की मैत्री के कारण मिला था, क्योंकि राजनीति में मतभेद रखते हुए भी इन लोगों में गाढ़ी दोस्ती थी, और हालांकि लूजर्न योग्य व्यक्ति न था किन्तु उसे ईमानदार समझा जाता था। बॉवू के युवराज को भी परिषद् में शामिल कर लिया गया।

शाही वंश के सात युवराजों, छः भूतपूर्व मन्त्रियों, कई उच्च सामन्तों और लूजर्न को छोड़कर वर्तमान मन्त्रियों के भाग जाने के कारण सुव्यवस्था-पूर्वक शासन-कार्य चलने लगा।

४ अगस्त की शाम को ला फेयट के बहनोई वाइकाउण्ट द नोयल के प्रस्ताव द्वारा कुलीनता की सब पदवियों, सामन्तशाही और धर्म-प्रचारकों के कुरीतिपूर्ण विशेषाधिकारों, सब प्रान्तीय विशेषाधिकारों तथा सामन्तशाही-व्यवस्था के सामान्य नियमों को रद्द कर दिया गया। ऐबे सियूस ने धर्म-प्रचारकों के विशेषाधिकारों के रद्द किये जाने का कट्टर विरोध किया, किन्तु उनकी विद्वत्तापूर्ण तथा युक्तिसंगत दलीलों को किसी ने न सुना, और उनके थर्ड भाव ने उनकी प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाया, क्योंकि असेम्बली के अन्य सदस्यों ने अपने अधिकारों को त्याग दिया था। प्राचीन कुरीतियों को कानूनों में से निकालने में काफी दिन बीत गए, और जब यह काम हो चुका तो उन्होंने अधिकारों की घोषणा बनाने का प्रारम्भिक कार्य आरम्भ किया। इस विषय में सदस्यों के बीच बहुत काफी एकमत था, और उन्होंने उदारता के साथ इस घोषणा को बनाया जो कि सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई। इसके बाद उन्होंने संविधान को "एक योजना के रूप में परिणत" करने के लिए एक समिति नियुक्त की जिसका अध्यक्ष बोर्ड के आर्चबिशप को बनाया गया। उन्होंने इस समिति के अध्यक्ष की हैसियत से २० जुलाई के अपने पत्र द्वारा मुझे समिति के कार्य में भाग लेने और सहायता करने का निमन्त्रण

दिया; लेकिन मेरे इन्कार करने का कारण स्पष्ट था क्योंकि मेरा कार्य अपने देश से सम्बन्धित विषयों तक ही सीमित था और मुझे किसी अन्य देश के घरेलू मामलों में दखल देने की आज्ञा न थी। संविधान-सम्बन्धी उनकी योजना के एक-एक विभाग पर, जैसे-जैसे समिति उसे पेश करती जाती थी, बहस होती गई। पहला विभाग सरकार के आम ढाँचे के बारे में था, और इस बात से सब सहमत थे कि सरकार के कार्यपालिका, विधानपालिका, और न्यायपालिका नामक तीन विभाग होने चाहिएँ। किन्तु जब वे अन्य सुधारों पर विचार करने लगे तो विभिन्न मतों की टक्कर होने लगी और इस मतभेद ने देशभक्तों के परस्पर-विरोधी सिद्धान्तों में टुकड़े कर दिए। प्रथम प्रश्न था : 'सम्राट् होना चाहिए या नहीं?' इस प्रश्न पर खुल्लमखुल्ला किसी ने विरोध न किया; और यह मान लिया गया कि फ्रांस की सरकार वंश-परम्परानुगत और सम्राट्शाही होगी। क्या सम्राट् को कानूनों के निराकरण का अधिकार होगा? क्या यह अधिकार किसी कानून को हमेशा के लिए रद्द करने या उसे केवल स्थगित करने तक ही सीमित होगा? क्या विधान-सभा के दो सदन होंगे अथवा केवल एक? यदि दो होंगे तो क्या उनमें से एक के सदस्यों को जीवन-भर सदस्य बने रहने का अधिकार होगा? या यह अधिकार परम्परानुगत होगा? क्या इन सदस्यों को सम्राट् द्वारा नियुक्त किया जायगा? अथवा जनता द्वारा निर्वाचित किया जायगा? इन प्रश्नों को लेकर घोर मतभेद पैदा हो गया, और देशभक्तों के बीच कुत्सित दलबन्दी होने लगी। धनिक-वर्ग प्राचीन शासन-व्यवस्था या उससे सबसे ज्यादा मिलती-जुलती व्यवस्था के पक्ष में था, और इस सिद्धान्त ने उनको दृढ़ता के साथ एकमत बना रखा था। यही उनका ध्रुव तारा था जिसके चारों ओर चक्कर लगाकर वे घूमते थे, और हर प्रश्न पर देशभक्तों के उस भाग का समर्थन करते थे जो कि व्यवस्था में सबसे कम परिवर्तन के हिमायती थे। इस प्रकार नये संविधान के विभिन्न अंग मर्यादित रूप धारण करते जा रहे थे, और ईमानदार देशभक्त अपने बीच इन बढ़ते हुए मतभेदों को देखकर चिन्तित होने लगे थे। इस अशान्तिजनक स्थिति में मुझे एक दिन

फ़ेयट का पत्र मिला कि वह अगले दिन अपने छः-सात मित्रों सहित मेरे यहाँ भोजन करने-आना चाहते हैं। मैंने उन्हें उनके मित्रों के स्वागत का आश्वासन दिया। जब वे मेरे यहाँ पहुँचे तो ला फेयट के अलावा डुपोर्ट, बारनेव, अलेक्जेंडर ला मेथ, ब्लेकन, मोनियर, मोबोर्ग, और डैगाइट उनके साथ थे। यह प्रमुख देशभक्तों में से थे, जो कि आपस में मतभेद रखते हुए भी ईमानदार लोग थे, और परस्पर बलिदान करके समझौता करने की आवश्यकता समझते थे तथा एक-दूसरे के सामने दिल खोलकर बात करने से न डरते थे। इस आखरी गुण के लिए ही उन्हें चुना गया था। इस उद्देश्य को लेकर मारकिस ला फेयट ने इस सम्मेलन में उन्हें आमन्त्रित किया था जिसके स्थान और समय की नियुक्ति करते हुए उन्हें मेरी परेशानी का ख्याल न रहा था। भोजन समाप्त होने और मेजपोश हटा लेने के बाद अमरीकन तरीके से मेज पर शराब रखे जाने पर ला फेयट ने सम्मेलन के उद्देश्य को बताते हुए असेम्बली की स्थिति का संक्षेप में उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि यदि स्वयं देशभक्तों में एकता न होगी तो संविधान के सिद्धान्त हमें जिस ओर लिये जा रहे हैं उसका क्या फल होगा। उन्होंने कहा कि हालाँकि उनके निजी विचार भी हैं लेकिन समान उद्देश्य में विश्वास करने वाले अपने भाइयों के लिए उन्हें बलिदान करने के लिए वह तैयार है; किन्तु एक सामूहिक राय कायम की जानी चाहिए, नहीं तो धनिक-वर्ग की जीत होगी; और जो-कुछ वे लोग यहाँ तय करते हैं वह उसका नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। चार बजे बहस शुरू हुई थी और रात के दस बजे तक चलती रही, और इस बीच मैं चुपचाप बैठा हुआ ठण्डे दिल और स्पष्टवादिता से की जाने वाली उस बहस को सुनता रहा जो कि राजनीतिक मतों के संघर्ष को देखते हुए एक असाधारण चीज़ थी। उस विवाद में युक्तियुक्त तर्क और विशुद्ध वक्तृत्व का प्रयोग किया गया था, जिसे अलंकारों और निन्दाओं की तड़क-भड़क ने दूषित न किया था, और वह ज़ेनोफ़ेन, प्लेटो और सिसरो के भव्यतम प्राचीन संवादों की बराबरी में रखा जा सकता था। अन्त में तय किया गया कि सम्राट् को कानूनों के

अस्थायी निराकरण का ही अधिकार होना चाहिए, कि विधान-सभा
केवल एक ही सदन होना चाहिए जिसके सदस्यों को जनता द्वारा निर्वा
किया जाना चाहिए। इस सम्मेलन ने संविधान के भाग्य को निर्धारित
दिया। इस प्रकार निर्णीत सिद्धान्तों का समर्थन करते हुए देशभक्तों ने इ
प्रश्न पर एकमत प्रकट करके धनिक-वर्ग को महत्त्वहीन और शक्तिहीन
दिया। किन्तु अपने-आपको निर्दोष सिद्ध करने का भार अब मुझ पर
अगले दिन सुबह मैं काउण्ट मोण्टमोरिन के यहाँ पहुँचा, और मैंने सच
और सफाई के साथ बताया कि किस प्रकार मेरे घर को इस प्रकार के सम्मे
के लिए चुना गया था। उन्होंने कहा कि जो-कुछ हुआ है उस बारे
उन्हें पहले ही मालूम हो चुका है, और इस अवसर पर अपने घर
उपयोग के लिए असन्तोष प्रकट करने के बजाय, उनकी इच्छा है कि
ऐसे सम्मेलनों में हमेशा मदद दिया करूँ, क्योंकि उनका विश्वास था
मैं उग्र विचारों को कुछ शान्त कर सकता हूँ, और एक हितकर
व्यावहारिक सुधार के लिए मददगार हो सकता हूँ। उत्तर में मैंने कहा
सम्राट्, राष्ट्र और अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों का मुझे भान है,
इसलिए उनके घरेलू शासन-सम्बन्धी सभाओं में भाग नहीं ले सकता, कि
एक तटस्थ एवं शान्त दर्शक के रूप में रहना चाहता हूँ, कि मेरी
सच्ची इच्छा है कि उन्हीं कार्यों की विजय हो जिनके द्वारा राष्ट्र को अधि
से-अधिक लाभ हो सके। वास्तव में, अब मुझे इस बात का सन्देह नहीं
कि इस सम्मेलन की पूर्व-स्वीकृति इस ईमानदार मन्त्री ने दे रखी
जो कि देशभक्तों से सम्बन्ध रखता था और उनका विश्वासपात्र था,
जो कि संविधान में एक उचित सुधार की इच्छा रखता था।

अब मैं फ्रांसीसी क्रान्ति के अपने वृत्तान्त को बन्द करता हूँ। जि
विस्तार के साथ मैंने इसका उल्लेख किया है, वह मेरे आम विषय
अनुपात में नहीं है। लेकिन इस क्रान्ति में सारे संसार की दिलचस्पी देख
हुए मैंने इसे उचित समझा है। अभी तक हम इतिहास के केवल प्रथ
में हैं। मानव-अधिकारों की अपील, जो कि संयुक्त राज्य अमरीक

में की जा चुकी थी, फ्रांस ने उसे यूरोपीय राज्यों में सर्वप्रथम अपनाया। फ्रांस से यह भावना दक्षिण की ओर फैली। उत्तर के अत्याचारियों ने इसका आपस में मिलकर विरोध किया, किन्तु इसे रोका नहीं जा सकता। उनके विरोध से केवल मानव-पीड़ितों की संख्या लाखों-करोड़ों में बढ़ जायगी; खुद उनके पिट्ठू इस भावना के शिकार बनेंगे, और अन्त में, सभ्य समाज के मानव की दशा निश्चय ही सुधरेगी। छोटी बातों से उत्पन्न हुई महान् घटनाओं का यह एक विलक्षण उदाहरण है। इस संसार में कारणों और परिणामों का क्रम ऐसा दुर्बोध है कि दुनिया के एक दूर कोने में चाय पर सिर्फ दो पैसे का अन्यायपूर्ण लगाया हुआ महसूल संसार के सब प्राणियों की दशा में परिवर्तन लाता है। मैंने इस पुनरुत्थान के प्रारम्भिक भाग का ही अधिक विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है, क्योंकि मैं ऐसी परिस्थिति में था जहाँ मैं इसकी सचाई को जान सकता था। प्रमुख देशभक्तों से घनिष्टता होने तथा उनका विश्वासपात्र होने के कारण, जिनमें उनके नेता मारक्विस लाफेयर का मुख्य स्थान था, और जो कि मुझसे कुछ न छिपाते थे, मैं उस दल के विचारों और कार्रवाइयों से सही तौर पर परिचित था; जब कि पेरिस के दरबार में यूरोपियन कूटनीतिक प्रतिनिधियों के सम्पर्क से, जो कि शाही सभाओं और कार्रवाइयों के बारे में जानने के हमेशा इच्छुक रहते थे, मुझे इस पक्ष की जानकारी भी हासिल हो गई। मैं हमेशा अपनी सूचनाओं को मि० जे तथा अन्य मित्रों को पत्र भेजकर लेखनीबद्ध कर लिया करता था, और इन पत्रों को दुबारा देखने से मैं याददाश्त की गलतियों से बच पाया हूँ।

इन दृश्यों से दूर होते ही इस काल की सूचना-प्राप्ति के अवसर मेरे लिए बन्द हो गए। घर जाने की छुट्टी माँगते हुए मुझे एक साल से भी ऊपर हो गया था क्योंकि मैं अपनी पुत्रियों को समाज में प्रविष्ट कराकर उनके मित्रों की देख-रेख में उन्हें छोड़कर कुछ समय के लिए अपने पद पर पेरिस लौट आना चाहता था। लेकिन जो महान् परिवर्तन हमारे शासन में हो रहा था, वह कुछ समय के लिए रुक गया; और अगस्त के अन्त में ही

मुझे घर जाने की आज्ञा मिली। और इस अच्छे और महान् देश को छोड़ते समय मैं संसार के सब राष्ट्रों में इसके चरित्र की प्रधानता के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता। मैंने इनसे बढ़कर परोपकारी लोगों को नहीं देखा और न पारस्परिक मैत्री में इनसे अधिक स्नेह और हार्दिकता मैंने कहीं पाई। विदेशियों के लिए इनकी दयालुता और उन्हें अपनाने की इनकी भावना की बराबरी नहीं, और पेरिस-जैसे बड़े शहर में जो आतिथ्य-सत्कार मुझे प्राप्त हुआ, उसकी कल्पना भी मैंने न की थी। उनके विज्ञान की श्रेष्ठता और उनके वैज्ञानिकों की अपने विचारों के आदान-प्रदान की आदत, उनके व्यवहार की नम्रता, और उनके वार्तालाप की सुलभता तथा प्रफुल्लता उनके समाज में एक ऐसा आकर्षण ला देती थी, जो कि और कहीं नहीं मिल सकता। अन्य देशों की तुलना में इसकी श्रेष्ठता का सबूत थैमिस्टोकैलिस के उदाहरण में मिल सकता है। सलामिस के युद्ध के पश्चात् प्रत्येक सेनानायक ने शूरता का प्रथम स्थान स्वयं को दिया और द्वितीय थैमिस्टोकैलिस को। इसी प्रकार, दुनिया भर में घूमे-फिरे व्यक्ति से पूछिए कि वह किस देश में रहना पसन्द करेगा? तो उसका उत्तर होगा—निश्चय ही अपने देश में, जहाँ मेरे सब-कुछ बान्धव और अपने सारे जीवन का स्नेह और स्मृतियाँ हैं। लेकिन उससे पूछिए कि दूसरा ऐसा कौन-सा देश है जो उसे सबसे अधिक पसन्द है—? तो उसका उत्तर होगा—फ्रांस।

२६ सितम्बर को मैं पेरिस से हार्वे के लिए रवाना हो गया, जहाँ मुझे हवा के खिलाफ रुख के कारण ८ अक्तूबर तक रुकना पड़ा। उस दिन और ६ तारीख को मैंने कोवेज को पार किया जहाँ कि मैंने क्लैरमोण्ट जहाज का आना तय कर रखा था। वह जहाज आया, लेकिन यहाँ भी खिलाफ हवा के कारण हमें २२ तारीख तक रुकना पड़ा; और आखिर २३ नवम्बर को हम नॉरफोक पहुँचे। घर लौटते समय मैंने कुछ दिन चेस्टरफील्ड में अपने मित्र मि० ऐप्स के निवास-स्थान ऐपिंग्टन में बिताये; और जब कि मैं वहाँ था मुझे प्रेसीडेण्ट, जनरल वाशिंगटन की ओर से एक पत्र मिला, जिसमें मेरे राज्य-मन्त्री नियुक्त किये जाने की सूचना थी। मेरी इच्छा पेरिस

लौटने की थी, जहाँ कि मैं अपना सारा सामान छोड़ आया था, और क्रान्ति का अन्त देखना चाहता था, जिसका मेरे ख्याल से एक वर्ष के अन्दर ही मुखान्त होने वाला था। इसके बाद मैं घर लौटकर राजनीतिक जीवन से निवृत होना चाहता था, जिसमें कि मुझे परिस्थितियों से बाध्य होकर भाग लेना पड़ा था। मैं अपने परिवार और मित्रों के वातावरण में खो जाना चाहता था, तथा अपना समय उन विषयों के अध्ययन में लगाना चाहता था, जो कि मुझे अतिप्रिय थे। प्रेसीडेण्ट को १५ दिसम्बर के अपने पत्र द्वारा अपनी इन भावनाओं को सूचित करते हुए, मैंने पेरिस लौटने की अपनी इच्छा के बारे में भी उन्हें सूचित किया; लेकिन साथ ही यह आश्वासन भी दिया कि यदि मैं सरकार के शासन-कार्य में अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ तो मैं निःसंकोच अपनी इच्छाओं का बलिदान करके इस पद को ग्रहण करने के लिए तैयार हूँ; यह निर्णय मैंने उन्हीं पर छोड़ दिया। २३ दिसम्बर को मैं मोण्टीसीलो पहुँचा, और यहाँ मुझे प्रेसीडेण्ट का दूसरा पत्र मिला जिसमें उन्होंने फिर वही इच्छा जाहिर की लेकिन साथ में यह भी लिखा कि अगर मैं इस पद को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हूँ तो मुझे अपने पहले पद पर रहने की आजादी है। इस पत्र ने मेरी अनिच्छा को शान्त कर दिया और मैंने नई नियुक्ति को स्वीकार किया।

किन्तु कुछ दिनों के लिए मैं घर पर रहा, उस बीच मेरी बड़ी लड़की का विवाह टुकाहो के रैण्डोल्फ्स-परिवार के सबसे बड़े लड़के के साथ सम्पन्न हुआ। यह असाधारण बुद्धि, विज्ञान और सम्मानित मस्तिष्क वाला युवक था जिसने राष्ट्र की सरकार और अपने राज्य की निजी सरकार में अति प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया। १ मार्च १७६० को मैं मोण्टीसेलो से न्यूयार्क के लिए रवाना हो गया। फिलाडेलफिया में मैंने प्रिय एवं आदरणीय फ्रेंकलिन से मुलाकात की वह रोग-शैया पर पड़े थे जिससे वह फिर कभी न उठे। चूँकि मैं एक ऐसे देश से हाल ही में लौटा था जिसमें उनके बहुत-से मित्र थे, और उन पर जो भयंकर संकट आया था, इस कारण वह यह जानने के इच्छुक थे कि उन मित्रों ने इस संकट में क्या भाग

लिया और उनका कैसा भाग्य रहा। उन्होंने अपनी शक्ति से बढ़कर
और तेजी के साथ इस वार्तालाप में भाग लिया। उनके सब प्रश्नों
उत्तर दिये जाने के बाद जब कुछ देर के लिए शान्ति हुई, तो मैंने
कहा कि यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई है कि अमरीका लौट आने के
से वह संसार के लिए अपने जमाने का इतिहास लिखने में लगे हुए
उन्होंने कहा, कि इस बारे में बहुत-कुछ तो नहीं कह सकता, लेकिन
के बाद जो-कुछ मैं छोड़ जाऊँगा उसका एक नमूना आपको देना चाहता
और उन्होंने अपने पोते से, जो कि उनके बिस्तरे के पास ही खड़ा
मेज पर से एक कागज उठाने के लिए कहा। डॉक्टर ने इन कागजों
मेरे हाथ में थमाते हुए उन्हें फुरसत के वक्त पढ़ने के लिए मुझसे क
वह करीब एक दस्ता कागज होंगे जिस पर उनके द्वारा तेजी से लिखे
बड़े-बड़े अक्षर दिखाई दे रहे थे। मैंने एक नजर उन्हें देखा और कहा
मैं उन्हें पढ़कर हिफाजत से लौटा दूँगा। वह बोले, "नहीं, इसे
पास रखिए।" उनका मतलब अच्छी तरह न समझ सकने के कारण
उन कागजों को एक बार फिर देखा, और उन्हें अपनी जेब में रखते
दुबारा कहा कि मैं इन्हें जरूर लौटा दूँगा। उन्होंने कहा, "नहीं,
अपने पास ही रखिए।" मैंने उन्हें अपनी जेब में रख लिया, और
देर बाद उनसे विदा माँगी। १७ अप्रैल को उनका देहान्त हो गया;
मुझे खबर मिली कि वह अपने सब कागज-पत्र अपने पोते विलियम
फ्रैंकलिन के नाम छोड़ गए हैं। मैंने फौरन ही मि० फ्रैंकलिन को
कर सूचित किया कि यह कागज मेरे पास हैं, जो कि उनकी सम्पत्ति
चाहिए, और कि उनका आदेश पाते ही मैं लौटा दूँगा। वह पौ
न्यूयार्क आकर मुझसे मिले, और मैंने यह कागज उन्हें लौटा दिए।
कागजों को अपनी जेब में लापरवाही के साथ रखते हुए उन्होंने कहा
शायद उस कागज की प्रतिलिपि या मूल प्रति उनके पास है। यह
सुनकर मुझे खयाल आया कि डॉ० फ्रैंकलिन विश्वस्त रूप से मेरे पा
उस कागज को रखना चाहते थे, और उसे लौटाकर मैंने गलती

अभी तक मैंने उनके द्वारा प्रकाशित डॉ० फ्रैंकलिन के लेखों का संकलन नहीं देखा है, और इसलिए मैं कह नहीं सकता कि यह लेख भी उनमें शामिल है या नहीं। मुझे बताया गया है कि यह लेख उसमें शामिल नहीं है। इसमें डॉ० फ्रैंकलिन और ब्रिटिश मन्त्री-मण्डल के बीच हुई उस वार्ता का वर्णन है जो कि उन्होंने पारस्परिक युद्ध रोकने की कोशिश में की थी। यह वार्ता लॉर्ड होवे और उनकी बहन के बीच में पड़ने से शुरू हुई थी। यह लोग विभिन्न प्रस्तावों को लेकर बार-बार इधर-से-उधर आते-जाते रहे, अपने हस्तक्षेप से इन्होंने दोनों देशों को परस्पर बलिदान करने के महत्त्व का भान कराया। मुझे लॉर्ड नॉर्थ का रूखा उत्तर याद है, जिसमें थोड़ा भी बलिदान करने की इच्छा न थी, बल्कि जिन्हें लड़ाई छिड़ जाने की कोई परवाह न थी। उन्होंने इन मध्यस्थ व्यक्तियों से साफ़-साफ़ कहा था, "बलवे से ग्रेट ब्रिटेन को कोई नुकसान नहीं; बल्कि इसकी बदौलत जो ज़मीनें ज़ब्त की जायेंगी, उससे उनके बहुत से दोस्तों को फायदा होगा।" मध्यस्थों द्वारा यह शब्द डॉ० फ्रैंकलिन को बताये गए, और इसने मन्त्री-मण्डल के रुख को स्पष्ट कर दिया, जिससे समझौता असम्भव हो गया, और सन्धि-वार्ता बन्द कर दी गई। अगर यह बात डॉ० फ्रैंकलिन के प्रकाशित लेखों में नहीं है, तो हम जानना चाहते हैं कि उसका क्या हुआ? मैंने अपने हाथों इस लेख को टेम्पल फ्रैंकलिन को सुपुर्द किया था। इस लेख द्वारा ब्रिटिश सरकार की क्रूरता का ऐसा प्रमाण मिला था, जिसे दबा देना उनके लिए बहुत लाभदायक होता। लेकिन क्या डॉ० फ्रैंकलिन का पोता अपने अमर पितामह की स्मृति की हत्या करने में इस हद तक भागी हो सकता था? बीस वर्ष से भी अधिक समय तक इन लेखों के प्रकाशन को स्थगित रखने के कारण, लोगों के दिलों में उनके खिलाफ़ शक पैदा हो गया; और अगर यह सारे लेख प्रकाशित न हुए तो यह शक बना ही रहेगा।

२१ मार्च को मैं न्यूयॉर्क पहुँचा, जहाँ कि उन दिनों काँग्रेस का अधिवेशन हो रहा था।

परिचय

जेफरसन के यह कागज-पत्र उनके राज्य-मन्त्री होने के दूसरे वर्ष से लेकर प्रेसीडेन्ट की की हैसियत से उनके अन्तिम वर्ष (१७९१-१८०९) तक की आत्म-कथा के क्रम को ही वस्तुतः जारी रखते हैं। फेडरलिस्ट पार्टी का उत्थान और पतन देखने वाले इन तूफानी बरसों में जेफरसन फेडरलिस्ट और रिपब्लिकनों के बीच छिड़े संघर्ष और उनकी कुटिल चालों के बारे में अक्सर लिखते रहने के आदी थे। "सरगर्मी के जमाने" के सबसे सरगर्म वक्त में लिखे हुए इन कागज-पत्रों को जेफरसन ने कई बरसों बाद इस उद्देश्य से दोहराया ताकि वे उन बातों को निकाल सकें जो "गलत या संदिग्ध या बिलकुल निजी" थीं। जेफरसन के कागज-पत्रों के इस संकलन में ४ फरवरी १८१८ को लिखा हुआ उनका एक लम्बा व्याख्यात्मक लेख है और तीन या चार पृथक् वृत्तान्त हैं जो सारे कागजातों की ध्वनि और उद्वेग के परिचायक हैं।

संस्मरण

इन तीन भागों में उन सरकारी सम्मतियों और कहीं-कहीं किसी प्रासंगिक विषय से सम्बन्धित लेखों की प्रतिलिपियाँ मिलेंगी जो मैंने जनरल वाशिंगटन को उन दिनों लिखकर भेजी थीं जब कि मैं राज्य-मन्त्री था। इनमें से कुछ कच्चे तथा कुछ परिष्कृत लेख हैं और कुछ अखबारों की नकलें हैं। राज्य-मन्त्री के पद पर शुरू के दिनों में मैं सब कार्रवाइयों को नोट नहीं करता था, पर कुछ दिनों बाद याददाश्त के लिए इन्हें लिख लेने की आवश्यकता मैंने महसूस की। इसलिए अक्सर मैं मौके पर अपनी जेब से कागज के रुक्के निकालकर उन पर लिख लिया करता था और फुरसत के वक्त नकल करवाने के लिए उन्हें अलग रख देता था, हालाँकि नकल करवाने का काम बहुत कम हो पाया तो मैंने इन मुड़े मुड़ाए, सिकुड़े-सिकुड़ाये और घसीट में लिखे हुए रुक्कों को दुबारा पढ़ने का मौका पाए बिना ही अपने सामने नत्थी करवा लिया। आज पच्चीस बरस या उससे भी ज्यादा समय बीत जाने के बाद जबकि उस जमाने की सरगर्मी ठण्डी पड़ चुकी है और जब कि उन दिनों की कार्रवाइयों के औचित्य-अनौचित्य का निर्णय उन कार्रवाइयों के कारणों से ही किया जा सकता है, मैंने इन सारे कागज-पत्रों को ठण्डे दिल से दोहराया है। कई बातें, जो मैंने उस समय लिखी थीं, अब निकाल दी हैं क्योंकि मैंने उन्हें गलत या संदिग्ध या बिलकुल निजी पाया है, जिनसे हमारा

अथवा संयुक्त सरकार पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए कुछ संशोधनों का होना जरूरी है। इन कनवेन्शनों के पूरे दौरान में क्या-क्या हुआ, यह सूचना मुझे कनवेन्शन के सदस्यों से लेनी पड़ी है क्योंकि मैं एक राज्य-कार्य से फ्रांस में होने के कारण इनमें भाग न ले पाया था।

नई सरकार के प्रथम वर्ष में मैं फ्रांस से लौटकर दिसम्बर १७८६ में वर्जीनिया उतरा और मार्च १७६० में राज्य-मन्त्री के पद पर काम करने के लिए न्यूयार्क चल दिया। यहाँ मैंने वह स्थिति पाई कि जिसकी अगर मैंने कल्पना की थी तो आशा कम-से-कम न की थी। मैं फ्रांस की क्रान्ति के प्रथम वर्ष में प्रकृतिदत्त अधिकारों के प्रति जोश और सुधारों के लिए लगन लेकर वहाँ से लौटा। इन अधिकारों के प्रति मेरी आस्था के बढ़ने के लिए और ज्यादा गुञ्जाइश न थी लेकिन दैनिक अभ्यास से यह और अधिक जाग्रत और उद्दीपित हो चुकी थी। प्रेसीडेंट ने मेरा हार्दिक स्वागत किया और मेरे साथियों तथा प्रमुख नागरिकों ने स्पष्टतः शुभेच्छा के साथ अभिनन्दन किया। नवागन्तुक के लिए आयोजित भोजों की जैसी सौजन्यता ने मुझे तुरन्त ही उनके परिचित समाज में मिला लिया। लेकिन उनके वार्तालाप ने मुझे ऐसा चकित और स्तब्ध कर दिया कि जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मुख्य विषय राजनीति ही होता और प्रत्यक्षतः प्रजातन्त्र की अपेक्षाकृत सम्राट्‌तन्त्र की ही ओर ज्यादा झुकाव नजर आता था। न मैं विधर्मी बन सकता था और न पाखण्डी, अतः मैं अधिकतर अपने-आपको प्रजातन्त्रवादी पक्ष की हिमायत लेते पाता, हालाँकि उस वक्त ऐसा न करता जब कि उस दल की विधान-सभा का कोई सदस्य मौजूद होता। हैमिल्टन की वित्तीय व्यवस्था तब पास हो चुकी थी। इसके दो उद्देश्य थे। एक तो उसे इतना जटिल बना देना कि आम लोग उसे समझ-बूझ न सकें, और दूसरे उसे वह मशीन बना देना जो विधान-सभा को भ्रष्ट कर सके; क्योंकि वह इस मत को स्वीकार करता था कि मनुष्य को बल या उसके निजी हित से ही शासित किया जा सकता है। और उसका कहना था कि क्योंकि इस देश में बल के प्रयोग का सवाल नहीं होता अतएव सदस्यों के हितों को अपने वश में रख-

(यह सूचना खुल्लमखुल्ला फैलने के बजाय बन्द दरवाजों के अन्दर जल्दी फैली, और विशेषतः उन लोगों को जल्दी पहुँची जो राष्ट्र के सुदूर भागों में थे) तो छीना-झपटी की कमीनी दौड़ शुरू हुई। चिट्ठीरसे और जगह-जगह बदले जाने वाले घोड़े और तेज रफ्तार से चलने वाली नावें सब दिशाओं में दौड़ने लगीं। चुस्त साझीदार और दलाल हर राज्य, शहर और देहात में नियुक्त किये जाने लगे; और इससे पहले कि प्रमाणपत्रों के मालिकों को यह मालूम हो कि काँग्रेस ने पूरी कीमत पर रुपया अदा करना तय किया है, वे एक पौण्ड की कीमत का रुक्का पाँच शिलिंग या यहाँ तक कि दो शिलिंग में खरीदने लगे। इस प्रकार विपुल धनराशि भोले गरीबों से उन लोगों ने छीन ली जो पहले खुद गरीब थे और अब मालामाल हो गए थे। एक नेता की चतुराई से धनी होने वाले लोग निश्चय ही उस नेता का अनुसरण करते जो कि उनको धनी बनाता जा रहा था, और उसके सब भावी कार्यों का साधन बनना वे उत्सुकतापूर्वक स्वीकार करते।

जब मैं पहुँचा एक बाजी पूरी हो चुकी थी और दूसरी बिछी थी जिसके लिए रोशनी दिखाने का काम मुझे दिया गया, जो मैंने अज्ञानवश किया और जिसके लिए मैं निर्दोष था। राज-कर-विषयक इस चाल को 'स्वीकृत बात' का नाम दिया गया। युद्ध के दौरान में राज्यों ने कांग्रेस से पृथक् भारी ऋण ले रखे थे, खास तौर पर मेसाच्यूसेट्स ने ब्रिटिश अड्डे पेनोब्सकोट पर किये गए व्यर्थ के प्रयत्नों के लिए। हैमिल्टन जितने ज्यादा कर्जों को उघाड़ सकता उतना ही पैसे के लिए काम करने वाले उनके साथियों को लाभ था। यह रुपया चाहे बुद्धिमानी या मूर्खता से खर्च किया गया हो, सार्वजनिक कार्यों पर खर्च किया गया था, अतः सार्वजनिक कोष से ही इसे चुकाना चाहिए था। यह आपत्ति की गई कि कोई नहीं जानता कि यह कैसे कर्ज हैं, कितनी रकम के हैं और इनका क्या सबूत है? लेकिन कहा गया कि कोई बात नहीं हम अन्दाज से इस कर्ज को दो करोड़ मान लेंगे। लेकिन इन दो करोड़ में से किस राज्य के हिस्से कितने रुपये पड़ेंगे—यह कैसे जाना जाय? दुबारा कहा गया कि कोई बात नहीं, हम अन्दाज लगा लेंगे।

में लाकर उस उद्वेग को किसी हद तक ठंडा किया जा सकता है जो कि दूसरी कार्रवाई से उभर पड़ने वाला था। अतः पोटोमैक के दो सदस्य (ह्वाइट और ली, जिसमें ली ने बुरी तरह अपना पेट हिलाकर रोष प्रकट किया) अपने वोट बदलने के लिए राजी हो गए, और दूसरी कार्रवाई करने का भार हैमिल्टन ने लिया। इस काम में हैमिल्टन के पद ने पूर्वी सदस्यों पर अपने प्रभाव का लाभ उठाया और मध्यस्थित राज्यों के प्रतिनिधि *राबर्ट मॉरिस से भी सहायता प्राप्त की और इस प्रकार 'एसम्पशन' या* 'स्वीकृत बात' पास हो गई और दो करोड़ अपने मित्र-राज्यों में बाँट दिये गए, सट्टेबाजों के बीच डाल दिये गए। इससे कोष के भक्तों की संख्या बढ़ती गई और विधान-सभा के हरेक वोट का मालिक कोष का प्रधान हो गया जो कि अपने राजनीतिक विचारों का खयाल रखते हुए सरकार का निर्देशन कर सकता था।

मैं अच्छी तरह जानता हूँ और दूसरों को भी यह अच्छी तरह समझ *लेना चाहिए कि कांग्रेस के बहुमत ने इस भ्रष्टाचार को स्वीकार नहीं किया था। बात दूसरी ही थी।* रिपब्लिकन और फेडरल कहलाने वाली पार्टियों में विभाजन पहले ही हो चुका था। फेडरलिस्ट सैद्धान्तिक रूप में राजतन्त्र के पक्षपाती थे और इस सिद्धान्त के लिए हैमिल्टन को अपना नेता मानते थे। अतः हैमिल्टन को दोनों सभाओं में पैसे के लिए काम करने वालों के बहुमत का सहयोग प्राप्त हो चुका था और इस प्रकार अब विधान-सभा के समस्त कार्य कोष-विभाग द्वारा निर्धारित किये जाते थे। लेकिन फिर भी *मशीन पूरी न हुई थी। 'एसम्पशन' और वित्तीय विधि का प्रभाव अस्थायी था; इसने जिन लोगों को धनी बनाया था उनके अलग हो जाने से इसका प्रभाव भी जाता रहता, और इसलिए एक अधिक स्थायी प्रभाव वाला इंजिन ईजाद किया जाना जरूरी था जो कि तब तक ही हो सकता था जब तक कि विरोधियों को हराने के लिए इन अनुयायी की संख्या पर्याप्त थी। यह इंजिन था संयुक्त राज्यों का बैंक। यह इतिहास सर्वविदित है, अतः इस बारे में मैं कुछ न कहूँगा। जब कि राजधानी फिलाडेल्फिया में थी*

दोनों सभाओं के कुछ चुने हुए सदस्य डाइरेक्टर बनाकर लगातार रखे जाते थे जो इस संस्था से सम्बन्धित प्रत्येक प्रश्न पर फेडरल प्रधान की इच्छानुसार वोट देते थे, और इस प्रकार सट्टेबाज सदस्यों के सहयोग से फेडरल वोटों का ही बहुमत रहता था। इस संयोग से संविधान की वैधानिक व्याख्या की जा सकी और सब शासकीय कानूनों को इंग्लैण्ड के नमूने पर बनाया गया। और इस प्रभाव से हम तब तक मुक्त न हो सके जब तक कि बैंक को हटाकर वाशिंगटन न लाया गया।

तो यह था विरोध का असली कारण जो शासन-क्रम के विरुद्ध भी था। इसका उद्देश्य था विधान-सभा को कार्यपालिका के प्रभाव से स्वतन्त्र बनाए रखना और दूषित न होने देना, शासन द्वारा प्रजातन्त्रवादी रूप और सिद्धान्तों को अपनाने के लिए ज़ोर देना और संविधान को सम्राट्तन्त्री न बनने देना और न इंगलिश नमूने के सिद्धान्तों और भ्रष्टाचारों को व्यवहार में लाने देना। लेकिन यह जनरल वाशिंगटन का विरोध न था। वह रिपब्लिकनों द्वारा सौंपे गए भार को ईमानदारी से निबाह रहे थे; और उन्होंने मुझसे बातचीत के दौरान में बार-बार गम्भीरतापूर्वक कहा था कि वह अपने खून की आखरी बूँद से भी इस कर्तव्य को निबाहेंगे, और उन्होंने कई बार इस भावना का परिचय भी दिया, क्योंकि वह हैमिल्टन की चालों के प्रति मेरी शंका को जानते थे और उनका निवारण करना चाहते थे। वह हैमिल्टन की चालों के रुख और असर को न जानते थे। आय-व्यय के हिसाब-किताब और वित्तीय योजनाओं से स्वयं अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें उस व्यक्ति पर विश्वास करना पड़ता था।

लेकिन हैमिल्टन केवल सम्राट्तन्त्रवादी ही न था बल्कि भ्रष्टाचार पर आधारित सम्राट्तन्त्र का हिमायती था। इस बात के सबूत के लिए मैं एक दृष्टान्त दूँगा जिसकी सचाई के लिए ईश्वर साक्षी है। प्रेसीडेण्ट ने अप्रैल १७९१ में दक्षिणी राज्यों के दौरे पर जाने से पूर्व माउण्ट वर्नोन से राज्य, कोष और युद्ध के विभाग के सब मन्त्रियों को उस महीने की चौथी तारीख को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उनकी

अनुपस्थिति में गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण मसलों को आरम्भ में सलाह-मशु
करके तय किया जाय। और उन्होंने यह भी लिखा कि उप-प्रधान
सलाह ली जानी चाहिए। यह पहला मौका था कि जब उप-प्रधान
मन्त्री-मण्डल में सार्वजनिक प्रश्न पर भाग लेने के लिए कहा गया। ज
सलाह के लिए एक मौका आया मैंने इन सज्जनों को (और जहाँ तक
मुझे याद है महान्यायवादी को भी) अपने साथ भोजन करने के लिए आम-
न्त्रित किया ताकि एक मसले पर बातचीत की जा सके। लम्बी बहस और
अपने सवाल पर सहमति प्राप्त होने के बाद अन्य विषयों पर बातचीत होने
लगी और किसी तरह ब्रिटिश संविधान पर बात आ गई। मिस्टर एडम्स
ने कहा कि अगर ब्रिटिश संविधान से "भ्रष्टाचार निकाल दिया जाय और
उसकी लोकप्रिय शाखा को प्रतिनिधित्व की समानता दे दी जाय तो वह
मनुष्य की बुद्धि द्वारा निर्मित सबसे अधिक परिपूर्ण संविधान होगा।"
हैमिल्टन कुछ देर चुप रहा और फिर बोला, कि ब्रिटिश संविधान से
"भ्रष्टाचार निकाल दीजिए और उसकी लोकप्रिय शाखा को प्रतिनिधित्व की
समानता दीजिए तो वह एक अव्यावहारिक सरकार बन जायगी;
अपने तथाकथित दोषों के साथ जैसी सरकार बनी हुई है वही आज
की सरकारों में सबसे अच्छी है।" और इसी विचारधारा ने इन दो
सज्जनों के राजनीतिक विचारों को पृथक् बना दिया। इनमें से एक-
वंशानुगत शाखाओं और एक निर्वाचित ईमानदार शाखा के पक्षपाती थे,
और दूसरे वंशानुगत सम्राट् और उमराव-सभा तथा लोक-सभा के पक्षपाती थे
जिनको वह अपनी मरजी से भ्रष्ट कर सकते थे और जो कि उनके और
जनता के बीच में खड़ी रह सकती थीं।

हैमिल्टन वास्तव में एक अनुपम व्यक्ति था। उसकी प्रखर बुद्धि और
अनभिरोचित वृत्ति थी। वह सब निजी मामलों में ईमानदार और इज्जतदार
था, समाज में सुशीलता और सौजन्यता का व्यवहार करता और व्यक्तिगत
में सद्गुणों की कीमत करता था, किन्तु ब्रिटिश उदाहरण से वह
मोहित एवं विकृत हो चुका था कि एक राष्ट्र के शासन के

लिए भ्रष्टाचार को अनिवार्य समझने लगा था। मिस्टर एडम्स शुरू में रिपब्लिकन थे। एक राज्य कार्य से इंगलैंड जाने पर वहाँ बादशाही और नवाबी तड़क-भड़क देखकर उनका यह विश्वास हो गया था कि शासन चलाने के लिए यह आडम्बर एक आवश्यक तत्त्व है; और शे की क्रान्ति से, जो कि उस वक्त पूरी तरह न समझी जाती थी, यह प्रतीत होने लगा था कि अभाव और उत्पीड़न न होना ही सुव्यवस्था की गारण्टी नहीं है। अमेरिकन संविधान पर उनकी पुस्तक ने उनके राजनीतिक झुकाव को स्पष्ट कर दिया था, और उनकी अनुपस्थिति में सम्राट्वादी फेडरलिस्टों ने लाभ उठाया और उनके लौटकर आने पर उन लोगों ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि हमारे नागरिकों का अधिकांश झुकाव सम्राट्वाद की ओर है। यहाँ उन्होंने 'डेविला' नामक पुस्तक लिखी जो कि उनकी पहली पुस्तक के परिशिष्ट के रूप में ही थी, और प्रेसीडेण्ट के पद के लिए उनके निर्वाचन ने उनको गलतियों को पक्का कर दिया।

चतुराई से चुने हुए शब्दों में असंख्य अभिनन्दनों ने उनको यह धोखा दिलाया कि वह लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर पहुँच चुके हैं जब कि वास्तव में उनके पैरों तले ही खाई बनती जा रही थी जो उन्हें और उनको धोखा देने वालों को हड़पने वाली थी। जैसे ही जनरल वाशिंगटन अपने पद से हटे, सम्राट्वाद के हिमायती, जो अभी तक वाशिंगटन की ईमानदारी, उनकी दृढ़ता, देश-प्रेम और उनके नाम की ताकत से डरकर दबे हुए थे, अब निरंकुशता के साथ राज्य के रथ पर आरूढ़ होकर दाएँ-बाएँ या कुछ भी देखे बिना अपने लक्ष्यों की ओर दौड़ने लगे और तब तक दौड़ते रहे जब तक कि राष्ट्र की आँखें न खुलीं और उन्हें लोक-परिपाटी से न हटाया गया।

मेरा विश्वास है कि मिस्टर एडम्स अपने शासन-काल में बहुत पहले से ही उन विश्वासघातियों को पहचान गए थे जिनसे वह सदैव घिरे रहते थे। उन्होंने यह अच्छी तरह देख लिया था कि उनको अपने पद पर नियुक्त करने वाले लोग रिपब्लिकन सरकार के भक्त थे, और चाहे उनकी

निर्णय-बुद्धि अपने पुराने दल पर ही पुनः क्यों न रुक गई हो, एक अच्छे नागरिक के नाते उन्हें बहुमत की इच्छा का पालन करना था, और इसलिए मुझे विश्वास दिलाया गया कि अब वह सरकार के प्रजातन्त्रवादी गठन को कायम रखने के लिए अपनी सारी लगन और भक्ति के साथ काम करेंगे क्योंकि उनके एक शत्रु तक ने कहा है कि "वह हमेशा ईमानदारी और अक्सर महानता के साथ पेश आते हैं।" लेकिन जिसने उन लोगों के जोश और गुब्बार को नहीं देखा है जिन्होंने उन्हें अपना टट्टू बनाया था, वह उस बेलगाम पागलपन और भयंकरता का अन्दाज नहीं लगा सकते। फ्रांसीसी क्रान्ति ने, जो उस समय छिड़ी हुई थी उन्हें खास तौर पर मदद दी, और उनकी कपटपूर्ण चालें, जिसका मुख्य संचालक वह इतिहासकार[1] था, षड्यन्त्रों की उनकी कहानियों, समुद्रों पर की गई हत्याओं, खूनी डोंगियों, धर्मोपदेश के आसन से बोले गए झूठ और मिथ्या वर्णनों ने मजबूत-से-मजबूत दिल को दहला दिया। उनके महान्यायवादी की यह हिमाकत थी कि उसने एक रिपब्लिकन सदस्य से कहा कि देश-निकाला काम में लाया जाना चाहिए जिसके लिए उसने कहा कि "तुम रिपब्लिकनों ने उदाहरण पेश किया है," जिसका अर्थ था कि वह हमको फ्रांस के खूनी जेकोबिन के सदस्य बताने की हिम्मत कर रहा है।

यह बातें अब रात के सपने-जैसी लगती हैं, किन्तु उन दिनों कठोर वास्तविकताएँ थीं। उनके स्वतन्त्रता-घातक परिणाम से हमें बचाने वाला केवल उन अविचल आत्माओं का दृढ़ विरोध था जो डर और धमकी के बावजूद भी अपनी जगह डटे रहे जब तक कि साथी नागरिकों को उनके पुनः अपने अधिकारों के प्रति न जगाया गया और उन्हें संविधान के आदर्श की रक्षा के लिए न बुलाया गया। यह खुशी की बात है कि यह काम पूरा हो चुका है। फेडरलवादी और रिपब्लिकन उस समय से पिछले युद्ध तक होते रहे जब कि उन्होंने अपने देश के दुश्मनों से मिलकर स्वदेश की भंग

1. जेफरसन

करना चाहा और हार्टफोर्ड सम्मेलन आयोजित किया और अपने इस विश्वासघातक कार्य के लिए वे हमेशा के लिए दफना दिए गए। अब मुझे आशा है कि "हम सच्चाई के साथ कह सकते हैं कि हम सब रिपब्लिकन हैं और सब फेडरलिस्ट हैं," और हमारा नारा होगा, जिसके पीछे सारा देश रहेगा—'फेडरल संघ और रिपब्लिकन सरकार।' और मेरा विश्वास है कि एकता के इस केन्द्र के बचे रहने का श्रेय उस विरोध को है जिसका उद्दीपन इस इतिहास में चतुराई से किया गया है।

इस इतिहास का अधिक भाग संसार को विदित है जिसके घनिष्ठ प्रमाण इन कागजातों में मिलेंगे। जहाँ यह कागज़ात खत्म होते हैं यानी जब से मैंने शासन को छोड़ा, फेडरलिस्टों ने जनरल वाशिंगटन को अपने वश में कर लिया। वृद्धावस्था के कारण उनकी याददाश्त कम पड़ती जा रही थी, और उनके मस्तिष्क की प्रखरता भी, जिसके लिए वह प्रसिद्ध थे, होती जा रही थी। उनकी शक्ति शिथिल पड़ गई थी, मेहनत उनसे कम होती थी, और शान्तिपूर्ण जीवन की इच्छा उन पर छा रही थी, वह दूसरों को काम करने देना चाहते थे, यहाँ तक कि अपने सोचने का काम भी वह दूसरों से करवाना चाहते थे। शेष मानवता की तरह वह भी फ्रांसीसी क्रान्ति के अत्याचारों से क्षुब्ध थे, लेकिन वह उन उपद्रवियों को, जो उन अत्याचारों के साधन थे और अमरीकन जनता के दृढ़ एवं विवेकशील चरित्र के अन्तर को अच्छी तरह न समझते थे क्योंकि उन्हें अमरीकन जनता के चरित्र में पर्याप्त विश्वास न था। ब्रिटिश सन्धि पर रिपब्लिकनों का विरोध और फेडरलिस्टों को प्रिय पर जनता को अप्रिय लगने वाली कार्रवाइयों के उनके समर्थन ने उन्हें फेडरलिस्टों का पक्षपाती बना दिया। यह जानते हुए कि मैं उस सन्धि के खिलाफ हूँ, और मेरे एक विद्वेषी पड़ोसी की झूठी बातों पर पलते रहने के कारण—जो कि उनका संवाददाता बनने की आकांक्षा रखता था—उन्होंने अपने-आपको मुझसे व्यक्तिगत तौर पर अलग कर लिया था, जिस प्रकार कि अपने सब रिपब्लिकन साथियों से वह अलग हो गए थे। अब वह मिस्टर एडम्स और मिस्टर केरोल को पत्र लिखते थे जिस

उनकी व्याकुलाहट बनी रही, और सभा-विसर्जन होने के बाद उन्होंने हमको भ्राताओं से कहा—"एक बार तुमने मुझे बना लिया पर अब ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ दुबारा तुम मुझे न बना पाओगे।"

२३ मई, १७६३

······फ्रेनू के कल के समाचार-पत्र[1] के एक लेख की ओर उन्होंने (प्रेसीडेण्ट वाशिंगटन) मेरा ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने कहा कि उनके ऊपर किये गए सब व्यक्तिगत हमलों का उन्हें बुरा लगता है लेकिन फिर भी सरकार का कभी कोई ऐसा काम नहीं हुआ—कार्यपालिका या और किसी विभाग द्वारा—जिसकी इस समाचार-पत्र ने बुराई न की हो। यह बात उन्होंने रिपब्लिक शब्द पर भी लागू की जो कि वास्तव में फ्रांसीसी रिपब्लिक के लिए प्रयोग किया गया था······प्रत्यक्षतः उन्हें बहुत बुरा लगा था और जहाँ तक मैं समझा वह यह चाहते थे कि मैं फ्रेनू के काम में दखल दूँ और शायद यह भी चाहते थे कि मैं उसे अपने दफ्तर से निकाल दूँ जहाँ कि वह अनुवाद-कार्य करता था। लेकिन मैं ऐसा न करूँगा। उसके अखबार ने हमारे संविधान की रक्षा की है जो कि सम्राट्-वाद के गर्त में गिरता जा रहा था, और इस कार्य के लिए उसके अखबार से अधिक शक्तिशाली साधन हमारे पास न था।

२४ जनवरी, १८००

हैमबुर्ग के एक व्यापारी मिस्टर स्मिथ ने मुझे निम्न लिखित सूचना दी है : न्यूयॉर्क की सेण्ट एण्ड्रयू-क्लब ने हाल में एक सार्वजनिक भोज आयोजित किया। मेहमानों में एलेक्जैण्डर हैमिल्टन भी थे। पहला जामेसेहत था 'संयुक्त राज्यों के प्रेसीडेण्ट' के लिए। किसी विशेष सम्मान या अनुमोदन किये बिना ही यह जाम पिया गया। दूसरा जामेसेहत था 'जॉर्ज तृतीय' के लिए। हैमिल्टन तनकर खड़ा हो गया और उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि जाम लबालब भरकर पिये जायँ और तालियाँ बजाई जायँ। सब उपस्थित व्यक्ति उठ खड़े हुए और उन्होंने तालियाँ बजाईं।

[1] फिलिप फ्रेनू का फेडरलिस्ट-विरोधी पत्र—नेशनल गजट।

परिचय

प्रजातन्त्र के प्रवर्तकों में से होने के नाते और संयुक्त राज्यों के प्रारम्भिक
म के प्रमुख पात्रों को घनिष्टता से जानने के कारण टॉमस जेफ़रसन
प्रतः उनके जीवन के अंतिम वर्षों में, इतिहासकारों और जीवन-
रों को सामग्री देने की माँग की जाती थी। यह संक्षिप्त जीवन-
इसी माँग को पूरा करने के लिए लिखी गई थी जो कि यहाँ अपने
रूप में छापी जा रही है।

प्रसिद्ध व्यक्तियों के रेखाचित्र

जार्ज वाशिंगटन का चरित्र[1]

मेरा ख्याल है कि मैं जनरल वाशिंगटन को खूब अच्छी तरह घनिष्ठता के साथ जानता था; और यदि मुझसे उनका चरित्र-चित्रण करने के लिए कहा जाय तो मैं निम्न लिखित शब्दों में करूँगा।

उनका मस्तिष्क महान् और शक्तिशाली था लेकिन उसे श्रेष्ठतम श्रेणी में नहीं रखा जा सकता था; उनकी बुद्धि प्रखर थी लेकिन इतनी प्रखर नहीं कि उसे न्यूटन, बेकन या लॉक की बुद्धि के साथ रखा जा सके; और जहाँ तक वह देख पाते थे उनके निर्णय से और अच्छा निर्णय न हो सकता था; उनके निर्णय करने की गति मन्द थी और उसमें आविष्कार या कल्पना का सहारा न होता था लेकिन उनका निष्कर्ष सदैव सच्चा होता था। इसी कारण उनके पदाधिकारी आम तौर पर कहा करते थे कि वह युद्ध-सम्बन्धी परामर्शों से लाभ उठाते थे जहाँ कि वह सबकी सलाह सुनते

१ डॉ० वाल्टर जोन्स को लिखित जेफरसन के २ जनवरी, १८१४ के पत्र से उद्धृत। डॉ० जोन्स ने जेफरसन को लिखा था कि वह एक ऐतिहासिक कृति तैयार कर रहे हैं जिसमें उन्हें फेडरलिस्ट-रिपब्लिकन संघर्ष काल के वाशिंगटन के चरित्र का चित्रण करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

वह अपने ज़माने के सबसे अच्छे घुड़सवार थे और घोड़े की पीठ पर सबसे शानदार लगते थे। अपने दोस्तों के बीच में, जहाँ उन्हें दिल खोलकर बातें करने में खतरा न था, वह खुलकर बातें करते थे, लेकिन वार्तालाप करने की उनकी योग्यता साधारण ही थी, न उनमें विचारों की बहुलता थी और न शब्दों की धाराप्रवाहिकता। सार्वजनिक स्थानों में यदि उनकी राय अचानक माँगी जाती तो वह अपने-आपको तैयार न पाते और संक्षेप में अकुलाहट के साथ अपनी राय व्यक्त करते; लेकिन लिखते वक्त वह तेज़ी और विस्तार के साथ लिखते थे और उनकी शैली शुद्ध होती थी। यह कला उन्होंने सब तरह के लोगों से बातचीत करते रहने से सीखी थी, क्योंकि उनकी अपनी शिक्षा पढ़ने, लिखने और सामान्य गणित तक ही सीमित थी, जिसमें बाद में ज़मीन की पैमाइश की तालीम भी शामिल हो गई थी। उनका वक्त ज्यादातर काम करने में बीतता था, पढ़ाई में कम; और वह पढ़ाई भी कृषि-शास्त्र और इंगलिश इतिहास होता। उनके पत्र-व्यवहार का ज्यादा होना अनिवार्य था ही, और वह अपनी फ़ुरसत का ज़्यादा वक्त कृषि-शास्त्र-सम्बन्धी बातें लिखने में लगाते थे। यदि उनके चरित्र के सब अंगों को मिलाकर देखा जाय तो वह पूर्ण था, उसके किसी अंग में कोई खराबी न थी, हालाँकि कई बातें ऐसी भी थीं जिनके बारे में अच्छा या बुरा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। और सचाई के साथ यह कहा जा सकता है कि प्रकृति और विधाता ने मिलकर उनसे अधिक परिपूर्ण व्यक्ति कभी नहीं बनाया, और न कभी ऐसे व्यक्ति को उन महान् विभूतियों की श्रेणी में रखा जो अपने गुणों के कारण मनुष्यों द्वारा चिर-स्मरणीय रहेंगे। एक कठिन युद्ध का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने, स्वतन्त्रता की स्थापना करने, नये रूप और नये सिद्धान्तों का सामना करते हुए राष्ट्रीय परिषदों का निर्देशन करके एक नई सरकार को जन्म देने का अनुपम भाग्य और गुण उन्हीं में था; इस नई सरकार की स्थापना और सुव्यवस्था करने तथा कानूनिक एवं सैनिक नियमों को जीवन-भर सावधानी से मानते रहने का गुण केवल उन्हीं में था और ऐसा उदाहरण संसार के इतिहास में

कि नजराने की प्रथा, जन्म-दिनों के समारोह, कांग्रेस की आडम्बरपूर्ण बैठकों और इस प्रकार की अन्य बातों को प्रचलित करें वह क्रमशः एक परिवर्तन लाना चाहते थे और अन्त में सार्वजनिक मस्तिष्क को ब्रिटिश संविधान जैसे विधान के लिए तैयार करना चाहते थे।

जनरल वाशिंगटन के प्रति यह हैं मेरे विचार, जो तीस वर्ष के सम्पर्क के बाद बने हैं और जिनकी सत्यता के लिए मैं ईश्वर की सौगन्ध खाता हूँ। वर्जिनिया विधान-सभा में मैं उनके साथ १७६६ से क्रान्तिकारी युद्ध तक काम करता रहा, और फिर कुछ समय के लिए कांग्रेस में भी। इसके बाद वह सेना का नेतृत्व करने चले गए। युद्ध के दौरान में और बाद में भी हम अवसर पत्र-व्यवहार करते रहते थे, और राज्य-मन्त्री के पद पर रहते हुए चार वर्षों तक मेरा और उनका दैनिक सम्पर्क रहता था जो कि हार्दिक एवं विश्वस्त सम्पर्क था। राज्य-मन्त्री के पद से मेरे रिटायर होने के बाद सम्राट्-वादियों ने उन्हें कपटपूर्वक यह समझाने की जी तोड़ कोशिश की कि मैं केवल सिद्धान्तवादी हूँ और शासन-सम्बन्धी फ्रांसीसी सिद्धान्तों का अनुयायी हूँ जो कि अनिवार्यतः दुराचार और अराजकता की ओर ले जायेंगे; और उन लोगों के इस समझाने का उन पर प्रभाव भी पड़ा। इस सीख को उन्होंने इसलिए भी सुना क्योंकि मैंने ब्रिटिश सन्धि का विरोध किया था। बाद में मैं उनसे कभी न मिला नहीं तो उनकी न्यायसंगत निर्णय बुद्धि के सामने इन द्वेषपूर्ण आरोपों को उस प्रकार दूर कर देता जैसे कि सूर्य के सामने कुहरा दूर हो जाता है। उनकी मृत्यु से मैंने अपने देशवासियों के साथ अनुभव किया कि "आज एक महान् पुरुष का इसराईल में अस्त हुआ है।"

बेन्जामिन फ्रैंकलिन के किस्से

हमारी क्रान्तिकारी कार्रवाइयाँ, जैसा कि सब जानते हैं, पुरानी कांग्रेस के प्रार्थना-पत्रों, स्मारकों तथा कष्ट-निवारण की प्रार्थनाओं आदि से आरम्भ हुईं। इसके बाद विदेश से माल न मँगाने का समझौता हुआ जो कि प्रति-रोध का एक शान्तिपूर्ण साधन था। जब कि यह समझौता और हथियारों आदि के छोटे अपवाद कांग्रेस के सब क्षेत्रों से खड़े किये जा रहे थे, मैं डॉ०

फ्रैंकलिन के पास बैठा था और मैंने उनसे कहा कि हमें किताब
रोक-थाम नहीं करनी चाहिए, और न विज्ञान पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए
चाहे वह शत्रु के पास से ही क्यों न आए। उनका भी यही ख्याल था,
और मैंने इस अपवाद का प्रस्ताव रखा जो स्वीकृत हुआ। और इसके थोड़ी
देर बाद ही यह विचार आया कि औषधि-विज्ञान का भी अपवाद होना
चाहिए, अतः यह सुझाव भी मैंने डॉक्टर फ्रैंकलिन के सामने रखा। उन्होंने
कहा, "इसके बारे में मैं तुम्हें एक किस्सा सुनाऊँगा। जब फलाँ साल मैं
लन्दन में था तब वहाँ डॉक्टरों की एक हफ्तेवार बैठक हुआ करती थी जिसके
सभापति सर जॉन प्रिंगल थे। एक बार मेरे मित्र डॉ॰ फॉदरगिल ने इस
बैठक में सुविधा पाकर आने के लिए मुझे आमन्त्रित किया। इस क्लब का
कायदा यह था कि एक हफ्ते किसी विषय को सामने रखा जाता और दूसरे
हफ्ते उस पर बहस की जाती। जिस दिन मैं वहाँ मौजूद था बहस का विषय
था—डॉक्टरों से बहुत फायदा हुआ है या नुकसान? सभा के युवक सदस्यों
द्वारा इस विषय की विद्वतापूर्वक व्याख्या किये जाने के बाद जब कुछ बाकी
न बचा तो एक सदस्य ने सर जॉन प्रिंगल से कहा कि हालाँकि सभापति द्वारा
बहस में भाग लेने का आम तौर पर तरीका नहीं है, लेकिन फिर भी इस
मसले पर वे उनकी राय जानने के इच्छुक हैं। सर जॉन प्रिंगल ने कहा कि
उन्हें पहले यह बताया जाय कि क्या डॉक्टरों में बूढ़ी औरतें भी शामिल
हैं, अगर हैं तो डॉक्टरों ने नुकसान की बजाय फायदा ज्यादा किया है, और
अगर बूढ़ी औरतें डॉक्टरों में शामिल नहीं तो डॉक्टरों से फायदे की बजाय
नुकसान ज्यादा हुआ है।"

पुरानी कांग्रेस के जमाने में राज्यों का सम्मिलित संघ छोटे राज्यों को
अपने संघ में मिलाने के खिलाफ था, क्योंकि उन्हें डर था कि बड़े राज्य
छोटे राज्यों को हड़प जायेंगे। इस विषय पर बहुत लम्बी बहस छिड़ गई
जिससे सरगर्मी और मनमुटाव पैदा हो गया और कुछ सदस्य अर्संगत
भाषण देने लगे। आखिर डॉक्टर फ्रैंकलिन ने अपने एक छोटे-से नहीहत
के किस्से से बहस को खत्म किया। उन्होंने बताया कि "इंगलैण्ड औ

स्कॉटलैण्ड के संयुक्त होने के समय आर्गाइल के ड्यूक इस कार्रवाई के सख्त खिलाफ थे और उनकी भविष्य-वाणी थी कि जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को हड़प जाती है उसी प्रकार इंगलैण्ड स्कॉटलैण्ड को हड़प जायगा। लेकिन," डाक्टर फ्रैंकलिन ने बताया, "जब लॉर्ड ब्यूट सरकार में शामिल हुए तो उन्होंने इतने अधिक अपने देशवासियों को सरकार में लगा दिए कि देखा गया कि छोटी मछली ने बड़ी मछली को हड़प लिया।" इस छोटे किस्से को सुनकर सब हँस पड़े और आपसी मनमुटाव दूर हो गया, और अन्त में वह कठिन अनुच्छेद भी पास हो गया।

जब डॉक्टर फ्रैंकलिन अपने क्रान्तिकारी प्रचार के लिए फ्रांस गए तो दार्शनिक के रूप में उनकी प्रसिद्धि, उनके आदरणीय स्वरूप और जिस कार्य के लिए वह भेजे गए थे उसकी महिमा ने उन्हें अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया सब श्रेणी और सब स्थिति के लोग क्रान्ति में अमेरिका की दिलचस्पी पर घुल घुलकर बातें करते थे। अतः डॉक्टर फ्रैंकलिन को सब दरबारी दावतों में न्यौता दिया जाता था। इन दावतों में अक्सर वह बोरबोन की वृद्धा डचेस से मिलते थे जो उनके बराबर ही शतरंज की खिलाड़ी थीं। एक बार शतरंज खेलते हुए डॉक्टर ने डचेस का बादशाह मार लिया। वह बोलीं, "आह, हम लोग इस तरह बादशाह नहीं मारते।" डॉक्टर ने जवाब दिया, "हम लोग अमेरिका में इसी तरह मारते हैं।"

ऐसी ही एक दावत में सम्राट् जोसेफ तृतीय उपस्थित थे जो कि उन दिनों पेरिस में अपना नाम काउण्ट फॉकेन्सटाइन रखकर गुप्त रूप से रह रहे थे। जब कि उपस्थित व्यक्ति अमरीकन प्रश्न पर जोर-शोर से बातें कर रहे थे सम्राट् जोसेफ शतरंज की बाजी को चुपचाप देख रहे थे। डचेस ने उनसे पूछा, "क्या बात है कि जब सब लोग अमरीकनों के सवाल में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं, आप चुप हैं?" उन्होंने कहा "मेरा व्यापार ही बादशाहत करना है।"

जब कि कांग्रेस में स्वतन्त्रता की घोषणा पर विचार हो रहा था, घोषणा में दो-तीन कुछ ऐसे अभागे वाक्यांश थे जिन पर कुछ सदस्यों को आपत्ति

ज्जन को आपत्ति थी। गुलामी के व्यापार की इजाजत देने वाले कानून की
र-बार हमारे द्वारा खण्डन किये जाने के बाद भी ब्रिटिश सम्राट् द्वारा
लामों के व्यापार की बातचीत करने पर कुछ सख्त शब्द कहे गए थे,
ी कि कुछ दक्षिणी राज्यों को पसन्द न थे क्योंकि इस घृणास्पद व्यापार के
ति उनके विचार पूरी तरह परिष्कृत न थे। यद्यपि आपत्तिजनक शब्दों को
िकाल दिया गया फिर भी यह सज्जन घोषणा के अन्य भागों की कड़ी
आलोचना करते रहे। मैं डॉक्टर फ्रैंकलिन के पास बैठा हुआ था जिन्होंने
या कि मुझे यह रद्दोबदल का बुरा लग रही है। वह बोले, "मैंने यह
ूल बनाया है कि जहाँ तक हो सके किसी ऐसे मसविदे को न लिखूँगा
सकी रद्दोबदल पब्लिक द्वारा की जाय। इस बात का सबक मैंने एक
टना से सीखा है जो मैं तुम्हें सुनाता हूँ। जब मैं छापेखाने के काम से
रे पर जाया करता था एक टोपी बनाने वाला नौसिखिया मेरा साथी था,
ी काम सीख लेने के बाद उन दिनों अपनी निजी दुकान खोलने वाला था।
क खूबसूरत साइनबोर्ड बनवाने की फिक्र उसे सबसे पहले थी जिस पर
पयुक्त शब्द लिखे गए हों। उसने खुद इन शब्दों को चुना था—'जॉन
ामसन, टोपी वाले, टोपी बनाने और नकद बेचने वाले' और इन शब्दों
साथ एक टोपी की तस्वीर बनवाने का भी उसका इरादा था। लेकिन इस
रे में उसने अपने मित्रों की राय लेनी चाही। उसके पहले मित्र ने सोचा
: 'टोपी वाले' शब्द की व्यर्थ पुनरुक्ति हुई है क्योंकि, 'टोपी बनाने' शब्दों
यह स्पष्ट है कि वह टोपी वाला है। दूसरे मित्र ने यह सुझाया कि 'टोपी
ाने' शब्दों को हटाया जा सकता है, क्योंकि ग्राहकों को इससे वास्ता नहीं
टोपियाँ कौन बनाता है, अगर टोपियाँ अच्छी हैं तो वे यह सोचे बिना
ीदेंगे कि उन्हें किसने बनाया है। यह शब्द भी निकाल दिए गए। एक
सरे मित्र ने राय दी कि 'नकद' शब्द व्यर्थ है, क्योंकि उधार टोपी बेचने
प्रथा नहीं है, जो कोई भी टोपी खरीदेगा वह नकद पैसे देगा। अतः
कद' शब्द भी निकाल दिया गया और अब सिर्फ इतना रह गया 'जॉन

थॉमसन, टोपी बेचने वाले' । एक और मित्र ने कहा 'टोपी बेचने वाले'—क्या मतलब है ! कोई यह उम्मीद थोड़े ही करेगा कि तुम टोपी दान दोगे, तो फिर 'बेचने वाले' शब्दों की क्या जरूरत है ? यह शब्द भी निकाल दिए गए। तो अन्त में यही शब्द बाकी बचे 'जॉन थॉमसन' और साथ में एक टोपी की तस्वीर ।"

पेरिस में डॉक्टर फ्रैंकलिन ने महन्त रेनल के निम्न लिखित दो किस्से मुझे सुनाये। महन्त रेनल ने पैसी में एक दावत दी जिसमें आधे अमरीकन और आधे फ्रांसीसी थे और फ्रांसीसियों में खुद महन्त रेनल भी थे। दावत के दौरान में महन्त रेनल अपनी हमेशा की आदत के अनुसार अमरीका के जानवरों और आदमियों के पतन के अपने सिद्धान्त पर धाराप्रवाह भाषण देने लगे। तब डॉक्टरों ने मेहमानों की बैठने की स्थिति और उनके डील-डौल पर गौर किया तो वह बोले, "सुनिए महन्त जी, इस सवाल को तथ्यों की कसौटी पर जाँचिए। यहाँ उपस्थित लोगों में आधे हम अमरीकन हैं और आधे फ्रांसीसी, और किस्मत की बात है कि अमरीकन मेज के इस ओर बैठे हैं और हमारे फ्रांसीसी भाई दूसरी ओर। आइए, हम दोनों लोग खड़े हों और देखें कि प्रकृति ने किस पक्ष का पतन किया है।" भाग्यवश अमरीकन मेहमानों में कारमाईकेल हार्मर और हम्फ्रीस और दूसरे लोग थे जो कि बहुत अच्छे डीलडौल के थे जब कि दूसरी तरफ खड़े फ्रांसीसी उनके सामने बेहद छोटे नजर आ रहे थे, जिनमें खास तौर पर महन्त जी खुद एक केंकड़े की तरह छोटे दिखाई दे रहे थे। इस दलील के जवाब में उन्हें यह मानना पड़ा कि अपवाद तो होते ही हैं जिनमें डॉक्टर फ्रैंकलिन प्रत्यक्षतः एक अपवाद हैं।

एक दिन पैसी में जब कि डाक्टर फ्रैंकलिन और साइलास डीन महन्त के लिखे हुए एक इतिहास की गलतियों के बारे में चर्चा कर रहे थे कि उसी वक्त महन्त आ पहुँचे। सलाम-दुआ करने के बाद साइलास डीन ने उनसे कहा, "अभी-अभी मैं और डॉक्टर उन अशुद्धियों की बात कर रहे थे जो कि आपने अपने इतिहास में रखी हैं।" "नहीं साहब, यह नामुमकिन है,"

ड्स, एडमंड पेंडलिटन, निकोलस, ब्लाण्ड और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति
रा किया गया, जो कि एक लम्बे अरसे से सभा के नेता थे तो, वह किसी
द्धान्तिक मतभेद के कारण नहीं किया गया था बल्कि इसलिए किया गया
क्योंकि इन भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा अधिकारों की पुष्टि गत बैठक
पेश किये गए पत्रों द्वारा पहले ही हो चुकी थी, जिनका उत्तर अभी तक
मिला था।

अगस्त १७७५ में वह कांग्रेस के सदस्य नियुक्त हुए और १७७६ में
होंने स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किये, जिसके वह बहस के दौरान
एक प्रमुख समर्थक थे। इसी वर्ष उन्हें वर्जिनिया की विधान-सभा ने
य के कानूनों तथा ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिनियमों के पुनर्विलोकन के
ए बनाई हुई समिति का सदस्य नियुक्त किया तथा विधेयकों के पुनः
अनियमित करने का काम भी सौंपा—यह काम शासन के परिवर्तित रूप
सिद्धान्तों और अन्य परिस्थितियों को देखते हुए किया जाना था।
तेरह की क्रान्ति से लेकर यहाँ नई सरकार की स्थापना की अवधि तक
स काम को उन्होंने किया, लेकिन जिसमें उत्तराधिकार की व्यवस्था,
मिक स्वतन्त्रता तथा अपराध और दण्ड के अनुपात से सम्बन्धित अनु-
शामिल नहीं थे। १७७७ में वह संसदीय नियमों तथा कार्यवाहियों के
होने के कारण डेलीगेट-सभा के अध्यक्ष चुने गए; और इसी वर्ष के
में नई सरकार द्वारा संस्थापित न्यायपालिका के तीन चांसलरों में से
का स्थान उन्हें मिला। न्यायालय के रूप में परिवर्तन किये जाने के
उन्हें एकमात्र चांसलर नियुक्त किया गया और अपने देहान्त पर्यन्त,
१८०६ तक, जब कि वह ७८ या ७९ वर्ष के थे; इसी पद पर बने रहे।
मिस्टर वाइथ के दो विवाह हुए थे: पहले, मेरा ख्याल है, मिस्टर
की पुत्री के साथ, जिनके साथ उन्होंने कानूनी शिक्षा पाई थी, और
मिस टेलियाफेरो के साथ, जो कि विलियम्सबर्ग के पास के एक धनी पर
र परिवार की लड़की थी। इन दोनों पत्नियों से कोई बच्चा न हुआ।

मिस्टर वाट्स की मृत्यु के बाद उनके चरित्र को जिस श्रद्धा के साथ देखा जाता है वैसी श्रद्धा शायद ही किसी व्यक्ति ने पाई हो। उनकी नीति पवित्रतम, उनकी सचाई अडिग और उनका न्याय अचूक था। अपने देश-प्रेम और मानव के प्रकृतिदत्त तथा समान अधिकारों में अपनी निष्ठा के कारण वह अपने देश के महानतम पुत्रों में से थे। शराब न पीने और आदतों की नियमितता से उनका स्वास्थ्य अच्छा था, तथा अपनी विनम्रता व सौजन्यतापूर्ण व्यवहार के कारण वह सबको प्रिय थे। उनका भाषण सुन्दर और भाषा सुसंस्कृत थी; वह प्रत्येक विषय को क्रमानुसार एवं विद्वता तथा युक्ति के साथ पेश करते थे। वादविवाद में वह अपनी सुशीलता कायम रखते थे : हर चीज को तुरन्त तो नहीं समझ पाते थे किन्तु थोड़ी देर बाद उसे एक गहराई से समझते और एक दृढ़ निष्कर्ष पर पहुँचते। उनके सिद्धान्त दृढ़ थे किन्तु अपने धार्मिक सिद्धान्त से न तो उन्होंने किसी को तकलीफ दी और न शायद किसी का विश्वास किया। वह अपने आदर्श चरित्र से संसार के सामने यह उदाहरण पेश कर गए कि वह धर्म निश्चय ही उत्तम धर्म होगा जिसने उनकी-जैसी महान् आत्मा को जन्म दिया।

वह मझोले कद के थे और उनका शरीर सुगठित और उनके कद के अनुरूप था। उनके चेहरे में मर्दानगी, खूबसूरती और एक आकर्षण था। ऐसे थे जॉर्ज वाट्स, अपने युग के आदर-पात्र और भविष्य के आदर्शस्वरूप।

सार्वजनिक लेख्य

'ब्रिटिश अमेरिका के अधिकारों का एक मालिन अवलोकन, १७७ निर्णय किया गया कि अपने प्रतिनिधियों को यह आदेश दिया जाय कि ये जब ब्रिटिश अमेरिका के अन्य राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ कांग्रेस की आम बैठक में उपस्थित हों तो कांग्रेस के सामने यह प्रस्ताव रखें कि सम्राट् से, ब्रिटिश साम्राज्य के मुख्य महत्तक होने के नाते यह निवेदन किया जाय कि वह अमेरिका की अपनी प्रजा की सम्मिलित शिकायतों की ओर ध्यान दें, जो कि साम्राज्य की एक विधान-सभा द्वारा उन अधिकारों और नियमों के अनुचित अतिक्रमण और अपहरण से उत्पन्न हुई हैं, जो ईश्वर ने सबको समान रूप से स्वतन्त्रतापूर्वक प्रदान किए हैं। सम्राट् को यह बताया जाय कि इन राज्यों ने अपने कुण्ठित अधिकारों के रक्षार्थ सम्राट् का हस्तक्षेप प्राप्त करने के लिए कई बार विनयपूर्वक आवेदन-पत्र भेजे परन्तु जिनका उत्तर तक न दिया गया। विनम्रतापूर्वक यह आशा की जाती है कि यह सम्मिलित आवेदन-पत्र, जो कि सत्य की भाषा और दासता के शब्दों में लिखा गया है, सम्राट् द्वारा स्वीकृत होगा जब कि वह देखेंगे कि हम अपने अधिकारों की माँग नहीं बल्कि उनकी कृपा की भीख माँग रहे हैं; और हमारा विश्वास है कि जब सम्राट् यह सोचेंगे कि वह केवल जनता के मुख्य अधिकारी हैं, जो कानून द्वारा नियुक्त हुए हैं, जिनकी शक्तियाँ सीमित

हैं और जिनका काम जनता के हित के लिए बनाई हुई सरकारी मशीन को चलाने में सहायता देना है तो वे हमारे आवेदन-पत्र पर विचार करेंगे और चाहेंगे कि हमारे अधिकार और उनके अतिक्रमण को इन देशों के बसने के समय से अब तक अच्छी तरह देख सकें।

सम्राट् को यह याद दिलाया जाय कि हमारे पूर्वज, अमरीका में बसने से पूर्व यूरोप के ब्रिटिश राज्यों के निवासी थे और उन्हें अधिकार था, जो कि प्रकृति ने समस्त मनुष्यों को दिया है, कि वे जिस देश में भाग्यवश न कि इच्छावश रहते थे, उसे छोड़कर नई आबादियों की तलाश में जायँ, नये समाजों का निर्माण करें और ऐसे कायदे कानून बनायें जो कि सर्व-साधारण के सुख की अभिवृद्धि कर सकें। इस विश्वजनीन नियम के अन्तर्गत हमारे सैक्सन पूर्वज, योरोप के उत्तर में स्थित अपने जंगलों को छोड़कर ब्रिटिश द्वीप में आ बसे थे, जो कि उन दिनों प्रायः निर्जन था, और वहाँ उन्होंने ऐसे नियमों की व्यवस्था बनाई जो कि उस देशकी सुरक्षा और गौरव की वृद्धि का कारण थी। ब्रिटेन के निवासियों पर उनके मातृभूमि के देश ने, जहाँ से कि वे लोग आए थे, कभी कोई प्रभुत्व या अधिकार नहीं जताया, और अगर कोई ऐसा दावा किया गया होता तो ग्रेट ब्रिटेन की प्रजा अपने पूर्वजों से प्राप्त अधिकारों के प्रति दृढ़ आस्था रखने के कारण ऐसे किसी मनमाने दावे को स्वीकार न करती। और यह ख्याल है कि अमेरिका में ब्रिटेन-वासियों के बसने और ब्रिटेन में सैक्सनों के बसने में कोई विशेष अन्तर नहीं है। अमेरिका की जीत और उसकी आबादियों की स्थापना व्यक्तिगत प्रयत्नों से हुई, ब्रिटिश जनता द्वारा नहीं। अपनी बस्तियों के लिए जमीन हासिल करने में उन लोगों का खून बहा, अपनी बस्तियों की वृद्धि करने में उन लोगों को समृद्धि प्राप्त हुई। उन लोगों ने अपने लिए जमीन हासिल की, वे अपने लिए लड़े, और अब अपने लिए उस जमीन को रखने का उन्हें हक है। उन लोगों की मदद के लिए वर्तमान सम्राट् या उनके पूर्वजों के राज्य-कोषों में से तब तक एक पैसा भी नहीं दिया गया जब तक कि उपनिवेश दृढ़ और स्थायी रूप से स्थापित न हो गए। इतना हो जाने के बाद मदद

ा लाभ उठा लेता और ग्रेट ब्रिटेन के लिए खतरा पैदा कर देता।
स्थिति में ऐसी मदद उन्होंने पहले भी पुर्तगाल और अन्य साथी
ो दी थी जिसके साथ उनका व्यापारिक सम्बन्ध था। लेकिन
ों ने यह कभी न सोचा कि वे मदद माँगकर अपने-आपको ब्रिटेन
कर रहे हैं। अगर उनके सामने ऐसी शर्तें रखी जातीं तो वे उन्हें
और अपने दुश्मनों की मेहरबानी का आसरा लेना बेहतर समझते
अपनी शक्ति का अत्यधिक प्रयोग करते। हमारा अभिप्राय ब्रिटेन
हुई सहायता का महत्त्व कम करना नहीं है, जो कि बेशक हमारे
ती साबित हुई, चाहे वह किसी विचार से ही क्यों न दी गई हो;
ब्रिटेन को वे अधिकार नहीं दे सकती जो कि ब्रिटिश संसद् अन्याय-
त करना चाहती है; हम ब्रिटेनवासियों को वे व्यापारिक विशेषा-
सकते हैं जो कि उनके लिए लाभप्रद हों पर हमारी स्वतन्त्रता पर
तबन्ध न लगाते हों। अमेरिका के जंगलों में बस्तियाँ आबाद करने
ा लोगों ने उन कानूनों को अपनाना उचित समझा जिनके अन्तर्गत
क अपनी मातृभूमि में रहते थे, और उसी सम्राट् की अधीनता को
ना चाहा जो कि मातृभूमि से उनका एक-मात्र सम्बन्ध है, और
ार साम्राज्य के नये देशों की शृङ्खला की केन्द्रीय कड़ी है।
। अपनी जिन्दगियों को मुसीबत में डालकर और अपनी धन-
खोकर जो अधिकार उन्होंने प्राप्त किये उन्हें अपने पास सानि-
ए रखने की उन्हें इजाज़त नहीं दी गई चाहे उन्होंने अपने-आपको
कितना ही मुक्त क्यों न समझा हो। ब्रिटिश राजगद्दी पर उन
ों के एक परिवार का राज्य था, जनता के प्रति जिनके देशद्रोही
कारण जनता द्वारा दण्ड दिये जाने के पवित्र एवं प्रभुत्व सम्पन्न
ो काम में लाना पड़ा—यह वे अधिकार थे जिन्हें संविधान ने
न्यायपालिका को सुपुर्द करना मुनासिब नहीं समझा था, और

जिन्हें केवल अत्यधिक आवश्यकता पड़ने पर ही जनता काम में ला सकती थी। जब कि समुद्र के उस पार प्रजा पर शक्ति के नित नये और अन्यायपूर्ण प्रयोग किये जाने लगे, यहाँ यह आशा न थी कि हम नुकसान से बरी रह सकेंगे क्योंकि उस समय हम अत्याचारी चार्लों से अपना बचाव करने के लिए अपेक्षाकृत कम समर्थ थे। तदनुसार यह देश, जो कि कर्मठ पुरुषों के व्यक्तिगत जीवनों, प्रयत्नों और सम्पत्तियों से प्राप्त किया गया था, कई बार इन राजाओं द्वारा अपने प्रियजनों और अनुयायियों में बाँट दिया गया और राजा के एक स्वयंस्वीकृत अधिकार द्वारा इस देश को विभिन्न स्वतन्त्र राज्यों में विभाजित कर दिया गया—यह एक ऐसी कार्रवाई है जिसका आज विश्वास किया जाता है, कि सम्राट् अपनी सद्बुद्धि के कारण अनुकरण न करेंगे क्योंकि किसी देश को इस प्रकार बाँटने का काम सम्राट् के इंगलिश साम्राज्य में कभी नहीं हुआ यद्यपि वह बहुत पुराना साम्राज्य है, और न इस कार्य को यहाँ या सम्राट् के साम्राज्य के अन्य किसी भाग में न्यायोचित करार किया जायगा।

संसार के सब भागों से स्वतन्त्र व्यापार करना अमेरिकन उपनिवेशवादियों ने एक प्रकृतिदत्त अधिकार समझ रखा था जिसको उनके अपने किसी कानून ने कभी नहीं रोका पर अब अनुचित अनुक्रमण किया जा रहा है। कई उपनिवेशों ने सम्राट् चार्ल्स प्रथम के नाम से अपना शासन स्वयं चलाना उचित समझा जिनको ब्रिटिश साम्राज्य ने शपथपूर्वक स्वीकार किया था लेकिन ब्रिटिश संसद् ने अपना यह स्वयं स्वीकृत अधिकार मान लिया कि वह इन उपनिवेशों को ग्रेट ब्रिटेन के अतिरिक्त संसार के अन्य भागों से व्यापार करने से रोके। किन्तु इस स्वेच्छाचारी कार्य को उन्होंने स्वयं अनुचित समझा और ग्रेट ब्रिटेन ने अपने आयुक्तों द्वारा १२ मार्च १६५१ का वर्जिनिया उपनिवेश की वरजेसेस सभा से एक सन्धि की, जिसके आठवें अनुच्छेद में स्पष्टतया कहा गया कि वर्जिनिया को "इंगलैण्ड के लोगों की तरह सब जगहों और सब *राष्ट्रों से स्वतन्त्र व्यापार करने का अधिकार प्राप्त है।*" लेकिन चार्ल्स द्वितीय के सिंहासनारूढ़ होने के बाद स्वतन्त्र व्यापार का अधिकार पुनः स्वेच्छाचारी

शक्ति का शिकार बन गया और इन सम्राट् तथा इनके उत्तराधिकारियों की कई कार्रवाइयों द्वारा उपनिवेशों के व्यापार पर ऐसे प्रतिबन्ध लगाये गए जिनसे यह स्पष्ट है कि यदि ब्रिटिश संसद् की अनियन्त्रित शक्ति का प्रयोग इन राज्यों में होने दिया जाय तो ब्रिटिश संसद् के न्याय के किस रूप की आशा की जा सकती है। इतिहास हमें यह बताता है कि व्यक्तियों तथा व्यक्तियों के समूहों पर अत्याचार की भावना का कितना अधिक प्रभाव पड़ता है। इस बात की सत्यता अगर अन्य सब प्रमाण निकाल दिए जायें तो भी संसद् के उन कार्यों की व्यवस्था में मिलेगी जिन्हें अमेरिकन व्यापार कहा जाता है। इसके अलावा इस व्यवस्था के अन्तर्गत जो चुंगियाँ हमारी आयात और निर्यात की चीजों पर लगाई गई हैं वह हमारे माल को स्पेन के राज्य में, फिनिस्टेरा के अन्तरीप से उत्तर की ओर जाने में प्रतिबन्ध लगाती हैं—यह प्रतिबन्ध उन चीजों पर लागू होता है जो ब्रिटेन न तो खुद हमसे खरीदेगा और न किसी दूसरे को खरीदने देगा, और उन चीजों पर भी जो वह हमें नहीं दे सकता। इस व्यवस्था का यही स्वेच्छाचारी उद्देश्य है कि हमारे अधिकारों और हितों का बलिदान करके एक साथी राज्य से व्यापार करने के विशेषाधिकारों को प्राप्त किया जा सके और यह आश्वासन बना रहे कि अमेरिका से व्यापार करने का केवल उन्हीं को अधिकार है और ब्रिटिश संसद् के सिद्धान्त और उसकी शक्ति वैसी ही बनी रहेगी, जब कि इस बीच हमारी आवश्यकताओं को देखते हुए वे मनमानी ज्यादती कर सकें। इन विशेषाधिकारों को प्राप्त करने से पूर्व अमेरिका आने वाली चीजों की कीमतें अब दुगुनी तिगुनी बढ़ा दी गई हैं जो कि किसी और देश से खरीदने पर भी सस्ती पड़तीं, और साथ ही हमारे द्वारा भेजे जाने वाली चीजों की कीमतें भी घटा दी गई हैं। इन कार्रवाइयों द्वारा ग्रेट ब्रिटेन की खपत के बाद बचे हुए हमारे तम्बाकू को दूसरे खरीददारों तक पहुँचाने से हमें रोका जाता है ताकि ब्रिटिश सौदागर मनमानी कीमत अदा करके इस तम्बाकू को अन्य देशों में भेजकर उसकी पूरी कीमत अदा कर सकें। ब्रिटिश संसद् के न्याय को दिखाकर और यह बताकर कि वे अपनी शक्तियों का किस प्रकार उपयोग

करते हैं अब हम सम्राट् के सामने संसद् के उन अन्य कार्यों को रखना चाहते हैं जिनके द्वारा हमें अपने देश की उपज से अपने इस्तेमाल के लिए अपनी मेहनत से माल बनाने की इजाजत नहीं दी जाती। स्वर्गीय सम्राट् जॉर्ज द्वितीय के राज्य के पंचम वर्ष में एक अधिनियम पास किया गया था जिसके अनुसार एक अमेरिकन अपने देश में पैदा हुए रोऐंदार कपड़े से अपने लिए टोपी नहीं बना सकता। यह स्वेच्छाचारिता का एक ऐसा उदाहरण है जिसकी तुलना ब्रिटिश इतिहास के अधिकतम स्वेच्छाचारी युगों में भी नहीं मिलेगी। इन्हीं सम्राट् के राज्य के तेइसवें वर्ष में हमें अपने यहाँ पैदा हुए कच्चे लोहे से माल बनाने से रोका गया और इस भारी धातु को ब्रिटेन ले जाने और फिर उसे वहाँ से वापस लाने का भाड़ा हमें देना पड़ा जो कि ब्रिटेन-निवासियों की सहायतार्थ न होकर ब्रिटिश मशीनों की सहायतार्थ था। इसी प्रकार इन्हीं सम्राट् के राज्य के पाँचवें वर्ष में संसद् ने एक अन्य अधिनियम पास किया जिसके द्वारा अमेरिकन जमीनें ब्रिटिश ऋणदाताओं की माँगों के अधीन हो गई, जब कि उनकी खुद की जमीनें उनके अपने लिये हुए ऋणों के लिए उत्तरदायी न थीं जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि या तो ब्रिटेन और अमेरिका में एक जैसा न्याय नहीं है अथवा ब्रिटिश संसद अमेरिका की बजाय इंगलैण्ड में न्याय की ओर विशेष ध्यान देती है। लेकिन हम इस उद्देश्य से सम्राट् का ध्यान इन अन्यायों की ओर आकृष्ट नहीं करना चाहते कि इन कार्यों को रद्द समझा जाय, बल्कि अनुभव ने हमारे लिए उन राजनीतिक सिद्धान्तों का औचित्य प्रमाणित किया है जो हमें ब्रिटिश संसद् के प्रभाव से मुक्त करना चाहते हैं।

इन अपहरण की हुई शक्तियों का प्रयोग केवल उन्हीं मामलों में नहीं हुआ जिनमें वे खुद दिलचस्पी रखते थे बल्कि उन्होंने इन उपनिवेशों के अन्दरूनी मामलों में भी हस्तक्षेप किया है। अमेरिका में केवल ब्रिटिश सुविधा ही के लिए डाकघर नहीं बनाया गया था बल्कि सम्राट् के मन्त्रियों और प्रियजनों को इस डाकघर से एक कमाई का जरिया देना था।

वर्तमान सम्राट् से पूर्व भी हमारे अधिकारों पर कुठाराघात किया गया

था लेकिन तब यह कार्यवाइयाँ काफी लम्बे अरसे के बाद दोहराई जाती थीं और इसलिए इनसे इतना ज्यादा डर न होता था जितना कि अब है जब कि इन घातक कार्यवाइयों को निधड़क होकर जल्दी जल्दी दोहराया जाता है जिससे अमेरिकन इतिहास का वर्तमान युग सब विगत युगों से अलग ही दिखाई देता है। एक संसदीय प्रहार के विस्मय से कैसे ही हम सँभल पाते हैं हमारे ऊपर दूसरा अधिक भयंकर प्रहार किया जाता है। एक-दो अत्याचारों को सामयिक मत की आकस्मिक उपज समझा जा सकता है लेकिन जब क्रमबद्ध होकर यह अत्याचार मन्त्रियों के परिवर्तन के बाद भी निरन्तर होते रहते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इनका उद्देश्य जान-बूझकर व्यवस्थित रूप से हमें गुलाम बनाना है।

सम्राट् के राज्य के चतुर्थ वर्ष में स्वीकृत एक अधिनियम ने "अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेशों और बाग बगीचों आदि से चुङ्गी वसूल" करने का अधिकार प्रदान किया।

एक दूसरे अधिनियम द्वारा जो कि सम्राट् के राज्य के पाँचवें वर्ष में पास हुआ था "अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेशों और बाग-बगीचों आदि से स्टाम्प कर वसूल" करने का अधिकार प्रदान किया।

सम्राट् के राज्य के छठे वर्ष में एक अन्य अधिनियम पास किया गया जिसका अभिप्राय "ग्रेट ब्रिटेन की राज्य गद्दी और संसद् को सम्राट् के अमेरिकन औपनिवेशिक राज्य पर अधिक अधिकार" प्रदान करना था। इसी प्रकार राज्य के सातवें वर्ष में "कागज, चाय आदि पर चुङ्गी वसूल" करने का अधिकार प्रदान करने के लिए एक और अधिनियम पास किया गया जो कि सम्राट् तथा लॉर्ड-सभा और लोक-सभा को भेजे गए अनेक आवेदन-पत्रों का विषय रह चुका है, और चूँकि इनका कोई उत्तर नहीं दिया गया इसलिए इस मामले को दोहराकर सम्राट् को तकलीफ देने की हमारी मन्शा नहीं है।

लेकिन सम्राट् के शासन के सातवें वर्ष में पास हुए एक अन्य अधिनियम का उल्लेख किया जाना अत्यन्त आवश्यक है जिसने "न्यूयॉर्क की विधान-

सभा के निलम्बन" का आदेश दिया था।

एक स्वतन्त्र और स्वाधीन विधान-सभा एक दूसरी स्वतन्त्र और स्वाधीन विधान-सभा की शक्तियों को रोककर प्रकृति और परमात्मा के नियमों के उल्लंघन किये जाने का एक अद्वितीय उदाहरण पेश करती है। सम्राट् की अमरीकन प्रजा को यह विश्वास दिलाने के लिए कि उनका अस्तित्व ब्रिटिश संसद् की स्वेच्छा पर निर्भर है न केवल सामान्य बुद्धि बल्कि मानव-स्वभाव की सामान्य भावनाओं तक का परित्याग करना होगा। क्या अमरीकन जनता के प्रति उनके अपराधों को इतना अधिक बढ़ जाने दिया जायगा कि यह सरकारें ध्वस्त कर दी जायँगी, इनकी सम्पत्ति नष्ट-भ्रष्ट कर दी जायगी और इनकी जनता को पुनः प्राकृतिक अवस्था में रहना होगा, और यह सब उन व्यक्तियों के समूह द्वारा होगा जिनको अमरीकनों ने कभी नहीं देखा, जिन पर अमरीकनों का कोई विश्वास नहीं और न जिनको हटाने या दण्ड देने की शक्ति अमरीकनों में है। क्या इंगलैण्ड के एक लाख साठ हजार मतदाताओं द्वारा अमरीका के उन चालीस लाख प्राणियों पर शासन करने का कोई न्यायसंगत कारण है जो कि बुद्धि, गुण तथा शारीरिक शक्ति में उनके समान ही हैं ? क्या हमारा अपने-आपको आजाद समझना गलत है जो कि अभी तक हम अपने-आपको समझते आए हैं और आगे भी समझने का इरादा रखते हैं ? क्या आजाद होने के बजाय अब हमें एक-साथ एक-दो नहीं बल्कि एक लाख साठ हजार अत्याचारियों का गुलाम बनना पड़ेगा—और वह भी ऐसे अत्याचारी, जिन्हें हमसे किसी प्रकार का भय न होगा, क्योंकि भय ही ऐसी चीज है जो अत्याचारियों की कार्रवाई को किसी हद तक रोकती है।

उत्तरी अमरीका की मैसाच्युसेट्स खाड़ी में स्थित बोस्टन बन्दरगाह पर सामान उतारने या लादने पर प्रतिबन्ध लगाने वाले अधिनियम को पास करके जो कि ब्रिटिश संसद् की पिछली बैठक में पास हुआ था, इस बड़े आबाद शहर को विनाश के गर्त में डाल दिया गया है, क्योंकि यह देश अपने अस्तित्व के लिए केवल अपने व्यापार पर ही निर्भर था। थोड़ी देर

के लिए अधिकार के प्रश्न को स्थगित करके केवल न्याय की कसौटी पर इस कार्रवाई की परखिए। संसद् द्वारा एक ऐसा अधिनियम पास किया गया है जिसके अनुसार चाय पर अमरीका में चुङ्गी देनी होगी और जिसको अमरीकन अनधिकृत समझते हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिसने तब तक अमरीका को एक पौंड भी चाय न भेजी थी, अब एक-साथ संसदीय अधिकारों की हिमायत लेकर कई जहाज भरकर इस अनिष्टकारी वस्तु को यहाँ भेजने लगी। लेकिन इन जहाजों के मालिक चेतावनीयुक्त आदेश पाकर बुद्धिमानी से अपना माल लेकर लौट गए। लेकिन केवल न्यू इंगलैण्ड के प्रान्त में जनता के विरोध की अवहेलना की गई और उनकी प्रार्थना ठुकरा दी गई। यह कार्य जहाज के मालिक ने केवल अपनी हठ से अथवा किसी से आदेश पाकर किया, यह वही बता सकते हैं जो इस बारे में जानते हैं। असाधारण परिस्थितियों में असाधारण व्यवधान करने पड़ते हैं। वे कुपित व्यक्ति, जिन्हें अपनी शक्ति का भान होता है, नियमित सीमाओं में नहीं रह सकते। ऐसे कुछ लोग बोस्टन नगर में इकट्ठे हुए और वे सारी चाय समुद्र में डालकर कोई अन्य हिंसात्मक कार्य किये बिना हट गए। अगर इनका यह काम गलत था तो देश का कानून उन्हें सजा दे सकता था, जो उन्हें स्वीकार होती; क्योंकि उन्होंने कभी भी कानून के खिलाफ अपराधियों का पक्ष नहीं लिया था। अतः इस अवसर पर उनका अविश्वास नहीं किया जाना चाहिए था। लेकिन वह अभागा उपनिवेश पहले से ही स्टुअर्ट-वंश का निडरता से विरोध करता आया था और अब उस अदृश्य शक्ति द्वारा उसका विनाश होना था, जो कि इस महान् साम्राज्य का उन दिनों भाग्य निर्धारित करती थी। मन्त्रियों के कुछेक फालतू पिट्ठुओं के कहने पर, जिनका काम सरकार को सदैव उलझाए रखना है, जो अपने विश्वासघातक कार्यों से सामन्तों का का पद पाने की आशा रखते हैं और जो अपराधी तथा निर्दोष के बीच भेद नहीं करते, इस प्राचीन एवं सम्पन्न नगर को एक क्षण में समृद्धि से दरिद्रता में परिणत कर दिया गया। वे लोग, जिन्होंने अपना समस्त जीवन ब्रिटिश व्यापार की अभिवृद्धि में बिताया और ईमानदारी से कमाई हुई अपनी पूँजी

के लिए अधिकार के प्रश्न को स्थगित करके केवल न्याय की कसौटी पर इस कार्रवाई को परखिए। संसद द्वारा एक ऐसा अधिनियम पास किया गया है जिसके अनुसार चाय पर अमरीका में चुङ्गी देनी होगी और जिसको अमरीकन अनधिकृत समझते हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिसने तब तक अमरीका को एक पौंड भी चाय न भेजी थी, अब एक-साथ संसदीय अधिकारों की हिमायत लेकर कई जहाज भरकर इस अनिष्टकारी वस्तु को यहाँ भेजने लगी। लेकिन इन जहाजों के मालिक चेतावनीयुक्त आदेश पाकर बुद्धिमानी से अपना माल लेकर लौट गए। लेकिन केवल न्यू इंगलैण्ड के प्रान्त में जनता के विरोध की अवहेलना की गई और उनकी प्रार्थना ठुकरा दी गई। यह कार्य जहाज के मालिक ने केवल अपनी हठ से अथवा किसी से आदेश पाकर किया, यह वही बता सकते हैं जो इस बारे में जानते हैं। असाधारण परिस्थितियों में असाधारण व्यवधान करने पड़ते हैं। वे कुपित व्यक्ति, जिन्हें अपनी शक्ति का मान होता है, नियमित सीमाओं में नहीं रह सकते। ऐसे कुछ लोग बोस्टन नगर में इकट्ठे हुए और वे सारी चाय समुद्र में डालकर कोई अन्य हिंसात्मक कार्य किये बिना हट गए। अगर इनका यह काम गलत था तो देश का कानून उन्हें सजा दे सकता था, जो उन्हें स्वीकार होती; क्योंकि उन्होंने कभी भी कानून के खिलाफ अपराधियों का पक्ष नहीं लिया था। अतः इस अवसर पर उनका अविश्वास नहीं किया जाना चाहिए था। लेकिन वह अभागा उपनिवेश पहले से ही स्टुअर्ट-वंश का निरन्तर विरोध करता आया था और अब उस अदृश्य शक्ति द्वारा उसका [illegible] होना था, जो कि इस महान् साम्राज्य का उन दिनों भाग्य निर्धारित [illegible] थी। मन्त्रियों के कुछेक पालतू पिट्ठुओं के कहने पर, जिनका [illegible] को सदैव उत्तेजित रखना है, जो अपने विश्वासघातक कार्यों से [illegible] का पद पाने की आशा रखते हैं और जो [illegible] विरोध नहीं करते, इस प्राचीन एवं समस्त [illegible] से वंचित कर दिया गया। [illegible] व्यापार की अभिवृद्धि है [illegible]

इस जगह लगाई, अब दूसरों की दया पर निर्भर रहने लगे। जिस काम की अँग्रेजों को शिकायत थी उस काम में इस शहर के बाशिन्दों के एक सौवें हिस्से ने भी भाग नहीं लिया; अधिकांश ग्रेट ब्रिटेन में या समुद्र-पार अन्य देशों में थे; लेकिन फिर भी ब्रिटिश संसद् की एक ऐसी अजीब कार्यकारिणी शक्ति द्वारा सबको समान रूप से विनाश का भागी होना पड़ा। कुछ हजार रुपये के नुकसान के बदले लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट कर गई। इसी को निर्दयता के साथ न्याय बरतना कहते हैं! और आखिर यह तूफान कब रुकेगा? माल उतारने-चढ़ाने के लिए दो स्थान फिर बनाये जाने वाले हैं लेकिन इनका बनाया जाना सम्राट् की इच्छा पर निर्भर है: बोस्टन की खाड़ी के विस्तृत तट पर पड़े हुए माल ने व्यापार-कार्य में रुकावट पैदा कर दी है। नये तटों को केवल यह जताने के लिए बनाया जा रहा है कि संवैधानिक शक्ति के प्रयोग करने का अधिकार केवल सम्राट् को है। अगर इस प्रयोग के बाद भी जनता शान्त रहेगी तो इसी प्रकार के दूसरे प्रयोग किये जायँगे और इस प्रकार अन्त में निरंकुश शासन दृढ़ बना दिया जायगा। यह बताने की कोशिश करना कि यह कार्रवाई उस महान् नगर के व्यापार को पुनः संचालित करने के लिए है सामान्य बुद्धि का अपमान करना है। सारा व्यापार चूँकि इन दो नये तटों तक ही सीमित नहीं रह सकता अतः व्यापार चलाने के लिए निश्चय ही अन्य स्थानों का सहारा लेना होगा। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो यह कार्य बोस्टन के विनाश पर एक उद्दण्ड एवं कटु उपहास होगा। दंगों-फिसादों को दबाने के लिए जारी किये हुए एक अधिनियम द्वारा किसी कत्ल के लिए, गवर्नर की इच्छा पर, मुकदमा इंगलैण्ड में चलाया जा सकता था। गवर्नर द्वारा निर्धारित एक रकम पाकर गवाह को इस कानूनी कार्रवाई में शरीक होने के लिए राजी होना पड़ता था। लेकिन क्या यह अन्याय नहीं था, क्योंकि कौन ऐसा होगा जो कि सिर्फ शहादत देने के लिए एटलांटिक पार करके इंगलैण्ड जाना चाहेगा! इसमें शक नहीं कि उसका खर्च सरकार उठायगी, सिर्फ उतना ही जितना कि गवर्नर उचित समझेगा; लेकिन उसके बीबी-बच्चों को कौन खिलायगा जब कि उसकी

के लिए अधिकार के प्रश्न को स्थगित करके केवल न्याय की कसौटी पर इ
कार्रवाई को परखिए। संसद् द्वारा एक ऐसा अधिनियम पास किया गया
जिसके अनुसार चाय पर अमरीका में चुङ्गी देनी होगी और जिसको अमरीक
अनधिकृत समझते हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिसने तब तक अमरीका को
एक पौंड भी चाय न भेजी थी, अब एक-मात्र संसदीय अधिकारों को दिखाने
लेकर कई जहाज भरकर इस अनिष्टकारी वस्तु को वहाँ भेजने लगी। लेकिन
इन जहाजों के मालिक नेशायनीयुक्त आदेश पाकर बुद्धिमानी से अपना
माल लेकर लौट गए। लेकिन केवल न्यू इंगलैण्ड के प्रान्त में जनता के
विरोध की अवहेलना की गई और उनकी प्रार्थना ठुकरा दी गई। यह कार्य
जहाज के मालिक ने केवल अपनी हठ से अथवा किसी से आदेश पाकर
किया, यह वही बता सकते हैं जो इस बारे में जानते हैं। असाधारण
परिस्थितियों में असाधारण व्यवधान करने पड़ते हैं। वे कुपित व्यक्ति, जिन्हें
अपनी शक्ति का भान होता है, नियमित सीमाओं में नहीं रह सकते। ऐसे
कुछ लोग बोस्टन नगर में इकट्ठे हुए और वे सारी चाय समुद्र में डालकर
कोई अन्य हिंसात्मक कार्य किये बिना हट गए। अगर इनका यह काम
गलत था तो देश का कानून उन्हें सजा दे सकता था, जो उन्हें स्वीकार होती;
क्योंकि उन्होंने कभी भी कानून के खिलाफ अपराधियों का पक्ष नहीं लिया
था। अतः इस अवसर पर उनका अविश्वास नहीं किया जाना चाहिए था।
लेकिन वह अभागा उपनिवेश पहले से ही स्टुअर्ट-वंश का निडरता से
विरोध करता आया था और अब उस अदृश्य शक्ति द्वारा उसका विनाश
होना था, जो कि इस महान् साम्राज्य का उन दिनों भाग्य निर्धारित करती
थी। मन्त्रियों के कुछेक फालतू पिट्ठुओं के कहने पर, जिनका काम सरकार
को सदैव उलझाए रखना है, जो अपने विश्वासघातक कार्यों से सामन्तों का
का पद पाने की आशा रखते हैं और जो अपराधी तथा निर्दोष के बीच भेद
नहीं करते, इस प्राचीन एवं सम्पन्न नगर को एक क्षण में समृद्धि से दरिद्रता
में परिणत कर दिया गया। वे लोग, जिन्होंने अपना समस्त जीवन ब्रिटिश
व्यापार की अभिवृद्धि में बिताया और ईमानदारी से कमाई हुई अपनी पूँजी

कानूनों की कार्यकारिणी शक्ति को धारण करने वाले हैं और जो अपने कर्तव्य-पथ से च्युत हो चुके हैं। ग्रेट ब्रिटेन और कई अमरीकन राज्यों के संविधान के अन्तर्गत सम्राट् को यह शक्ति प्राप्त है कि विधान-सभा की दोनों शाखाओं से स्वीकृत किसी विधेयक को कानून न बनने दें। किन्तु वर्तमान सम्राट् और उनके पूर्वजों ने अपने साम्राज्य के ग्रेट ब्रिटेन कहलाये जाने वाले भाग में इस अधिकार को प्रयोग में लाना विनम्रतापूर्वक अस्वीकार किया, क्योंकि संसद् की दोनों सभाओं के संयुक्त विचार या विरोध करना उन्होंने उचित न समझा, जब कि इन सभाओं की कार्रवाइयाँ पक्षपात-रहित थीं। किन्तु परिस्थितियों के बदलने के साथ न्याय के अतिरिक्त अन्य सिद्धान्तों ने उनके निर्णयों को प्रभावित करना आरम्भ कर दिया। ब्रिटिश साम्राज्य में नये राज्यों के आ जाने के कारण नये और कई बार विरोधी हित उत्पन्न हो गए हैं। अतः सम्राट् के महान पद को यह शोभा देता है कि वह अपनी नकारात्मक शक्ति का प्रयोग करें और साम्राज्य की किसी एक विधान-सभा द्वारा ऐसे कानूनों को जारी न होने दें जो दूसरी विधान-सभा के अधिकारों और हितों पर कुठाराघात कर सकें। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह इस अधिकार का स्वेच्छाचारिता के साथ प्रयोग करें जो कि हमने अमरीका विधान-सभा द्वारा स्वीकृत कानूनों पर उन्हें करते देखा है। कई बार छोटे-मोटे कारणों को लेकर और कई बार अकारण ही सम्राट् ने अत्यन्त कल्याण-कारी प्रवृत्तियों वाले कानूनों को भी रद्द किया है। दास-प्रथा के उन्मूलन के उद्देश्य को कार्यान्वित करने की इन उपनिवेशों की बहुत इच्छा थी, जो प्रथा इन उपनिवेशों में आरम्भ में ही प्रचलित कर दी गई थी। किन्तु गुलामों को मताधिकार देने से पूर्व यह आवश्यक है कि अफ्रीका से और गुलामों का आयात बन्द किया जाय। लेकिन इस दिशा में हमारे द्वारा खड़े किये गए प्रतिबन्ध या वे कर जो कि प्रतिबन्धों के तुल्य ही थे, सम्राट् के नकारा-त्मक अधिकार से विफल हो गए; और इस प्रकार ब्रिटिश डकैतों को अमेरिकन राज्यों के स्थायी हितों से और मानव-प्रकृति के अधिकारों से बेहतर समझा गया। एक कानून के खिलाफ एक व्यक्ति की इच्छा के सफल होने का

शायद केवल यही एक उदाहरण है, जब कि दूसरी ओर सारे देश के हित हों। यह अधिकारों के दुरुपयोग का ऐसा लज्जाजनक उदाहरण है कि यदि इसे नहीं सुधारा गया तो वैधानिक प्रतिबन्धों की आवश्यकता होगी।

सम्राट् ने अपनी अमेरिकन प्रजा के प्रति समान असावधानी से उनके कानूनों को वर्षों तक इंगलैण्ड में पड़े रहने दिया और न उन्हें अपनी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति प्रदान की, अतः किसी निलम्बन करने वाले खण्ड की अनुपस्थिति में हमें सम्राट् की स्वेच्छा पर निर्भर करना पड़ा, जिसकी अत्यन्त भयपूर्ण पदावधि है; और जो कानून सम्राट् की स्वीकृति प्राप्त होने तक निलम्बित रह सकते थे। सुदूर भविष्य में उनका अस्तित्व, समय और परिस्थितियों के बदल जाने के कारण प्रजा के लिए अहितकर हो सकता था।

हमारी इस शिकायत को और भी बढ़ा देने के लिए सम्राट् ने अपने आदेशों द्वारा राज्यपालों पर ऐसे प्रतिबन्ध लगाये हैं कि वे इस प्रकार निलम्बन करने वाले किसी खण्ड की उपस्थिति बिना कोई कानून पास किये नहीं कर सकते, चाहे वैधानिक हस्तक्षेप की कितनी ही आवश्यकता क्यों न हो, फिर भी कोई कानून तब तक कार्यान्वित नहीं किया जा सकता जब तक कि वह दो बार अटलांटिक सागर पार न कर चुका हो, और इस तरह इस बीच शरारत करने का पूरा मौका मिल जाता है।

लेकिन सम्राट् की प्रसन्नता और सत्य को ध्यान में रखते हुए सम्राट् के उस आदेश का कैसे बयान किया जाय जो कि उन्होंने वर्जिनिया उपनिवेश के राज्यपाल को दिया है, और जिसके द्वारा राज्यपाल एक प्रान्त के विभाजन के कानून को तब तक स्वीकृति प्रदान नहीं कर सकता जब तक कि वह नया प्रान्त असेम्बली में अपने प्रतिनिधि को न रखने के लिए राजी न हो जाय? इस उपनिवेश ने पश्चिम में अभी तक अपनी सीमाओं को निर्धारित नहीं किया है। अतः इसके पश्चिमी प्रान्त अनिश्चित हैं जिनमें से कुछ तो अपनी पूर्वी सीमाओं से सैकड़ों मील दूर हैं। तो क्या यह सम्भव है कि सम्राट् ने उन लोगों की मुसीबतों का खयाल किया होगा जिन्हें अपने नुकसान

के लिए न्याय पाने, अपने गवाहों के साथ हर महीने इतनी दूर अपने सूबे की कचहरी में जाना पड़ता है जब तक कि उनके मुकदमे का फैसला न हो जाय ? अथवा क्या सम्राट सचमुच यह चाहते हैं और संसार के सामने अपनी इच्छा को व्यक्त कर सकते हैं कि उनकी प्रजा को अपनी मुसीबतों के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार छोड़ देना चाहिए और अपने सम्राट् की प्रभुत्व-सम्पन्न इच्छा का पूरी तरह गुलाम बन जाना चाहिए ? अथवा वर्तमान विधान-सभा के सदस्यों की संख्या को सीमित रखने में एक सस्ता सौदा दिखाई देता है जिन्हें जब मन चाहा खरीद लिया ?

रिचर्ड द्वितीय के शासन-काल में ट्रेसीलियन तथा वेस्टमिनिस्टर हॉल के अन्य न्यायाधीशों पर किये गए दोषारोपण का, जिसके लिए उन्हें देशद्रोही करार देकर मृत्यु दण्ड दिया गया, एक अनुच्छेद यह था कि उन्होंने सम्राट् द्वारा किसी समय भी संसद् को भंग किये जा सकने की सलाह सम्राट् को दी थी, जो सलाह बाद के सम्राटों ने स्वीकार की। किन्तु गौरवमय क्रान्ति के स्वतन्त्र एवं प्राचीन सिद्धान्तों के आधार पर ब्रिटिश संविधान की स्थापना के बाद न तो वर्तमान सम्राट् ने और न उनके पूर्वजों ने ही कभी ब्रिटिश संसद् को भंग करने के सिद्धान्त का प्रयोग किया; और जब जनता की संयुक्त आवाज ने सम्राट् से माँग की कि वर्तमान संसद् भंग कर दी जाय, जो कि जनता के लिए रुकावटें पैदा करती थी, तो संसद् की खुली सभा में मन्त्रियों को एलान करते सुना गया कि संविधान द्वारा संसद् को ऐसा कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। लेकिन यहाँ अमरीका में उनकी भाषा और सम्राट् के व्यवहार में कितना अन्तर है ! अपने कर्तव्यानुसार अपने देश के विशाल अधिकारों की घोषणा करना, प्रत्येक वैदेशिक न्यायपालिका द्वारा अपने अधिकारों के अपहरण का विरोध करना, किसी मन्त्री या राज्यपाल के उद्दण्ड आदेशों की अवहेलना करना आदि कार्य प्रतिनिधि सभा के भंग होने के स्पष्ट कारण रहे हैं। यदि ये अधिकार वास्तव में सम्राट् को प्राप्त हैं तो क्या वे इसलिए प्राप्त हैं कि वह सदस्यों को उपर्युक्त बातें न करने से डरा सकें ? जब प्रतिनिधि अपने निर्वाचकों का विश्वास खो बैठते हैं, जब वे खुल्लमखुल्ला अपने

[illegible] अधिकारी को देन देते हैं, जब वे उन अधिकारों को अंगीकार कर लेते
हैं जो जनता ने उनको नहीं सौंपे थे तो निश्चय ही वे राज्य के लिए खतर-
नाक बन जाते हैं, और तब उनके समूह को भंग किये जाने के अधिकार
का प्रयोग किया जाना आवश्यक हो जाता है। अतः यह मान लेने के बाद
कि किन परिस्थितियों में प्रतिनिधि सभा को भंग करना चाहिए और किन
में नहीं, क्या यह एक पक्षपात रहित व्यक्ति को अजीब न लगेगा कि जब कि
ब्रिटेन की प्रतिनिधि सभा को भंग नहीं किया गया, उपनिवेशों की प्रतिनिधि
सभा को यह दण्ड बार-बार भोगना पड़ा है।

किन्तु श्रीमान् सम्राट् आपने अथवा आपके राज्यपालों ने कानून द्वारा
निर्धारित सब मर्यादाओं का उल्लंघन करके इस अधिकार का प्रयोग किया है।
एक प्रतिनिधि-सभा को भंग करने के बाद बहुत लम्बे अरसे तक दूसरी प्रति-
निधि सभा नहीं बुलाई गई जिसके फलस्वरूप कानूनों द्वारा निर्धारित विधान
सभा का अस्तित्व ही मिट गया। प्रत्येक समाज को प्रत्येक काल में अपना
विधान बनाने का प्रकृतिदत्त सर्वाधिकार रहा है। एक ऐसे राज्य के प्रति
[illegible] विरोध स्वाभाविक है जो ऐसे खतरों के मुकाबले के लिए
तैयार [illegible] जिनसे तात्कालिक विनाश की सम्भावना हो। जब तक कि
[illegible] सभा का अस्तित्व है, जिसको जनता ने अपनी ओर से वैधानिक
[illegible] स्थापित कर रखी है, वही इस शक्ति का प्रयोग कर सकती है। लेकिन
[illegible] एक या अधिक शाखाओं के काटे जाने से यह भंग हो जाती है
[illegible] वैधानिक शक्ति पुनः जनता के पास आ जाती है जो इसका प्रयोग
[illegible] रूप में कर सकती है—लोगों को इकट्ठा करके और अपने प्रति-
निधियों को भेजकर या और किसी रूप में जिसे वह उचित समझती है।
हम इस प्रक्रिया के परिणामों का वर्णन न करेंगे क्योंकि इसमें निहित खतरे
स्पष्ट हैं।

यहाँ हम अपनी भूमि-सम्बन्धी एक अन्य त्रुटि की ओर ध्यान आकृष्ट
करते हैं जो कि हमारे यहाँ बसने के प्रारम्भिक काल में ही पैदा हो गई थी।
इस बात को अच्छी तरह समझने के लिए इंगलैण्ड के सामन्ती पद्धतियों,

जो कि बहुत प्राचीन है लेकिन जिसे अच्छी तरह समझा जा चुका है। सैक्सन लोगों के इंगलैण्ड में बसने के समय भूमि पर सामन्ती अधिकारी, का प्रचलन न था, और यह प्रथा, थोड़ी-बहुत, नॉर्मन-विजय से आरम्भ हुई। हमारे पूर्वजों का अपनी जमीनों पर सर्वाधिकार था जैसे कि किसी सम्पत्ति पर होता है और इस मामले में उनसे बड़ा कोई न था। इस प्रथा को विलियम प्रथम ने सर्वप्रथम प्रचलित किया। जो लोग हैस्टिंग्स के युद्ध में अथवा बाद के बलवों में मारे गए उनकी कुल जमीनें राज्य के एक बड़े भाग में फैली हुई थीं। यह जमीनें उसने लोगों से सामन्ती कर लेकर उठा दीं और इसी प्रकार उसने अपने नए प्रजाजनों को समझा-बुझाकर या धमकाकर अपनी जमीनें देने के लिए राजी कर लिया। लेकिन फिर भी उसकी सैक्सन प्रजा के हाथ में बहुत-कुछ जमीन रह गई, इस मामले में उससे कोई बड़ा न था और न उन पर सामन्ती शर्तें लागू हो सकती थीं। अतः इन लोगों को एक नये कानून के अन्तर्गत सैनिक सुरक्षा की एक नियमित प्रथा को मानना पड़ा, उनके सैनिक आभार वैसे ही थे जैसे कि सामन्ती रैयत के होते थे, और नॉर्मन वकीलों ने उन पर शीघ्र ही अन्य भार लाद दिए। लेकिन फिर भी यह जमीनें सम्राट् को समर्पित नहीं की गईं, क्योंकि सम्राट् द्वारा दिये हुए पट्टे से प्राप्त नहीं हुई थीं। इस नये सिद्धान्त की स्थापना की गई कि "इंगलैण्ड की सब जमीनों पर सम्राट् का सीधा अधिकार है या सम्राट् ने इस अधिकार को दूसरों को दे रखा है", लेकिन यह अधिकार सामन्तशाही जमीनों से प्राप्त हुआ था और दूसरी जमीनों पर उदाहरण के लिए लगाया गया था। अतः सामन्तशाही जमीनें सैक्सन कानून की अपवाद थीं, जिसके अन्तर्गत सब जमीनों पर सर्वाधिकार था। अतः आज भी जहाँ कहीं यह अपवाद लागू नहीं होता वह जमीनें सार्वजनिक कानून की आधारस्वरूप हैं। अमरीका विलियम नॉर्मन ने नहीं जीता था और न उसको और न उसके उत्तराधिकारियों को यहाँ की जमीनें समर्पित की गई थीं। लेकिन हमारे पूर्वज, जो यहाँ आकर बसे मजदूर थे, वकील नहीं। अतः उन्होंने इस झूठे सिद्धान्त को सही समझा कि सब जमीनों

पर सम्राट् का अधिकार है और इसलिए उन्होंने अपनी जमीनों का पट्टा सम्राट् से लिया। और जब तक सम्राट् द्वारा उन्हें थोड़े नजराने या उचित मालगुजारी पर जमीनें दी जाने लगीं, इस त्रुटि को देखने या जनता के सामने इसे रखने का मौका नहीं आया। लेकिन हाल में ही सम्राट् ने जमीनों को खरीदने और रखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है, जिस कारण जमीनों को पाना और हमारे देश की आबादी बढ़ना मुश्किल हो गया है। अतः इस बात को अब सम्राट् के सामने रखना और यह एलान करना अब जरूरी हो गया है कि जमीनों का पट्टा देने का उन्हें कोई अधिकार नहीं। नागरिक संस्थाओं की प्रकृति और उद्देश्यों को देखते हुए समाज की अनुमति प्राप्त करने पर समाज द्वारा यह स्वीकृत माना गया है कि एक हद तक जो जमीन जिस व्यक्ति के पास है वही उसका हकदार है, और जैसा कि कहा गया है कि जमीन पर अधिकार प्राप्त करने के लिए समाज की स्वीकृति आवश्यक है, जो कि व्यक्तियों के एकत्रित समूह, अथवा उनकी विधान-सभाओं द्वारा दी जा सकती है जिन्हें व्यक्तियों ने प्रभुत्व-सम्पन्न अधिकार प्रदान किये हैं; और जब उपर्युक्त विधि से जमीन नहीं मिलती तो समाज का प्रत्येक सदस्य खाली जमीन पर कब्जा कर सकता है जिसका वह अपने-आप हकदार हो जाता है।

सम्राट् ने इन स्वेच्छाचारी कार्यवाइयों को कार्यान्वित करने के लिए समय-समय पर इन लोगों के बीच ऐसी सशस्त्र फौजें भेजी हैं जो न तो यहाँ के लोगों से और न यहाँ के कानूनों से बनाई गई हैं। यदि सम्राट् को यह अधिकार प्राप्त है तो वे जब चाहें हमारे अन्य सब अधिकारों को हड़प सकते हैं। लेकिन सम्राट् को हमारी भूमि पर एक भी सशस्त्र सिपाही उतारने का अधिकार नहीं है और जो सिपाही वह यहाँ भेजते हैं उन्हें दंगे-फिसाद या गैरकानूनी कामों को रोकने के लिए हमारे कानूनों को मानना पड़ेगा नहीं तो यह समझा जाएगा कि वे हमारे शत्रु हैं जिन्होंने हम पर हमारे कानूनों का विरोध करके हमला किया है। जब कि इस युद्ध में यह ठीक समझा गया कि ग्रेट ब्रिटेन की सुरक्षा के लिए हैनोवेरियन सेना को

बुलाया जाय तो वर्तमान सम्राट् के पितामह ने अपने किसी निजी अधिकार से ऐसा करना तय नहीं किया। यदि वह ऐसा करते तो उनकी प्रजा चिन्तित हो जाती, क्योंकि एक भिन्न देश के भिन्न भावना वाले सैनिकों की उपस्थिति उनकी विधान-सभा की स्वीकृति पाए बिना उनकी आजादी को खतरे में डाल देती। अतः सम्राट् ने इस प्रश्न को अपनी संसद् के सम्मुख रखा जिसने एक अधिनियम द्वारा इन विदेशी सैनिकों की संख्या और उनकी ब्रिटेन में रहने की अवधि को निर्धारित किया। क्या इसी प्रकार सम्राट् को अपने साम्राज्य के अन्य भागों में अपने अधिकारों का प्रयोग करने से रोका गया है? निःसन्देह प्रत्येक राज्य के कानूनों की कार्यकारिणी-शक्ति उनमें निहित है, लेकिन प्रत्येक राज्य के अपने विशिष्ट कानून हैं, जिनको उस राज्य की सीमाओं में ही कार्यान्वित करना है न कि किसी अन्य राज्य के कानूनों को। प्रत्येक राज्य को स्वयं यह निर्णय करना है कि उसे कितनी सेना रखनी है जिससे उसे खतरा न हो, किन लोगों से वह सेना बनाई जाय, और उस सेना पर क्या प्रतिबन्ध लगाए जाने चाहिएँ। हमारे अधिकारों के प्रति अपने अपराधों को और भी बढ़ाने के लिए सम्राट् ने सेना को नागरिक शक्ति के अधीन रखने के बजाय जान-बूझकर नागरिक शक्ति को सेना के अधीन कर दिया है। तो क्या सम्राट् सारे कानूनों को अपने पैरों तले कुचल सकते हैं? क्या वह एक ऐसी शक्ति खड़ी कर सकते हैं जो कि उस शक्ति से महत्तर हो जिसने उन्हें खड़ा किया है? उन्होंने यह कार्य बल के बूते पर किया है; लेकिन उन्हें यह याद रखना चाहिए कि बल अधिकार नहीं प्रदान कर सकता।

तो यह है वे शिकायतें, जो हमने भाषा और भावना की उस स्वतन्त्रता के साथ सम्राट् के सामने पेश की हैं, जो कि प्रकृति से प्राप्त न कि मुख्य महत्तक द्वारा दान में दिये हुए अधिकारों का दावा रखने वाले स्वतन्त्र जनों को शोभा देती हैं। खुशामद वही करते हैं जो डरते हैं: अमरीकनों का यह काम नहीं है। जहाँ प्रशंसा की आवश्यकता न हो वहाँ प्रशंसा करना तुच्छ लोगों के लिए ठीक हो सकता है लेकिन जो लोग मानव-अधिकारों

के लिए लड़ रहे हैं उन्हें यह शोभा नहीं दे सकता। वे इस बात को जानते हैं और इसलिए कह सकते हैं कि राजा जनता के मालिक न होकर उसके सेवक हैं। महाशय, उदार एवं व्यापक विचार के लिए अपना हृदय खोलिए। जॉर्ज तृतीय के नाम को इतिहास के पृष्ठ का धब्बा न बनने दीजिए। आपके चारों ओर ब्रिटिश सलाहकार हैं लेकिन याद रखिए कि वे दलबन्दी के शिकार हैं। अमेरिका-सम्बन्धी शर्तों के लिए आपके पास मन्त्री नहीं है क्योंकि आपने हम लोगों में से किसी को नहीं लिया है, न कोई ऐसा ही है जो कानूनों के प्रति उत्तरदायी हो जिसके आधार पर आपको सलाह दे सके। अतः आपको स्वयं अपने-आप सोच-विचार कर अपने और अपनी प्रजा के लिए काम करना चाहिए। न्याय और अन्याय के महान् सिद्धान्त प्रत्येक व्यक्ति के सामने स्पष्ट हैं, उनके अनुसार काम करने के लिए बहुत से सलाहकारों की आवश्यकता नहीं। सारी शासन-कला ईमानदार बने रहने की कला है। केवल अपने उद्देश्यों को निबाहने का प्रयत्न कीजिए और यदि आप असफल भी रहे तो भी मानवता आपको श्रेय देगी। साम्राज्य के एक भाग के अधिकारों को दूसरे भाग की मर्यादारहित इच्छाओं के लिए बलिदान मत होने दीजिए, और सबको समान एवं पक्षपात-रहित अधिकार सौंपिए। ऐसे किसी अधिनियम को पास न होने दीजिए जिसके द्वारा एक विधान-सभा दूसरी विधान-सभा के अधिकारों और स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप कर सके। आप उस महत्ता पर हैं जो भाग्य ने आपको सौंपी है और आपके हाथों में एक महान् सुसन्तुलित साम्राज्य की तराजू है। अतः श्रीमन्, आपके अमरीकन सलाहकारों की यह सलाह है जिसके मानने पर सम्भवतः आपका सुख और आपकी भावी प्रसिद्धि निर्भर है, और वह सामञ्जस्य निर्भर है जिसके बने रहने से ही ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका अपने पारस्परिक सम्बन्धों से लाभ उठा सकते हैं। ग्रेट ब्रिटेन से पृथक् होना न हमारी इच्छा है और न इसमें हमें लाभ है। हम अपनी ओर से उस शान्ति को कायम रखने के लिए हरेक न्यायोचित बलिदान करने के लिए तैयार हैं, जिसकी कामना हरेक को होनी चाहिए। ब्रिटेन को, एकता कायम करने के लिए अपनी ओर से एक उदार

कार्यक्रम के लिए तैयार रहना चाहिए। वे अपनी शर्तें पेश करें लेकिन उनकी शर्तें न्यायोचित होनी चाहिएँ। उस प्रत्येक व्यापारिक अधिमान को स्वीकार कीजिए जिसे देना हमारी शक्ति के अन्दर है। और वह उन चीजों के लिए हो जिसे हम उनके लिए और वे हमारे लिए पैदा कर सकते है। लेकिन जिन चीजों को वह अन्य देशों में नहीं बेच सकते हैं उन्हें हमारे ऊपर उन्हें न लादने दीजिए और न अन्य देशों से हमें वे चीजें खरीदने से रोकिए, जो कि वे हमें नहीं दे सकते। इसके अलावा हमारा यह प्रस्ताव भी स्वीकार किया जाय कि हमारे देश में हमारी जायदादों को नियन्त्रित करने का हमारे अलावा और किसी को अधिकार नहीं है। जिस ईश्वर ने हमको जीवन दिया है उसने हमको स्वतन्त्रता भी दी है, और बल से इन्हें नष्ट किया जा सकता है किन्तु पृथक् नहीं किया जा सकता। यही, श्रीमन् हमारा अन्तिम एवं दृढ़ निश्चय है। यही ब्रिटिश अमेरिका की प्रार्थना है कि आप हमारी शिकायतों को दूर करने, ब्रिटिश अमरीका की अपनी प्रजा को भावी हस्तक्षेप के भय से बचाने, और सारे साम्राज्य में अनवरत प्रेम और एकता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

सन् १७८६ के आरम्भ में धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करने के लिए वर्जिनिया-असेम्बली द्वारा स्वीकृत अधिनियम (१७७९)

यह भली-भाँति जानते हुए—कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मानव-मस्तिष्क को स्वतन्त्र बनाया है; कि इसके सांसारिक दण्डों अथवा मारों, या नागरिक अयोग्यताओं से प्रभावित करने के सब प्रयत्न केवल पाखण्ड और क्षुद्रता की आदतों को पैदा करते हैं, और हमारे धर्म के पवित्र रचयिता के बनाये हुए नियमों का उल्लंघन करते हैं, जिन्होंने हमारे मन और शरीर दोनों के स्वामी होते हुए भी इन नियमों का प्रचार बलपूर्वक नहीं करना चाहा जो कि यदि वह चाहते तो कर सकते थे; कि धार्मिक एवं नागरिक शासकों

और वैधानिक, जो स्वयं प्रमादशील तथा प्रेरणारहित व्यक्ति हैं और जिन्होंने दूसरों की आस्थाओं पर अपना प्रभुत्व जमा रखा है, जो केवल अपनी विचार शैली और धारणाओं को ही एक-मात्र सत्य और अप्रमादशील बताते हैं, और इस प्रकार युग-युगान्तर से विश्व के अधिकांश भाग पर मिथ्या धर्मों को स्थापित एवं संचालित करने का प्रयत्न करते आए हैं; कि किसी व्यक्ति को उस मत के लिए रुपया दान देने के लिए बाध्य करना, जिसमें वह विश्वास नहीं करता, पाप और अत्याचार है; कि यहाँ तक कि अपने सधर्मी उपदेशकों में से किसी एक का समर्थन करने के लिए उसे बाध्य करना उसे उस स्वतन्त्रता से वंचित करना है जो उसे किसी एक विशेष उपदेशक को चन्दा देने के लिए कहती है, जिसके नैतिक चरित्र का वह अनुसरण करना चाहता है और जिसकी प्रवृत्तियों को सद्‌गुण की ओर झुका हुआ वह पाता है; और उसे ऐसा न करने देना धार्मिक मण्डल को उन ऐहिक लाभों से विमुख करना है जो कि उनके वैयक्तिक आचरण के अनुमोदन से प्राप्त होते हैं, और जो कि मानवता में ज्ञान-प्रसारण के अनवरत प्रयत्नों को प्रोत्साहन देते हैं; कि हमारे नागरिक अधिकार हमारी धार्मिक धारणाओं पर उसी तरह निर्भर नहीं हैं जिस प्रकार कि वे भौतिक-शास्त्र अथवा रेखागणित-सम्बन्धी हमारी धारणाओं पर निर्भर नहीं हैं; कि जब तक कि कोई नागरिक इस या उस धार्मिक मत का समर्थन या विरोध नहीं करता, उसे किसी विश्वास अथवा आमदनी के कार्य के लिए अयोग्य बताकर सार्वजनिक विश्वास को अयोग्य करार करना उसे उन विशेषाधिकारों और लाभों से वंचित करना है जिनका कि उसे अन्य साथी नागरिकों के साथ प्रकृतिदत्त अधिकार प्राप्त है; कि किसी एक धार्मिक मत का खुला समर्थन करने वालों को सांसारिक सम्मान अथवा सम्पति की घूस देकर उस धर्म के सिद्धान्तों को भ्रष्ट करना है जिन्हें प्रोत्साहन देने के लिए ही यह काम किया जाता है; कि वे निःसन्देह अपराधी हैं जो इस प्रकार के प्रलोभन का मुकाबला नहीं कर सकते किन्तु वे भी निर्दोष नहीं हैं जो इस प्रकार के प्रलोभनों को खड़ा करते हैं; कि सिद्धान्तों की कुप्रवृत्ति के कारण सिद्धान्तों के व्यवसाय अथवा प्रसारण को सीमित रखने के लिए

विचारों के क्षेत्र में नागरिक महत्तक को अपनी शक्ति प्रयोग करने के लिए कहना एक खतरनाक भूल है जो तुरन्त ही धार्मिक स्वतन्त्रता नष्ट कर देती है; क्योंकि वह एक विशेष धार्मिक प्रवृत्ति वाला न्यायाधीश होने के कारण अपनी धारणाओं के आधार पर न्याय करेगा, और अपनी धारणाओं के अनुकूल या प्रतिकूल होने वाली दूसरे लोगों की भावनाओं को सही या गलत समझेगा; कि अब नागरिक शासन के न्यायोचित उद्देश्यों के लिए वह समय आ गया है जब कि इसके अधिकारियों को उन सिद्धान्तों में हस्तक्षेप करना होगा जो कि शान्ति तथा सुव्यवस्था भंग करने वाले कार्यों में परिणत हो जाते हैं; और अन्त में, कि सत्य महान् है और यदि उसे न छेड़ा जाय तो उसकी ही जीत होगी, कि त्रुटियों का उचित एवं पर्याप्त विरोध करने की शक्ति सत्य में ही है, कि उसे संघर्ष से भय नहीं यदि उसकी स्वाभाविक शक्तियों को निःशस्त्र न कर दिया जाय, कि तब त्रुटियों की भयंकरता जाती रहती है जब सत्य द्वारा उनका विरोध करने की स्वतन्त्रता होती है।

अतः जनरल असेम्बली द्वारा यह अधिनियमन किया जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति को किसी धार्मिक स्थान, पूजा-पाठ या मण्डली में जाने और समर्थन करने के लिए बाध्य न किया जाय, और न अपने धार्मिक मतों और आस्थाओं के कारण उसके शरीर और उसकी सम्पत्ति को किसी प्रकार की क्षति पहुँचाई जाय; कि सब मनुष्य अपने धार्मिक मतों को प्रतिपादित करने और वाद-विवाद द्वारा उनको कायम करने के लिए स्वतन्त्र हैं, और उनके धार्मिक विचार किसी भी तरह उनकी नागरिक क्षमताओं को घटा-बढ़ा नहीं सकते हैं और न उन्हें प्रभावित कर सकते हैं।

और यह भली भाँति जानते हुए कि यह जनरल असेम्बली, जो कि साधारण वैधानिक कार्यों के लिए जनता द्वारा निर्वाचित की गई है, अपनी उत्तराधिकारी असेम्बलियों के कार्यों को रोकने की शक्ति नहीं रखती, और इस लिए इस अधिनियम को अखण्डनीय करार देना कानून-संगत न होगा, किन्तु फिर भी हम यह घोषणा करने के लिए स्वतन्त्र हैं और घोषणा करते हैं कि यहाँ जिन अधिकारों का हमने समर्थन किया है वे मानव के प्रकृतिदत्त

अधिकार हैं, अतः यदि भविष्य में कोई ऐसा अधिनियम स्वीकृत किया जाता है जो वर्तमान अधिनियम को खण्डित करता है अथवा उसके कार्यक्षेत्र को संकुचित करता है तो ऐसा करना प्रकृतिदत्त अधिकार में हस्तक्षेप करना है।

अधिभाषण

४ मार्च, १८०१

मित्रो और साथी नागरिको!

अपने देश के प्रथम कार्यपालक नियुक्त किये जाने के कारण आज मैं अपने साथी नागरिकों के सम्मुख, जो यहाँ उपस्थित हैं, कृतज्ञता प्रकट करते हुए इस बात के प्रति जागरूक हूँ कि यह कार्य मेरी योग्यता से अधिक बड़ा है और इसलिए इस कार्य की महत्ता तथा अपनी दुर्बलता देखते हुए मैं संशय और भय के साथ यह भार उठाने के लिए तैयार हो रहा हूँ। जब मैं एक बुद्धिशील एवं समृद्धिशील भूमि पर विस्तृत इस उदीयमान राष्ट्र को सब समुद्रों को पार करके अपने उद्योग द्वारा उत्पादित विभव वस्तुओं को भेजते तथा उन राष्ट्रों से व्यापार करते देखता हूँ जिन्हें अपनी शक्ति का भान है पर औचित्य का नहीं, और उन लक्ष्यों की ओर द्रुतगति से अग्रसर होते देखता हूँ जो आज मानव-दृष्टि से परे हैं—जब मैं इन सर्वोपरि बातों पर विचार करता हूँ और इस देश के सुख, सम्मान और आशाओं को देखता हूँ तो मैं इस कार्य-भार की महत्ता के सामने अपने-आपको तुच्छ पाता हूँ। यदि उपस्थित सज्जनों में बहुत सों को देखकर मुझे यह पुनः स्मरण न होता कि संविधान द्वारा नियुक्त अन्य उच्चाधिकारियों की सद्‌बुद्धि, सद्‌गुणों और उत्साह पर मैं सब कठिनाइयों में निर्भर कर सकता हूँ, तो मैं निश्चय ही पूर्णतः निराश हो जाता। अतः सज्जनो, मैं उत्साह के साथ आपसे और आपके साथियों से, जिन पर विधान-सम्बन्धी प्रभुत्व-सम्पन्न कार्यों का भार है, मार्ग-

प्रदर्शन और सहयोग की आशा रखता हूँ ताकि हमारी यह मात्र सही सलामत पार हो सके जिस पर इस समय हम सब चढ़े हैं।

विचार-धाराओं के जिस संघर्ष से हम गुजर चुके हैं, उसकी बहसों की सरगर्मी ने कई बार ऐसा रूप धारण किया है जो कि उन अजनबियों की समझ में नहीं आ सकता जो स्वतन्त्रतापूर्वक सोचने, और जो सोचते हैं उसे स्वतन्त्रतापूर्वक कहने और लिखने के आदी नहीं हैं। लेकिन अब इस बारे में संविधान के नियमों द्वारा राष्ट्र की आवाज अपना फैसला कर चुकी है इसलिए अब कानून के अन्तर्गत सब लोग मिलकर सार्वजनिक हित के लिए सामूहिक प्रयत्न करेंगे। और सब इस पवित्र सिद्धान्त को याद रखेंगे कि यद्यपि बहुसंख्यकों का मत ही माना जायगा किन्तु उस मत का युक्तिसंगत होना जरूरी है; कि अल्पसंख्यकों के भी समान अधिकार हैं जिनकी रक्षा समान कानूनों से ही की जानी चाहिए और इन कानूनों का उल्लङ्घन करना अनाचार होगा। अतः हम सब साथी नागरिकों को अपने दिल और दिमाग से एक हो जाना चाहिए। हम सबको अपने सामाजिक व्यवहार में वह सहयोग और स्नेह लाना चाहिए जिसके बिना आजादी तो क्या जिन्दगी भी नीरस हो जाती है। अपने देश से धार्मिक असहिष्णुता दूर करने के बाद, जिससे मानवता अब तक पीड़ित थी, हमें यह याद रखना चाहिए कि हमने यदि उस राजनीतिक असहिष्णुता को दूर नहीं किया, जो उतने ही अत्याचार और कपट से परिपूर्ण है और उतनी ही कटु एवं रक्तमयी उत्पीड़न की क्षमता रखती है, तो हमने कोई लाभ नहीं उठाया। यह आश्चर्य की बात न थी कि प्राचीन संसार की पीड़ा और उथल पुथल के दौरान में, और कुपित मानव द्वारा रक्तपात और हत्या से अपनी खोई हुई आजादी पाने की कोशिश के दौरान में, क्षोभ की लहरें इस सुदूर स्थित शान्तिमय तट पर आ टकराईं; कि इस क्षोभ का भय और प्रभाव कुछ पर अधिक और कुछ पर कम हुआ; कि इसके द्वारा सुरक्षा-सम्बन्धी कार्रवाइयों पर मतभेद हो गया। किन्तु प्रत्येक मतभेद सिद्धान्त का मतभेद नहीं है। हमने एक ही सिद्धान्त के अनुयायियों को भिन्न नामों से सम्बोधित किया है। हम सब रिपब्लिकन हैं—

सब फेडरलिस्ट हैं। यदि हममें से कोई ऐसा है जो इस संघ को भंग करना चाहता है अथवा इसके रिपब्लिकन रूप को परिवर्तित करना चाहता है, तो उसे स्मारक के रूप में अविचल खड़ा रहने दीजिए; क्योंकि जहाँ विवेक-बुद्धि को त्रुटिपूर्ण विचारों से लड़ने की आज़ादी है, वहाँ ऐसे विचारों को सहन भी किया जाता है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि कुछ ईमानदार लोगों को इस बात का भय है कि रिपब्लिकन सरकार शक्तिशाली नहीं हो सकती; कि हमारी यह सरकार पर्याप्त रूप से शक्तिशाली नहीं है। किन्तु क्या एक ईमानदार देशभक्त एक सफल प्रयोग के मध्य में, केवल इस सैद्धान्तिक और काल्पनिक भय के कारण इस सरकार को त्याग देगा, क्योंकि इसे कायम रखने के लिए सम्भवतः अधिक शक्ति की आवश्यकता है? क्या वह उस सरकार को त्याग देगा जिसने अभी तक हमको स्वतन्त्र और सुदृढ़ बनाये रखा है और जो संसार की महानतम आशा है? मेरा विश्वास है कि ऐसा वह नहीं करेगा; बल्कि मेरा यह भी विश्वास है कि यही संसार की सबसे शक्तिशाली सरकार है। मेरा विश्वास है कि यही वह सरकार है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति कानून की पुकार सुनकर सार्वजनिक व्यवस्था पर किये गए आक्रमणों को अपना निजी मामला समझकर कानून की मदद करने दौड़ेगा। कई बार यह कहते सुना जाता है कि मनुष्य को स्वयं अपने शासन का भार नहीं सौंपना चाहिए। तो क्या उसे दूसरों के शासन का भार सौंपना चाहिए? अथवा क्या राजा देवता बन गए हैं जो मनुष्य पर अच्छी तरह शासन कर सकते हैं?—इतिहास ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकता है।

तो हमें साहस और विश्वास के साथ अपने फेडरल तथा रिपब्लिकन सिद्धान्तों और राष्ट्रीय संघ तथा प्रतिनिधि सरकार का अनुसरण करना चाहिए। प्रकृति ने हम पर कृपा करके हमें भूमण्डल के एक चौथाई भाग के विनाशकारी उत्पातों से एक समुद्र द्वारा पृथक् कर रखा है; हमारा मस्तिष्क इतना उन्नत है कि हम दूसरों के अपमानों को सहन नहीं कर सकते; हमारा देश इतना भाग्यशाली है कि हमारे उत्तराधिकारियों की एक सौवीं, यहाँ तक कि हजारवीं पीढ़ी तक के लोगों के लिए इसमें पर्याप्त स्थान है; अपनी शक्ति

और अपने उद्योग के फलों का उपयोग करने तथा अपने साथी नागरिकों का आदर करने और उनसे विश्वास प्राप्त करने के समान अधिकार का हमें ज्ञान है; हमें एक सुखकारी धर्म का ज्ञान प्राप्त है, चाहे उसका विभिन्न रूपों में प्रचार और प्रयोग क्यों न किया जाय उन सबमें ईमानदारी, सच्चाई, मद्य-निषेध, कृतज्ञता और मानव के प्रति प्रेम है; हम सब एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर में विश्वास रखते हैं और उसकी उपासना करते हैं जिसके लिए सब मतों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि इहलोक तथा परलोक में मानव के सुख में उसकी प्रसन्नता है; इन सब वरदानों के होते हुए हमें सुखी बनाने के लिए और किस चीज की आवश्यकता हो सकती है ? साथी नागरिको, हमारे पास इनके अलावा एक चीज और है—एक समझदार और किफायत पसन्द सरकार की जो लोगों को एक-दूसरे को नुकसान न करने देगी, जो लोगों को अपने मन-पसन्द उद्योग और सुधार-कार्य करने की स्वतन्त्रता देगी, और जो मजदूरों के मुँह से उनकी अपनी कमाई हुई रोटी न छीनेगी। यही एक अच्छी सरकार का सार है, और यही हमारे सुखों के वृत्त को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

साथी नागरिको, आपको उन कर्तव्यों को निबाहना है जिनमें वे सब बातें निहित हैं जिन्हें आप प्रिय और बहुमूल्य समझते हैं, अतः उचित है कि आप उन सब बातों को समझ लें जिन्हें मैं इस सरकार के आवश्यक सिद्धान्त समझता हूँ, और फलतः जिनके द्वारा शासन की रूपरेखा निर्मित की जानी चाहिए। मैं इन सिद्धान्तों को इनके सूक्ष्मतम रूप में प्रस्तुत करूँगा, केवल एक सामान्य सिद्धान्त का उल्लेख करूँगा पर उसकी सब सीमाबद्धताओं का नहीं। सब मनुष्यों को समान और सच्चा न्याय, चाहे उनका धार्मिक अथवा राजनीतिक मत कुछ ही क्यों न हो; सब राष्ट्रों के साथ शान्ति, व्यापार और सच्ची मैत्री—घोखे में फँसाने वाले समझौते किसी के साथ नहीं; राज्यों के अधिकारों का समर्थन जो कि हमारी घरेलू आवश्यकताओं के लिए अत्यन्त सूक्ष्म हैं, और जनतन्त्र-विरोधी प्रवृत्तियों के खिलाफ मजबूत किले हैं; जनता के मताधिकार की रक्षा जो कि शान्तिमय तरीकों को अनु-

चरित्र को प्राप्त था, जिसकी सुप्रसिद्ध सेवाओं ने उसे देश का सबसे बड़ा स्नेह-पात्र बनाया था, जिसको इतिहास में सबमें सुन्दर स्थान मिला है, किन्तु मैं केवल उतने ही विश्वास की माँग करता हूँ जिससे आपके कार्यों का विधि-सम्बन्धी प्रशासन दृढ़ता के साथ प्रभावोत्पादक तरीके से किया जा सके। मैं अपनी निर्णय-बुद्धि की भूल के कारण अक्सर गलत काम कर सकता हूँ। कई बार मेरे किये हुए काम जब सही भी होंगे तो उन लोगों को गलत नजर आयेंगे जो मेरी तरह समूची तस्वीर देखने की स्थिति में न होंगे। आपके सम्मिलित मताधिकार से प्राप्त अनुमोदन ने मुझे गत वर्षों में सांत्वना प्रदान की है; और मेरी भावी उत्कण्ठा उस सद्भावना को अपने पास बनाए रखने में होगी जो आप लोगों ने पहले से ही मुझे प्रदान की है, तथा अपनी सारी शक्ति से दूसरों का भला करके उनकी सद्भावना प्राप्त करने और सबके लिए सुख तथा स्वतन्त्रता का साधन बनाने में होगी।

अतः आपकी सद्भावना का आश्रय प्राप्त करके मैं आज्ञाकारिता के साथ काम करने बढ़ रहा हूँ, और उस समय इस पद से तुरन्त हट जाऊँगा जब आप मुझसे अच्छा व्यक्ति चुन लेंगे। मेरी प्रार्थना है कि वह अनादि शक्ति जो इस विश्व का भाग्य-निर्माण करती है हमारे सलाहकारों को सन्मार्ग पर लगाए और आपकी शान्ति और समृद्धि के लिए उनकी सहायता करे।

प्रथम वार्षिक सन्देश

८ दिसम्बर, १८०१

सीनेट और प्रतिनिधि-सभा के साथी नागरिको,

मेरे लिए यह अत्यन्त सन्तोष की बात है कि अपने राष्ट्र के इस महान् परिषद् के सम्मुख मैं बहुत-कुछ निश्चितता के साथ यह घोषणा करने में समर्थ हूँ कि उन युद्धों और कठिनाइयों का अब अन्त हो चुका है जो इतने वर्षों तक हमारे साथी राष्ट्रों को संतप्त बनाये हुए थीं; और अब उनमें शान्ति

और व्यापार का पुनः संचार हो रहा है। जगत्पिता परमेश्वर को उन राष्ट्रों में मैत्री और क्षमा की भावना फूँकने के लिए धन्यवाद देने के साथ-साथ हमें परमेश्वर का इसलिए भी आभारी होना चाहिए कि इस संकटपूर्ण समय में हमारे यहाँ शान्ति बनी रही, और हम खेती तथा उन अन्य कलाओं को काम में ला सके और उन्हें उन्नत बना सके जिनसे हमारे सुख में वृद्धि होती है। वास्तव में, उन राष्ट्रों से, जिनके साथ हमारे मुख्य सम्बन्ध हैं, हमें मैत्री का आश्वासन मिला था, जिससे हमें एक प्रेरणा और विश्वास प्राप्त हुआ कि हमारी शान्ति भंग नहीं होगी। किन्तु तटस्थ राष्ट्रों के साथ व्यापारिक अव्यवस्थाओं और उनके फलस्वरूप होने वाली क्षति और क्षोभ के अब बन्द हो जाने से इस विश्वास में और भी वृद्धि हुई है; और साथ ही इस आशा को प्रबलता मिली है कि परिस्थितियों के दबाव के कारण अपने मित्रों के साथ जो गलतियाँ हो गई थीं; अब उन पर खुलासा गौर किया जा सकता है और उनकी क्षतिपूर्ति की जा सकती है तथा भविष्य के लिए नए आश्वासन दिये जा सकते हैं।

हमारे इण्डियन पड़ोसियों में भी शान्ति और मैत्री की भावना सामान्यतः व्याप्त पाई जाती है; और आपको यह सूचित करने में मुझे खुशी है कि इन लोगों में कृषि-सम्बन्धी औजारों और कृषि-अभ्यास के प्रचलन के लिए किये जाने वाले सतत प्रयत्न असफल नहीं हुए हैं; और यह लोग अपने कपड़े-लत्ते और जीवन-निर्वाह के लिए मछली पकड़ने और शिकार खेलने से बेहतर खेतीबाड़ी के इस नये साधन को समझने लगे हैं; और अब हम यह एलान कर सकते हैं कि युद्धों और आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण इन लोगों की गिरती हुई आबादी अब दिन-प्रतिदिन बढ़नी शुरू होगी।

इस सार्वत्रिक शान्ति का केवल एक ही अपवाद है। बारबरी राष्ट्रों में सबसे कम शक्तिशाली राज्य ट्रिपोली ने बेबुनियाद माँगें हमारे सामने रखी हैं और कहा है कि एक नियत समय तक उन माँगों के पूरे न होने पर हमें दोषी ठहराकर वह युद्ध की घोषणा कर देगा। उनकी माँगों की

भाषा का केवल एक ही उत्तर हो सकता है। मैंने भूमध्य सागर में सैनिक जहाजों का एक दस्ता भेज दिया है और साथ ही अपनी ओर से शान्ति बनाये रखने की इच्छा का आश्वासन भी उस देश को दिया है, लेकिन अपने जहाजों को हुक्म है कि आक्रमण होने पर वे हमारे व्यापार की रक्षा करेंगे। यह कार्रवाई समय के अनुसार और हमारे लिए हितकर थी। ट्रिपोली के बादशाह ने एक तरह से युद्ध की घोषणा कर रखी थी। उसके जंगी जहाज निकल आए थे। ऐसे दो जहाज जिब्राल्टर पहुँच चुके थे। भूमध्य सागर में हमारा व्यापार बन्द हो चुका था और एटलांटिक में उसे खतरा पैदा हो गया था। हमारे जहाजों के दस्ते ने खतरा दूर कर दिया। ट्रिपोली के एक जहाज ने हमारे जहाजों के साथ गये हुए 'साइस' नामक एक छोटे जहाज का सामना किया जिसके कमांडर लैफ्टिनेण्ट स्टेरट थे, और दुश्मन के बहुत से सैनिकों के मारे जाने के बाद उनका जहाज पकड़ा गया जब कि हमारी ओर से एक भी आदमी नहीं मरा। इस मौके पर हमारे नागरिकों की शूरता ने यह प्रमाणित कर दिया है कि शूरता की कमी के कारण हम शान्ति नहीं चाहते, बल्कि अपने राष्ट्र की शक्ति को मानव-जाति की वृद्धि के लिए, न कि उसके नाश के लिए लगाना चाहते हैं। शत्रु का जहाज और उसके सैनिकों को हमला करने लायक न रखकर रिहा कर दिया गया, क्योंकि अपनी रक्षा करने से आगे बढ़ने की स्वीकृति न संविधान और न कांग्रेस द्वारा प्राप्त हुई थी। विधान-सभा इस बात पर निश्चय ही विचार करेगी कि क्या आक्रमण करने की स्वीकृति प्रदान करके हमें अपनी सेना को दुश्मनों की सेना के बराबर ही बना लेना चाहिए। मैं इस विषय की सब सूचनाएँ दे रहा हूँ ताकि विधान-सभा के सदस्य अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए, जो कि संविधान ने उनको सौंपा है, सब परिस्थितियों को नाप-तोलकर निर्णय पर पहुँचेंगे...

मैं आप लोगों के सम्मुख अपने देशवासियों की जन-गणना का फल रख रहा हूँ जिसके अनुसार अब हमें अपने प्रतिनिधियों की संख्या और कर की पूँजी कम करनी होगी। आपने देखा होगा कि पिछले दस वर्षों में हमारी आबादी रेखागणित के अनुपात में बढ़ी है, जिससे आशा की जाती

है कि बीस वर्षों में वह दुगुनी हो जायगी। जनसंख्या की इस शीघ्रतर होने वाली प्रगति को देखकर हम अपने भविष्य की कल्पना करते हैं—ऐसा भविष्य नहीं जिसमें हम दूसरों को हानि पहुँचा सकें बल्कि ऐसा भविष्य जिसमें हमारे विशाल देश की सीमाओं में खाली पड़ी भूमि आबाद होगी और ऐसे मनुष्यों की दिन-प्रतिदिन संख्या बढ़ती जायगी; जो सुख, सुव्यवस्था और स्वशासन के आदी हों, और इन वरदानों को अमूल्य समझते हों।

जनसंख्या की वृद्धि और अन्य परिस्थितियों ने मिलकर जनसंख्या के अनुपात से कहीं अधिक सरकारी मालगुजारी को बढ़ा दिया है, और हालाँकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विश्व के लिए हितकर होते जा रहे हैं किन्तु कुछ समय तक उनका हमारी मालगुजारी पर प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन फिर भी आय-व्यय की सब सम्भावनाओं को देखते हुए हम विश्वास के लिए पर्याप्त कारण मौजूद है कि अब हम सब अन्दरूनी करों को हटा सकते हैं जैसे कि शराब, स्टाम्प, नीलाम, लाइसेंस, गाड़ियों और साफ की हुई चीनी पर लगाये गए कर, और इनमें अखबारों पर लगाये जाने वाले टिकट के कर को भी शामिल किया जा सकता है ताकि समाचार-प्रसारण में वृद्धि हो। मालगुजारी के बाकी बचे साधन सरकार को चलाने, सार्वजनिक ऋणों का ब्याज देने, मूलधन को कानून द्वारा निर्धारित अवधि या सर्वसाधारण की आशा से पहले चुकाने के लिए पर्याप्त हैं। किन्तु युद्ध या विपुल घटनाएँ चीजों की सूरत बदल सकती हैं, और उन खर्चों को बढ़ा सकती हैं जिनको राज्य-करों से पूरा नहीं किया जा सकता; फिर भी स्वस्थ सिद्धान्त वे हैं जो हमें अपने साथी नागरिकों के उद्योगों पर कर लगाकर उन युद्धों के लिए धन इकट्ठा करना उचित नहीं बताते जिनका पता नहीं कि वे कब छिड़ें, और शायद उन युद्धों के छिड़ने का कारण इस धन का प्रलोभन ही हो।

अपने भारों को कम करने के यह विचार इसी आशा पर बनाये गए हैं कि हमारे अभ्यस्त व्ययों में बुद्धिमानी के साथ लाभदायक कमी की जायगी। फलतः नागरिक शासन, थल-सेना, जल-सेना आदि के व्ययों को दोहराना होगा।

जब हम यह सोचते हैं कि इस सरकार का काम केवल इन राज्यों के बाहरी और पारस्परिक सम्बन्धों की देखभाल करना है; कि हमारे शरीर, हमारी सम्पत्ति और हमारी प्रतिष्ठा तथा बृहद् मानव-क्षेत्र की अन्य बातों का खयाल रखना इन राज्यों का प्रमुख कार्य है, तो यह शंका हो सकती है कि क्या हमारी व्यवस्था बेहद पेचीदी, बेहद खर्चीली नहीं है; कि क्या दफ्तरों और अफसरों की संख्या जरूरत से ज्यादा नहीं बढ़ा दी गई जिसके कारण उसी सेवा-कार्य को क्षति पहुँचती है जिसके लिए ही वे बनाये गए हैं।...

युद्ध-सचिव ने बहुत सोच-समझकर एक नक्शा बनाया है जिसमें वे सब स्थान दिखाये गए हैं जहाँ फौजें रखनी जरूरी हैं तथा यह भी बताया है कि किस पलटन में कितने आदमी रखने चाहिएँ। मौजूदा सैनिक-संख्या से यह कुछ संख्या बहुत कम है। अतिरिक्त सैनिकों का कोई उपयोग नहीं बताया जा सकता। शत्रु के आक्रमण होने पर उनकी संख्या नहीं के बराबर होगी, और न यह जरूरी है और न इसमें हिफाजत है कि इस काम के लिए अमन के जमाने में एक फौज रखी जाय। हम चूँकि अपने देश के दायरे में किस वक्त किस जगह हमला किया जायगा यह नहीं कह सकते, इसलिए हमले का मुकाबला करने के लिए हर वक्त हर जगह जो फौज रह सकती है वह आसपास के नागरिकों की ही सेना हो सकती है। सुविधाजनक भागों से एकत्रित तथा शत्रु की संख्या के अनुपात में बनाई हुई इस सेना पर केवल प्रथम आक्रमण का मुकाबला करने के लिए ही नहीं बल्कि यदि आक्रमण स्थायी प्रतीत होता हो तो उसका उस समय तक मुकाबला किये जाने के लिए निर्भर रहना चाहिए जब तक कि उनकी जगह नैयमिक सेना न आ जाय। इन बातों को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि हम हर बैठक में इस सेना के व्यवस्था-सम्बन्धी कानूनों के दोषों को समय-समय पर संशोधित करते रहें जब तक कि यह कानून पर्याप्त रूप से परिपक्वता न प्राप्त कर लें। और न हमें अब किसी और वक्त इस सेना को तोड़ना चाहिए जब तक कि हमें यह कहने का मौका न मिले कि अगर दुश्मन हमारे दरवाजे पर होता तो इससे ज्यादा हम इस सेना के लिए कुछ न कर सकते थे।

हमारी मौजूदा फौजी रसद का ब्यौरा आपके सामने पेश किया जायगा ताकि आप खुद फैसला कर सकें कि किन चीजों को बढ़ाना जरूरी है।

हमारी जल-सेना-सम्बन्धी तैयारियाँ किस हद तक की जानी चाहिएँ इस बारे में मतभेद होने की आशंका है; किन्तु यदि इस राष्ट्र-संघ के प्रत्येक भाग की परिस्थितियों पर उचित ध्यान दिया गया तो यह मतभेद दूर हो जायगा। भूमध्यसागर में एक छोटी सेना की आवश्यकता सम्भवतः अभी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त नौ सेना-सम्बन्धी वार्षिक व्यय जो भी आप उचित समझें उसका उपयोग उन वस्तुओं के लिए किया जाना सम्भवतः अच्छा होगा, जिन्हें बिना खर्च या खराब किये, जरूरत पड़ने पर तैयार पाया जाय। आपके सामने पेश किये गए कागज़ातों से आपको मालूम होगा कि कानून द्वारा निर्दिष्ट ७४ तोपों वाले जहाजों के लिए सामान इकट्ठा करने में प्रगति हुई है······

कृषि, वस्तु-निर्माण, व्यापार तथा जल-यात्रा—हमारी समृद्धि के इन चारों स्तम्भों को जब व्यक्तिगत व्यापार पर छोड़ दिया जाता है तो अधिक उन्नति होती है। बीच-बीच में होने वाली असुविधाओं के लिए निश्चय ही सामयिक प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं। यदि आप अपने निरीक्षण द्वारा यह समझते हैं कि हमारी संवैधानिक शक्ति की सीमाओं के अन्दर इन व्यवसायों को सहायता दी जानी चाहिए, तो इस आवश्यकता के प्रति आपकी सजगता ही इस बात का आश्वासन है कि आप इस ओर ध्यान देंगे। हम सब अपने सारे व्यापार के प्रति चिन्तित हुए बिना नहीं रह सकते। समय की सहायता के बिना इस चिन्ता को किस हद तक दूर किया जा सकता है यह एक महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय विषय है।

संयुक्त राज्यों की न्यायपालिका-व्यवस्था, विशेषतः उसका वह भाग, जो हाल में ही बनाया गया है, निश्चय ही कांग्रेस के सामने विचारार्थ आयगा ताकि कांग्रेस के सदस्य यह निर्णय कर सकें कि इस संस्था को कितना काम करना चाहिए उसके अनुपात में वह कितना काम करती है। न्यायालयों के स्थापित होने के बाद से कितने मुकदमे अतिरिक्त न्यायाधीशों और न्यायालयों

के लिए स्थगित हैं—इस बात का ब्यौरा मैंने विभिन्न राज्यों से प्राप्त किया है और जो अब कांग्रेस के सामने पेश है।

और न्यायपालिका-संगठन पर ग़ौर करते हुए आपके लिए यह विचार णीय होगा कि क्या वैचारिक अधिकारियों की संस्था की सुरक्षा हमारे शरीरों और सम्पत्तियों को प्राप्त है। इन वैचारिक अधिकारियों की पक्षपात-रहित नियुक्ति के महत्त्व को ख़याल में रखते हुए हम लोगों को इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिए कि जब कि इन राज्यों में वैचारिक अधिकारियों की नियुक्ति एक मार्शल की कार्यकारिणी शक्ति अथवा न्यायालय या उसके अधिकारियों पर निर्भर है, क्या इन वैचारिक अधिकारियों की नियुक्ति पर्याप्त रूप से पक्षपात-रहित होती है।

देशीयकरण-सम्बन्धी कानूनों के पुनर्निरीक्षण की सिफ़ारिश किये बिना मैं नहीं रह सकता। मानव-जीवन के साधारण अवसरों को देखते हुए इस देश में चौदह वर्ष रहने वाले व्यक्ति को भी नागरिकता से वंचित करना उस बहुमत को वंचित करना है जो इस नागरिकता की माँग कर रहा है, और साथ ही उस नीति को नियन्त्रित करता है जो इन राज्यों में प्रारम्भ से चलती आ रही है और जिसे अब भी इन राज्यों की समृद्धि का कारण समझा जाता है। और क्या हम मुसीबत के मारे शरणार्थियों को वह आतिथ्य देना अस्वीकार करेंगे जो इस देश के जंगली निवासियों ने हमारे पूर्वजों को यहाँ आने पर दिया था? क्या उत्पीड़ित मानवता को इस पृथ्वी पर कहीं कोई ठिकाना न मिलेगा? यह ठीक है कि संविधान ने यह निर्धारित किया है कि कई महत्त्वपूर्ण पदों के लिए व्यक्ति में चरित्र तथा विनियोजना विकसित करने के लिए उसका यहाँ रहना ज़रूरी है। किन्तु क्या एक नागरिक का सामान्य चरित्र और उसकी योग्यताएँ उस व्यक्ति में नहीं जो हम लोगों के बीच स्थायी रूप से अपने जीवन और भाग्य को सौंपने उतरा है? लेकिन कुछ प्रतिबन्धों की आवश्यकता होगी जैसे कि हमारे झण्डे का अपमान एक सच्चे नागरिक में इतनी अकुलाहट और क्षोभ की भावना और राष्ट्र को मुसीबत बनाने की इतनी आशंका उत्पन्न कर देता है कि इस प्रकार

हमारी मौजूदा फौजी रसद का ब्यौरा आपके सामने पेश किया जायगा ताकि आप खुद फैसला कर सकें कि किन चीजों को बढ़ाना जरूरी है।

हमारी जल-सेना-सम्बन्धी तैयारियाँ किस हद तक की जानी चाहिएँ इस बारे में मतभेद होने की आशंका है; किन्तु यदि इस राष्ट्र-संघ के प्रत्येक भाग की परिस्थितियों पर उचित ध्यान दिया गया तो यह मतभेद दूर हो जायगा। भूमध्यसागर में एक छोटी सेना की आवश्यकता सम्भवतः अभी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त नौ सेना-सम्बन्धी वार्षिक व्यय जो भी आप उचित समझें उसका उपयोग उन वस्तुओं के लिए किया जाना सम्भवतः अच्छा होगा, जिन्हें बिना खर्च या खराब किये, जरूरत पड़ने पर तैयार पाया जाय। आपके सामने पेश किये गए कागजातों से आपको मालूम होगा कि कानून द्वारा निर्दिष्ट ७४ तोपों वाले जहाजों के लिए सामान इकट्ठा करने में प्रगति हुई है······

कृषि, वस्तु-निर्माण, व्यापार तथा जल-यात्रा—हमारी समृद्धि के इन चारों स्तंभों को जब व्यक्तिगत व्यापार पर छोड़ दिया जाता है तो अधिक उन्नति होती है। बीच-बीच में होने वाली असुविधाओं के लिए निश्चय ही सामयिक प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं। यदि आप अपने निरीक्षण द्वारा यह समझते हैं कि हमारी संवैधानिक शक्ति की सीमाओं के अन्दर इन व्यवसायों को सहायता दी जानी चाहिए, तो इस आवश्यकता के प्रति आपकी सजगता ही इस बात का आश्वासन है कि आप इस ओर ध्यान देंगे। हम सब अपने भावी व्यापार के प्रति चिन्तित हुए बिना नहीं रह सकते। समय की सहायता के बिना इस चिन्ता को किस हद तक दूर किया जा सकता है यह एक महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय विषय है।

संयुक्त राज्यों की न्यायपालिका-व्यवस्था, विशेषतः उसका वह भाग, जो हाल में ही बनाया गया है, निश्चय ही कांग्रेस के सामने विचारार्थ आयगा ताकि कांग्रेस के सदस्य यह निर्णय कर सकें कि इस संस्था को जितना काम करना चाहिए उसके अनुपात में वह कितना काम करती है। न्यायालयों के स्थापित होने के बाद से कितने मुकद्दमे अतिरिक्त न्यायालयों और न्यायाधीशों

के लिए स्थगित हैं—इस बात का ब्यौरा मैंने विभिन्न राज्यों से प्राप्त किया है और जो अब कांग्रेस के सामने पेश है।

और न्यायपालिका-संगठन पर गौर करते हुए आपके लिए यह विचारणीय होगा कि क्या वैचारिक अधिकारियों की संख्या की सुरक्षा हमारे शरीरों और सम्पत्तियों को प्राप्त है। इन वैचारिक अधिकारियों की पक्षपात-रहित नियुक्ति के महत्त्व को ख्याल में रखते हुए हम लोगों को इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिए कि जब कि इन राज्यों में वैचारिक अधिकारियों की नियुक्ति एक मार्शल की कार्यकारिणी शक्ति अथवा न्यायालय या उसके अधिकारियों पर निर्भर है, क्या इन वैचारिक अधिकारियों की नियुक्ति पर्याप्त रूप से पक्षपात-रहित होती है।

देशीयकरण-सम्बन्धी कानूनों के पुनर्निरीक्षण की सिफारिश किये बिना मैं नहीं रह सकता। मानव-जीवन के साधारण अवसरों को देखते हुए इस देश में चौदह वर्ष रहने वाले व्यक्ति को भी नागरिकता से वंचित करना उस बहुमत को वंचित करना है जो इस नागरिकता की माँग कर रहा है, और साथ ही उस नीति को नियन्त्रित करना है जो इन राज्यों में आरम्भ से चलती आ रही है और जिसे अब भी इन राज्यों की समृद्धि का कारण समझा जाता है। और क्या हम मुसीबत के मारे शरणार्थियों को वह आतिथ्य देना अस्वीकार करेंगे जो इस देश के जंगली निवासियों ने हमारे पूर्वजों को यहाँ आने पर दिया था? क्या उत्पीड़ित मानवता को इस पृथ्वी पर कहीं कोई ठिकाना न मिलेगा? यह ठीक है कि संविधान ने यह निर्धारित किया है कि कई महत्त्वपूर्ण पदों के लिए व्यक्ति में चरित्र तथा विनियोजना विकसित करने के लिए उसका यहाँ रहना जरूरी है। किन्तु क्या एक नागरिक का सामान्य चरित्र और उसकी योग्यताएँ उस व्यक्ति में नहीं जो हम लोगों के बीच स्थायी रूप से अपने जीवन और भाग्य को सौंपने उतरा है? लेकिन कुछ प्रतिबन्धों की आवश्यकता होगी जैसे कि हमारे झण्डे का अपमान एक सच्चे नागरिक में इतनी अकुलाहट और क्षोभ की भावना और राष्ट्र को युद्धरत बनाने की इतनी आशंका उत्पन्न कर देता है कि इस प्रकार

हमारी मौजूदा फौजी रसद का ब्यौरा आपके सामने पेश किया जायगा ताकि आप खुद फैसला कर सकें कि किन चीजों को बढ़ाना जरूरी है।

हमारी जल-सेना-सम्बन्धी तैयारियाँ किस हद तक की जानी चाहिएँ इस बारे में मतभेद होने की आशंका है; किन्तु यदि इस राष्ट्र-संघ के प्रत्येक भाग की परिस्थितियों पर उचित ध्यान दिया गया तो यह मतभेद दूर हो जायगा। भूमध्यसागर में एक छोटी सेना की आवश्यकता सम्भवतः अभी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त नौ सेना-सम्बन्धी वार्षिक व्यय जो भी आप उचित समझें उसका उपयोग उन वस्तुओं के लिए किया जाना सम्भवतः अच्छा होगा, जिन्हें बिना खर्च या खराब किये, जरूरत पड़ने पर तैयार पाया जाय। आपके सामने पेश किये गए कागजातों से आपको मालूम होगा कि कानून द्वारा निर्दिष्ट ७४ तोपों वाले जहाजों के लिए सामान इकट्ठा करने में प्रगति हुई है······

कृषि, वस्तु-निर्माण, व्यापार तथा जल-यात्रा—हमारी समृद्धि के इन चारों स्तम्भों को जब व्यक्तिगत व्यापार पर छोड़ दिया जाता है तो अधिक उन्नति होती है। बीच-बीच में होने वाली असुविधाओं के लिए निश्चय ही सामयिक प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं। यदि आप अपने निरीक्षण द्वारा यह समझते हैं कि हमारी संवैधानिक शक्ति की सीमाओं के अन्दर इन व्यवसायों को सहायता दी जानी चाहिए, तो इस आवश्यकता के प्रति आपकी सजगता ही इस बात का आश्वासन है कि आप इस ओर ध्यान देंगे। हम सब अपने भावी व्यापार के प्रति चिन्तित हुए बिना नहीं रह सकते। समय की सहायता के बिना इस चिन्ता को किस हद तक दूर किया जा सकता है यह एक महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय विषय है।

संयुक्त राज्यों की न्यायपालिका-व्यवस्था, विशेषतः उसका वह भाग, जो हाल में ही बनाया गया है, निश्चय ही कांग्रेस के सामने विचारार्थ आयगा ताकि कांग्रेस के सदस्य यह निर्णय कर सकें कि इस संस्था को जितना काम करना चाहिए उसके अनुपात में वह कितना काम करती है। न्यायालयों के स्थापित होने के बाद से कितने मुकदमे अतिरिक्त न्यायालयों और न्यायाधीशों

के लिए स्थगित हैं—इस बात का ब्यौरा मैंने विभिन्न राज्यों से प्राप्त किया है और जो अब कांग्रेस के सामने पेश है।

और न्यायपालिका-संगठन पर ग़ौर करते हुए आपके लिए यह विचारणीय होगा कि क्या वैचारिक अधिकारियों की संस्था को सुरक्षा हमारे शरीरों और सम्पत्तियों को प्राप्त है। इन वैचारिक अधिकारियों की पक्षपात-रहित नियुक्ति के महत्त्व को ख़याल में रखते हुए हम लोगों को इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिए कि जब कि इन राज्यों में वैचारिक अधिकारियों की नियुक्ति एक मार्शल की कार्यकारिणी शक्ति अथवा न्यायालय या उसके अधिकारियों पर निर्भर है, क्या इन वैचारिक अधिकारियों की नियुक्ति पर्याप्त रूप से पक्षपात-रहित होती है।

देशीयकरण-सम्बन्धी कानूनों के पुनर्निरीक्षण की सिफ़ारिश किये बिना मैं नहीं रह सकता। मानव-जीवन के साधारण अवसरों को देखते हुए इस देश में चौदह वर्ष रहने वाले व्यक्ति को भी नागरिकता से वंचित करना उस बहुमत को वंचित करना है जो इस नागरिकता की माँग कर रहा है, और साथ ही उस नीति को नियन्त्रित करना है जो इन राज्यों में आरम्भ से चलती आ रही है और जिसे अब भी इन राज्यों की समृद्धि का कारण समझा जाता है। और क्या हम मुसीबत के मारे शरणार्थियों को वह आतिथ्य देना अस्वीकार करेंगे जो इस देश के जंगली निवासियों ने हमारे पूर्वजों को यहाँ आने पर दिया था? क्या उत्पीड़ित मानवता को इस पृथ्वी पर कहीं कोई ठिकाना न मिलेगा? यह ठीक है कि संविधान ने यह निर्धारित किया है कि कई महत्त्वपूर्ण पदों के लिए व्यक्ति में चरित्र तथा विशिष्टता विकसित करने के लिए उसका यहाँ रहना ज़रूरी है। किन्तु क्या एक नागरिक का सामान्य चरित्र और उसकी योग्यताएँ उस व्यक्ति में नहीं जो हम लोगों के बीच स्थायी रूप से अपने जीवन और भाग्य को सौंपने उतरा है? लेकिन कुछ प्रतिबन्धों की आवश्यकता होगी जैसे कि हमारे झण्डे का अपमान एक सच्चे नागरिक में इतनी अकुलाहट और क्षोभ की भावना और राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने की इतनी आशंका उत्पन्न कर देता है कि इस प्रकार

हमारी मौजूदा फौजी रसद का ब्यौरा आपके
ताकि आप खुद फैसला कर सकें कि किन चीजों के

हमारी जल-सेना-सम्बन्धी तैयारियाँ किस हद
बारे में मतभेद होने की आशंका है; किन्तु
भाग की परिस्थितियों पर उचित ध्यान दिया
जायगा। भूमध्यसागर में एक छोटी सेना
बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त नौ सेना-सम्बन्धी
उचित समझें उसका उपयोग उन वस्तुओं के
अच्छा होगा, जिन्हें बिना खर्च या खराब किये,
जाय। आपके सामने पेश किये गए कागजात
कानून द्वारा निर्दिष्ट ७४ तोपों वाले जहाजों
प्रगति हुई है······

कृषि, वस्तु-निर्माण, व्यापार तथा जल-
चारों स्तम्भों को जब व्यक्तिगत व्यापार पर
उन्नति होती है। बीच-बीच में होने वाली
ही सामयिक प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं।
यह समझते हैं कि हमारी संवैधानिक शक्ति
सायों को सहायता दी जानी चाहिए, तो
सजगता ही इस बात का आश्वासन है
हम सब अपने भावी व्यापार के प्रति चिं
समय की सहायता के बिना इस चिन्ता को
है यह एक महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय वि

संयुक्त राज्यों की न्यायपालिका-व्यवस्
हाल में ही बताया गया है, निश्चय ही
ताकि कांग्रेस के सदस्य यह निर्णय कर स
करना चाहिए उसके में वह वि
स्थापित

षिक सन्तोष है। मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने मतदाताओं के हितों की लगन के साथ रक्षा करता रहूँ, और जिस अनुपात में यह लोग इस कर्तव्य के प्रति मेरी लगन को सच्चा समझने लगे हैं उतना ही अधिक इस कर्तव्य को निबाहने में मुझे सन्तोष होता है।

आपके साथ यह विश्वास रखते हुए कि धर्म वह विषय है जिसका सम्बन्ध केवल मनुष्य और परमात्मा के बीच में है; कि मनुष्य को अपनी आस्था और पूजा के लिए किसी को हिसाब नहीं देना; कि सरकार की वैधानिक शक्तियाँ कार्यों तक ही पहुँचती हैं, विचारों तक नहीं, अतः मैं समस्त अमेरिकन जनता के उस कार्य को श्रद्धा के साथ देखता हूँ जिसके अन्तर्गत घोषणा की गई थी कि उनकी विधान-सभा "किसी धर्म को स्थापित करने या उसे मानने अथवा मानने न देने" के लिए कोई कानून न बनाये जिससे राज्य और चर्च को अलग करने वाली एक दीवार तैयार हो जाय। राष्ट्र के इस सर्वोच्च संकल्प का एक पालन करते हुए, मैं सन्तोष के साथ उन भावनाओं की प्रगति देखना चाहूँगा जो मनुष्य को उसके सब प्रकृतिदत्त अधिकारों को सौंपना चाहती है जब कि मनुष्य इस निश्चय पर पहुँच चुका है कि सामाजिक कर्तव्यों के विरोध में उसे कोई प्रकृतिदत्त अधिकार प्राप्त नहीं है।

मैं आपके साथ जगत्पिता से प्रार्थना करता हूँ कि वह मानव की रक्षा करते रहें और उस पर अपनी कृपा बनाये रखें; और मैं आपके तथा आपके धार्मिक संगठन के प्रति सम्मान और आदर की अपनी भावना का आश्वासन दिलाता हूँ।

द्वितीय अभिभाषण

४ मार्च, १८०५

साथी नागरिको,

जिस भार को आपने मुझे पुनः सौंपा है उसे उठाने से पूर्व यह बता देना मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने साथी नागरिकों के विश्वास के इस नये

के अपमानों को ढूँढ निकालने और दबाने के लिए पूरी कोशिश की जानी चाहिए।

यह हैं राष्ट्र-सम्बन्धी वे बातें साथी नागरिको, जिन्हें इस समय आपके विचारार्थ पेश करना मैंने आवश्यक समझा है। दूसरी कम जरूरी बातें पृथक् सन्देशों में बताई जायँगी, जो इस समय आपको बताये जाने लायक रूप में तैयार नहीं हैं। मैं राष्ट्र-संघ की सम्मिलित बुद्धि पर अपनी सरकार के कठिन कार्यों को सौंपने का अवसर पाकर खुश हूँ। मैं विधान-सभा के निर्णय का संचार करने और उसे ईमानदारी से कार्यान्वित करने की अपनी शक्ति के अनुसार पूरी कोशिश करूँगा। आपके वादविवाद की दूरदर्शिता और संयम आपकी अपनी चाहरदीवारी में उस शान्तिपूर्ण समझौते की भावना प्रेरित करेगा जो कि विवेकपूर्ण निष्कर्ष के लिए आवश्यक है; और अपने उदाहरण से हमारे मतदाताओं में विचारों की ऐसी प्रगति को प्रोत्साहित करेगा जिसमें उनके उद्देश्य और संकल्प संयुक्त हो जायँ। यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि सब लोग किसी एक व्यवस्था से सन्तुष्ट हो जायँगे, लेकिन मैं इस बात पर जोर दूँगा कि हमारे नागरिकों की बड़ी संख्या में उन सच्चे और स्वार्थ-रहित प्रयासों का समर्थन करना चाहिए जिसका उद्देश्य राज्यों की सत्ताओं का उनके संवैधानिक रूप में सामंजस्ययुक्त बनाये रखना है; विदेश में शान्ति तथा अपने देश में व्यवस्था और कानूनों को मनवाना है; शासन सम्बन्धी ऐसे सिद्धान्तों और सम्थानों को कायम करना है जो स्वतन्त्रता और सम्पत्ति की रक्षा कर सकें, और सरकारी अफसरों को अफसर से ज्यादा न होने दें।

सर्वश्री मेहमिदा खान, एलफ्राइम गज़िन्स और कर्नल रमा राव मैसाचुसेट्स-कान्स्टिट्यूशन राज्य के फ्रेंडली सोसाइटी एसोसिएशन के सदस्य।

वाशिंगटन, जनवरी १, १८०२.

सज्जनो, इसके मैत्रिपूर्ण एसोसिएशन की ओर से अपने देश के लिए जिस प्रकार और अनुमोदन का स्नेहपूर्ण प्रदर्शन किया है उससे मुझे हर्ष

धिक सन्तोष है। मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने मतदाताओं के हितों की लगन के साथ रक्षा करता रहूँ, और जिस अनुपात में यह लोग इस कर्तव्य के प्रति मेरी लगन को सच्चा समझने लगे हैं उतना ही अधिक इस कर्तव्य को निबाहने में मुझे सन्तोष होता है।

आपके साथ यह विश्वास रखते हुए कि धर्म वह विषय है जिसका सम्बन्ध केवल मनुष्य और परमात्मा के बीच में है; कि मनुष्य को अपनी आस्था और पूजा के लिए किसी को हिसाब नहीं देना; कि सरकार की वैधानिक शक्तियाँ कार्यों तक ही पहुँचती हैं, विचारों तक नहीं, अतः मैं समस्त अमेरिकन जनता के उस कार्य को श्रद्धा के साथ देखता हूँ जिसके अन्तर्गत घोषणा की गई थी कि उनकी विधान-सभा "किसी धर्म को स्थापित करने या उसे मानने अथवा मानने न देने" के लिए कोई कानून न बनाये जिससे राज्य और चर्च को अलग करने वाली एक दीवार तैयार हो जाय। राष्ट्र के इस सर्वोच्च संकल्प का एक पालन करते हुए, मैं सन्तोष के साथ उन भावनाओं की प्रगति देखना चाहूँगा जो मनुष्य को उसके सब प्रकृतिदत्त अधिकारों को सौंपना चाहती है जब कि मनुष्य इस निश्चय पर पहुँच चुका है कि सामाजिक कर्तव्यों के विरोध में उसे कोई प्रकृतिदत्त अधिकार प्राप्त नहीं है।

मैं आपके साथ जगत्पिता से प्रार्थना करता हूँ कि वह मानव की रक्षा करते रहें और उस पर अपनी कृपा बनाये रखें; और मैं आपके तथा आपके धार्मिक संगठन के प्रति सम्मान और आदर की अपनी भावना का आश्वासन दिलाता हूँ।

द्वितीय अधिभाषण

४ मार्च, १८०५

साथी नागरिको,

जिस भार को आपने मुझे पुनः सौंपा है उसे उठाने से पूर्व यह बता देना मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने साथी नागरिकों के विश्वास के इस नये

प्रमाण के प्रति पूरी तरह सजग हूँ, जिसने मुझे उनकी उचित आशाओं की सन्तुष्टि के लिए एक नया उत्साह प्रदान किया है।

पहली बार इस पद को स्वीकार करते समय मैंने उन सिद्धान्तों की घोषणा की थी जिनके अनुसार देश का शासन करना मैं अपना कर्तव्य समझता था। मेरी आत्मा कहती है कि प्रत्येक अवसर पर मैंने उसी घोषणा के प्रत्यक्ष अर्थों के अनुसार अथवा प्रत्येक सच्चे मस्तिष्क के समझ में आने वाले तरीकों से काम किया है।

आपके वैदेशिक मामलों में हमने सब राष्ट्रों से, और विशेषतः जिनसे हमारे महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध हैं, मित्रता बनाये रखने की कोशिश की है। हमने सब अवसरों पर उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया है, जहाँ कृपा दिखाना विधिवत् था वहाँ कृपा दिखाई है, और समान शर्तों पर पारस्परिक हितों की वृद्धि की है। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि जिस प्रकार राष्ट्रों और उसी प्रकार व्यक्तियों के साथ सोच-समझकर बनाये हुए हितों को नैतिक कर्तव्यों से पृथक् नहीं किया जा सकता, और इसी विश्वास के आधार पर हमने कार्य किया है; और इतिहास इस बात का साक्षी है कि एक न्यायप्रिय राष्ट्र की बात का विश्वास किया जाता है, जब कि दूसरे राष्ट्रों को वश में करने के लिए अस्त्र-शस्त्रों और युद्ध की आवश्यकता होती है।

जहाँ तक अपने घरेलू मामलों का सम्बन्ध है, आप खूब अच्छी तरह जानते हैं कि हम सफल रहे हैं अथवा असफल। अनावश्यक कार्यालयों तथा व्ययों को रोककर हम अपने घरेलू करों को बन्द करने में समर्थ हुए हैं। इन करों ने हमारे देश में सरकारी अधिकारियों को सर्वत्र फैला दिया था और हमारे दरवाजे उनकी दस्तन्दाजी के लिए खोल दिए थे जिसके फलस्वरूप वह घरेलू सन्ताप आरम्भ हो चुका था, जो एक बार शुरू होने के बा पैदावार और सम्पत्ति की प्रत्येक वस्तु पर लागू होता। यदि इन हटाए जाने वाले करों में कुछ छोटे कर भी आ गए हैं, जो असुविधाजनक न थे, तो उनक कारण यह है कि उन करों की रकम इतनी छोटी थी कि जिनसे उन अफसर को भी वेतन नहीं दिया जा सकता था जो उन करों को इकट्ठा करते थे। य

उन करों से कुछ लाभ या तो राजकीय अधिकारी अस्वीकृत करों के स्थान में उन्हें फिर चालू कर सकते हैं।

विदेशी माल के खर्च पर महसूल उन लोगों द्वारा खुशी-खुशी दिया जाता है जो अपना घरेलू आराम बढ़ाने के लिए विदेशी चीजों का इस्तेमाल करते हैं। यह महसूल हमारे सीमान्तों और समुद्र-तटों पर ही इकट्ठा किया जाता है, और यह पूछना एक अमेरिकन के लिए शान की बात है कि किस किसान, किस मिस्त्री, किस मजदूर को संयुक्त राज्य अमरीका के महसूल वसूल करने वाले अफसर से वास्ता पड़ा है? इस कर द्वारा हमें सरकार के चालू खर्चों, और विदेशी राष्ट्रों से की हुई शर्तों को पूरा करने में मदद मिलती है, तथा अपनी सीमाओं में भूमि के स्थानीय अधिकार को हटाने, इन सीमाओं को बढ़ाने, इसके अतिरिक्त पूँजी को अपने सार्वजनिक ऋणों को चुकाने में भी मदद मिलती है। इस ऋण के चुकाये जाने के बाद, बची हुई इस अतिरिक्त पूँजी को राज्यों में बाँटकर और संविधान में संशोधन करके शान्ति-काल में नदियों, नहरों, सड़कों, कलाओं, शिक्षा और अन्य महान् कार्यों के लिए हर राज्य में खर्च किया जा सकता है। और युद्ध-काल में, हमारे *अथवा और किसी के अन्याय के कारण जब युद्ध छिड़ गया हो तो* जनसंख्या के बढ़ जाने के कारण बढ़े हुए इस कर द्वारा, तथा ऐसे संकट-काल के लिए पहले से तैयार किये हुए अन्य साधनों की मदद से हम एक वर्ष का व्यय, अगली पीढ़ियों का पिछला कर्ज चुकाने की तकलीफ दिये बिना, उसी वर्ष पूरा कर सकते हैं। तब युद्ध का अर्थ उपयोगी कार्यों का बन्द हो जाना और शान्ति तथा प्रगति काल के पुनः लौटकर आने की आशा करना हो जाता है।

साथी नागरिको, मैंने कहा है कि इस प्रकार बचाई हुई पूँजी ने हमें अपनी सीमाओं को बढ़ाने में मदद दी है; लेकिन यह सम्भव है कि यह *बढ़ी हुई सीमाएँ हमारी मदद की जरूरत पड़ने से पहले ही अपना खर्च* खुद निकाल लें, और इस प्रकार कर्ज ली हुई पूँजी के ब्याज को कम कर दें; कम-से-कम हमारे द्वारा दी गई पेशगी रकमों को तो चुकाया ही जा सकेगा। मुझे मालूम है कि लुइसाना-प्रदेश का हासिल करना कुछ लोगों को इस डर

की वजह से पसन्द नहीं है कि देश का दायरा बढ़ जाने से राष्ट्र-संघ को खतरा पैदा हो सकता है। लेकिन इस संघ के सिद्धान्तों को कौन सीमाबद्ध कर सकता है ! जितना ही बड़ा हमारा संघ होगा उतना ही कम खतरा हमें स्थानीय योजनाओं से होगा; और किसी भी दृष्टि से, क्या यह बेहतर न होगा, कि मिसीसिपी के दूसरे तट पर अजनबी परिवार के लोगों की बजाय हमारे ही भाई-बन्धु और बाल-बच्चे बसें ! जिन लोगों के साथ हम अधिक प्रेम और मैत्री के साथ रह सकते हैं !

धार्मिक मामलों में मैंने संविधान द्वारा धर्म को स्वतन्त्रता को सरकार की शक्तियों से परे समझा है। अतः मैंने कभी किसी मौके पर धार्मिक आचरण-सम्बन्धी राय नहीं दी है; और यह कार्य, जैसा कि संविधान द्वारा तय किया जा चुका है, मैंने राज्यों अथवा चर्च-अधिकारियों के निर्देशन एवं अनुशासन के लिए छोड़ दिया है, जिन्हें विभिन्न धार्मिक समाजों की स्वीकृति प्राप्त है।

इन देशों के आदिवासियों से मैंने वही आदरपूर्ण व्यवहार किया है जिसकी प्रेरणा उनके इतिहास से मिलती है। मानव-अधिकारों और गुणों से सम्पन्न, स्वतन्त्रता के प्रेम से परिपूर्ण यह लोग एक ऐसे देश में रह रहे थे जहाँ शान्ति के अतिरिक्त इन लोगों की और कोई कामना न थी; और जब एक नई आबादी की बाढ़ इनके देश में आ पड़ी तो उसे रोकने का न इनमें अभ्यास था और न उसका रास्ता बदल देने की शक्ति ही। अतः वे स्वयं भी इस बाढ़ में बह चले और अब चूँकि इनका राज्य इतना सँकरा हो गया है कि उसमें शिकार खेलने की गुञ्जाइश नहीं, मानवता की ओर से हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उन्हें कृषि एवं घरेलू कलाओं की शिक्षा दें, उनको उस उद्योग के लिए प्रोत्साहित करें केवल जिसके द्वारा ही वे अपना अस्तित्व कायम रख सकते हैं, और क्रमशः उस समाज के लिए उन्हें तैयार करें जिसमें शारीरिक सुविधाओं के साथ-साथ मानसिक एवं नैतिक सुधार भी हो सकें। अतः हमने उदारता के साथ उन्हें कृषि-सम्बन्धी और घरेलू औज़ार दिये हैं; हमने उनके बीच में प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियुक्त किये हैं; और उन्हें हमारे यहाँ के आक्रमणकारियों से बचाने

के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान की गई है।

किन्तु अपने वर्तमान जीवन-क्रम के प्रति जागृत करने, अपनी विवेक-बुद्धि का प्रयोग करने और उसके अनुसार चलने, तथा परिस्थितियों के बदल जाने से उन्हें अपने व्यवहारों को बदल देने के लिए समझाने में भारी रुकावटों का मुकाबला करना पड़ता है। अपनी शारीरिक आदतों, मानसिक पूर्वग्रहों, अज्ञान, गर्व और उन चतुर व्यक्तियों के प्रभाव का उन्हें मुकाबला करना पड़ता है जो समझते हैं कि उनका लाभ मौजूदा व्यवस्था में ही है, परिवर्तित व्यवस्था में नहीं। यह व्यक्ति उन लोगों में अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों के प्रति एक पाखण्डपूर्ण श्रद्धा जगाते हैं; कि जो-कुछ उनके पूर्वजों ने किया है वही उन्हें करना चाहिए; कि विवेक-बुद्धि असत्य मार्ग पर ले जाती है, और उनको शारीरिक, नैतिक अथवा राजनीतिक अवस्था में विवेक-बुद्धि का अनुसरण करना एक खतरनाक नई बात है; कि उनको उसी रूप में बने रहना चाहिए जैसा कि सृष्टिकर्ता ने उन्हें बनाया है, अज्ञान में ही रक्षा है और ज्ञान में खतरा। संक्षेप में, उन लोगों में सद्बुद्धि और अन्धविश्वास की क्रिया और प्रतिक्रिया पाई जाती है; उनके अपने भी विरोधी दार्शनिक हैं जिनका हित वर्तमान स्थिति को बनाये रखना है, जिन्हें सुधार से भय लगता है, और जो विवेक-बुद्धि को उन्नत करने और उसके अनुसार कार्य करने के बजाय उन आदतों को बढ़ावा देने में अपनी सारी ताकतें लगाते हैं जिनसे विवेक-बुद्धि दबी रहती है।

इन रूप-रेखाओं को चित्रित करने में, साथी नागरिको, मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि इन सुधारों का श्रेय मुझे है। यह श्रेय प्रथम हमारे नागरिकों के विचारवान चरित्र को है, जो कि सार्वजनिक मत के आधार पर सार्वजनिक कार्यों को प्रभावित करते हैं तथा उन्हें बल प्रदान करते हैं। यह श्रेय उनकी उस विभेद-बुद्धि को है, जो अपने बीच उन लोगों को चुनती है जिन्हें वैधानिक कार्यों का भार सौंपा जाता है; और इस प्रकार चुने हुए लोगों के चरित्रों की बुद्धि और उत्साह को यह श्रेय है, जो स्वस्थ कानूनों द्वारा लोक-कल्याण की नींव डालते हैं, और जिन कानूनों को कार्यान्वित करना केवल दूसरों का

है। किन्तु इस प्रयोग ने यह प्रमाणित कर दिया है कि झूठे तथ्यों के सहारे व्यक्त किये हुए झूठे मतों के विरोध में सत्य सद्‌बुद्धि की विजय हुई है, अतः यदि समाचार-पत्र सत्य का अनुसरण करें तो उन्हें किसी वैधानिक प्रतिबन्ध की आवश्यकता नहीं; सार्वजनिक न्याय सब पक्षों की सुनवाई करके मिथ्या तर्कों और मतों को संशोधित कर लेगा; और समाचार-पत्रों की अनर्थ स्वतन्त्रता तथा उनकी दुराचारपूर्ण अनैतिकता के बीच कोई रेखा नहीं खींची जा सकती। यदि फिर भी कुछ दोष रह जाते हैं जिन पर इस नियम द्वारा प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता तो उसका उपाय सार्वजनिक मत के सेन्सरशिप में ढूँढना होगा।

सर्वत्र पाई जाने वाली भावनाओं की एकता का विचार करके, जो हमारे भावी पथ में सुख और शान्ति का संचार करेगी, मैं इस देश को बधाई देता हूँ। जो लोग आज एकमत नहीं हैं वे क्रमशः एकमत होते जा रहे हैं; नये तथ्य उन पर पड़े हुए परदे को चीर रहे हैं; और हमारे संशययुक्त भाई, जो इस समय सिद्धान्तों और कई कार्रवाइयों से सहमत नहीं हैं, अन्त में देखेंगे कि जो वे सोचते हैं, वे चाहते हैं वही उनके अधिकांश साथी नागरिक सोचते और चाहते हैं; कि हमारी और उनकी इच्छा यही है कि लोक-कल्याण के लिए ईमानदारी के साथ सार्वजनिक प्रयत्न किये जाने चाहिएँ, कि शान्ति का प्रचार किया जाय, नागरिक और धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा की जाय; कानून और व्यवस्था, समान अधिकार, तथा समान अथवा असमान सम्पत्ति, जो प्रत्येक ने अपने उद्यम से प्राप्त की है, उसे कायम रखा जाय। यदि इन विचारों से सन्तोष है तो मानव-प्रकृति ऐसी नहीं कि वह इन्हें स्वीकार न करे या इनका समर्थन न करे। लेकिन अभी हमें उन लोगों को स्नेह के साथ देखना चाहिए; उनके साथ न्याय का व्यवहार करना चाहिए, और अपने हितों की प्रतियोगिता में उन्हें न्याय से भी कुछ अधिक देना चाहिए; और हमें इस बात में सन्देह नहीं करना चाहिए कि अन्त में सत्य, सद्‌बुद्धि और उनके हितों की ही जीत होगी, और वे लोग इस देश के दायरे में रहकर विचारों की एकता का चक्र पूरा कर देंगे, जिसके फलस्वरूप

स्वतन्त्र बना रहना चाहता है, उसके लिए एक सुसंगठित और सशस्त्र सेना रखना सुरक्षा का सबसे बड़ा साधन है। अतः हमारे लिए यह आवश्यक है कि हर बैठक में हम सेना की स्थिति का पुनर्निरीक्षण करें ताकि यह देखा जा सके कि क्या वह हमारी सीमाओं में हर स्थान पर एक शक्तिशाली शत्रु के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए तैयार है। कई राज्यों ने इस विषय पर विशेषतः ध्यान दिया है जो सराहनीय है, किन्तु कई राज्यों में इस विषय के प्रति हर प्रकार की अवहेलना पाई जाती है। केवल कांग्रेस ही हमारी रक्षा के इस महान् साधन को सुव्यवस्थित करने की शक्ति रखती है। जो अपनी और अपने देश की सुरक्षा के प्रति जागरूक हैं उनके लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय विषय है···

शत्रु राष्ट्रों के अन्याय के फलस्वरूप हमारा वैदेशिक व्यापार बन्द हो जाना, और हमारे नागरिकों की क्षति और उनका बलिदान निश्चय ही चिन्ताजनक विषय है। इस स्थिति से बाध्य होकर हमने अपनी पूँजी और उद्योग का एक भाग घरेलू सुधारों और चीजें बनाने में लगाया है। यह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और इसमें शक की गुञ्जाइश नहीं कि यह नये कल कारखाने-सस्ते सामान और कम खर्चे, मजदूरी की कर से मुक्ति, तथा रक्षार्थ नई चुङ्गी और निषेधों के कारण स्थायी बन जायेंगे···

विधान-सभा के दोनों भागों को सम्मिलित बैठक में बोलने के इस अन्तिम अवसर का लाभ उठाकर, मैं आपके और आपके पूर्व सदस्यों द्वारा मेरे प्रति विश्वास के बारम्बार प्रमाणों को देखते हुए तथा आपकी और उनकी कृपा का खयाल करके अपनी कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। मैं अपने साथी नागरिकों के प्रति भी समान रूप से हो कृतज्ञ हूँ जिनके समर्थन ने मुझे हर मुसीबत में उत्साह प्रदान किया है। जनता का कार्य करने में यह नहीं हो सकता कि मुझसे गलतियाँ न हुई हों। गलतियाँ हमारी अपूर्ण प्रकृति में निहित हैं। लेकिन मैं ईमानदारी के साथ कह सकता हूँ कि मेरी गलतियाँ गलत नीयत की वजह से नहीं, गलत समझ के कारण हुई होंगी। मेरे हर कार्य का लक्ष्य जनता के अधिकारों और हितों की उन्नति कर रहा है। इसी

कारण मैं उनका कृपापात्र बनने की आशा रखता
और देखते हुए मुझे विश्वास है कि मुसीबतों का आ
करने वाले उनके दृढ़ चरित्र में, स्वतन्त्रता के प्रति उ
के प्रति उनकी आज्ञाकारिता में, और सार्वजनिक अधि
सहयोग में मैं इस प्रजातन्त्र के स्थायी अस्तित्व का दृढ़
और जनता के कार्य-भार से यह सांत्वना लेकर मैं निवृत्त
ीय के भाग्य में चिरकालीन सुख और समृद्धि लिखी है।